म. ग्रं. सं. ठाणें

| विषय | लेखक हरि केशवजी | सन |
|---|---|---|
| संग्रहालय क्रमांक ३२ | पुस्तकाचें नांव ३२ दंडाचा | ९८-१ |
| 2 | हनुमान | |

38

# हनुमान

नार्थ केप

ऐस्लंड हेक्ला प

फेरो बेटें

शटलैंड द्वीप बेटें

आर्कनी बेटें

उत्तर अटलांटिक महासागर

नार्वीआ

स्वीडन

फिनलैंड

रशिया

आर्कैंजल

ओनेगो झील

तावडा नदी

उरलपर्वत

तुरमेन

आस्ट्राखान

कास्पियन समुद्र

बाल्टिक समुद्र

डेनमार्क

जर्मनी

पोलैंड

प्रशिया

हालैंड

बेल्जिया

फ्रांस

स्विट्जरलैंड

आस्ट्रिया हंगरी

तुर्की देश

ग्रीस

इटली

स्पेन

पोर्तुगाल

आफ्रिका

भूमध्य समुद्र

एशिया मैनर

सीरिया

अरब

ग्रीस

विस्केवें अखात

सेंट जार्जो चौराहा

इंग्लिशखाडी

बास्फोरस

डार्डनेल्स

जिब्राल्टर

आल्जीयर्स

त्रिपोली

सेराक्युस

क्रीट

साइप्रस

रोडस

मिलास

एकर

यरुशलेम

गजा

दमिष्क

आलेप्पो

त्रिपोली

ग्रीस

# ग्रेटब्रिटनऐंडई॰इ॰

# PLAIN AND SHORT

# HISTORY OF ENGLAND

## FOR CHILDREN.

IN

## LETTERS FROM A FATHER TO HIS SON

WITH

A SET OF QUESTIONS AT THE END OF EACH LETTER.

---

BY THE EDITOR

OF THE COTTAGER'S MONTHLY VISITOR.

---

Translated from English into Marathee

BY HURREE KESHOWJEE.

**SECOND EDITION.**

---

BOMBAY:

PRINTED AT GUNPUT CRUSHNAJI'S PRESS.

1861.

*Price* 14 *Annas.*

# इंग्लांडाचा वृत्तांत,



हा

## सोपा लहान ग्रंथ,

बालबोधार्थ केला

असे.

हा, कोणे एके गृहस्थानें आपल्या लेंकास पत्रद्वारें
लिहून प्रत्येक पत्राच्या शेवटीं कांहीं प्रश्न
करून सांगितला, त्याचें इंग्रेजी
मूलग्रंथावरून मराठी भाषेंत,

**हरि केशवजी**

यांनी भाषांतर केलें.

आवृत्ति दुसरी.

---

मुंबई

गणपत कृष्णाजी यांचे छापखान्यांत छापिलें.

---

१८६१.

किंमत १४ आणे

TO

THE RIGHT HON'BLE

# SIR ROBERT GRANT, G. C. H.

Gobernor, Bombay.

RIGHT HON'BLE SIR,

Every improvement that may be made in this country, under the favorable auspices of the Christian Government of England, would be justly attributed to Great Britain. And the natives would be naturally led to inquire after that nation as well as the high personages, who like your excellency, have been distinguished for their unvaried devotedness to the cause of India. Hence the History of England, to my countrymen, does not become only the object of laudable curiosity, but efficient means of useful information, showing the various events, and circumstances which have contributed to the aggrandizement of that Empire.

These impressions have led me to translate into Marathee, at the suggestion of a distinguished friend of Native Education, this short History of your country. And as your administration has been marked with happy events, such as an encouragement to learning in general; the institution of Poona College on a better footing, the rapid communication with England which has been opened by the means of Steam Navigation, the removal of injurious taxes, thereby facilitating the trade of one part of the country with another, &c., your Excellency would be a peculiarly appropriate Patron of this work; it is therefore with due respect and gratitude that I humbly request you will permit it to be dedicated to your Excellency.

I remain,

Right Hon'ble Sir,

Your most obedient and humdle servant.

HURREE KESHOWJEE.

Bombay, 6th June, 1838.

# राजावळी.

ही राजावळी मुखपाठ केली असतां हा ग्रंथ शिकायास सुलभ होईल.—विलियमविजयी यानें इंग्लांडदेश घेतल्या दिवसापासून तर आजपर्यंत जे राजे व राण्या झाल्या तो सर्व त्या विलियम विजयीचा वंश,* त्याचा तपशील.

प्रथम पहिला विलियम झाला, नंतर त्याचा पुत्र दुसरा विलियम झाला, नंतर त्या दुसऱ्या विलियमाचा बंधु पहिला हेन्री झाला, नंतर त्या पहिल्या हेन्रीचा भाचा स्टिफेन झाला, नंतर त्या स्टिफेनाचा भाचा दुसरा हेन्री झाला, नंतर त्या दुसऱ्या हेन्रीचा लेंक पहिला रिचार्ड झाला, नंतर त्या पहिल्या रिचार्डाचा भाऊ जान् झाला, नंतर त्या जान्चा मुलगा तिसरा हेन्री झाला, नंतर त्या तिसऱ्या हेन्रीचा लेंक पहिला येडवर्ड झाला, नंतर त्या पहिल्या येडवर्डाचा लेंक दुसरा येडवर्ड झाला, नंतर त्या दुसऱ्या येडवर्डाचा लेंक तिसरा येडवर्ड झाला, नंतर त्या तिसऱ्या येडवर्डाचा नातू दुसरा रिचार्ड झाला, नंतर त्या दुसऱ्या रिचार्डाचा चुलत भाऊ चौथा हेन्री झाला, नंतर त्या चौथ्या हेन्रीचा लेंक पांचवा हेन्री झाला, नंतर त्या पांचव्या हेन्रीचा लेंक साहवा हेन्री झाला, नंतर त्या साहाव्या हेन्रीचा चुलत भाऊ चौथा येडवर्ड झाला, नंतर त्या चौथ्या येडवर्डाचा लेंक पांचवा येडवर्ड झाला, नंतर त्या पांचव्या येडवर्डाचा चुलता तिसरा रिचार्ड झाला, नंतर त्या तिसऱ्या रिचार्डाचा चुलत भाऊ सातवा हेन्री

---

* येथें लेंकाचा व लेंकीचा वंश समान जाणावा.

झाला, नंतर त्या सातव्या हेन्रीचा लेंक आठवा हेन्री झाला, नंतर आठव्या हेन्रीचा लेंक साहवा येडवर्ड झाला, नंतर त्या साहव्या येडवर्डाची बहीण मेरी झाली, नंतर तिची बहीण इलिझाबेथ झाली, नंतर तिचे भाचीचा लेंक पहिला जेम्स झाला, नंतर त्याचा लेंक पहिला चार्लस झाला, नंतर त्या पहिल्या चार्लसाचा लेंक दुसरा चार्लस झाला, नंतर त्या दुसऱ्या चार्लसाचा भाऊ दुसरा जेम्स झाला, नंतर त्या दुसऱ्या जेम्साचा जावई तिसरा विलियम व त्याची स्त्री मेरी अशीं दोघेंजणें झालीं, नंतर त्या जेम्साची साळी आन् राणी झाली, नंतर त्या आन् राणीचा दायाद भाऊ पहिला जार्ज झाला, नंतर त्या पहिल्या जार्जाचा लेंक दुसरा जार्ज झाला, नंतर त्या दुसऱ्या जार्जाचा नातू तिसरा जार्ज झाला, नंतर त्या तिसऱ्या जार्जाचा लेंक चौथा जार्ज झाला.

इश्वी सन १०६६ ह्यांपासून तर १८२९ सांपर्यंत इंग्लांडदेशीं कोणकोण राजे व राण्या झाल्या व केव्हां राज्य करूं लागल्या, त्यांनी कितीकाळ राज्य केलें, त्यांचें राज्य होऊन आजपर्यंत कितीकाळ गेला, त्यांस कोठें पुरलें, त्या वर्तमानाचें कोष्टक.

| नावें. | केव्हांराज्यकरूंलागले. | कितीकाळराज्यकेलें. | राज्यकरूनकितीकाळझाला. | कोठेंपुरलें. |
|---|---|---|---|---|
| | | वर्ष. मास. दिवस. | | |
| पहिलाविलियम. | १०६६ अकटोबर १४ | २० १० २६ | ७४२ सप्तेंबर ९ | केयेन्नार्म |
| दुसराविलियम. | १०८७ सप्तेंबर ९ | १२ १० २४ | ७२८ आगष्ट २ | विन्चेष्टर |
| पहिलाहेन्री. | ११०० आगष्ट २ | ३५ ३ २९ | ६७४ डिजेंबर १ | रिडिंग |
| स्टिफेन्. . . . | ११३५ डिजेंबर १ | १८ १० २४ | ६७५ आकूटोबर २५ | फिवर्शाम |

## साक्सन् घराण्यांतील राजे झाले ते.

| | | | |
|---|---|---|---|
| दुसराहेन्री. . | ११५४ आकटोबर २५ | ३४ - ८ ११ | ६४० जुलई ६ | फान्टेव्रार्ल्ट. |
| पहिलारिचार्ड . | ११८७ जुलई ६ | ९ ९ ० | ६२९ आप्रील ६ | फान्टेव्रार्ल्ट. |
| जान्. . . . | ११९९ आप्रील ६ | १७ ६ . १३ | ६१३ आकटोबर १९ | वोर्सेस्टर. . |

| नावें. | केव्हांराज्यकरूंलागले. | कितीकाळराज्यकेलें. | | | राज्यकरूनकितीकाळझाला. | | कोठेंपुरले. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | वर्ष. | मास. | दिवस. | | | |
| तिसराहेन्री | १२१६ अकटोबर १९ | ५६ | ० | २८ | ५५७ नवेंबर | १६ | वेस्टमिनिस्टर |
| पहिलायेडवर्ड | १२७२ नवेंबर १६ | ३४ | ७ | २१ | ५२२ जुलई | ७ | वेस्टमिनिस्टर |
| दुसरायेडवर्ड | १३०७ जुलई ७ | १९ | ६ | १८ | ५०२ जानीवारी | २५ | ग्लौसेस्टर |
| तिसरायेडवर्ड | १३२७ जानीवारी २५ | ५० | ४ | २७ | ४५२ जून | २१ | वेस्टमिनिस्टर |
| दुसरारिचार्ड | १३७७ जून २१ | २२ | ३ | ८ | ४३० सप्तेंबर | २९ | वेस्टमिनिस्टर |

## ल्यान्क्यास्टर घराण्यांतील राजे झाले ते.

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चौथाहेन्री | १३९९ सप्तेंबर २९ | १३ | ५ | २० | ४१६ मार्च | २० | क्यान्टर्बरी |
| पांचवाहेन्री | १४१२ मार्च २० | ९ | ५ | ११ | ४०७ आगष्ट | ३१ | वेस्टमिनिस्टर |
| साहवाहेन्री | १४२२ आगष्ट ३१ | ३८ | ६ | ४ | ३६८ मार्च | ४ | विन्डसर |

## यार्काच्या घराण्यांतील राजे झाले ते.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चौथाएडवर्ड. | १४६० | मार्च | ४ | २२ | १ | ५ | ३४७ | आमील | ९ | विन्डसर |
| पांचवाएडवर्ड. | १४८३ | आमील | ९ | ० | २ | १३ | ३४६ | जून | २२ | ठिकाणमाहितनाहीं |
| तिसरारिचार्ड. | १४८३ | जून | २२ | २ | २ | ० | ३४४ | आगष्ट | २२ | लेस्टर |

## यार्काचें घराणें व ल्यानूक्यास्टराचें घराणें एकत्र होऊन जे राजे व राण्या झाल्या त्या.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सातवाहेन्री | १४८५ | आगष्ट | २२ | २३ | ८ | ० | ३२० | आमील | २२ | वेस्टमिनिस्टर |
| आठवाहेन्री | १५०९ | आमील | २२ | ३७ | ९ | ६ | २८२ | जानीवारी | २८ | विन्डसर |
| साहावाएडवर्ड | १५४६ | जानीवारी | २८ | ६ | ५ | ८ | २७६ | जुलई | ६ | वेस्टमिनिस्टर |
| मेरीराणी | १५५३ | जुलई | ६ | ५ | ४ | ११ | २७१ | नवेंबर | १७ | वेस्टमिनिस्टर |
| इलिझाबेथराणी | १५५८ | नवेंबर | १७ | ४४ | ४ | ७ | २२६ | मार्च | २४ | वेस्टमिनिस्टर |

## इंग्लांडचें व स्काटलांडचें राज्य एक होऊन जे राजे झाले ते.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पहिलाजेम्स | १६०२ | मार्च | २४ | २२ | ० | ३ | २०४ | मार्च | २७ | वेस्टमिनिस्टर |
| पहिलाचार्लस | १६२५ | मार्च | २७ | २३ | १० | ३ | १८० | जानीवारी | ३० | विन्डसर |

| नावें. | केव्हांराज्यकरूंलागले. | कितीकाळराज्यकेलें. | | | राज्यकरूनकितीकाळझाला. | | कोठेपुरले. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | वर्षे. | मास. | दिवस. | | | |
| दुसराचार्लस | १६४८ जानीवारी ३० | ३६ | ० | ७ | १४४ फेब्रीवारी | ६ | वेस्टमिनिस्टर |
| दुसराजेम्स | १६८४ फेब्रीवारी ६ | ४ | ० | ७ | १४० फेब्रीवारी | १२ | सेन्टजर्मेन् |
| विल्यिमवमेरी | १६८८ फेब्रीवारी १३ | १३ | ० | २३ | १२७ मार्च | ८ | वेस्टमिनिस्टर |

## दोन्ही राज्याची वहिवाट एकत्र झाल्या दिवसापासून जे राजे झाले ते*

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आन्‌राणी | १७०१ मार्च ८ | १२ | ४ | २४ | ११५ आगष्ट | १ | वेस्टमिनिस्टर |
| पहिलाजार्ज | १७१४ आगष्ट १ | १२ | १० | १० | १०२ जून | ११ | हानोवर |
| दुसराजार्ज | १७२७ जून ११ | ३३ | ४ | ९४ | ६९ आकटोबर | २५ | वेस्टमिनिस्टर |
| तिसराजार्ज | १७६० आकटोबर २५ | ५९ | ३ | ४ | ९ जानीवारी | २९ | विन्डसर |
| चौथाजार्ज | १८२० जानीवारी २९ हा राजा सन १८२९ सांत जीवंत होता. | | | | | | |

* या दोन्ही राज्यांत ऐर्लांड प्रांत सन १८०१ जानीवारींत मिळवून एक राज्य केलें.

मराठी ग्रंथसंग्रहालय
नं० ४८३
दान सन १९०

चिरंजीव राजश्री गोविंदपंत मुकाम पुणें यांमत काशिनाथ विठोबा मुकाम मुंबई अनेक आशिर्वाद उपरी येथील कुशळ लागाईत माहे. फालगुन शुद्ध ११ पावेतों सुखरूप असों, विशेष तुम्ही येथून निघून गेलां त्या वेळेस तुम्ही विनंती केली होती, त्याप्रमाणें मी तुह्मास सदैव पत्र पाठवीत जाईन, आणि तुमची वाढावयाजोगें वर्त्तमान त्या पत्रांत लिहित जाईन, तूं वर्त्तमान कोणतें तर इंगूलांड देशाचा वृत्तांत; त्या देशींचें लोक आतां येथें राज्य करतात, ते शाहाणे व गुणी आहेत, याजकरितां येथील लोकांनीं त्यांचा वृत्तांत जाणून घ्यावा. ते जेणेंकरून इतक्या चातुर्यास व वैभवास पावले, त्या गोष्टी समजल्या असतां मोठ्या उपयोगी पडतील, याजकरितां तो वृत्तांत मी थोडक्यांत लिहावयास आरंभिला आहे तो वाचीत जावा, ह्मणजे त्यां लोकांचें सविस्तर वर्त्तमान समजण्यास सुलभ होईल. त्यांचा देश ज्या बेटांत आहे त्या बेटास ग्रेटब्रिटन् ह्मणतात. ज्या देशा सभोंवता समुद्र असतो त्या देशास बेट ह्मणतात.

ग्रेटब्रिटनांत, इंगूलांड्, स्कांटलांड, व वेल्स, असे तीन मांत आहेत; अलीकडेस महाराष्ट्र भाषेंत भूगोल वृत्तांत ग्रंथ झाला आहे. त्यांत ग्रेटब्रिटनाचा नकाशा पाहिला असतां त्या बेटाचा जो उत्तर भाग, तो स्काटलांडमांत, आणि पश्चिम भाग, तो वेल्स मांत असे

दिसतात. ऐर्लांड भांतही न्या बेटांत मोडतो, परंतु तो भांत न्या बेटापासून केवळ वेगळा आहे, व त्याचे पश्चिमेस समुद्रामध्यें आहे, ह्मणून स्काट्लांड अथवा वेल्स येथें जाणें झाल्यास पायमार्गानें, आणि ऐर्लांड येथें जाणें झाल्यास जलमार्गानें जातात.

ग्रेटब्रिटनाचे दक्षिणेस ब्रिटिशचानेल ह्मणून जो समुद्राचा भाग, त्याच्या पलीकडेस फ्रान्स देश आहे, तेथें जाण्याविषयीं ग्रेटब्रिटनाहून गलबत हकारल्यास थोडक्या घटकांत पोहोंचतें. पूर्वी फ्रान्स देशींचे लोकांस गालू लोक असें ह्मणत असत. सुमारे अठराशें वर्षां मागें रोमनगरीचा जुलीयस् सिझर ह्मणून एक मोठा लढाऊ राजा होता, त्याणें बहुतेक फ्रान्स देश काबीज केला, परंतु तेणेंकरून संतुष्ट न होतां ग्रेट्ब्रिटन हें लहानसें बेट घ्यावयास त्याणें आपले स्वार पाठविले; त्या दिवसापासून इंग्लांडांत रोमन राज्याचा आरंभ झाला. इंग्लीश ह्मणजे इंग्लांड भांतांतील लोक आतां जसे आहेत, तसे तेव्हां नव्हते; त्यांस वस्त्र ह्मणून काय तें ठाऊक नसे, ते पशूचीं कातडीं पांघरत, आणि उघडा राहावयासारिखा जो शरीराचा भाग त्याजवर गोंदून निळे रंगाच्या आकृति काढीत. कित्येक जण सांगतात कीं ते शांत, नम्र व निर्दोष असत; परंतु हें ह्मणणें संभवत नाहीं. हे चांगले गुण आपेंआप येत नाहींत, हे चांगल्या शिक्षेनें व खऱ्या मतानें वागलें असतां येतात; त्यांलोकांस तर चांगली शिक्षा किंवा खरें मत यांतून एक ही नव्हतें, ह्मणून ते केवळ क्रूर व रानवट असावेत.

असेंही असतां ते लोक शूर होते ह्मणून त्यांचें बे-

ट घ्यावयास रोमन् लोकांस फार श्रम पडले व भांडावें लागलें, मग तें रोमन् लोकांनीं सुमारें चारशें वर्षेंपर्यंत आपल्या स्वाधीन करून ठेवलें.

मग रोमन् लोकांनंतर जर्मनी देशाहून साक्सन् लोक आले. ते इंग्लांड मांताचे सात भाग करून तेथें निर्निराळीं राज्यें करूं लागले. त्यां राज्यांस साक्सन् सप्तराज्य म्हणतात. याप्रमाणें सुमारें चारशें वर्षें चालले मग साकॅसन्चे म्हणजे जर्मनीचे पश्चिम मांतींचा एकूबर्ट म्हणून जो राजा होता, त्याणें तीं सात राज्यें एकत्र करून त्यांचे एक राज्य केलें.

आतां या एकूबर्ट राजानंतर जे साक्सन् देशींचे राजे झाले, त्यांचीं नावें मात्र सांगतों, त्याचें स्मरण ठेवावें. यां राजांनंतर जे राजे झाले आहेत ते पुढें विस्तारें करून सांगेन.

इंग्लांडच्या पराजयाच्या पूर्वीचे राजे.

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | एगूबर्ट | ९ | पहिला येडमंड् |
| २ | इथेल्ओल्फ् | १० | येडरेड् |
| ३ | इथेल्बाल्ड् | ११ | येडवी |
| ४ | इथेल्बर्ट | १२ | येडगर |
| ५ | पहिला इथेल्रेड् | १३ | दुसरा येडवर्ड |
| ६ | आल्फ्रेड् | १४ | दुसरा इथेलरेड् |
| ७ | पहिला येडवर्ड् | १५ | दुसरा येडमन्डऐरन्सैड् |
| ८ | आथेलस्टेन् | | |

यां साऱ्यां साक्सन् राजांसमयीं युरोपखंडांत उत्तरेकडेस डेन् म्हणून जे लोक रहात असत, ते नेहेमी येऊन इंगूलीश लोकांचा मुलूक घेत, लूट करीत व त्यांच्या व यांच्या पुष्कळ मोठ्यामोठ्या लढाया होत. शे-

पटीं साक्सन् राजांतील पंधरावा राजा येडमन्डऐरन्सैड् राज्य करीत असतां, त्याणें डेन्लोकांचा जो कान्यूट राजा त्याच्या चढावामुळें निरुपाय होऊन त्यास आपले राज्यांतील अर्धें राज्य दिलें, आणि अर्धें राज्य राहिलें होतें, तेंही कान्युटानें येडमन्ड मेल्यानंतर घेतलें. कान्युटाचे मागें त्याचे दोन लेंक होते त्यांतून एकामागें एकानें राज्य केलें, यामप्रमाणें तीन डेन् लोकांचे राजे झाले त्यांचीं नावें.

१ कान्यूट.

२ हारोल्ड.

३ हार्डि कान्यूट.

नंतर या डानिशराजांचा इंग्लीश लोकांस लौकरच कंटाळा आला, म्हणून पहिले जे साक्सन् लोक राज्य करीत होते त्यांचे वंशांतील एक राजा आला, त्यास हे संतोषेंकरून अनकूळ झाले.

येडवर्ड कन्फेसर.

या राजास संतति नव्हती, हा मेल्यानंतर जो राजा झाला त्याचें नाव.

दुसरा हारोल्ड.

यास वास्तविक पाहिलें असतां सिंहासन मिळूं नये, परंतु त्यावेळीं कोणी आड आले नाहींत, म्हणून त्यास राज्याभिषेक निश्चितपणें झाला. पण त्याणें तें राज्य बहुत दिवस सुखानें केलें नाहीं, कांतर नार्मंडीचा विलियमड्यूक, ज्यास विलियम् कांकरर म्हणजे विजयी म्हणतात, तोच त्याचा शत्रु झाला.

नार्मंडी हा फ्रान्सदेशांतील एक प्रांत आहे, या प्रांताचा ड्यूक्र ह्मणजे मांडलिक राजा विलियम होता, हा येडवर्ड कन्फेसरास आपल्या घरीं बोलावून वारंवार मेजवान्या करीत असे. हा असें बोलूं लागला कीं, येडवर्डानें मरते वेळेस मला इंग्लांडचें राज्य दिलें आहे. याचें त्याचें काय भाषण झालें असेल तें असो, परंतु जेणेंकरून तें राज्य आपल्या हातीं येई असा हा उपाय करूं लागला. याणें फौज जमाकरून व ब्रिटिशचानेल वरून जाऊन सस्सेक्सचे काठीं पिवेनसे बंदर आहे तेथें हा उतरला. नंतर हेस्टिंगस्थानाचे जवळ हारोल्डा बरोबर मोठी लढायी करून जय पावला. याप्रमाणें हारोल्डास मारून विलियम इंग्लांडाचा राजा झाला; या कृत्यास इंग्लांडचा पराजय ह्मणतात. या विलियम विजयी राजापासून सर्व इंग्लीश राजे झाले. हेस्टिंगाची लढायी इश्वी सन एक हजार सासष्टामध्यें झाली. १०६६.

ही गोष्ट व याचसारिख्या ज्या दुसऱ्या गोष्टी इंग्लांडच्या वृत्तांतांत आहेत त्या चांगलेपणी समजून घ्याव्या.

साक्सन् राजे राज्य करूं लागले त्यावेळीं ख्रिस्तीधर्म इंग्लांडांत प्रगट झाला; त्याचें कारण असें सांगतात कीं, रोमनगरांत ग्रेगोरी ह्मणून एक धर्माधिकारी होता. तो पुढें रोमचा पोप ह्मणजे मुख्य धर्माध्यक्ष झाला, त्याणें त्या नगरांतील एक्या बाजारांत सुंदर मुलें पाहिलीं, तीं तेथें विकायास आणिलीं होतीं त्याजवरून त्याणें विचारिलें कीं, हीं मुलें कोणत्या देशाहून आणिलीं आहेत, त्यांस कोणी उत्तर केलें कीं, आंगल ह्मणजे इंग्लीश देशाहून आणिलीं आहेत, तेव्हां तो बोलिला कीं, जर हीं मुलें ख्रिस्ती धर्मांत चालूं लागलीं

तेर हीं आंगलाचीं येनजल ह्मणजे देवदूत होतील. अ-
सा त्याचा उद्गार निघाला त्या दिवसापासून इंग्लीश
लोकांस खिस्ती करावें असें त्याचे मनांत फार वागूं
लागलें, आणि तें धर्माचें काम करावयास त्याणें इंग्ल-
लांडांत कित्येक पाद्री पाठविले. त्यावेळापासून इंग्लां-
डांत खिस्ती धर्म चालला आहे, तो कधीं बंद पडला
नाहीं, याजवरून खिस्ती लोक असें ह्मणतात कीं,
" खिस्ती धर्माचा प्रताप नेहेमी चालता असो. साक्-
सन लोकांच्या वेळचीं जुनीं देवुळें अझून बहुत दृष्टीस
पडतात, खिस्ती धर्म बहुत देशीं प्रसिद्ध नाहीं असें अस-
तां तो आपल्यास लौकरच कळला, त्याजवरून आप-
ण ईश्वराचे फार उपकार स्मरावे, आणि त्या धर्मानें
आपलें आचरण व कर्म सुधारून ईश्वराचें कृपापात्र
होण्याची फार इच्छा धरावी. आपल्यास ईश्वराचें
भजन करावयास देवुळें आहेत. ह्मणून ईश्वराचा फा-
र फार उपकार स्मरावा, तेथें नेहेमी जात असावें,
आणि या उपायेंकरून चांगलें व्हावयाची फार आव-
ड धरावी. जो धर्म आपल्यास धर्म सभेंत नित्य ऐ-
कण्यांत येतो, त्या धर्मावर दृढ विश्वास ठेवावा, आ-
णि जे आपल्या देशांत अज्ञानी, अधर्मी लोक असती-
ल, आणि खिस्ताचें शुभ वर्तमान ऐकून खिस्ती झाले
नसतील, त्यांस हा धर्म कळून गोड लागे असा आपण
उद्योग करावा. "

हा वृत्तांत स्वस्थपणानें वाचून समजून घ्यावा,
आणि तुह्मास याची चांगली आठवण रहावी ह्मणून
पत्रांचे शेवटीं जे थोडके प्रश्न लिहीन ते पहात जावे,
आणि कोणेकाकडून ते प्रश्न आपल्यास पुसवून घेऊ-
न, त्यांचीं योग्य उत्तरें द्यावीं. पृथ्वीचा नकाशा पा-

हूं लागलें असतां त्याची उत्तर वरच्या भागाकडेस, द-
क्षिणखालच्या भागाकडेस, पूर्व उजवे हाताकडेस, आ-
णि पश्चिम डावे हाताकडेस आहे, असें जाणावें. लोभ
वृद्धि करणें हे आशीर्वाद.

# पत्र २.

चिरंजीव० विशेष पहिलें जें आपल्यास पत्र पाठ-
विलें, त्यांत असें लिहिलें होतें कीं, रोमन, साक्सन् व
डेन्स यां लोकानीं एकामागें एक असें राज्य केलें, आ-
णि इश्वीसन एक हजार सासष्टांत विलियम १०६६.
विजयी यानें फ्रांस देशांतील नार्मंडी मांताहून
येऊन, हारोल्ड राजाशीं हेस्टिंगाजवळ लढायी क-
रून, त्यास जिंकिलें. आतां या नंतर जें झालें तें तु-
ह्मास कांहींसें कळवितों; ह्मा गोष्टी चित्त लावून वाचा-
व्या, व यांचें स्मरण ठेवावें, व या ज्या ज्या काळीं घ-
डल्या तोही काळ ध्यानांत ठेवावा; तुमच्या लक्षांत चां-
गलें ठरावें ह्मणून थोडथोडें वर्त्तमान लिहितों, यामम्मा-
णें चाललें असतां इंग्लांडाचा वृत्तांत तुह्मास तर थोड-
का कळूं येईल, परंतु तितकाही उपयोगी पडेल.

सन एक हजार सासष्टांत विलियम वि-
जयी यानें येऊन हेस्टिंगाजवळ तळ दिला १०६६.
आणि हारोल्डास जिंकून तो लौकर लंडन नगरास
आला, तेथें वेस्टमिनिस्टरचे देवुळांत वोर्कोच्या मुख्य
धर्माध्यक्षानें त्यास राज्याभिषेक केला. मग त्यानें चा-
लीप्रमाणें शपत वाहिली कीं, मी ख्रिस्ती मताचें रक्षण
करीन, राज नीतीप्रमाणें चालेन, व पक्षपात न धरितां
लोकांस वर्तवीन. नंतर लोकांनीं आपला संतोषेंकरून

स्वीकार केला हें पाहून विलियमास मोठा आनंद झाला, मग अशी तो लोकांची समजूत करूं लागला कीं आम्ही या राजास जें राज्य दिलें आहे तें यांचेंच राज्य परंतु वास्तविक पाहिलें असतां विलियमाने तें राज्य बळात्कारानें घेतलें, आणि त्याचा बळात्कार लोकांस लौकरच कळूं आला. त्याणें बहुतेक इंग्लिश लोकांचा माल लुटून आपल्या देशींच्या सर्दारांस व शिपायांस दिला, यामुळें तेथल्या मुळच्या राहणारांस अति संकटांत घालून, बाहेरून येणारांचें हित केलें. परकीय जे राजे येतात त्यांची चाल बहुत करून अशीच असती, याजकरितां जे विचारवंत पुरुष आहेत त्यांनीं सर्वस्वें करून आपला देश असल्या राजांपासून रक्षावा.

विलियमाचा इतका पराक्रम व वैभव असतांही त्याचें आयुष्य दुःखांतच गेलें. त्याचे राज्यांत लोक नेहेमी बंडें करीत, आणि इंग्लीशांचें व नार्मान्डीकरांचें नित्य भांडण होई. विलियमानें नार्मान्डीकरांचा पक्ष धरावा, त्यामुळें त्यां लोकांनीं इंग्लीशांस कितीही उपद्रव दिला तथापि नीतिमत्तेनें न्याय होऊं नये, मग इंग्लीश लोकांनीं तो सूड उगवावयाचा उपाय योजीत असावा, असा प्रसंग प्राप्त झाला. त्यावेळीं बहुतेक नार्मान्डीकरांच्या मनांत वागूं लागलें कीं, आतां आपण आपल्या देशीं परतून जावें. हें जाणून विलियमानें त्यांस द्रव्यादिक देवून घेऊन घेतलें, आणि त्या द्रव्याकरितां त्यानें पुनः इंग्लीशांस लुटून त्यांचें दुःख वाढविलें. हाय, हाय, काय दुःखाचा प्रसंग हा ! आतां इंग्लांडचा राजा शांत आहे, आणि तेथील राजनियम असे आहेत कीं, त्या लोकांचा न्याय वास्त-

विक होतो, तेथें न्यायास लहान मोठा समान मोजितात. हें पाहून तेथील लोकांनीं ईश्वराचा फार उपकार स्मरावा. राजा विलियम निर्दय असे, त्यानें कांहीं सांगितलें असतां लोक मुकाट्यानीं ऐकत नसत, ह्मणून त्याचा त्या लोकांवर राग असे, त्याजवरून त्याणें एके दिवशीं नार्थंबरलांड ह्मणून एक प्रांत आहे, तेथील लोकांस घरांतून घालवून, त्यांचा वस्तभाव जाळून, ते प्रांत नाहींसें करायास सांगितलें. त्यावेळीं वध होऊन व दुष्काळ प्राप्त होऊन एक लक्षावर लोक मेले असें सांगतात. बहुतेक लोक बोलतात कीं, पूर्वी बरें असे. परंतु काय जें बरें, तें हें असें.

राज्य प्रकरणीं विलियमास अशीं दुःखें असत. कुटुंबांत तरी त्यास दुःखच होतें. त्यास तिघे पुत्र होते. त्यांचीं नावें, राबर्ट, विलियम, व हेन्री. राबर्ट चांगला धीट असे, परंतु त्याचा स्वभाव वाईट, व रागीट असे. एके दिवशीं हे तिघेजण खेळत असतां, दोघां धाकट्यां भावांनीं पाणी उडवून राबर्टास भिजविलें, त्याजवरून तो राबर्ट रागेंभरून तरवार घेऊन त्यांस मारावयास धांवला, तेव्हां राजानें ही गडबड पाहातांच त्याचें निवारण केलें, नाहीं तर, तो मुलगा आपल्या भावांस मारून आपल्या जीवास सर्वकाळ दुःख लावून घेता. पहा रागापासून किती अनर्थ होतो ! ह्मणून आपण फार जपून चालावें, आणि आपले दुष्ट स्वभाव आवरून शास्त्रांत जी नम्रता सांगितली आहे ती धरावी. नम्रता हें एक ईश्वरी देणें. अशी नम्रता राबर्टाच्या आंगीं नव्हती ह्मणून आपल्या बापाबराबरही तो राग करूं लागला. त्याणें बंड करून त्याजबराबर लढायी केली. पूर्वी लढावूलोक कवचें आणि टोप घालीत, हीं तिरंद्याच्या पट्या एकाशीं ए-

क जुळून करीत असत, तेणेंकरून त्याचें सारें आंग व तोंड झांकत असे म्हणून हा अमुक मनुष्य असें ओळखूं येत नसे. अशीं कवचें बाप लेकांनीं घातलीं होतीं, याजकरितां राबर्टाची आपल्या बापाबरोबर लढायींत गांठ पडली, तेव्हां ते दोघेजण एकमेकांशीं फारवेळ भांडले; शेवटीं असें झालें कीं राबर्टानें आपल्या बापास खालीं पाडून ठार करावें इतक्यांत त्याचे डोईचा टोप उडाला, तेव्हां हा आपला बाप असें ओळखून राबर्टानें भुईवर गुडघे टेंकून त्याजवळ विनंती केली कीं, माझी क्षमा करावी, मी आजपासून आपल्या मर्जीमाणें चालेन, पुनः असें माझ्या हातून होणार नाहीं. अशी प्रार्थना केली त्याजवरून विलियमाचा कोप शांत होऊन आपल्या पुत्राबरोबर पूर्ववत् वागूं लागला.

विलियमास शिकार फार आवडत असे, न्याणें हांपशैर येथील लोकांस घालवून लांब रुंद सुमारें तीस मैल* जमिनींत जे गांव होते, ते अवघे मोडून तेथें आपल्यास शिकार खेळायास एक रान केलें, आणि राजावांचून त्या रानांत कोणी शिकार करूं नये अशा अर्थाचे नियम केले. त्यावेळीं असें असे कीं जर कोणी एकादें हरण, डुकर अथवा ससा मारिला तर त्या मारणाराचे डोळे काढीत. माणसाचे जिवापेक्षां जनावराचा जीव अधिक असें न्यासमयीं वाटे. सारांश न्यासमयीं हावें तसें राजानें राज्य करावें, व प्रजेला पीडावें असें चाललें होतें. न्यासमयाचें आतां स्मरण झालें असतां असें वाटतें कीं इंग्लीश लोकांस आतां जी मोकळीक आहे, व त्यांचें जें संरक्षण होत आहे, न्याजवरून त्यांनीं ईश्वराचा फार उपकार मानावा.

---

* सुमारें अडीच मैल मिळून एक कोस होतो.

विलियम मरण पावला त्याचें कारण असें कीं, त्याचें आणि फ्रान्सदेशीचे राजाचें भांडण चाललें असतां याणें त्या फ्रेंच राजाचे एके शहरावर हल्ला केला, त्यावेळेस हा घोड्यावर बसला होता, त्याचे पुढले पाय एक उंन राखाडीचा ढीग होता त्यावर पडतांच तो घोडा फार उडूं लागला, तेणेंकरून विलियमास धक्का बसून त्या धक्क्यानेंच तो पुढें मेला.

त्याचा वडील लेंक राबर्ट हा नार्मंडी मांताचा ड्यूक झाला, आणि त्याचा मधला लेंक विलियम हा दुसरा विलियम असें नाम पावून इंग्लांडचा राजा झाला, या दुसरे विलियमाचें वर्त्तमान मी तुह्मास दुसरे पत्रांत कळवीन. पहिला विलियम विजयी याणें एकवीस वर्षें राज्य केलें. हा सन एक हजार सासष्टापासून राज्य करूं लागला, आणि सन हजार सत्याऐशींत मरण पावला. १०६६. १०८७.

विलियम मोठा धैर्यवान्, बुद्धिवान् अभिमानी, मसलती, क्रूर, खुनसी, बलात्कारी असा असे, आपला चहूंकडेस डंका वाजावा असें यास फार आवडे, याणें संग्रह करीत असावा, आणि तें डौल दिमाखा खालीं उडवीत असावें. हा एकाएकीं उतावळीनें कामास हात घाली खरा, परंतु संकटसमयीं हा शांत असे, विचार करी, आणि त्रासत नसे. नार्मांडीकरांच्या लेखांत असें आहे कीं, हा आठ फुटीवर उंच, याचें शरीर चांगलें सुदृढ व अवयव सुशोभित असत; याचें धनुष्य याच्या दर्बारी लोकांतील कोणासही वांकत नसे, इतकें याचे अंगीं बळ असे. हा थोडें बोले, आणि लानफ्रांकू ह्मणून जो कयानूटबेरीचा मुख्य धर्माध्यक्ष, त्यावाचून कोणाशीं ही मसन्नवदन नसे, हा सर्वांस भयरूप व बहुतांस

त्रासरूप असतांही यानें मोठी युक्तीकरून आपल्या वंशास राज्य मिळे असें करून ठेविलें, त्याप्रमाणें त्याचा वंश त्या राज्याचा उपभोग अजून करीत आहे. या पत्रांत जें वर्त्तमान लिहिलें आहे त्याचें चांगलें मननकरून पुढें प्रश्न लिहिले आहेत त्यांचीं उत्तरें सांगावीं. लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

विल्यिम विजयी कोणते सालीं इंग्लांडास आला ?

तो कोणते देशाहून आला ?

तो इंग्लांडांत कोणते स्थळीं उतरला ?

त्याकाळीं इंग्लांडदेशीं राजा कोण होता त्याजबराबर कांहीं लढायी झाली होती काय ?

कोठे झाली ?

विल्यिम इंग्लीश लोकांशीं कसा होता ?

त्याणें नार्थम्बर्लांड मांतीं कोणता दुष्ट कट केला होता ?

विल्यिमास किती लेक होते ?

त्यांचीं नावें काय ?

त्यां भावांचीं लहानपणची एकादी गोष्ट तुह्मास ठाऊक आहे काय ?

त्यांतील वडील मुलगा आपल्ये बापाशीं कसा होता ?

वडील मुलगा बंडें करूं लागल्यापासून कोणते अनर्थ होऊं लागले ?

राजास कोणती क्रीडा आवडत असे ?

आपल्यास शिकारीची जागा तयार करायासाठीं त्याणें कोणती अनीति केली ?

विलियम कोठे व कशानें मेला ?

त्याचा काळ कोणत्या सालीं झाला ?

विलियमानंतर इंग्लांडचा राजा कोण झाला ?

## पत्र ३.

चिरंजीव०-विशेष मागल्या पत्रांत तुह्मास कळविलें कीं सन एक हजार सत्याऐंशींत दुसरा विलियम सिंहासनारूढ झाला, यास विलियम रुफस ह्मणजे आरक्तकेशी असें ह्मणत, कांतर याचे केंश लाल होते. राबर्ट हा यां विलियमाचा वडील बंधु ह्मणून इंग्लांडचे राज्य यास प्राप्त व्हावें, परंतु याची वर्त्तणूक चांगली नसे, याजकरितां बापानें यास राज्य दिलें नाहीं, विलियमास दिलें. हा विलियम रुफस तरी आपला वडील बंधु राबर्ट याजसारिखाच असे, परंतु आपला वाईट स्वभाव कसा लपवून ठेवावा हें यास कळत असे. यां दोघां भावांचे वारंवार तंटे होऊन इंग्लांडच्या राज्याविषयीं बहुत लढायाही होत, परंतु विलियमास बहुत करून यश मिळत असे.

या राजाचे वेळीं क्रुसेड * ह्मणजे धर्मप्रकरणीं लढाया उत्पन्न झाल्या; त्यांस धर्मार्थिक युद्ध ह्मणतात, त्यावेळींचे जे ख्रिस्ती मतांत चालणारे मोठेमोठे योद्धे ते सर्व या धर्मार्थिक युद्धाच्या विचारांत होते, या धर्मार्थिक युद्धाचें वर्त्तमान तुह्मी ऐकिलें नसेल तर तें सांगतों.

---

* हा शब्द क्रुस शब्दापासून झाला. क्रुस ह्मणजे लांकडाचें निर्फड, त्याजवर इशूख्रिस्ताचा वध केला.

फ्रान्स देशींचा पिटर साधु झणून एक ख्रिस्ती भक्त होता, तो यरूसालीमास यात्रेस गेला. यरूसाली-मही इशुख्रिस्ताची भूमि, झणून इला पुण्य भूमि झंणतात. त्यास ती भूमि अन्य धर्मी लोकांच्या स्वाधीन झाली आ-हे,व ते लोक इशुख्रिस्ताचे भक्तांस उपद्रव करीत आहेत, असें पाहून तो भक्त आपल्या अंतरीं फार खिन्न झा-ला. तेव्हां त्यास असें वाटलें कीं हे सारासेन लोक ख्रिस्ताचे भक्त नव्हत, असें असतां हे उलटे त्याचे भक्तांस पीडा करितात झणून ख्रिस्ताची जी ही पुण्य-भूमि, ही यांजपासून सोडवून ख्रिस्तीलोकांनीं आपल्या स्वाधीन ठेविली असतां पुण्य जोडेल, असा विचार करून तो पिटर साधु अवघ्या युरोप खंडांतील राजांस व योध्यांस प्रार्थना करीत फिरला कीं, या धर्मकृत्यास अनुकूल व्हावें. ती त्याची प्रार्थना ऐकून सर्व लहान मोठे लोक त्या कार्यार्थ सिद्ध झाले. नार्मांडीचा ड्यूक राबर्ट यास या धर्मार्थिक युद्धाविषयीं मोठा आवेश आला, आणि यानें आपला भाऊ विलियम त्याजपा-सून इंग्लांडाचें राज्य घेण्याचा उद्योग मांडिला होता तो तसाच ठेविला. शेवटीं नार्मंडीच्याही अधिकारा-वरून आपलें मन काढलें, मग त्याणें विलियमापासून कांहीं पैका घेऊन तो अधिकार त्याजकडे गहाण ठेऊ-न आपण त्या धर्मार्थिक युद्धास निघाला.

या युद्धावरून इंग्लीश लोक असें बोलतात कीं "त्याकाळींचे जे योद्धे होते त्यांचा ख्रिस्ती धर्माविषयीं उद्योग व निष्ठा पाहून विस्मय वाटतो, परंतु त्यांस ख्रि-स्ती मताचें वास्तविक स्वरूप कळलेंच नव्हतें; कांतर ज्या मतांत नम्रता धरावी असें सांगितलें आहे, त्या म-ताची प्रवृत्ति करायास त्या लोकांनीं युद्धवध इत्यादि

कर्में केलीं. असो पण ख्रिस्तीमत प्रगट करण्याविषयीं त्या भले भले शिपायांचा उद्योग व निर्भर पाहून आ-ह्मास मोठें लाजिरवाणें होतें, कांतर त्या कार्यार्थ आम-चे हातून तसा उद्योग होत नाहीं, आणि आह्मास त्या मताची तशी आस्थाही नाहीं. त्या लढायींत जे ना-मांकित शिपाई जात ते आपल्या वेशास उजवे खांद्याव-र क्रुसाची लालरंगीत आकृति काढून बसवीत, आणि त्यावेळींच्या शिपायांचे वंशीक बहुत मानकरी व गृह-स्थ आहेत त्यांच्या डगल्याच्या हातावर अद्यूनही तां-बडे क्रुसाची पट्टीकरून बसली असती. ख्रिस्ती मता-करितां त्यांच्या वडिलांनीं जशा तरवारी धरिल्या होत्या तशा हे धरतील असें वाटत नाहीं, परंतु त्या मताचा प्रसर व्हावा ह्मणून ते जे उद्योग करीत आहेत; ते त्यांचे उद्योग सिद्धीस जातील, व त्यांस ईश्वर अनुकूळ हो-ईल असें दिसतें. " याविषयीं इतकें निरूपण पुरे, आतां विलियम रुफसाचें राज्य कसें संपलें तो प्रकार लिहितों.

विलियमास आपल्या बापासारिखाच शिकारी-चा छंद होता, एकेदिवशीं असें झालें, सर्वाल्टरटिरेल ह्मणून एक फ्रान्सदेशींचा मानकरी होता, तो बहुतकरून राजाच्या समागमीं असे, त्यास सोबतीस घेऊन त्या नव्या रानांत राजा शिकार खेळत असतां राजानें एक्या हरणास तीर मारिला आणि तो कोठें पडेल हें पाहावयास राजा त्याचे पाठीस लागला, इतक्यांत त्या टिरेलानेंही त्या हरणावर एक तीर सोडिला, तो झाडास लागून राजाचे उरांत बसला, तेणेंकरून राजानें भू-मीवर पडून प्राण सोडिला. हें पाहून सर्वाल्टरटिरे-लास भय वाटलें, मग त्यानें आपल्या घोड्यास कांटे

मारून पिटाळिलें तो थेट समुद्राचे कांठीं गेला, तेथून फ्रान्सदेशीं जाऊन जे लोक यरूसालिमास धर्मार्थिक युद्धास जात होते, त्यांत मिळाला. इकडे विलियमाचें मेत कोणे गांवकऱ्यांचे दृष्टीस पडलें, तें त्यांनीं घोड्यावर आडवें घालून विनचेष्टरास नेलें, आणि राजाचें मेत ज्या आदरानें पुरितात त्यासारिखें कांहीं न करितां, तें मेत दुसरे दिवशीं तेथील देवळांत गोरगरीबाच्या मेतासारिखें पुरलें. या प्रकारें दुसरे विलियमाचा सन अकराश्यांत काळ झाला. ११००.

स्मोल्लेट ह्मणून एक वृत्तांत ग्रथ कर्त्ता झाला, त्यानें या दुसऱ्या विलियमाचें वर्णन केलें आहे कीं, विद्या, नीति, थोरपणा, यांतील एकही गुण दुसऱ्या विलियमास नसे. तो हट्टखोर, रागीट, कृतघ्न, धर्माचा द्वेष्टा, उपाध्यांस उपद्रव कर्त्ता, दांभिक, बहुभाषी, दुसऱ्याचें हरण कर्त्ता, उधळ्या विषयी, असा असे. त्यानें सर्व प्रकारें आपल्या इंग्लीश प्रजेस नागवून सोडलें होतें, आणि आपल्या राज्यांतील थोर थोर गृहस्थांस हरणें मारल्याचा आळ ठेवून मुलांमाणसांसुद्धां कैद केलें होतें, असा तो मोठा दुष्ट असे. लो० हे आशीर्वाद.

---

## प्रश्न.

दुसरा विलियम कोणत्यासालीं सिंहासनारूढ झाला ?

या विलियमास काय ह्मणत असत ?

असें यास कां ह्मणत ?

दुसरा विलियम हा विलियमविजयी याचा वडील मुलगा काय ?

वडील मुलग्याचें नाव काय ?
वडील मुलग्यास राजपद कां मिळालें नाहीं ?
त्याणें कोणत्या परगण्याचें राज्य केलें ?
धर्मार्थिक युद्ध कशास म्हणतात ?
पिटर्‌साधु म्हणून कोण होता ?
राजाचा वडीलभाऊ धर्मार्थिक युद्धास गेला होता काय ?
धर्मार्थिक युद्धास जे योद्धे मिळाले होते त्यांचे वेशावर काय चिन्ह असे ?
विलियम रुफसास कोणती क्रीडा आवडे ?
तो कशानें मेला ?
त्यास कोणी तीर मारिला ?
हें कोणत्या सालीं घडलें ?
जसें राजाचें प्रेत गौरवें करून पुरितात तसें दुसऱ्या विलियमाचें प्रेत पुरिलें कीं काय ?
तसें कां पुरलें नाहीं ?
त्या प्रेतास कोठें पुरिलें ?
तो कोणत्या सालीं मेला ?
तो चांगला किंवा वाईट राजा होता ?

---

# पत्र ४.

चिरंजीव०- विशेष तुह्मास जें लिहून पाठवितों तें एकचित्तानें वाचून त्याचें मनन करण्याची तुह्मास आवड आहे, आणि इंग्लांड देशीं जे जे राजे झाले त्यांचें वर्तमान ऐकून घेण्याची तुह्मास इच्छा आहे, असें जाणून हेन्रीची गोष्ट लिहितों. या नावाचे इंग्लांडदेशीं आठ राजे झाले, त्यांतून आतां ज्याचें वर्तमान

लिहितों तो पहिला. हा पहिला हेन्री दुसऱ्या विलियमानंतर राज्य करूं लागला. हेन्री हा विलियमाचा धाकटा भाऊ, ह्मणून यास राज्यपद मिळूंनये, यां दोघांहून जो वडील बंधु राबर्ट त्यास मिळावें, परंतु तो यासमयीं यरूसालिमास धर्मार्थिक युद्धास गेला होता. तो तेथून आल्यावर आपला नार्मांडी ड्यूकाचा अधिकार घेऊन पुढें इंग्लांडच्या राज्याविषयीं वाद सांगूं लागला. तो आळशी व उगाच दांभिक असे, ह्मणून हेन्रीनें त्यास कांहीं द्रव्य देऊन आल्या वाटेनें माघारा लाविला; तेव्हां त्यांचा असा करार झाला कीं आपल्या दोघांतील जर कोणी संततीवांचून मेला तर जो जीवंत असेल त्यानें इंग्लांड व नार्मांडी घ्यावी.

राबर्ट असा होता कीं दोन्ही राज्यें तर काय पण एकही चालवावयाची त्यास योग्यता नव्हती. त्याच्या नार्मांडी मांतांत अशी कांहीं धांदल झाली कीं, तेथील लोकांनीं त्या मांताच्या बंदोबस्तास हेन्रीस बोलाविलें. त्याजवरून हेन्री मोठ्या आनंदानें फौज घेऊन फ्रान्स देशीं आला, तेथें त्या राबर्टाबरोबर लढायी करून त्यास धरून ग्लामोर्गान शैयरीं काडीफ ह्मणून किल्ला आहे, तेथें मरेतोंपर्यंत अटकेस ठेविलें. ग्लामोर्गानशैर, हा वेल्स मांतांतील एक पर्गणा होय, हा समुद्राकडेस आहे.

यामप्राणें होतांच हेन्रीचें राज्य सुरळीत चालूं लागलें. इंग्लांड व नार्मांडी हीं दोन्हीं राज्यें त्याचे स्वाधीन झालीं; त्या हेन्रीस एक चांगला मुलगा सुमारें अठरा वर्षांचा होता, व एक मुलगी होती, ती जर्मनीच्या राजास दिली होती. सारांश या राजाचा प्रपंच सुखानें निर्वैधपणें चालला होता; परंतु या लोकीं कशा-

चा भरवसा नाहीं, संपत्ति ऐश्वर्य हीं विपत्तीस खेदास दूर करतील असें आपण उगीच मानितों. हें तर काय पण जशी जशी संपत्ति अधिक तशी तशी विपत्ति अधिक असें ही वारंवार घडतें. संपत्ति प्राप्त झाली झणजे तिची अंतरीं चिंता वागवावी लागती, त्या चिंतेनें कांहीं करूं गेल्यास उलटीं दुःखें प्राप्त होतात. अशींच दुःखें या हेन्री राजास प्राप्त झालीं. त्याच्या असें मनांत आलें कीं मजपासून, अथवा माझे पाठीमागें माझ्या लेंकापासून, नार्मांडीचे राज्य कदाचित् जाईल; त्यास तसें घडूंनये झणून त्याणें आपल्या लेंकास फ्रान्स देशीं नेऊन हा राज्याचा वारस असें तेथें सर्वांकडून कबूल करून घेतलें. नंतर हेन्री राजा आपल्या थोरथोर मानकऱ्यांचा समुदाय व मोठी स्वारी समागमें घेऊन तेथून मोठ्या समारंभानें व डौलानें इंग्लांडास यावयास निघाला. ते समयीं याचा लेंक व किन्येक नवे तरणे मानकरी असे एके तारवांत बसून यावयास निघाले, परंतु हेन्री राजाबरोबर निघाले नाहीं, खाया पियाचे मौजेकरितां मागें राहिले. ही वाईट मौज थोर मनुष्य करो, अथवा गरीब करो पण ईजपासून बहुतकरून अनर्थच घडतो. हे ज्या तारवांत बसले होते त्या तारवांचे खलाशी दारू पिऊन मस्त झाले होते, त्यांनीं तें तारूं चांगलेंपणी नचालवितां खडकावर घालून फोडून टाकिलें. असें घडतांच त्या राजपुत्रास होडींत घातलें, तेणेंकरून तो वांचला असता, परंतु त्याची बहीण पाडीइची किंकाळी त्याचे कानीं पडतांच तिला होडींत घ्यावयाकरितां त्यानें होडी तिचेजवळ नेविली. तेव्हां त्या फुटक्या गलबतांत जे मानकरी लोक बुडत होते त्यांतील बहुतेकांनीं त्या होडींत उड्या टाकिल्या, त्यांच्या

मोरानें त्या सर्वांस घेऊन ती होडी खालीं बसली. त्यासमयीं इंग्लांड व नार्मांडी येथील एकशें चाळीस चांगले तरुण मानकरी एकदांच बुडून मेले असें सांगतात. त्यांपैकीं एक्या माणसानें होडींत उडी नघालितां त्या तारवाचे डोलास धरलें होतें. न्यास दुसरे दिवशीं सकाळीं कोळ्यांनीं काढिला, तितका मात्र वांचला.

हेन्रीराजा इंग्लांडास सुखरूप पोंहचून, मोठा उत्कंठित होऊन आपल्या लेंकाची तीन दिवस वाट पाहत होता, त्याचें बुडल्याचें वर्तमान ऐकून राजाला मोठें दुर्धर दुःख झालें. असें सांगतात कीं, राजास त्या दिवसापासून तर मरेतोंपर्यंत कोणी जरा हांसतां पाहिलें नाहीं. यावरूनच जे कोणी इह लोकींचे पदार्थांच्या ठायीं सुख मानून राहतात त्यांस अशींच दुःखें प्राप्त होतात. आपल्या मुलांवर प्रीति करणें हा मनुष्याचा धर्म आहे, व तसें केल्यानें आपल्यास सुख होतें, परंतु हीं कोणेसमयीं आपल्यापासून जायाचीं असें मनांत ठेऊन त्यांजवर ममता करावी. या मृत्युलोकीं नित्य व चिरकाल राहणारा एकही पदार्थ दिसत नाहीं. "ख्रिस्ती शास्त्रांतही चांगला थोर विचार सांगितला आहे कीं,

तुम्ही आपली प्रीति परलोकींचे वस्तूंवर ठे-
१११५. वा." पहिला हेन्री अकराशें पस्तिसांत मरण पावला.

याचें स्मोल्लेट वर्णन करितो तें असें, हेन्री फार उंच नसे, त्याचा बांधा बळकट असे, केंश जराजरा काळे, डोळे चांगले शांत असत. हा आपले कुपेंतील लोकांबरोबर विनोद करी, त्यांशीं सुख वाटावयाजोगें बोले, व प्रसन्न मर्जीने असे. याची बुद्धि जात्या चांगली असून याचें अध्ययन कांहीं असें झालें होतें

कीं, याचे विद्वत्तेवरून यास उत्तम पंडित असें म्हणत. हा शांत, सावध, कुशाग्रबुद्धि, व धीट असे; परंतु क्रूर, खुनशी, हट्टी, व कठोर असे. हा नार्मान वंशांचा, व याचे आम्ही नार्मान लोक होते, म्हणून हा इंग्लीशांचा धिक्कार करीत असे, व त्यांस फार बलात्कार करून पीडित असे. लो० हे आशीर्वाद.

---

## प्रश्न.

हेन्रीचे नावांचे इंग्लांड देशीं किती राजे झाले ?

पहिला हेन्री हा कोणाचा लेक ?

तो कोणत्या वर्षीं राज्य करूं लागला ?

राज्यपद वास्तविक पाहातां कोणास मिळावें ?

तर मग राबर्टास कां मिळालें नाहीं ?

राबर्ट यरूसालीमाहून आल्यावर राज्य पदाविषयीं वाद सांगूं लागला कीं नाहीं ?

त्यास तें राज्य कां मिळालें नाहीं ?

राबर्टाचा हेन्री बरोबर काय करार झाला ?

राबर्ट वाद न सांगतां नार्मंडीस कसा गेला ?

हेन्रीनें राबर्टास काय केलें ?

हेन्रीस कांहीं मुलें होतीं ?

हेन्रीच्या मुलास काय झालें ?

त्या राजपुत्राबरोबर दुसरें कोणी बुडून मेलें काय ?

किती वांचले ?

राजास त्या पुत्रशोकानें काय झालें ?

हेन्री राजा कोणत्या सालीं मरण पावला ?

---

# पत्र ५.

चिरंजीव० विशेष मागल्या पत्रांत पहिल्या हेन्रीचा वृत्तांत कळविला, या हेन्रीच्या मागें स्टिफेन म्हणून राजा झाला, याचा वृत्तांत एक लहानशी इंग्लांडची बखर मुलांस शिकावयास केली आहे. त्या बखरेंतून काढून या पत्रीं लिहितों. तो वृत्तांत चांगला गोड आहे. पहिला हेन्री सन अकराशें पस्तिसांत मरण पावला. त्यास एकच पुत्र होता, तो बुडून मेला. माटिल्डा म्हणून एक कन्यामात्र राहिली होती, त्यास हेन्री जीवंत असतां बोलिला होता कीं माझे कन्येस इंग्लांडाचें राज्य द्यावें, त्याजवरून लार्ड म्हणजे राजवंशी लोकांनीं, व धर्माध्यक्षांनीं, व सर्व लोकांनीं, माटिल्डा राज्याधिकारास योग्य आहे असें मानून क्रिया केल्या होत्या कीं, आम्ही इच्या बरोबर विश्वासानें चालूं, व इचे आज्ञेंत वागूं. त्यावेळीं माटिल्डेचा आते भावू स्टिफेन् हा मोठा शिपाई व मोठा शूर असून मोठा दुष्ट असे, यानें ही इतरांसारिखी क्रिया करून पुढें माटिल्डेस राज्यस्थानीं बसावें असें कबूल केलें होतें; परंतु पहिला हेन्री मरतांच स्टिफेनानें आपली क्रिया मोडून, फौज जमा करून, आपल्यास राजा म्हणवूं लागला. त्याजवरून आपली शपथ स्मरून माटिल्डाबरोबर विश्वासानें जे चालत होते, त्यांनीं फौज जमा करून स्टिफेनाचे फौजेबरोबर लढाया आरंभिल्या; तेव्हां कोणेसमयीं माटिल्डाची फौज जय पावे, कोणेसमयीं स्टिफेनाची फौज जय पावे, या प्रकारें मोठ्या मोठ्या लढाया होऊन रक्ताचे पूर वाहले.

असें होत असतां शेवटीं स्टिफेनानें माटिल्डास

इंग्लांडांतून हाकून लावून तें राज्य आपण घेतलें; परंतु तें त्याजवळ बहुत दिवस राहिलें नाहीं, कांतर स्टिफेनाचेठायीं नीति नसे, तो लोकांस उपद्रव देऊं लागला, ह्मणून ते अवघे त्यावर उठून माटिल्डास निरोप पाठविला कीं, तुह्मी आपल्या मुलास घेऊन इंग्लांडास यावें, या मुलास हेन्री ह्मणत, यास याच्या आज्याचें नाव दिलें होतें.

माटिल्डा व तिचा मुलगा हेन्री, हीं इंग्लांडास आल्यावर यांचे करितां स्टिफेनाबरोबर भांडायास फौज बहुत जमा झाली; मग या फौजेच्या स्टिफेनाचे फौजेबरोबर कितीएक लढाया झाल्या, शेवटीं स्टिफेनास धरून एक वर्ष कैदेंत ठेविला, तोंपर्यंत इंग्लांडचें राज्य माटिल्डाकडेस होतें.

स्टिफेन कैदेंतून सुटतांच पुनः लढाया होऊं लागल्या, त्यांत बहुत जणाचे जीव गेले, तेणेंकरून बहुतेक गोरगरीब आपल्या सोयऱ्यां धायऱ्यांस नागवले.

यामाणें त्या दुष्ट स्टिफेनानें आपली केलेली क्रिया मोडली, त्यापासून पहा किती अनर्थ झाले: ईश्वरास असत्य सहन होत नाहीं ह्मणून स्टिफेनानें जशीं लोकांस दुःखें दिलीं होतीं, तशींच त्यास दुःखें माप्त झालीं.

स्टिफेनाच्या मनांत बहुतकरून असें होतें कीं, आपल्या पाठीमागें आपला लेंक युस्टेस यास इंग्लांडचें राज्य मिळावें,असें त्याच्या मनांत वागूं लागल्यापासून त्यानें फारच दुष्टाई धरिली; पण याचें फळ त्यास मिळाल्यावांचून राहिलें नाहीं, त्याच्या हातीं पुनः इंग्लांडचें राज्य येऊन नुगता तो स्वस्थ चित्तानें भोगूं लागला इतक्यांत तोच युस्टेस पुत्र मरून गेला. हें होऊन कां-

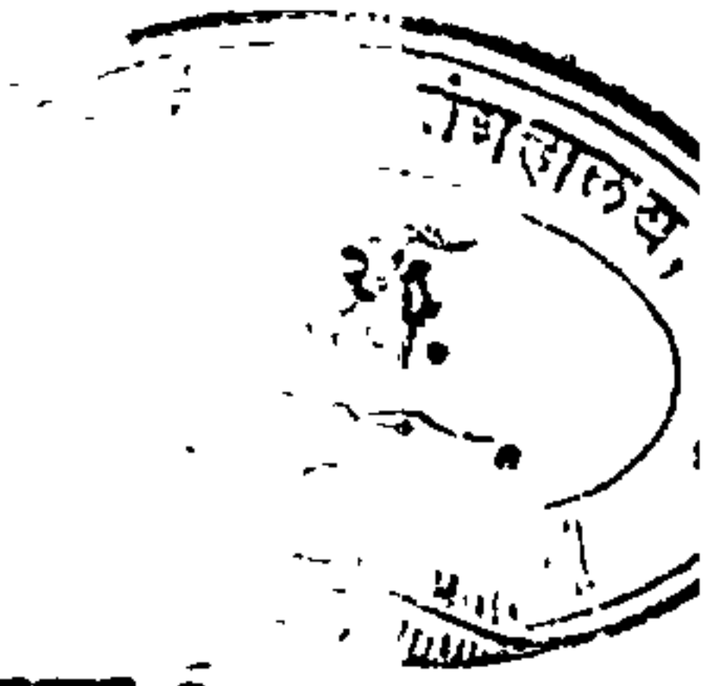
हीं दिवस लोटले नाहींत. इतक्यांत स्टिफेनाचाही काळ झाला. मग त्या हेन्रीस तें राजपद मिळाल्यावरून सर्व लोकांस मोठा आनंद झाला.

हें स्टिफेनाचें वर्णन चांगलें झालें आहे, असें माझे हातूनही होणार नाहीं, म्हणून हेंच तुह्मास लिहून पाठविलें आहे. तुह्मास जे लहान लहान वृत्तांत पाठवितों, ते तुह्मीं चित्त लावून वाचावे, कोणास कोणत्या संबंधानें राज्य मिळालें व कोणी कोणत्या संबंधावरून राज्याविषयीं दावा सांगितला, व कोण केव्हां राज्य करूं लागला व केव्हां मरण पावला याची ही आठवण ठेवावी. या गोष्टीचें असें स्मरण ठेवावें कीं या पाहिजे तेव्हां झडकन सांगतां याव्या. स्टिफेनसन अकराशें चौपन्नांत मरण पावला. हा पहिल्या हेन्रीची बहिण आडिलेड तिचा मुलगा, याजकरितां त्या हेन्रीची मुलगी जीवंत असतां यास राज्य मिळूंनये, तिला मिळावें. ही आडिलेड ब्लोईसचा कौंट म्हणून एक फ्रान्स देशींचा मानकरी होता त्यास दिली होती. त्याजवरून स्टिफेन राजास ब्लोईचा स्टिफेन असें बोलत. लोभ० हे आशीर्वाद.

१५४.

ताजाकलम. बखर वाचतांना जे जे राजे अढळतील ते क्रमेंकरून लिहित जावे, व ते कोण कोणत्या वर्षीं राज्य करूं लागले तें ही तेथें जाणवावें, या प्रकारें एक लाहानशी राजावळी केली असतां उपयोगी पडेल.

पहिला विलियम ( १०६६ )
दुसरा विलियम. ( १०८७ ) पहिला हेन्री. ( ११०० )
आडिलेड.
माटिल्डा स्टिफेन ( ११३५ )
दुसरा हेन्री ( ११५४ )



# प्रश्न.

पहिला हेन्री कोणते सालीं मरण पावला ?
त्याच्या पोटीं पुत्र होता काय ?
त्याच्या पोटीं कन्या होती काय ?
त्या कन्येचें नाव काय ?
तिला राजपद मिळावें कीं नाहीं ?
तें राजपद कोणी घेतलें ?
स्टिफेन हा माटिल्डांचा कोण ?
स्टिफेन हा कोणाचा पुत्र ?
राजपदाविषयीं स्टिफेनाचें माटिल्डा बरोबर भां-
डण चाललें होतें काय ?
माटिल्डाच्या पोटीं पुत्र होता काय ?
त्याचें नाव काय ?
स्टिफेनाचे पोटीं पुत्र होता काय ?
त्याचें नाव काय ?
स्टिफेनाचा मुलगा राजपद पावून मेला काय ?
स्टिफेनाच्या मागें कोण राज्य करूं लागले ?
स्टिफेन कोणत्या सालीं मेला ?
स्टिफेनाची आई आडिलेड् कोणास दिली होती ?
स्टिफेनाचें उपनाम काय ?
दुसऱ्या हेन्रीपर्यंत राजे किती झाले, व ते को-
णकोणत्या सालीं राज्य करूं लागले, या समाणें एक
लहानशी राजावळी तुम्हीं स्वतांच करावी.

---

# पत्र ६.

चिरंजीव० विशेष इंग्लांडच्या राजांचा वृत्तांत

जितका तुह्मास पाठवितों, तितका तुह्मी मन घालून वाचितां, ह्मणून त्याच्या पुढील वृत्तांत मोठ्या संतोषानें लिहून पाठवितों. आपण दुसऱ्या हेन्रीपर्यंत आलों आहों. हा हेन्री माटिल्डाचा लेंक, या माटिल्डास पाहिलें असतां राजपद मिळावें, स्टिफनास मिळूं नये. असो या दुसऱ्याहेन्री राजाचे वेळीं थामसआबकट ह्मणून एक विख्यात पुरुष होऊन गेला. हा केवळ नीच पदवीचा असतां कयांटबरीचा मुख्य धर्माध्यक्ष झाला होता. हा आपल्यास मोठा धार्मिक ह्मणवी, परंतु ख्रिस्तीलोक ह्मणतात कीं यास शुद्ध धर्म कळला नसावा, याच्या "मतें धर्म ह्मणून काय तो हाच कीं कित्येक बाह्यकर्मे आचरावीं, शरीरास मोठी पीडा देऊन तपादिक नियम करावे. हें मत ख्रिस्ती मताहून केवळ निराळें, ख्रिस्तीमतांत तर जीवांस अतिदुर्लभ असें समाधान, व अत्यंत आनंदकारक वर्तमान, अशीं सांगितलीं आहेत. या मतांत आपण स्वहस्तें आपल्यास दंड करून घ्यावे, कठिण कठिण नियम चालवावे, असें कांहीं सांगितलें नाहीं. हें मत केवळ सुखच द्यावयास प्रसिद्ध झालें आहे, व तें सुख ज्या मार्गें मिळेल तो मार्ग दाखवून देतें. पूर्ण सुखाच्या प्राप्तीस प्रतिबंध ज्या ज्या गोष्टी असतील, त्यांचामात्र ख्रिस्ती मतांत त्याग सांगितला आहे, परंतु असल्या त्यागास दंड कोण ह्मणेल, जें जें अंतीं दुःखदायक, जें जें शास्त्रांनीं निंदिलेलें, त्याचा जो त्याग त्यास दंड मानूं नये, कृपाच मानावी. सारांश ज्यापासून आपल्यास दुःख होतें त्याचा त्याग सांगितला आहे, व जेणेंकरून आपल्यास सुख होतें तें करायास सांगितलें आहे, ह्मणून शास्त्रांत जी गोष्ट निंदिली असेल ती सर्वस्वें करूं नये, व जी करायास सांगितली असेल ती सर्व

प्रयत्नेंकरून करावी. हा दंड कसा व थामस आबेकेटा-सारिखे भ्रमांत पडून जी शरीरास पीडा करून घेतात, तो दंड कसा, याचा विचार करावा. " यापुरुषाविषयीं असा लेख आहे कीं हा आपल्या शरीरास जी पीडा करून घेई, ती पाहून रोमांच उभे राहात. न्यांणें आंगांत जाडें ऊर्णा वस्त्राचें डगलें मात्र घालावें, आणि न्या एकट्याचवरच बहुत दिवस लोटावे, तेणेंकरून तें मळानें भरून न्यांत जीव पडावे, आहारार्थ पांव खावा व पाणी प्यावें. व हीं चांगलीं रुचिकर लागूं नयेत म्हणून यांत उग्रट औषधीही घालाव्या. तो आपल्या पाठीवर फटके मारून पाठीची कातडी फोडून घेई, व दररोज आपले गुडघे भुईला टेंकून तेरा भिकाऱ्यांचे पाय धुई, या प्रमाणें थामस आबेकेटानें आचरण मांडलें होतें. पाहिलें असतां यापेक्षां दुसरा कोणी थोर नव्हता. हा बाहेरमात्र दीनत्व दाखवी परंतु अंतरीं गर्व अभिमानानें भरला असे, याचें पाद्रीलोकांत फार माबल्य असे. ख्रिस्ती मतांत वागणारी मंजा राजाचें हित इच्छिती, परंतु त्याप्रमाणें न करितां हा राजास प्रतिकूळ असे. पाद्री लोकांनीं धनाढ्य होऊन प्रबळ व्हावें असें त्याच्या मनांत वागत असे, ते यालोकीं थोर व्हावे म्हणून यास फार ध्यास लागला होता परंतु ते ईश्वराचे आज्ञेप्रमाणें वागून त्यांत नेमून दिलेले उद्योग करितात कीं नाहीं याविषयी याचा फारसा शोध नसे. सारांश या पाद्रीलोकांचें माहात्म्य वाढून राजास नित्य उपद्रव होऊं लागला, त्यावेळीं राजा रागें भरून बोलिला कीं हा बेकेट नाहींसा होतां तर बरें होतें.

आतां जसें चाललें आहे तसें पूर्वीं नसे. आतां जर इंग्लिशांचा राजा केवळ क्रूर असता, आणि एका-

च्या अगदीं गरीब रयतेस मारावें असें त्याचे मनांत येतें तर त्याच्यानें त्या गरिबाच्या एके केशासही धक्का नलावववता. पूर्वी असें असे, राजाचे मनांत आलें कीं कोणेके माणसास नाहींसें करावें तर तें वाईट काम करायास त्याला पुष्कळ लोक सामील होत तेणेंकरून राजाचा कोणी शत्रु असला तर त्याचा नाश करावयास फार मेहेनत लागत नसे, याजकरितां बेकेटास अशीच अवस्था प्राप्त झाली. राजाच्या दर्बारी लोकांतून एक्या चार मनुष्यांस राजाचा बेत कळतांच ते क्यान्टर्बरीस निघून गेले, तेथें भजन करायाचे घरांत बेकेट गुडघे टेंकून ईश्वराची प्रार्थना करीत आहे अशी संधी पाहून त्यानीं त्याचा वध केला, असें हें दुष्ट कर्म राजानें करविलें खरें; पण तें त्याच्या मनास फार जाचूं लागलें. मग त्या हत्येचा दोष जावा म्हणून राजानें त्या बेकेटाचे कबरेवर तप करायाचें योजिलें, परंतु तसल्या तपानें त्यास काय होणार. तो राजा क्यान्टर्बरीस जातेवेळेस भजनाचें घर दृष्टीस पडतांच घोड्यावरून खालीं उतरे, आणि जोड्यावांचून चालत गांवांत जाऊन त्या बेकेटाच्या कबरेजवळ जाई. बेकेट मेल्यानंतर त्यास लोक साधु असें मानून त्याचे यात्रेस जाऊं लागले, क्यान्टर्बरीचें भजनगृह आतां पहायास कोणी गेलें असतां तेथें झिजलेले दगड दृष्टीस पडतात. बेकेटाचे कबरीजवळ पूर्वी यात्रेकरू प्रार्थना करायास जात, ते तेथें गुडघे टेंकून प्रार्थना करीत, त्यांचे गुडघ्यांनीं ते दगड झिजले आहेत. अहः हः धर्माचा भ्रम होऊन कांहींएक चाल पडून गेली तिजविषयीं अशी अतिशय भक्ति असावी काय ? अशी भक्ति तर एक्या सत्य धर्माविषयींच असावी.

दुसऱ्या हेन्रीचे वेळीं इंग्लीश लोकांस ऐर्लंड मि-

व्हाली ती, त्या दिवसापासून तर आजपर्यंत त्यांजकडेस-
च आहे, त्यावेळीं ऐरीशलोक मोठे अज्ञानी होते, नंतर
ते फार सुधारले आणि आतां ते बहुतकरून चांगले गु-
णवान् झाले आहेत, परंतु गोरगरिबांत अझून अज्ञा-
नी आहेत त्यांस चांगल्या रीति भाती लाविल्या असतां
बरें होईल. तुह्मी फेर ह्मणजे सुंदर रोसामांड इची गोष्ट ऐ-
किली नसेल तर ती सांगतों. ती स्त्री या हेन्री राजाचे
वेळीं होती. असें झालें कीं हेन्री राजानें इलीआनरची
संपत्ती पाहून तिशीं लग्न केलें, पाहिलें असतां असें
त्यानें करूंनये, पण तिशीं लग्न केलें त्यापेक्षां त्यानें
परद्वार नकरितां तिशींच रतावें, तर तसें नकरितां तो
रोसामांड क्लिफर्डेशीं रत झाला आणि ती आपले राणी-
चे दृष्टीस पडूं नये ह्मणून तिला लपवून ठेवायास आ-
क्सफर्डमांतीं उडस्टाक् ह्मणून उपवन आहे त्यांत एक
घर बांधिलें. तें असें असे कीं ज्याला अनेक मार्ग व ज्यांत
शिरलें असतां वाट चुकून ठिकाण लागूं नये. असेंही अ-
सतां त्या राणीनें हें एकांत स्थळ शोधून काढिलें. ती
हातीं सूत धरून त्याचे आधारानें त्या घरांतील ज्या ए-
कांत एक वाटोळ्या वाटा होत्या त्या सर्वांतून पार प-
डून त्या रोसामांडची लपून रहावयाची जागा होती
तेथें जाऊन पोंहचली, आणि तिणें संगाती एक कटार
व विषाचा प्याला आणिला होता तीं कटार रोसामांड-
चे उरावर ठेऊन तिला तें विष पाजून मारून टाकिलें.
यामाणें रोसामांडनें राज्याच्या छंदीं लागून जो व्य-
भिचार आरंभिला होता त्याचें पारिपत्य त्या निर्दय
राणीचे हातून घडलें. आणखीं बहुधा असें घडतें कीं
एकाच्या दुष्कर्माचें पारिपत्य करायास ईश्वर को-
ण्या दुसऱ्यास उभें करितो.

या हेन्री राजास तरी याच्या मुलांनीं फार दुःख दिलें. त्यां अवघ्यां जणांनीं त्याच्या राज्यांत बंडें केलीं तेणेंकरून त्या राजास ह्मातारपणीं फारच खेद झाला. कसाही मनुष्य असला आणि त्याचीं पोटचीं मुलें दुष्ट निघून त्याजवर उठलीं तर त्यास 'कदापि सुख होत नाहीं. याजकरितां खिस्ती लोके आपले मुलांस ह्मणतात कीं बाबा तूं चांगला खिस्ती झालास तर जसा मला आनंद होईल तसा राज्यमिळालें असतांही आनंद होणार नाहीं. या हेन्री राजाचे पुत्र अमर्याद निघाले त्याजवरून त्यास परम त्रास येऊन तो उदास झाला होता. त्याचा जान् ह्मणून मुलगा होता तो केवळ अयोजक असे, त्याजवर राजाची फार ममता असे, तोही दुसऱ्या बंडखोरांस सामील होऊन राजाबरोबर बंड करूं लागला. हें पाहून राजास फारच खेद झाला, मग त्यास असें झालें कीं कोणत्या गोष्टीनें आनंद होऊंनये. पोटचीं पोरें त्रास देऊं लागलीं, शरीरांत सुख ह्मणून राहिलें नाहीं, असें होतांच त्यास लौकरच देवाज्ञा झाली,

त्याचा काळ सन अकराशें नव्याशींत झाला

११८९. त्याचें वय पंचावन वर्षांचें होतें व त्यानें चौतीस वर्षें राज्य केलें. बहुतेक बखरी लिहिणारे सांगतात कीं हा राजा फार चांगला होता, परंतु असें त्यांचें सांगणें संभवत नाहीं, इतकेंच कीं हा राजा राज्यकारभार चालवायास चांगला होता आणि स्वभावानें चांगला प्रिय असे. वरकड पाहिलें असतां यानें बेकेटास मारविलें व आपले बायकोस टाकून तो रोसामान्डशीं आसक्त झाला, यामणीं यास दोन दोष घडले, एक हत्या, व एक व्यभिचार, असें असतां हा चांगला होता ही गोष्ट

कशी संभवेल. जे कोणी स्तुतीस योग्य नाहींत अशांची स्तुति वृत्तांत ग्रंथ कर्त्तें करितात, हें त्यांस उचित नव्हे लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

स्टिफेनानंतर कोण राजा झाला ?

दुसरा हेन्री कोणत्या वर्षीं राज्य करूं लागला त्यावेळीं क्यान्टर्बरीचा मुख्य धर्माध्यक्ष कोण होता ?

थामस आबेकेट कोणत्या प्रकारचा पुरुष होता ?

तो कोणत्या रीतीचीं वस्त्रें पांघरे ?

तो काय काय खात असे ?

तो आपल्या शरीरास फार दंड करीत असे काय ?

बरें असा शरीरास दंड करून घ्यावा असें ख्रिस्ती शास्त्रांत सांगितलें आहे काय ?

बेकेट नम्र असे किंवा अभिमानी असे ?

पाद्री लोकांचें माहात्म्य वाढवावें असें बेकेटाचें मनांत वागूं लागल्यावरून राजास वाईट वाटलें काय ?

हा बेकेट नाहींसा होवो असें राजा बोलिला काय?

या बोलण्यावरून कोणी दर्बारी लोकांनीं कांहीं उद्योग केला काय ?

त्यांनीं कोणता उद्योग केला ?

बेकेटाचा वध कोठें केला ?

बरें हें कर्म करून राजास समाधान वाटलें काय ?

राजाचे चित्तास जी खिन्नता झाली ती दूर करायास राजानें काय केलें ?

क्यान्टर्बरीस भजन करावयाचे जागेजवळ बेके-

टाची कबर आहे तेथें यात्रेकरी भक्ति करावयास जात न्याची कांहीं खुण आहे काय ?

कोणते राजाचे वेळीं ऐर्लांड इंग्लीश लोकांच्या स्वाधीन झाली ?

त्यादिवसापासून तर आजपर्यंत ती त्यांजवळच आहे काय ?

फेर रोसामांड कोण होती ?

तिला कोणी मारलें ?

कोठें मारलें ?

हेन्री राजाचे मुलगे हेन्री बरोबर कसे चालले ?

त्यांचे वाईट चालीवरून राजास मोठें दुःख झालें होतें काय ?

दुसरा हेन्री कोणते वर्षीं मरण पावला ?

त्याचें वय किती वर्षांचें होतें ?

त्याणें किती दिवस राज्य केलें ?

वृत्तांत ग्रंथकर्त्ते यांनीं हेन्री राजास बरें म्हटलें आहे किंवा वाईट म्हटलें आहे ?

त्यानें मोठे मोठे दोष केले होते काय ?

---

## पत्र ७.

चिरंजीव०- विशेष मागील पत्रांत तुह्मास दुसऱ्या हेन्रीचा वृत्तांत लिहून पाठविला, आतां त्या राजानंतर त्याचा लेक पहिला रिचार्ड राज्य करूं लागला, तें वर्तमान कळवितों. हा मोठा शूर होता म्हणून रिचार्ड सिअरडेलैअन म्हणजे सिंहाचे मनाचा रिचार्ड असें यास फ्रेन्च भाषेंत बोलत. या राज्याच्या लढाया बहुतकरून पुण्यभूमींत राहिलेले जे अन्यधर्मी लोक त्यांज-

बरोबर होत असत. या लढाईस धर्मार्थिक युद्ध स्ह-णतात, यांजविषयीं म्या पूर्वी तुह्मास कळविलें आहे. रिचार्ड राजा आणि फ्रान्स देशींचा दुसरा फिलिप रा-जा असे दोघेजण धर्मार्थिकयुद्धास जावयास निघा-ले, त्यावेळीं या दोघांच्या फौजेंत एक लाख लढाऊ माणसें होतीं. हे उभयतां त्या पुण्यभूमीस गेले, पण फ्रा-न्स देशींचा राजा तेथें बहुत दिवस नराहतां आपल्या शरीरीं समाधान नाहीं असें निमित्त करून आपलें दा-हा हजार लश्कर इंग्लंडाचे राजाचे कुमकेस ठेऊन ते-थून निघून आपल्या घरीं परत आला. इकडे रिचार्ड्ड-बरोबर जे सारासनी ह्मणून अन्यधर्मीलोक युद्धास उ-भे राहिले न्यासर्वास त्या रिचार्डानें जिंकिलें, त्यांचा एकेही लढाईत जय होऊं दिल्हा नाहीं. मग रिचार्डा-नें आरकालशहर व बहुतेक दुसरीं लहान लहान शहरें घेतलीं, आणि यरुसालीम शहरास वेढा घालून तें घ्यावें असा त्याचा बेत होता, परंतु पहातो तों आ-पली फौज दुष्काळ सोसून मेहनत व लढाई करून जर्जर झाली, ह्मणून त्या वेळीं त्यानें लढाई बंद क-रण्याचा उद्योग आरंभिला. तशांत आमच्या हातून ख्रिस्तीलोकांस उपद्रव होणार नाहीं असा त्या अन्य-धर्मी लोकांनींही करार केला; त्याजवरून तीन वर्षें लढाई तकूब केली. या पहिल्या रिचार्डाची एक अशी चमत्कारिक गोष्ट सांगतात कीं, हा यात्रेकऱ्याचा वेष घेऊन जर्मनीचे मार्गानें आपल्या देशीं परत जात होता, त्यावेळीं आस्त्रिया देशींच्या ड्युकानें यास धरून अट-केस टाकिलें. यावें कारण असें कीं, तो अस्त्रियाचा ड्यु-क पुण्यभूमीस युद्धास गेला होता, तेव्हां या राजानें आपली सेना त्या ड्युकाचे स्वाधीन केली होती; हा

राजा शूर असे खरा पण मोठा अभिमानी असे, आणि याचे जें मनांत येई त्यास कोणी आड आलें म्हणजे यास आवरेना असा क्रोध येई. असल्या प्रकृतीवरून दुसऱ्या सेनापतीं बरोबर या राजाचे मोठे मोठे तंटे होत, आणि त्या आस्त्रियाचे ड्युकाबरोबरही नित्य कटकट होई. तें त्या ड्युकानें मनांत ठेऊन राजा त्याचे राज्यांत येतांच त्यास कैद केलें; पहा ज्याचे कीर्तीनें सर्व पृथ्वी व्यापिली आसा राजा पायीं बिडी पडून कैदेंत पडला. इंग्लीश लोकांची प्रीति या राजावर फार असे, यास अशी अवस्था प्राप्त झाल्याचें वर्तमान त्यांस बहुतां दिवसांनीं कळलें. असें झालें कीं या राजास जेथें अटकेस टाकिला होता, तें ठिकाण एक्या गरीब फ्रान्स देशींच्या सारंग्यानें शोधून काढिलें. तो सारंग्या त्या तुरंगाजवळ येऊन इंग्लांडचे राजास जी गत आवडत असे ती वाजवूं लागला, तें ऐकून राजानें तुरंगांतून तशीच गत वाजविली; याजवरून इंग्लिशलोकांनीं राजाचा शोध लावून हा आपला राजा असें जाणून त्याकरितां तीस लाख रुपये तेथील ड्युकास भरून त्या राजास सोडविलें.

पहिला रिचार्ड राजा सुटून आपल्या देशीं आला त्याजवरून त्याचे प्रजेस मोठा आनंद झाला, तेसमयीं त्याला मोठे समारंभानें लंडनांत आणून विंचेस्टरांत पुनः राज्याभिषेक केला. हा देशांत नव्हता तोंपर्यंत राजकारभार याचा भाऊ जान् चालवीत होता, आणि राजा त्या ड्युकाचे कैदेंतून मोकळा न होई असा उद्योग या दुष्टबंधूनें आरंभिला होता; परंतु राजाचा थोरपणा असा कीं तें कांहीं मनांत न धरितां यानें त्याची क्षमा केली.

हा रिचार्ड मरतेवेळीं एक चमत्कारिक गोष्ट घडली ती अशी. रिचार्डाकडेस जो फ्रान्स देशींचा मुलूख होता तेथें एक्या माणसास आपल्या शेतांत द्रव्य सांपडलें, त्यांतलें त्यानें कांहीं रिचार्डाकडेस पाठविलें, त्याजवरून रिचार्डास वाटलें कीं मी राजा ह्मणून तें अवघें द्रव्य माझें, असें जाणून ह्या तें अवघें द्रव्य मागूं लागला. त्याजवरून तें द्रव्य फ्रान्सदेशीं एक्या किल्यांत ठेविलें, तेथें रिचार्डानें जाऊन त्या किल्याभोंवता वेढा घातला. मग चौथे दिवशीं घोड्यावर बसून त्या किल्ल्याभोंवता फिरत आहे तों त्या किल्ल्यांतून एक तीर येऊन त्याच्या खांद्यास लागला,तेणेंकरून जखम पडली. तीस चांगला उपचार झाला नाहीं ह्मणून तो घाय पिकून हा मरूं लागला. त्यावेळीं ज्या मनुष्यानें तीर मारिलाहोता त्यास जवळ आणवून त्याचा अपराध क्षमाकरून मुक्त करावें ह्मणून त्यानें आज्ञा केली, परंतु त्याचे जे दर्बारी लोक होते त्यांस क्रोध येऊन त्यांनीं तो मनुष्य राजापासून निघून जातांच त्याचा वध केला.

रिचार्ड राजा नऊ वर्षें राज्य करून अ- ११९९.
कराशें नव्याणवांत मरण पावला, याच्या पोटीं कांहीं नव्हतें ह्मणून याचा भाऊ जान् त्यास तें राज्य मिळालें. तुह्मास जें मी लिहून पाठवितों त्याचें तुह्मीं स्मरण ठेवीत जावें, ह्मणजे मला आनंद होऊन आणखीही वृत्तांत मी पाठवीत जाईन. लोभक० हे आशीर्वाद.

---

## प्रश्न.

दुसऱ्या हेन्रीच्या मागें इंग्लांडाचा राजा कोण झाला ?

पहिला रिचार्ड कोणत्या वर्षीं राज्य करूंलागला ?
यास फ्रेंच भाषेंत काय बोलत ?
ह्या नावाचा अर्थ काय ?
न्यास असें कां बोलत ?
रिचार्डानें बहुतकरून लढाया कोठें केल्या ?
कोणत्या लोकांबरोबर लढाया केल्या ?
ह्या लढायांस काय म्हणतात ?
रिचार्डाबरोबर धर्मार्थिक युद्धास कोण गेला होता ?
इंग्लीश व फ्रेंच यांचें लढाऊ लश्कर किती होतें ?
फ्रान्स देशींचा राजा पुण्यभूमीस बहुत दिवस राहिला होता काय ?
न्यानें रिचार्डाचे कुमकेस कांहीं आपली सेना ठेविली होती काय ?
किती ठेविली होती ?
ह्या लढाईंत रिचार्डास जय मिळाला कीं नाहीं ?
न्याणें कोणतें शहर घेतलें ?
मग न्यानें लढाई कांहीं दिवस बंद करण्याचा करार कबूल केला कीं नाहीं ?
किती दिवस लढाई करूं नये म्हणून करार केला होता ?
रिचार्ड राजा आपल्या घरीं जात असतां न्यास मार्गांत काय मात झालें ?
रिचार्ड पुण्यभूमीस होता तेव्हां तो आस्त्रियाच्या ड्युकाबरोबर कसा असे ?
राजास कैदेंत ठेविलें होतें तें ठिकाण कसें शोधून काढिलें ?
राजाची सुटका कशी झाली ?

इंग्लीश लोकांनीं आपले राजास सोडवावयास किती ऐवज दिला.

रिचार्ड जेव्हां देशांत नव्हता तेव्हां इंग्लांडचा राजकारभार कोणी चालविला ?

जानूची वर्त्तणूक कशी असे ?

रिचार्ड कशानें मरण पावला ?

हें कोणत्या वर्षीं झालें ?

रिचार्डास कांहीं संतति होती काय ?

रिचार्डाच्या मागें कोण राजा झाला ?

पहिल्या रिचार्डानें किती वर्षें राज्य केलें ?

तो कोणत्या सालीं मरण पावला ?

---

## पत्र ८.

चिरंजीव ०- विशेष मागील पत्रांत तुह्मास कळविलें कीं, रिचार्डाच्या मागें त्याचा भाऊ जान् राज्य करूं लागला. आतां त्याच्या वेळीं काय झालें ते ऐका. असें आहे राजाच्या पोटचा वारस नसला, भावाचा मुलगा किंवा तसाच कोणी जवळचा दायाद असला, तर त्यास तें राज्य मिळावें अशी पूर्वीं चाल होती, व हल्लीं ही तशीच चाल आहे; परंतु या चालीविषयीं हल्लीं जसा निवाडा झाला आहे तसा पूर्वीं झाला नव्हता, ह्मणून कोणी राजा मरण पावला ह्मणजे त्या राज्याविषयीं तंटे पडत. रिचार्डाचा दुसरा भाऊ जिओफ्रि हा जानापेक्षां वडील, हा मरण पावला होता, त्याच्या पोटचा आर्थर ह्मणून एक बारा वर्षांचा मुलगा होता; त्यास हा वडील बंधूचा मुलगा विद्यमान असतां जान् त्या राज्याचा वारस नव्हे, तो मुलगा वारस. तशांत जानूचा

स्वभाव क्रूर व परपीडक असे, ह्मणून त्यास लोक त्रास-
ले होते, त्याजवरून जानास वाटूं लागलें कीं, माझ्या हा-
तीं जें राज्यपद आलें आहे तें समयास मजपासून का-
ढून त्या पदाचा जो वास्तविक वारस आर्थर, त्यास दें-
तील. असें मनांत आणून त्या लहान मुलास मारून
टाकावें असा जानू राजानें बेत करून थोडक्याच दि-
वसांत तो दुष्ट संकल्प सिद्धीस नेला. त्या वेळीं असें झालें
कीं त्या मुलास ज्या ठिकाणीं बंद केलें होतें तेथें त्याचा वध
करावयास राजानें मारेकरी पाठविले, ते केवळ निर्दय
दुरात्मे होते, असें असतांही तें प्रिय बाल असें गोड बो-
लूं लागलें व कळवळ्या यावयाजोगें पाहूं लागलें कीं तेणें-
करून त्यांच्या कठोर अंतःकरणासही द्रव आला. परंतु
त्यांतून एक दुष्ट त्या मुलाचे डोळे काढून निघून गेला,
तेव्हां तें गोजिरवाणें मूल ज्या खोलींत होतें तेथें एकटेंच
राहून मरणाच्या भयामुळें एके खिडकींतून बाहेर निघूं
लागलें, तों त्या माडीवरून खालीं पडून त्याचा चुराडा
होऊन तें मरून गेलें. कोणी सांगतात कीं तें मूल असें
मेलें नाहीं, त्यास राजानें आपल्या हातानें मारिलें, अ-
से त्याजविषयीं नानाप्रकारचे लेख आहेत. परंतु शेक्-
स्पियर ह्मणून जो कवि झाला, त्यानें जानू राजावर
एक नाटक रचिलें आहे, त्यांत वर लिहिलेलें वर्तमान
सांगितलें आहे. सारांश आर्थराचे वधास त्याचा दुष्ट
चुलताच कारण होय. याप्रकारें जानू राजा घोर पात-
क आचरून ज्याचें भय होतें त्यास दूर करून सिंहा-
सनारूढ झाला, परंतु अशा दोषेंकरून जें राज्य मिळ-
विलें त्याचा उपभोग सुखानें कांहून घडेल. जानू राज्य
करीत असतां त्यास नानाप्रकारचीं दुःखें प्राप्त झालीं.
त्याच्या मजा तर नित्य त्याजवर उठून बंडें माजवीत

असत; त्याचे वेळीं मागूनाचार्टा ह्मणून एक नियमपत्र झालें, तेणेंकरून इंग्लीश लोकांचे सत्तेचें रक्षण झालें. जान् राजाचे मनांतून असें असे कीं, लोकांकडेस कांहींएक सत्ता असूंनये, राजा जसें प्रजांस करील तसें त्यांनीं सोसून उगीच असावें,याजविषयीं जान् राजाचा नेहेमी उद्योग चालला होता. त्यावेळींचे बेरन् ह्मणजे मानकरी लोक होते, तें आपल्या स्वाधीन जे लोक असत त्यांस लढाईचें काम शिकवून ठेवीत, आणि कोठें प्रसंग पडल्यास त्यांस भांडायास पुढें करीत. यामकारें या मानकरी लोकांची तयारी असे, आणि हे स्नेहभाव सोडून आपआपल्यांत नेहेमी भांडत असत आणि किल्ल्यास वेढे घालून एकमेकांवर हल्ला करीत. या मानकऱ्यांस असें भय असे कीं राजा जर ही नवी कानू काढून आमचें ऐश्वर्य व थोरपणा यांस अपाय करील, ह्मणून सर्वजण एकत्र होऊन राजा कांहीं नवीन करूं लागला ह्मणजे न्यास अडवीत. हे असे होते पण तेणेंकरून लोकांचें फार हित झालें. या मानकऱ्यांनीं त्या मागूनाचार्टात राजानें राज्य अमूक प्रकारें चालवावें, राजाचे मनांत भलतेंसेंच वेडें वांकडें येईल त्याप्रमाणें त्यानें करूंनये, लोकांचें व आपलें जेणेंकरून बरें होईल तेंच करावें, असे नियम करून ठेविले. नंतर स्टेनीस व विन्डसर यांच्या मध्यभागीं रनिमीड ह्मणून जी विस्तीर्ण जागा आहे तेथें राजा व सर्व मानकरीलोक हे, आपआपले वेष व कवचें यथास्थितपणें घालून मिळाले. मग तेथें त्या चार्टरावर राजानें सही केली. हा चार्टर सन बाराशें पंधरांत झाला. यस कोणी रनिमीडचा चार्टर ह्मणतात, कोणी लातीन भाषेंत मागूनाचार्टा ह्मणजे मोठा कायदा असेंही ह्मणतात. १२१५.

या प्रकारें चार्टर झाला त्याजवरून राज्यांत चांगला बंदोबस्त होऊन सुरळीत व निश्चितपणें चालावें, तें तसें चाललें नाहीं, कलह व दुष्ट कर्में करावीं असें मनांत वागत असतां बाह्यात्कारें चार्टर करून त्याजवर सह्या घातल्या ह्मणून राज्यांत व्यवस्था आणि सुख उत्पन्न होणार होतें काय ? राजाबरोबर मानकरी लोकांचे पहिल्या प्रमाणेंच कलह होऊं लागले आणि न्या मोठ्या चार्टरांत जे जे कायदे लिहिले होते त्यांचा विसर पडून ते तसेच राहिले. त्यावेळीं त्या मानकऱ्यांनीं निरुपाय होऊन फ्रान्स देशींच्या राजास निरोप पाठविला कीं, आपण या प्रसंगीं येऊन आमचें साहित्य करावें. असें त्यांनीं केलें खरें पण हा अगदींच नादान विचार, जर कदाचित् तें राज्य त्या दुष्ट जान राजाच्या हातून निघतें तर ज्यास इकडची माया ममता नाहीं अशा परदेशींच्या राजाच्या हातीं पडतें, एकून फळ सारिखेंच झालें असते. परंतु त्या जानराजासच मरण आलें तेणेंकरून न्या सर्व गोष्टी तशाच राहिल्या, असें झालें. हा राजा मोठी फौज घेऊन लिन्नाहून लिन्कन्शहराकडेस समुद्राचे कांठानें जात होता, तेव्हां न्या मार्गात भरतीच्या वेळीं पाणी पुष्कळ होत असतें असें न्यास ठाउकें नव्हतें, ह्मणून भरती येऊन न्याच्या ज्या गाड्या येत होत्या न्या व सामान व पैसाटका सर्व बुडून गेलें व आपण मोठ्या संकटानें वांचला. मग स्विन्स्टेडच्या मठास जाऊन पोंहचला आणि मार्गांत हानि झाल्याचा फार खेद करूं लागला, तेणेंकरून ज्वर येऊन तो केवळ जर्जर झाला. तेथून दुसरेदिवशीं न्यास स्लिफर्डास नेलें, स्लिफर्डाहून निवर्कास नेलें, तेथें न्याचा सनूबाराशें सोळांत काळ झाला.

१२१६.

न्यास पन्नास वर्षें होऊन एकावन्नावें वर्ष लागलें होतें न्यानें सुमारें सतरा वर्षें राज्य केलें.

धूम ह्मणून एक वृत्तांतग्रंथ कर्ता झाला त्याणें जान राजाचें वर्णन केलें आहे तें असें. जानराजा पाहिला असतां केवळ दुर्गुणाची खाणी होय. हा नीच तसाच, निंद्य तसाच, आपल्या घाताविषयीं सारिखा व लोकांच्याही घाताविषयीं सारिखा. गांडू, निरुद्योगी, मूर्ख, हलका, विषयी, कृतघ्न, विश्वासघातकी, बलात्कारी, क्रूर, असा असे. आणि हे सर्व दुर्गुण याचे किंत्येक कर्मांत स्पष्ट दिसून येत. आपला बाप, भाऊ, पुतण्या, आपल्या प्रजा, यां सर्वांबरोबर यानें एकसारखी अतिदुष्टाई केली, याचा भाऊ वारला तेणेंकरून यास जें राज्य मिळालें तितकें कोणत्याही इंग्लीश राजास मिळालें नव्हतें. परंतु फ्रान्स देशांतील चांगलीं चांगलीं नांदतीं संस्थानें, जीं याचे वडिलांचीं बहुत दिवसांची मिळकत, याच्या वाईट वर्तणुकीवरून याच्या हातून गेलीं. आपलें राज्य होतें तें रुमच्या पोपाच्या हातीं दिलें. याच्या देखत याची राजसत्ता नवीन कायदा होऊन उणी झाली, व राज्यांत ज्या फळ्या होत गेल्या त्यामुळें तर फारच उणी झाली. शेवटीं परदेशींच्या राजाच्या हातून याचा अगदीं नाश होऊन आपल्या आयुष्याचे दिवस बंदीशाळेंत घालवावे अथवा, शत्रुपाठीस लागल्यामुळें परराज्यांत आश्रय पहात भडकावें अशी संधी आली होती. इतक्यांत हा मरण पावला. लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

पहिल्या रिचार्डाच्या मागें इंग्लंडाचा राजा को-

ण झाला ?

कोणत्या वर्षीं जान्‌राजा राज्य करूं लागला ?

जानाचें व रिचार्डाचें काय नातें ?

जान् त्या राजाचा वास्तविक वारस होता काय ?

तर कोण होता ?

जान् स्वभावानें कसा होता ?

त्यानें कोणता दुष्ट विचार योजिला होता ?

मग त्यानें त्या घातुकसंकल्पासमाणें केलें काय ?

आर्थराच्या मरणाचें वर्त्तमान सांगावें ?

जानानें अन्याय दोष इहीं करून जें राज्य मेळविलें त्याचा अनुभव सुखानें घेतला काय ?

मागूनाचार्टा म्हणून काय आहे ?

या मोठे चार्टरावर कोणे ठिकाणी सही केली ?

रनिमिड कोठें आहे ?

त्या चार्टरावर राजाकडून कोणी सही करविला ?

कोणत्या वर्षीं सही केली ?

मोठे चार्टरांत जे नियम ठरविले होते त्यासमाणें राजा चालला काय ?

मानकरी लोकांनीं आपल्या सहायार्थ कोणास निरोप पाठविला होता ?

जान् राजा कशाने मेला ?

तो कोठे मेला ?

तो कोणते वर्षीं मेला ?

त्यानें किती वर्षें राज्य केलें ?

जान् राजाचे गुण कसे होते.

# पत्र ९.

चिरंजीव०. विशेष तुह्मास जो थोडा थोडा इंग्लं-डचा वृत्तांत लिहून पाठवावा त्याचें तुह्मी चांगलें चित्त देऊन स्मरण ठेवितां ह्मणून त्याच्या पुढला वृत्तांत लि-हून पाठवितों. जान् राजा सन बाराशें सोळांत मरण पावला, त्या वेळीं त्याचा मुलगा तिसरा हेन्री नऊ व-र्षांचा होता. हा त्या राज्यपदाचा अधिकारी, परंतु त्याच्या बापाच्या अव्यवस्थेमुळें तें राज्य फ्रेन्च रा-जाच्या हातीं गेलें होतें. मग हेन्रीचे जे हितकर्ते होते त्यांनीं अनुकूल होऊन कित्येक ज्या अडचणी होत्या त्या दूर करून व कांहीं भांडण करून हेन्रीस तें राज्य प्राप्त करून दिल्हें.

पूर्वी जान् राज्यानें लोकांस जसा मोठा चा-र्टर करून दिला होता, त्याचप्रमाणें या तिसऱ्या हेन्री राजानें लोकांस चार्टर करून दिला. त्यांत त्यांला कित्येक गोष्टीची मोकळीक व कित्येक अधिकार ठरा-वून दिले. याजवरून असें वाटूं लागलें कीं हा राजा चांगला व यास प्रजांच्या सुखाची इच्छा आहे, परंतु नंतर असें अनुभवास येऊं लागलें कीं, त्या काळींच्या बखेडखोर प्रजांस वर्त्तविण्याविषयीं हा राजा असमर्थ. असें होतांच त्यास लौकरच अडचणी व संकटें प्राप्त होऊं लागलीं; तो जसा जसा वाढत गेला तसा तसा शाहणा व्हावा तो झाला नाहीं. जे पुरुष अयोग्य अशांस अधिकार व पदव्या द्याव्या, त्यामुळें असें व्हा-वें कीं त्यां त्यां अधिकारांचीं कामें नीट होऊंनयेत, लोकांस मोठा त्रास यावा, परस्परें द्वेष होऊं लागावा.

असें बहुत वर्षें चाललें. तशांत राजानें पुढें होऊन ज्या लढाया केल्या त्यांस पुष्कळ खर्च झाला, तो सर्व राज्यांतून द्यावा लागला, आणि त्या लढायांतून एकींतही जय मिळाला नाहीं. ही अव्यवस्था पाहून सर्व लोकांस त्रास आला. त्या संधीस लेस्टर्चा अर्लसिमन मान्टफर्ड ह्मणून एक मोठा अभिमानी पुरुष होता, तो लोकांची एक मोठी सबळ फळी जमवून या राजावर उठला, आणि पहिलेच लढायीस त्यानें राजास व त्याचे लेंकास धरून कैद केलें. राजाच्या लेंकाचें नाव एडवर्ड, हा लहान असून चांगला शूर असे. तेव्हां याचे मनांत असें वागूं लागलें कीं आपण मोकळें होऊन आपलें राज्य सोडवावें, मग त्यानें त्या बंधनापासून निघून जायाचा उद्योग मांडिला. याची एक अशी चमत्कारिक गोष्ट सांगतात कीं, हा मान्टफर्डाच्या स्वाधीन, असतां यास केवळ तुरंगांत बंद करून ठेविलें नव्हतें. यास घोड्यावर बसून बाहेर फिरायास मोकळिक असे, आणि यानें पळून जाऊंनये ह्मणूनमात्र याचे मागें पहारा असे. एके दिवशीं आपण घोड्यावर बसून फिरायास निघाला आहे, बरोबर पहारा आहे इतक्यांत त्यां पहारेकऱ्यांस बोलूं लागला, तुह्मी पैज घालून घोडीं सोडा, आणि कोणाचा घोडा पार जातो हें मी येथें उभें राहून पाहतों. त्याजवरून त्यां पहारेकऱ्यांनीं आपले घोडे सोडून दिले, ते फार धावून दमून गेले, इतक्यांत त्या राजपुत्रानें आपला चांगला हुशार घोडा पिटाळून कूच केलें, आणि त्यां पहारेकऱ्यांस त्यांच्या थकलेल्यां घोड्यांसहित एकमेकांचे तोंडाकडेस टकमक पहायास लाविलें.

मग एडवर्डानें जाऊन आपल्या कडल्या लोकांस

मिछून फौज जमा केली, आणि आपल्या बापास सोड-
वावें व आपलें राज्य आपल्या स्वाधीन करून घ्यावें.
असें मनांत आणून हा त्या मान्टफर्डावर हल्ला करायास
निघाला. मग यांचें आणि मान्टफर्डाचे फौजेची गांठ
पडतांच रक्ताचे पूर वाहात अशी लढायी झाली. त्या
लढायींत मान्टफर्ड पडला आणि एडवर्डास जय मिळा-
ला. एडवर्डाचा बाप तिसरा हेन्री राजा यांचें तर के-
वळ म्हातारपण झालें होतें, असें असतांही हा राजा
याच्याच लेंकाच्या हातून मेला जावा म्हणून यास मा-
न्टफर्डानें लढायींत नेऊन आघाडीस ठेविलें होतें, आणि
यास चिलखत घातलें होतें. त्यावेळेस असें घडलें
कीं, या राजाच्या एक्याशिपायानें यास जखम करून
मारून टाकावें इतक्यांत यानें हांक मारिली," अरे अरे
मी राजा."हाशब्द त्या एडवर्ड राजपुत्राचे कानीं पडतांच
त्या राजपुत्रानें आपल्या बापास ओळखिलें, आणि झ-
डकर त्याकडेस घोडा फिरवून त्यास आपल्या डेऱ्यांत
नेऊन जी जखम लागली होती, ती बांधिली; मग राज-
बरा होऊन बहुत वर्षें जिवंत होता.

या तिसऱ्या हेन्री राजाचा काळ सन चाराशे बाहात्तरांत झाला. यानें ५६ वर्षें राज्य केलें. ति-
सऱ्या जार्जानें मात्र इतकीं वर्षें राज्य केलें; १२७२ न्या वांचून इतके दिवस कोणत्याही इंग्लीश राजानें राज्य केलें नाहीं. ज्यानीं पन्नास वर्षें राज्य केलें असे इंग्लांडदेशीं तीन राजे झाले. यांतील प्रत्येकाच्या ना-
वांस तिसरा तिसरा असें उपनाव असतें.त्यांचीं नावें; तिसरा हेन्री, तिसरा एडवर्ड, तिसरा जार्ज यामाणें त्यां तीन राजांची गोष्ट समजून घेतली असतां पन्नास वर्षांवर राज्य केलें त्या राजांचे स्मरण चांगलें राहील.

या तिसऱ्या हेन्री राजाच्या वेळापासून कायदे करण्याविषयीं पार्लियामेंट ह्मणजे प्रतिनिधीच्या सभा होऊं लागल्या, त्याच्या पूर्वी मानकरी लोकांच्या राजांबरोबर नित्य लढाया होत असत, आणि कामकाजाचे बखेडे पडले असत. तेव्हां चांगलें सरळ चालावें ह्मणून दरपरगण्याहून व दरशहराहून लोकांचे प्रतिनिधि ह्मणजे त्यांजकडील बोलणें बोलणारे राजसभेस येऊं लागले. त्याजवरून असें झालें कीं, राजकारभार तीन अधिकाऱ्यांच्या हातून होऊं लागला. ते अधिकारी, एक राजा, दुसरी लार्डस् ह्मणजे मानकऱ्यांची सभा, तिसरी कामन्स् ह्मणजे लोकांचे प्रतिनिधि यांची सभा, अशा रितीनें राज्यकरणें ही राज्य करण्याची सर्वापेक्षां उत्तम पद्धति, आणि आजपर्यंत इंग्लांड देशीं याचपद्धती प्रमाणें राज्य चालत आहे. ज्या राज्यांत एकट्या प्रभूच्याच ठायीं सत्ता असती तें प्रभुराज्य. ज्या राज्यांत मानकऱ्यांचे ठायीं सत्ता असती तें मानकऱ्यांचे राज्य; व ज्या राज्यांत प्रजाच्याठायीं सत्ता असती तें प्रजाराज्य. याप्रमाणें राज्याच्या तीन पद्धति आहेत, त्यांतून कोणेएकयाच पद्धतीप्रमाणें राज्य करूं लागलें असतां मोठ्या मोठ्या अडचणी व मोठेमोठे अनर्थ प्राप्त होतात; परंतु या तिन्ही पद्धति एकत्र करून राज्य करूं लागलें असतां त्याजपासून हित होतें, आणि त्या तीन पद्धतींतून दर एक पद्धति निर्निराळी घेऊन राज्य करीत असतां ज्या अडचणी होतात त्या मिटून जातात. या तीन राज्य पद्धतींपासून प्रत्येकीं जे लाभ प्राप्त व्हावयाचे ते ह्या तिन्ही एकत्र केल्या असतां होतात, ह्मणून जे सुज्ञ आहेत त्यांनीं ह्या तिन्ही पद्धति एकत्र करून राज्यकारभार करीत असावा, यामकारें रा-

ज्य केलें असतां सर्व प्रकारच्या लोकांचें हित होतें. जर राजा किंवा मानकरी लोक किंवा प्रजा यांतून कोणी एक आपले सत्ते बाहेर वर्तूं लागला, तर न्यास इतर-आड येऊन जें योग्य असेल तेंच करूं देतात.या प्रकारची इंग्लांड देशीं राज्य पद्धति आहे म्हणून इंग्लांड देशींच्या लोकांचा थोर पराक्रम चालला आहे असें सांगतात. पृथ्वीचा नकाशा पाहिला असतां इंग्लांडदेश केवळ लहानशी जागा दिसती, असें असतां या जराशा टापूंत राज्य करण्याची पद्धति चांगली नसती तर इतकें ऐश्वर्य कोठून प्राप्त होतें. इंग्लांड देशांत अशी चांगली राज्यपद्धति आहे; आणि चांगल्या नीतीनें लोकांचे न्याय होऊन त्यांचें रक्षण होत आहे, असें पूर्वी नव्हतें. असे उत्तम राज्य कर्त्ते इंग्लांड देशीं झाले हा ईश्वराचाच अनुग्रह, असें तेथील सर्वांनीं मानून जेणें करून त्या देशाचें उत्तरोत्तर अधिकहित होई असा मार्ग काढीत जावा, आणि प्रजांनीं मतरणा, बंड, तुफान नकारितां ईश्वरानें जे त्यांजवर थोर करून ठेविले आहेत, त्यांचे उपकार स्मरून त्यांचे आज्ञेत वागावें. तुम्ही अथवा मी पाहिलें असतां आपण कशांत कांहीं नाहीं, तथापि आपणही या आपल्या देशींच्या लोकांस कांहीं उपयोग पडायासारिखे आहों. जो चांगला मनुष्य आहे तो कोणत्याही अधिकारावर असला तथापि तो आपल्या देशींच्या लोकांस भूषण होतो, आणि त्याजपासून त्यां लोकांची कीर्ति होती. त्याजवरून ख्रिस्ती लोक असें म्हणतात कीं, जर सर्व मनुष्यें मोठेपणा मिळविण्याचे नादीं लागत नसतीं, भलेपणा मिळविण्याविषयीं उद्योग करितीं, आपल्या धर्मावर भाव ठेवण्याविषयीं झटतीं, आणि एकनिष्ठनें व

नीतीनें आचरण करून सन्मार्गानें वागतीं, तर सर्व लोक सुखी व प्रतापवान् होते, आणि आतां जशा फिर्यादी, उपद्रव होताहेत असे होत नसते; कांतर दुष्ट स्वभावरूप जें कारण तें नाहींसें झालें, मग फिर्यादी, उपद्रवरूप जीं कार्यें, तीं कोठून उत्पन्न होतील. परंतु इह लोकीं सुखी असावें, व लोकांस सुधारून चांगलें करावें याच हेतूनें धर्मांत वागून भलेपणा निळवावा असें समजूनये, हे सर्व लाभ तर ख्रिस्ती मताची प्रवृत्ति झाली असतां अवश्य प्राप्त होऊन ख्रिस्तीजन इह लोकीं आनंद पावतात. परंतु याहून दुसरा एक मोठा लाभ आहे तो असा कीं, इहलोकींच्या सर्व राजांचा राजा असा जो ईश्वर आपला स्वामी, जो दुराचरणाचा शास्ता, त्याची सेवा केली असतां इहलोकीं सुखप्राप्ति होती, तो परलोकीं आपल्या सेवकांस जें केवळ शुद्ध अक्षय सुख देतो, त्या सुखाची प्राप्ति व्हावी म्हणून धर्मावर विश्वास ठेऊन त्याप्रमाणें चालूं लागावें. लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

जान्‌राजा मरण पावल्यानंतर इंग्लांडचा राजा कोण झाला ?

तिसऱ्या हेन्रीचा बाप मेला त्यावेळीं हेन्री किती वर्षांचा होता ?

कोणत्यावर्षीं हेन्री सिंहासनारूढ झाला ?

जान् मरण पावला त्यावेळीं राज्यांत कोणती अव्यवस्था होती ?

लोकांचें बरें व्हावें असें हेन्रीच्या मनांत वागत असे काय ?

चार्टर ह्मणून जो लोकांकरितां कायदा केला होता तो त्यानें पुनः चालू केला काय ?

लोकांस चांगल्यापणीं वर्तवावया जोगी त्याच्या ठायीं हुशारी व शहाणपण होतें काय ?

त्याजवर कोणत्या प्रतापी मानकऱ्यानें उठून बंड केलें ?

मान्टफर्डानें राजाबराबर कलह आरंभिला होता त्यांत मान्टफर्डास जय मिळाला काय ?

मान्टफर्डानें कोणकोणास कैद केलें ?

एडवर्ड राजपुत्र कसा पळून गेला त्याचें वर्त्तमान सांगावें ?

राजपुत्रानें पळून गेल्यावर काय केलें ?

त्या राजपुत्राची मान्टफर्डाबरोबर लढायी झाली काय ?

कोणास जय मिळाला ?

लढायी चालली होती तेव्हां राजा कोठें होता ?

लढायीचे वेळीं राजपुत्राची आणि राजाची कशी भेट झाली तें वर्तमान सांगावें ?

हेन्री राजानें किती राज्य केलें ?

तो कोणत्यावर्षीं मरण पावला ?

ज्यांनीं पन्नास वर्षांवर राज्य केलें असे इंग्लांड देशीं किती राजे झाले, त्यांचीं नावें काय ?

कानु व कायदे करावयाच्या ज्या सभा, त्या इंग्लांडदेशीं यथास्थितपणें केव्हांपासून होऊं लागल्या ?

त्या सभांचे वेळेपासून इंग्लांडदेशीं कोणती राज्यपद्धती चालू झाली ?

---

# पत्र १०.

चिरंजीव०- विशेष मागल्या पत्रांत तिसऱ्या हेन्रीचा
१२७२ वृत्तांत सांगितला तो हेन्री ५६ वर्षें राज्य करून बाराशें बाहत्तरांत मरण पावला. आतां न्याचा लेंक येडवर्ड न्याचें वर्त्तमान लिहितों. येडवर्डानें पुण्यभूमीस जाऊन तेथें सारासेन लोकांबरोबर कांहीं दिवस लढायी चालविली होती. येडवर्डाची स्त्री होती तिची याजवर फार भीति असे, येडवर्ड पुण्यभूमीस असतां कोणी एकानें यास जिवीं मारायाच्या हेतूनें कटार मारिली, न्या कटारीस विषाचें पाणी दिल्हें होतें. तेव्हां न्या कटारीचा घाय पडला होता न्यांतील विष न्या राणीनें आपल्या तोंडानें शोषून आपल्या पतीचा प्राण वांचविला.

येडवर्डानें पुण्य भूमीहून परत येत असतां आपला बाप हेन्रीराजा याच्या मरणाचें वर्तमान ऐकिलें. नंतर हा आपली इलीयेनर पतिव्रताराणी इच्या सुद्धां इंग्लंडदेशीं सुखरूप येऊन, यास सन बाराशें चवऱ्याहात्तरांत राज्याभिषेक झाला. या येडवर्ड राजाविषयीं लोकांस असें वाटत होतें कीं हा मोठा शूर व थोर आहे, ह्मणून हा राजा लोकांस प्राप्त झाल्यामुळें मोठा आनंद झाला. पाहिलें असतां यास लोकानीं मानिलें होतें त्याचप्रमाणें हा राजा मोठा योद्धा व उद्योगी असे, आणि आपलें राज्य चांगलें नांदावें ह्मणून याचा फार यत्न चालिला असे. यानें मागूनाचार्टा ह्मणून जो पूर्वी कायदा झाला होता तो काईम केला तेणेंकरून लोकांस बहुत सत्ता मिळाली, आणि या राजानें लढाया केल्या तेणेंकरून इंग्लीशांचा पराक्रम व थोरपणा फारच प्रसिद्ध

झाला. यानें प्रथमतः वेल्सदेश आणि इंग्लंडदेश हे दोन्ही एक केले तो प्रकार सांगतों. वेल्सदेश तर तुह्मास ठाऊकच असेल, इंग्लंडाचा नकाशा पहावा; तेथें वेल्सदेश त्या नकाशाचे डावेकडेस ह्मणजे इंग्लंडचे पश्चिमेस आहे. हा देश इंग्लंडास लगत आहे, त्याजवरून हा आपल्या स्वाधीन असावा असें येडवर्डाच्या मनांत आलें. त्यावेळीं वेल्साचें राज्य निराळें आणि तें त्याच देशींच्या राजाच्या स्वाधीन असे. वेल्सांत जे रहात असत ते ब्रिटनचे पुरातन लोक, हे असे होते कीं जे पर राजे ब्रिटन घ्यावयास आले त्यांतून कोणींही या लोकांस यांचे मुलकांतून बाहेर घालवण्याविषयीं शकला नाहीं. आतां जे वेल्सांत रहातात ते त्या पुरातन लोकांचाच वंश. ब्रिटन बेटावर रोमन् व साक्सन् व डेन्स व नार्मन् यां सर्व लोकांनीं चढाव केला, परंतु वेल्स जो या बेटाचा भाग हा कोणाच्या स्वाधीन झाला नाहीं; तेथें जे मोठे उंचउंच डोंगर आहेत त्यांच्या अटकावापुढें व तेथील जे पुरातन ब्रिटीश-लोक त्यांच्या मोठ्या धैर्यापुढें कोणाचा कांहीं इलाज चालला नाहीं, असेंही असतां येडवर्ड राजानें त्या शूर लोकांस जिंकावें असा निश्चय केला. मग लिवेलिन ह्मणून एक त्या प्रांतीं राजा होता त्याजबराबर कांहीं कलह झाला, त्याजवरून त्यांशीं येडवर्डानें लढायी आरंभिली. त्यावेळीं वेल्सचे शूर लोकांनीं येडवर्डाबरोबर भांडून त्यास आपल्या प्रांतीं येऊं दिलें नाहीं, आणि तो जें मागत होता त्याचा नाकार केला, त्या प्रांतीं कवी होते ते नवीन गीत करून सारंगी वाजवून त्या लोकांजवळ गात असत, त्या गीतांत वीररस असे, व वेल्स देशाची प्रशंसा केली, असे, तेणेंक-

स्फुन त्या लोकांस अधिक स्फुरण यावें, त्यांच्याठायीं मोठें धैर्य उत्पन्न व्हावें आणि आपल्या जन्मभूमीस्तव भांडतां प्राणांत अवस्था आली असतांही मागें हटूं नये असा त्यांचा दृढ निश्चय होऊन जावा. त्याजवरून येडवर्डाची अशी समजूत झाली कीं, जों पर्यंत हे कवी आहेत तोंपर्यंत वेल्सचे लोक आपल्यास अंजिक स्फणून यानें असा हुकूम केला कीं त्यां सर्व कवींचा शोध लावून त्यांस मारून टाकावें. मग त्याप्रमाणें त्यांस मारून टाकिलें. हें असें निंद्य व क्रूरकर्म पहिल्या येडवर्डानें केलें, त्याजवरून त्याच्या थोरपणास लांछन लागलें. हा दुष्ट राजा जेव्हां त्या कवींच्या नाशावर उठला त्यावेळीं त्यांस परमदुःख होऊन त्यांनीं या राजाची हेलना करून यास शाप दिले, तें सर्व वर्त्तमान ग्रे स्फणून एक कवी झाला त्यानें इंग्रेजींत कवन करून त्यांत मोठे निंदारूप वाणीनें वर्णिलें आहे. येडवर्डराजाचे संततीस जीं दुःखें बहुत दिवस लागलीं होतीं, तींही या कवनांत जाणविलीं आहेत. त्या ग्रे कवीच्या मतें हीं दुःखें वेल्सच्या कवीनें भविष्यवाणीनें सांगितलीं होतीं, परंतु हें ग्रेचें बोलणें खरें मानूंनये, भविष्यवाणीनें सांगितलीं असें जें ग्रे बोलला आहे तो काव्यालंकार होय पुढें जें होणार तें वेल्सच्या कवींस कळलें होतें अशी गोष्ट संभवत नाहीं. जी गोष्ट झाली असेल तिचें मात्र कवी चांगलें वर्णन करितात.

वेल्स लोकांस येडवर्ड राजानें फार फार त्रासविलें तथापि ते मागें हटले नाहींत. मोठ्या धैर्यानें त्यास तोंड देऊन राहिले आणि येडवर्डास साफ सांगितलें कीं, तुझी सत्ता आह्मावर नलगे. आमचे भाषेवांचून ज्या-

स दुसरी भाषा कळत नाहीं, जो आह्मामध्यें जन्मून वाढला असा जो आमच्या देशींचा पुरुष असेल, त्यास आह्मी आपला राजा असें मानूं, त्याजवरून येडवर्ड रा-जानें त्यां लोकांची अशी समजूत केली कीं मजवर तुह्मी भरवसा ठेवाल तर तुह्मास व्हावा तसा राजा मी दाखवून देईन. या गोष्टीस ते कबूल होतांच राजानें आ-पला मूल ज्याचा जन्म वेल्सांत कायर्नावर्न् ह्मणून एक स्थल आहे तेथें होऊन थोडकेच दिवस झाले होते, ज्याला एकही भाषा येत नव्हती तो बाळ त्यां लोकां-स दाखविला हा पहा तुमचा राजा तुह्मी सांगतां तसाच आहे.

या प्रमाणें त्यां लोकांची समजूत करून पहिल्या येडवर्डानें वेल्सचें व इंग्लांडाचें राज्य एक केलें, त्याज-वरून इंग्लंडच्या राजाच्या वडील लेंकास अद्यून प-र्यंत वेल्स मांतींचा राजपुत्र असें ह्मणतात. हीं दोन्ही राज्यें एकत्र केलीं तेणेंकरून उभय मांतींच्या प्रजांस तर सुख झालें, परंतु हें कर्म कांहींसें कपटानें झालें ह्मणून स्तुतीस योग्य नव्हे.

यानंतर कांहीं दिवसांनीं स्काटलांडच्या रा-जपदाविषयीं तिकडेस तंटा पडला. एक ह्मणूं लागला त्या राच्याचा अधिकारी मी, दुसरा ह्मणूं लागला मी, याप्रमाणें कलह लागला. तो येडवर्ड राजाकडेस निव-डायास आला, तेव्हां येडवर्डास असा लोभ उत्पन्न झा-ला कीं ही संधी चांगली आली आहे, ह्मणून थोडासा उद्योग करून हें स्काटलांडचें राज्य आपल्या घरांत घालावें. असा बेत करून येडवर्ड आपला अभिप्राय सांगूं लागला कीं, माझ्या मतें स्काटलांडच्या राजपदाचा जान्बालीअल अधिकारी. मग येडवर्डानें या बालीअ-

लाची स्काटलांडांत नेमणूक करून तेथील सर्व सत्ता आपल्या हातीं ठेऊन त्यास आपला आज्ञांकित करून ठेविला. त्याजवरून हें करणें केवळ अघटित असें स्काटीश लोकांस वाटून त्यांनीं आपल्यावरली इंग्लांडच्या राजाची सत्ता उडविण्याविषयीं उद्योग मांडिला. त्यां लोकांत विलियम वालेस म्हणून एक मोठा शूर योद्धा होता, हा थोर पुरुष अभिमानास पडून यास आपला प्रिय स्काटलांड देश इंग्लीश राजाच्या स्वाधीन झाला ही गोष्ट सहन होईना असें झालें. मग त्यानें आपल्या देशींच्या लोकांस नानाप्रकारें समजावून आपली मोकळीक करून घेण्याविषयीं भांडायास सिद्ध केलें. हें पाहून येडवर्ड राजा वालेसाचा मोड करायास स्काटलांडांत आला, तेथें फालकर्कस्थळीं मोठें युद्ध होऊन येडवर्ड जय पावला. याप्रकारें घडूनआलें तथापि स्काटलोकांनीं धैर्य सोडलें नव्हतें, आपला देश इंग्लिशांपासून सोडविण्याविषयीं वालेसाचा यत्न चाललाच होता. मग इंग्लांडचा राजा पुनः स्काट लोकांसीं युद्ध करूं लागला, आणि कितिएकवेळ जय पावून त्यानें विलियम वालेसास धरून कैद केलें. त्यावेळीं तरी येडवर्ड राजानें आपला निर्दयपणा आवरिला नाहीं. यानें वालेसासारिखा आपला शूर शत्रु असतां त्यास बेडया ठोकून लंडन शहरास आणविला, मग तेथें त्यास फांशीं देऊन त्याचेंप्रेत गावांतून ओढीत नेववून छिन्नभिन्न केलें. असेंही झालें तथापि स्काट लोक मागें हटले नाहींत, ते राबर्टब्रूसाच्या हाताखालीं राहून इंग्लीश लोकांबरोबर भांडले. शेवटीं त्या इंग्लीश लोकांस त्यांनीं स्काटलांडांतून घालवून दिलें मग ब्रूसाला त्यांनीं आपला राजा केला.

यामाणें येडवर्डानें लढाया केल्या, जयही मेळविला, परंतु स्काटलांडांत त्याची कांहीं सत्ता चालू झाली नाहीं, म्हणून या गोष्टीवरून त्यास परम कोप येऊन त्यानें असा निश्चय केला कीं, हरएक प्रयत्न करून आपल्या स्काटलांडांत अंमल चालता होईं तें करावें. मग पुनः मोठी फौज ब्रूस बरोबर भांडायास पाठवून स्काटलोकांचा अगदीं मोड करून टाकिला. नंतर येडवर्ड पुनः स्काटलांडास गेला, त्यावेळीं त्यास तेथील लोक गरीब व नम्र दिसूं लागले. त्याजवरून त्यास वाटूं लागलें कीं आतां ह्या अवघ्या लोकांवर आपला पुरतेपणी अंमल बसवितां येईल, पण अभिमानी पुरुषाचे सर्व संकल्प व्यर्थ होतात. दुसऱ्यास जें दुःख चिंतावें तेंच आपल्यास प्राप्त होतें. स्काटलोकांचा मोड केल्यानंतर येडवर्ड बहुत दिवस राहिला नाहीं, तो सन तेराशें सातांत कार्ला- १३०७.
ईल शहरांत मरण पावला. स्काटलोकांबरोबर याचें कांहीं असें शत्रुत्व होतें कीं, जीव सोडतेवेळेस देखील त्या शत्रुत्वाविषयीं आपल्या येडवर्ड मुलास सांगितलें कीं बाबा स्काटलोकांचें सगळें राज्य हातीं आल्याविना त्यांची पाठ सोडूं नको. अहाहा काय दुःख हें, असल्या दुष्ट वासना अंतरीं ठेऊन मरणें हेंच काय जन्नाचें सार्थक. पण बाळपणापासून जर अशा दुष्ट वासना अंतरीं वाढूं दिल्या, त्यांचा त्याग केला नाहीं, तर त्या मरणकाळीं अशाच पुढें उभ्या राहतात. त्यांच्या योगानें मन सन्मार्गापासून भ्रष्ट होतें व जे दोष घडले असतील त्यांचें मनास स्मरण पडून ते फार मनाला जाचूं लागतात.

पहिला येडवर्डराजा यामकारचा असतांही वृ-

त्तांत ग्रंथकर्त्यांनीं त्याची बहुतकरून स्तुती केली आहे. हा राजा स्वभावानें शूर असे ह्मणून यानें लढाया करून प्रताप व थोरपणा मिळविला परंतु असला प्रताप व थोरपणा प्राप्त झाला ह्मणून प्रजांस सुख होतें असें नाहीं. जेणेंकरून लढाया होऊं नये, लोक स्वस्थ असावे, जेणेंकरून प्रजांचें हित व्हावें असे गुण राजाच्याठायीं असले तरच प्रजा चांगल्या नांदतात. या राजाच्याठायीं तर केवळ बलात्कार व क्रूरता वागत होती, मग अशा दुष्ट गुणांच्या स्वाधीन जो पुरुष झाला त्यास काय ह्मणून वाखाणावे.

कोणी असें सांगतात कीं हा राजा मोठा सुबक व देखणा व उंच असे, परंतु याचे पाय अंगाप्रमाणें नसत मोठेलांब असत, ह्मणून यास लांबटांग्या येडवर्ड असें नाव पडलें होतें. अहाहा ! राजा असून असें नाव मिळावें काय. लो०- हेआशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

तिसऱ्या हेन्रीच्या मागें इंग्लांडचा राजा कोण झाला ?

येडवर्डाचा बाप मेला तेव्हां तो राजपुत्र कोठें होता ?

येडवर्डाचे राणींचें नाव काय, तिची राजावर कशी प्रीति असे ?

कोणत्या वर्षीं येडवर्ड सिंहासनारूढ झाला ?

येडवर्ड शूर लढावू होता किंवा कसा होता ?

कोणता देश घेण्याविषयीं येडवर्डानें यत्न

मांडिला होता ?

वेल्स देश कोठें आहे ?

येडवर्डानें त्या देशावर चढाव केला त्याच्या पूर्वी तेथें कोणता राजा राज्य करीत होता ?

येडवर्डा बरोबर भांडायास कोणते लोक वेल्स करां पुढें उभें करीत. बरें त्या कविलोकांचें येडवर्डानें काय केलें ?

आपल्या मुलास वेल्सचा राजा असें कबूल करून घेण्याविषयीं येडवर्डानें कृत्रिम कसें केलें ?

बरें यामप्रमाणें वेल्स शांत येडवर्डाच्या स्वाधीन झाल्यापासून येडवर्डाच्या वडील लेंकास कोणतें नाव प्राप्त झालें ?

मग येडवर्डानें कोणता देश घेण्याविषयीं उद्योग आरंभिला ?

व तो सिद्ध व्हायाजोगी काय संधी सांपडली, मग त्या राज्यावर कोणास नेमलें ?

येडवर्डास स्काटलांडांत कोण आड आलें ?

त्या वेळीं मोठी लढायी झाली काय ?

कोठें झाली ?

कोणास जय मिळाला ?

बरें राजानें विलयम वालेसचें काय केलें ?

असें झालें असतांही स्काट लोक धीर धरून राजाबराबर भांडत होते काय ?

कोणाच्या हाताखालीं राहून ते भांडत होते ?

मग स्काटलांडचें राज्य कोणास मिळालें ?

कोणत्या वर्षीं पहिला येडवर्ड मरण पावला ?

मरते वेळीं त्यानें आपल्या मुलास काय सांगितलें ?

येडवर्ड स्वरूपानें कसा होता ?
त्यास आणखी काय नाव पडलें होतें ?

## पत्र ११.

चिरंजीव०—विशेष मागल्या पत्रांत पहिल्या येडवर्डाचें थोडेसें वर्णन केलें, आतां दुसऱ्या येडवर्डाचा वृत्तांत सांगतों. हा राजा राज्य करूं लागला तेव्हां २३ वर्षांचा होता, याचा वेल्स देशीं कायेर्नार्वनांत जन्म झाला म्हणून यास येडवर्ड कायेर्नार्वन असें बोलत. यास लोकांनीं मोठ्या आनंदानें आपला राजा असें मानून घेतलें, हा चांगला मौढ असे, व स्वभावानें कृपाळू व मृदु असे, पण इतक्याच गुणानें चांगलेपणीं मजा वर्त्तवितां येतात असें नाहीं, याहून आणखी कांहीं गुण असले पाहिजेत. ते गुण या राजाच्याठायीं नव्हते म्हणून याच्या हातून राजकारभार निभेना असें लौकरच कळूं आलें. याच्या बापानें मरते वेळेस यास सांगितलें होतें कीं, स्काट लोकांचा पराजय केल्याविना न्यांची पाठ सोडूंनको. असें काम सांगणें, तशांत तें मरतांवेळीं सांगणें, हें केवळ निर्दयेचें लक्षण. आणखी असें आहे, ज्या राजास लढायी आवडती, त्या राज्यापेक्षां आपल्या राज्यांत स्वस्थपणा असावा असें ज्यास आवडतें तो शाहणा. सारांश राजानें तर लढायीचा प्रसंग आणूंनये, आणि समयास जर तो प्रसंग प्राप्त झाला तर मागें हटूंनये शौर्याने भांडावें.

या राजानें स्काटलोकांबरोबर लढाया आरंभिल्या, पण याच्या अव्यवस्थेमुळें असें झालें कीं, बानाकबर्न ठिकाणीं जी मोठी लढायी झाली त्या लढायींत

राबर्टब्रूस म्हणून स्काटलांडचा राजा होता, त्यानें राजाचा अगदीं मोडकरून टाकिला. यामाणें जो पराक्रम राजाच्या बापानें लढायाकरून मेळविला होता, तो सर्व राजानें स्काटलांडांत गमाविला. राजास लढायींतच अपेश मिळालें असें नाहीं, तर राज्यकारभारांतही अपेश माप्त झालें. ऐसमयीं राज्यांत कारभाराचा आंधेर चालला असे, मजांचें बरें कसें होईल याचा चांगलेपणीं मनांत विचार करावा, अथवा पार्लियामेंटाचरोबर तजवीज करावी, किंवा शाहाणे पंडित असे जे मंत्री त्यांची बुध्धि घ्यावी, तर तसें कांहींएक नकरितां आपल्या कुपेंतील कित्येक मूर्ख लोक होते ते सांगत त्या समाणें तो चाले. त्यां लोकांच्याजवळ राजाची मर्जी संपादन करायास बाहेरल्या डौलावांचून दुसरें कांहीं भांडवल नसे. एक वेळीं या राजास पीर्स्गा वेस्टन प्रिय झाला, एक वेळीं ह्जस स्पेन्सर प्रिय झाला, असें होऊं लागलें असतां राज्यांतील सर्व प्रकारच्या लोकांस कसें जाचणार नाहीं, यामुळें राज्यप्रकरणांतील लोकांचे राजाबराचर कज्जे तंटे नित्य होऊं लागले. त्यावेळीं असें असे कीं, मानकरी लोकांचें कोणाबरोबर वाईट पडलें म्हणजे त्यांनीं आपल्या जमीनींत रहाणाऱ्यांलोकांस व आपल्या आश्रितांस सजून भांडायास पुढें उभें करावे. याप्रमाणें ते राजाबरोबर ही कंचर बांधीत. असे जे हे मानकरी लोक होते त्यांतील कित्येक जण आपले लोक मिळवून मोठी एक फौज जमा करून राजावर उठले, एके लढायींत तर त्यानीं गावेष्टनास धरून त्याचें डोकें मारलें, नंतर कांहीं दिवसांनीं त्यानीं स्पेन्सरास धरून फाशीं दिलें. यामकारें राजाचे कुपेंतल्या गृहस्थांस नाहींसें करून शे-

वर्टी त्यांनीं राजासही कैद केलें. त्या राजास जे नानाप्रकारचे उपद्रव देऊन त्याचे हाल केले, ते येथें सांगतां येत नाहींत, सांगू लागल्यास गोष्ट फार वाढेल. न्यास बर्क्ली किल्यावर अटकेस टाकला होता, तो किल्ला सिबर्न नदीच्या कांठीं आहे, तेथें लार्ड बर्क्ली,व लार्ड मान्त्रावर्स, व लार्ड गौर्नें त्यांस दर एकानें एक एक महिना राजाचीं रखवाली करण्याविषयीं ठेविले होते. लार्ड बर्क्लीच्या अंतःकरणीं दया असे, म्हणून तो राजाचा सांभाळ ममतेनें करी, परंतु जे दुसरे दोघे लार्ड तर त्यास नाना प्रकारचे त्रास देत आणि असें बोलत कीं आमचे चालत असतें तर आम्ही यास केवळ जर्जर केलें असतें. त्यांनीं राजाचे नाना प्रकारें हाल केले, एक्या दिवशीं तर जवळच्या चरांतील घाणेरे पाण्यानें एक्या उघड्या जागेंत त्याची हजामत करविली. या विटंबनेनें त्या राजास असा खेद झाला कीं, त्याच्या नेत्रांतून टपटपां अश्रू पडूं लागलीं, त्यावेळीं तो असें म्हणूं लागला कीं, हे दिवस जाऊन चांगले दिवस येतील त्याकाळीं माझी चांगली सेवाचाकरी होईल, परंतु तसले ते दिवस राजाच्या दृष्टीस पडले नाहींत; कांतर बर्क्ली जेव्हां दुखण्यानें पडला तेव्हां त्या दोघे रखवालदारांनीं बंदिखान्यांत जाऊन राजाचा मोठ्या निर्दयेनें खून केला. राजाच्या अंगावर कांहीं मारहाण दिसूंनये अशा रितीनें त्यास मारायाचा त्यांचा बेत होता, परंतु मारतेवेळेस राजानें आरोळ्या मारिल्या, त्या सारा किल्लाभर ऐकूं गेल्या, तेणेंकरून त्या खुनाचा शोध लागला. मग त्या गौर्नेस कांहीं दिवसांनीं धरून त्याचें डोकें मारलें. त्या दुस-

च्या येडवर्डराजास सन तेराशें सत्ताविसा-
च्या साल्ीं सप्तेंबर महिन्याचे एकविसा- १३२७
वे तारखेस मारिलें. या पत्रांत जें वर्त्तमान ज्या-
ज्या तारखेस झालें आहे त्या त्या तारखेचें स्म-
रण ठेवावें. जर तारखांचें स्मरण ठेविलें नाहीं तर
त्या काळीं झालें त्या वर्तमानाचेंही चांगलें स्म-
रण राहणार नाहीं. अंसो राजाचा खून करणारां
पैकीं मात्रेवर्सू यास कांहीं दंड नहोतां राहिला
परंतु त्या दुष्ट कर्माची टोंचणी त्याचे जीवास मरे
तों पर्यंत राहिली. लो० हेआशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

पहिला येडवर्ड मरण पावल्यानंतर इंग्लांडचा राजा कोण झाला ?

दुसरा येडवर्ड राज्य करूंलागला तेव्हां तो किती वर्षांचा होता ?

तो कोणत्यावर्षीं सिंहासनावर बसला ?

त्याचा जन्म कोठें झाला ?

त्यास काय नाव साम्य झालें होतें ?

त्याचें स्वरूप कसें होतें ?

त्याचा स्वभाव कसा असे ?

त्याचे बापानें त्यास मरतेवेळीं स्काटलांडा-
विषयीं काय सांगितलें होतें त्याचें स्मरण आहेना ?

बरें मग त्याप्रमाणें त्याणें केलें काय ?

त्याणें स्काटलोकांबरोबर लढाई केली तेथें त्याचें
काय झालें ?

त्याचा कोणी मोड केला ?
कोणत्या लढाईंत ?
बरें हा बाहेर लढाईस निघाला होता तेव्हां या-
च्या राज्यांत यथास्थित चाललें होतेंना ?
हा कोणाच्या विचारानें बहुधा चालत असे ?
हा अविचारानें चालूंलागला आणि आपल्या
कर्पेतले मूर्ख मनुष्यांवर फार लोभ करूं लागला त्याज-
वरून लोकांस वाईट वाटलें काय ?
याची फार कृपा कोणकोणावर असे ?
मग त्यांची काय अवस्था झाली ?
बरें राजाची काय अवस्था झाली ?
राजाला कैदकरून कोठें ठेविला होता ?
त्यास बर्ड्ड किल्यावर ठाकिला होता तेव्हां त्या-
चे रखवालीस कोण कोण ठेविले होते ?
हे त्याचा सांभाळ कसा करीत ?
बर्ड्ड किल्ला कोठें आहे ?
कोणते नदीचे जवळ आहे ?
त्या रखवालदारांनीं राजाचे कसकसे हाल केले ?
मग त्या राजास सोडून दिलें काय ?
तो कसा मेला ?
मग त्या खून करणारांची काय अवस्था झाली ?
हा खून कोणत्यावर्षीं झाला ?

---

## पत्र १२

चिरंजीव०— विशेष मागील पत्रांत पहिलें व दुसऱ्या येडवर्डाचें वर्त्तमान सांगितलें. आतां तिस-
ऱ्या येडवर्डाचें वर्त्तमान सांगतों. हा येडवर्डराजा सिं-

हासनारूढ झाला त्यावेळीं चौदावर्षांचा होता तेसमयीं येडवर्डाचें अल्पवय पाहून याची दुष्ट आई लार्ड मार्टिमाराशीं आसक्त झाली होती. यां दोघांजणांनीं सर्व सत्ता आपल्या स्वाधीनकरून आपणच कारभारू चालवूं लागलीं, हें येडवर्डास सहन होईना. मग येडवर्डाची आई व तिचा सखा अशीं दोघेंजणें नाटिंगह्यामच्या किल्यांत असतां तेथें येडवर्डानें घाला घालून त्यां दोघांस धरिलें. तेसमयीं मार्टिमरास पार्लियमेंटचे सभेनें अपराधी ठरवून फांशीं दिलें, आणि येडवर्डाचे आईला रैंजिगूच्या किल्यांत जन्मपर्यंत अटकेस ठेविलें. तेथें तिला दरवर्षास तीन हजार रुपये देत असत, आणि येडवर्ड मतिवर्षास तिचे भेटीस जात असे. ती मग पंचवीस वर्षें जीवंत होती, परंतु तिचा पूर्ववत् सन्कार होतनसे.

हा तिसरा येडवर्ड राजा अभिमानी आणि शूर असे. याच्या बापानें स्काटलांड देश गमावला होता तो आपल्या स्वाधीनकरण्याविषयीं यानें यत्न केला, आणि यानें हालीडौनडोंगराजवळ जी लढाई केली त्या लढाईत तीसहजार स्काट लोक मारिले असें सांगतात.

नंतर यानें फ्रान्स देशींचें राज्य घ्यावयाचा उद्योग आरंभिला, आणि हा असें बोलूंलागला कीं माझे आईच्या संबंधानें मी त्या राज्याचा वास्तविक दायाद आहें. मग त्याच बुद्धीनें तें राज्य घ्यावयास निघाला, आणि फ्रान्स देशीं जाऊन यानें तेथें तुंबळयुद्ध केलें. या युद्धास क्रेसिची लढाई असें म्हणतात, या लढाईत काळा राजपुत्र म्हणून जो या राजाचा लेंक तोच पुढें झाला होता. राजा स्वतां युद्धास उभाराहिला नव्ह-

ता, त्या राजपुत्राच्या सहाय्यार्थ कांहीं शिपाई आपल्या बरोबर घेऊन आपण एक्या जवळच्याच डोंगरांत ठाणें घालून बसला होता. या लढाईंत इंग्लीशांकडेस तीस-हजार मात्र फौज होती. आणि फ्रेन्च्याकडेस एक लाख वीसहजार फौज होती, परंतु इंग्लीशांचें ठाणें चांगल्या जागीं पडलें होतें, फ्रेंचांचे फौजेच्या तोंडावर ऊन पडून त्यांचे डोळे दिपत होते आणखी पाउसानें त्यांच्या धनुष्याच्या दोऱ्या भिजून मऊ झाल्या होत्या. इंग्लीशांकडील धनुष्यें नीट होतीं त्यानीं तीं पाउसाच्या वेळीं आच्छादनांत घातलीं होतीं असें सांगतात,मग कसें काय झालें असेल तें नकळे. पण इतकें खरें कीं त्यावेळीं इंग्लीशांनीं फ्रेन्चांचा अगदीं मोडकरून टाकिला. या येडवर्ड राजाचा लेंक बहुधा काळें कवच घालीत असे म्हणून त्यास काळा राजपुत्र असें बोलत. तें कवच इंग्लांड देशीं विंडसर्चा किल्यांत आहे, तें पहावयास लोक जातअसतात. त्या क्रेसीचे लढाईंत एकवेळ असें झालें कीं, तो राजपुत्र मोठ्या आवेशानें लढतां लढतां केवळ शत्रूच्या तोंडीं जाऊन उभा राहिला. त्याजवरून त्याचे सर्दारांस असें वाटलें कीं, हा आतां मेला जाईल; तशांत हा एकटा आहे, असें पाहून त्यां सर्दारांनीं राजाजवळ जाऊन विनंती केली कीं, आपण आपल्या पुत्राच्या सहाय्यार्थ जावें, परंतु राजा पाहतो तों आपला पुत्र शत्रूचा मोड करीत चालिला आहे, म्हणून त्याचे सहाय्यास नजातां म्हणूंलागला कीं, आज जें यश मिळवितां तें अवघें तुमचें, असें जाऊन माझ्या पुत्रास सांगावें. हें भाषण ऐकून त्या राजपुत्रास आणि त्याचे शिपायांस मोठा आवेश आला, मग त्याणें

कांहीं वेळ चलागुंदेतां शत्रूचा अगदी मोड करून जय मिळविला.

यानंतर राजा कालेस शहरास वेढा घालायास लौकरच गेला. कालेस कोठें आहे हेंतर तुह्मास ठाउकें-च असेल, डोवराहून गलबतांत बसून फ्रान्स देशीं जाऊन जेथें उतरतात तें शहर कालेस होय. कालेस मिळालें असतां फ्रान्स देशीं आपले फौजेस उतरावयास एक जागा होईल, आणि तेणेंकरून तो देश घ्यावयास अडचण पडणार नाहीं, असें जाणून तें शहर आपल्या हातीं केव्हां येईल असें राजास झालें होतें. मग राजा त्या कालेस शहरास वेढाघालून एक वर्ष राहिला, परंतु त्या शहरांतील लोकांच्या शूरत्वा पुढें याचा इलाज चालला नाहीं, मग तेच लोक अन्नाच्या दुष्काळा मुळें मरूं लागले ह्मणून राजास शरण आले. त्यावेळीं राजास मोठा कोप आला आणि ते लोक बहुत दिवस त्यास तोंड देऊन राहिले होते ह्मणून त्यां सर्वांस मारून टाकावें असें बोलूंलागला. मग त्या लोकांपैकीं जे सहा मुख्य होते त्यांचे गळ्यास दोर बांधून त्यांस फांशीं द्यावयास न्यावें अशी आज्ञा झाली. त्यांचा अपराध ह्मणाल तर इतकाच कीं ते आपल्या रक्षणाकरितां शूरत्वानें भांडत होंते. यां सर्व शूरपुरुषांस राजानें फांशीं दिलें आसतें परंतु त्याची फिलिपाराणी इणें त्याच्या पांई पाडून त्यां लोकांविषयीं क्षमा मागीतली, त्याजवरून तिची करुणापरविनंती ऐकून त्यां उत्तम पुरुषांस राजानें सोडून दिलें.

हा येडवर्ड राजा इंग्लांड सोडून फ्रान्स देशीं गेला आहे असें पाहून स्कॉट मांतींचा राजा डेवीडब्रूस यानें मोठी स्काटलोकांची फौज घेऊन इंग्लांडावर चाल केली, त्या वेळीं फिलिपा राणी इंग्लांडांत होती, ती हें व-

त्तमान ऐकतांच फौज समागमें घेऊन त्याराजाचें निवारण करावयास बाहेर पडली. इचे फौजेची आणि त्याराजाचे फौजेची नीवीलिच्या कुसाजवळ भेट झाली, मग या राणीनें त्या फौजेचा मोडकरून खुद्द स्काटलांडच्या राजास धरून आणिलें.

नंतर काळ्या राज पुत्रानें फ्रान्सांत मोठी नामांकित लढाई केली, या लढाईस पोईकटियर्ची लढाई म्हणतात. त्या लढाईंत फ्रान्स देशींचा जान् राजा यास ही धरिलें, तेणें करून असें झालें कीं, इंग्लांडांत दोन राजे एकदांच बंदीस पडले.

यामाणें तिसऱ्या येडवर्डाचा पराक्रम मोठा नामांकित होय आणि येणेंकरून इंग्लांडदेशींचें महात्म्य फार वाढलें, परंतु लढाईकरून जें महात्म्य मिळविलें तेणेंकरून सुख होणार नाहीं आणि दुःखेंही दूर होणार नाहींत. हा काळाराजपुत्र आपल्या बापाच्या हर्षास व मजांच्या आनंदास केवळ कारणभूत होता, परंतु या भूतळीं बहुत दिवस ठरला नाहीं, यास क्षयरोग लागून याची शरीरसंपत्ति क्षीण होऊं लागली. इकडे फ्रान्सदेशीं जो मुलूक काबीज केला होता तेथें इंग्लांडाहून कोणी शिपाईलोकांस पाठविना असें झालें, आणि त्या राजपुत्राच्या दुखण्यामुळें पहिल्यामाणें लढाई होणें बंद झालें, त्यामुळें तो काबीज केलेला मुलूक सर्व हातांतून गेला. नंतर तो राजपुत्र लौकरच मरण पावला, तेणेंकरून राजास व सर्व इंग्लिश लोकांस मोठें दुःख झालें. राजास तर पुत्रशोक असा झाला कीं, त्याणें त्या दिवसापासून पुढें वर डोकी उचललीच नाहीं. त्याच्यानें राज्यकारभार चालेना असें झालें, त्यामुळें त्यानें राज्यकारभार सोडून किति-

एक लोकांच्या स्वाधीन केला, ते तो कारभार फार वाईटरीतीनें चालवूं लागले, आणि राजास कोणी मानीना असें झालें. सरी म्हणून जें स्थळ आहे त्यास आतां रिचमांड म्हणतात, तेथें राजा अत्यावस्थ होऊन पडला, त्यावेळीं याचे जे दरबारीलोक आणि याची सेवा करून, जे संपत्तिवान् झालेले होते, त्यांतून कोणी एकही याचेजवळ नव्हतें. अहःहः असा प्रतापी योद्धा आणि समर्थप्रभु असून मृत्युशयनावर दीनाचेपरी पडला, आणि त्याच्या मरणप्रसंगीं कोणाचेंही अंतःकरणास दया किंवा नेत्रीं अश्रु आले नाहींत.

हा सन तेराशें सत्याहत्तरांत मेला, यानें पंचावन वर्षें राज्य केलें, याचे इतकें बहुतकाळ राज्य केलें असे राजे थोडके, त्यां राजांचें वर्णन मागल्या पत्रांत केलें आहे. तुह्मास सांगितल्याप्रमाणें तुह्मी तारखांचें स्मरण ठेवावें, आणि तुह्मास रीति दाखविली आहे त्याप्रमाणें त्यां राजांची राजावळी करावी. येथें जशा तारखा लिहिल्या आहेत तशा मत्येक राजांच्या नावांवर लिहाव्या. तुमचा मित्र गोविंदराव पाहिला असतां तुह्माहून लहान आहे, परंतु त्यास इंग्लांडदेशींच्या सर्व राजांचीं नावें व त्यांच्या जन्मादिकांच्या तारखा ठाउक्या आहेत. त्याची धाकुटी बहीण यमुना तिलाही तीं नावें तारखांसहित कळतात, व लिहितांही येतात. याजकरितां तुह्मी अभ्यास

१३७७

केला असतां तुह्मासही त्यां नावांचें स्मरण राहील. लो० हेअशीर्वाद.

पहिला विलियम. १०६६

दुसरा विलियम. १०८७ पहिला हेन्री ११०० आडिला
माटिल्डा स्टिफेन ११३५
दुसरा हेन्री ११५४
पहिला रिचार्ड ११८९ जान् ११९९
तिसरा हेन्री १२१६
पहिला येडवर्ड १२७२
दुसरा येडवर्ड १३०७
तिसरा येडवर्ड १३२७

स्मोलेटानें तिसऱ्या येडवर्डाचें वर्णन केलें आहे तें असें.

येडवर्डास तरुणपणीं फार श्रम झाले होते, तेणेंकरून त्याच्या शरीरास विकार होऊन ह्मातारपणाची जी अवस्था ती त्यास पूर्वीच प्राप्त झाली. मग त्यास मोठा ज्वर लागून त्याचे आंगावर एक रोग फुटला, तेणेंकरून तो मरण पावला. त्याचा उपद्रव फार होऊन पुढें बरें व्हावयाची आशा राहिली नाहीं असें पाहून त्याच्या सेवकांनीं, दिवाळखोरापासून रोजमोरा मिळेना असा झाला ह्मणजे त्याला जसा सोडितात तसा याला सोडून दिला. येडवर्डाच्या मरणसमयीं त्याचे गलित कायेचा सांभाळ करायास जवळ एकही चाकर राहिला नाहीं. असे त्या प्रतापवान् येडवर्डाचे हाल होऊन तो मृतप्राय पडला होता आणि केवळ प्राण सोडण्याच्या संधींत आहे इतक्यांत एक धर्मोपदेष्टा त्याच्या अंथ-

रणाजवळ आला. मग येडवर्डास कांहींसें सावध पाहून तो धर्मोपदेष्टा समाधानपर बोध करूं लागला. तेव्हां येडवर्डानें पाहिलें कीं माझ्या या मरणसमयीं मला सर्व सोडून गेलीं आणि मी केवळ अनाथाच्या परी पडलों आहे, असा परम खेद मानून मोठ्या पश्चात्तापानें म्हणूं लागला कीं, हा हा मी येथें व्यर्थ किरे मोहित झालों. मग त्याणें आपला तारक जो इशु त्यातें स्मरून माण सोडिला.

यामप्रमाणें तिसऱ्या येडवर्डाचा परिणाम झाला. इंग्लांड देशीं जे सर्वोत्कृष्ट राजे होऊन गेले त्यांतच याची गणना आहे. हा योद्धा तसाच व राज्यनियम बांधणाराही तसाच. हा राजांत राजा आणि मनुष्यांत मनुष्य असा होता. हा उंच असे, प्रतापवान् दिसे, याचे शरीराची आकृति सुघटित, नेत्र असे दिसत कीं ज्यांवरून हा कोणी मर्मज्ञ आहे असा भास व्हावा, नाक चांगलें सरळ असे, याच्या वेळींचे जे लोक असत त्यांतून लढाऊ कसरतींत व बोलण्या चालण्याच्या डावांत कोणीही यार्शी पुरा पडत नसे. मधुर बोलावें, दुसऱ्यास आदरसत्कारानें रिझवावें, असा याचा स्वभाव असे. हा मोठा वक्ता असे. याची चाल सरळ,सुशोभित व भाषणप्रिय असे. आपल्या लौकिका विषयीं हा बरेपणा कोणास नदिसतां लोकांचीं मनें प्रीतिपूर्वक वश करावीं अशी याचेठायीं युक्ति असे. आपला डौल लोकांत मिरवावा असें याच्या मनांत. फार वागत असे, त्या डौलास्तव याणें दया, क्षमा व आपल्या प्रजांचे माण व आपल्या देशाचें हित यांजकडेस पाहिलें नाहीं. याच्या राज्यांत प्रजांवर जीं देणीं बसविलीं तीं फार जरब असत, परंतु याजवर प्रजांची प्रीति असे, यास त्या तेजः

पुंज मानीत. याणें युद्धांत जय मेळवून ख्याती केली होती. आणि याचे बुद्धीनें जें पार्लियामेन्ट सभेनें उत्तम कायदे बांधिले होते, त्यामुळें तीं देणीं प्रजांनी सोसून घतला.

---

## प्रश्न.

तिसरा येडवर्ड कोणत्या सालीं राज्य करूं लागला ?

तो सिंहासनावर बसला तेव्हां किती वर्षांचा होता ?

या राजाचें अल्पवय असतां याजपासून अधिकार घेण्याविषयीं कोणी उद्योग केला होता ?

मग या राजानें आपली आई व मार्टिमर यांस कोठें धरिलें ?

त्या मार्टिमराचें काय केलें ?

आईस काय केलें ?

या तिसऱ्या येडवर्डाचा स्वभाव कसा असे ?

याणें कोणतें राज्य घेण्याविषयीं उद्योग केला ?

याणें स्काट लोकांबरोबर मोठी लढाई केली काय ?

त्या लढाईस काय ह्मणतात आणि त्या लढाईत जय कोणास मिळाला ?

मग त्याणें कोणता देश जिंकण्याविषयीं उद्योग आरंभला ?

याणें फ्रान्स देशीं जी मोठी लढाई केली तीस काय ह्मणतात ?

या लढायींत राजाचा पुत्र होता काय ?

या राजपुत्राचें नाव काय ?

क्रेसिचे लढाईंतलें कांहीं वर्त्तमान सांगावें ?

येडवर्डानें फ्रान्स देशीं कोणते किल्यास वेढा घातला होता ?

फ्रान्स देशांत कालेस कोणे कडेस आहे ?

मग कालेस शहर तेथल्या लोकांनीं येडवर्डाच्या स्वाधीन किती दिवसांनीं केलें ?

कालेस स्वाधीन झाल्यानंतर येडवर्डानें तेथल्या लोकांस काय केलें ?

येडवर्ड फ्रान्स देशीं असतां स्काट लोकांनीं इंग्लांडावर हल्ला करण्याचा उद्योग केला होता काय ?

त्याचे सेनेंत प्रमुख कोण होता ?

नेविलिसचे कुसाची जी लढाई झाली तेथलें वर्त्तमान स्मरत असल्यास सांगावें ?

तेथें कोणास धरून बंदीस घातलें ?

काळ्या राजपुत्रानें फ्रान्स देशीं कोणती दुसरी लढाई केली ?

मग तेथें कोणास धरून कैदं केलें ?

काळ्या राजपुत्रानें राज्य केलें काय ?

मग येडवर्ड राजाची पुत्र शोकानें कशी अवस्था झाली ?

जेव्हां राजा म्हातारपण व रोग यांमुळें जर्जर झाला त्याकाळीं त्याच्या दर्बारी लोकांनीं त्यास काय केलें ?

तिसरा येडवर्ड कोणत्या वर्षीं मरण पावला ?

त्यानें किती वर्षें राज्य केलें ?

विलियम विजयीपासून तर तिसऱ्या येडवर्डापर्यंत जे राजे झाले त्यांचीं व ते ज्या ज्या वर्षीं राज्य

करूंलागले तीं तीं वर्षें लिहून तुह्मास एक राजावळी करितां येईल काय ?

---

# पत्र १३

चिरंजीव०— विशेष आपल्यास जीं पत्रें पाठवावीं त्यांतील वर्त्तमान आपण चांगलें चित्त लावून समजून घेतां असें आपल्या पत्रावरून कळूं येतें. त्याजवरून आणखीं वर्त्तमान लिहून पाठवावयास मोठा आनंद होतो. काल्ठा राजपुत्र येडवर्ड हा आपल्या बापाच्या अगोदर मरण पावला, तेव्हां त्या राजपुत्राचा लेंक दुसरा रिचार्ड अकरावर्षांचा होता तो सिंहासनाचा अधिकारी झाला. परंतु यांचें वय फारच लहान ह्मणून राजकारभार याचे चुलते जे लान्क्यास्टरचे व योर्कचे व ग्लौसेस्टर्चे ड्यूक यांचे स्वाधीन केला. त्यावेळीं असें झालें कीं, मागल्या राजानें ज्या लढाया आरंभिल्या होत्या, त्यांचा खर्च आटोपेना असा झाला ह्मणून तो पुरा पाडायास लोकांवर मोठे मोठे कर बसविले. सांप्रतकाळींचे जे कर आहेत त्यांचा भार गरीब लोकांस फार पडूं नये अशा युक्तीनें ते ठराविले आहेत, परंतु या रिचार्डराजाचेवेळीं पंधरा वर्षांवर उमर झाली ह्मणजे त्या मनुष्यानें चारग्रोट ह्मणजे दाहा आणें द्यावे असा कर बसविला होता. त्याजवरून मजांनीं राजावर उठून मोठी दांडगाई केली ती अशी, वाट्टैलर ह्मणून एक लोहार होता, त्याणें तो कर देण्याचा नाकार केला आणि पुष्कळ लोक मिळवून बंडाई करण्याविषयीं तो लंडनास आला. त्याकाळीं राजा १६वर्षांचा होता, त्यानें त्या लोहारास

सांगितलें कीं, मी स्मिथ फील्डजागेंत आपल्यास भेटतों, तेथें आपण मला लोकांस जे उपद्रव झाले आहेत ते सांगावे, मग त्याचे बंदोबस्ताचा विचार केला जाईल. या प्रसंगीं राजानें तर फारच आपला थोरपणा दाखविला. त्याकाळीं याचें वय लहान असून याचें बोलणें चालणें कांहीं असें शोभूंलागलें कीं, हा पुढें मोठा प्रतापवान् पुरुष होईल असा भास होऊं लागला, परंतु अशा चांगल्या रीतीनें राजा वर्त्तत असतां त्या टैलरानें याजकडेस कांहीं लक्ष्य दिलें नाहीं, केवळ उन्धटपणा दाखविला, आणि आपली तरवार उपसून अशी दांडगाई करूं लागला कीं जसा काय राजाचा प्राण घ्यावयास सिद्धच झाला आहे. तें पाहून विल्यिमलार्ड मेयरानें त्या टैलरास दंडानें मारुन खालीं पाडलें, आणि त्या मेयराचे जे सेवक होते त्यांतून एकानें त्यास तरवारीनें ठार केलें. वाटटैलरचे लोक आपल्या सर्दारास मारिलें असें पाहून फार कोपले, आणि मोठ्या आवेशानें हल्ला करण्याची तयारी करूं लागले, इतक्यांत तो लहान वयाचा राजा त्यां लोकांस केवळ प्रिय मधूर वाणीनें बोलूं लागला कीं, अहो तुह्मी आपला सर्दार तर गमाविला परंतु मी तुमचा सरदार होतों, तुह्मी माझ्या मागें यावें ह्मणजे तुमची जशी इच्छा असेल तसें घडून येईल. याप्रमाणें त्या राजानें आपल्या धैर्यानें व चांगल्या वर्त्तणुकीनें त्यां लोकांचा क्रोध शमविला. मग ते उगेच आपआपल्या घरीं गेले, याजवरून असें दिसूं येतें कीं, याराजाचें रक्षण लार्डमेयरानें केलें. ज्या तरवारीनें त्याटैलरास मारून राजास वांचविलें, त्या तरवारीची आ-

कृति लंडन शहराच्या निशाणावर काढितात.

हा राजा वयानें लहान असतां चांगल्या प्रकारें राज्य करूं लागला, परंतु याणें असेंच पुढें चालविलें नाहीं. याचे वर्त्तणुकी वरून हा अल्पबुद्धि असें लौकरच दिसूंलागलें,आणि त्याच्या सर्व कामांत अव्यवस्था होऊंलागली. हें सर्व वर्त्तमान सांगूं लागलें असतां ग्रंथ फारि वाढेल म्हणून जेणेंकरून याणें राज्य गमाविलें तेंच वर्त्तमान सांगतों. नार्फोकच्या ड्युकाचें व हीयफोंडच्या ड्युकाचें भांडण लागलें होतें, परंतु खरें कोणाचें व खोटें कोणाचें असें कांहीं मनास न आणितां राजानें त्यां दोघांस गावांतून घालवून दिलें. मग नार्फोकचा ड्यूक तर बाहेर असतांच मेला, परंतु हीयफोर्डच्या ड्यूक राजानें जो नेम केला होता त्याच्या आंतच आपल्या गावीं आला. हा हीयफोंडचा ड्यूक राजाचा सखा चुलत भाऊ, हा गांटचा जान् म्हणून जो ल्यानूक्यास्टर्चा ड्यूक राजाचा चुलता होता, त्याचा मुलगा. याच्या बापा मागें हा ल्यानूक्यास्टर्चा ड्यूक झाला. इकडे राजाचे अव्यवस्थे मुळें सर्वांस राजाचा त्रास आला होता, त्यावरून या ड्युकास वाटलें कीं, हें राज्य आतां माझ्या हातीं येईल. मग या हेतूनें तो ड्यूक योर्कशायरांत रावेन्स्पर ठिकाणीं येऊन उतरला, आणि बहुत्येक मोठ्या मोठ्या सामर्थ्यवान् गृहस्थांशीं मिळून राजाचें कांहीं एक चालूं न देतां लौकरच राजासनीं बसला आणि चौथा हेन्री या नावानें राज्य करूंलागला. ही पाहिली असतां मोठी अनीति, रिचार्ड राजा मेल्यानंतर हीलयानूक्यास्टर्चे ड्युकास सिंहासनीं बसायास अधिकार नाहीं, मग तो राजा जिवंत असतां अधिकार नाहीं हें काय सांगावें. रिचार्डाच्या मर-

णानंतर क्लारेन्सच्या ड्युकाच्या वंशास सिंव्हासनाचा अधिकार, कांतर हा रिचार्डाचा चुलता न्या ल्यान्क्यास्टराच्या ड्युकापेक्षां वडील होता. क्लारेन्सच्या ड्युकाच्या वंशास योर्काचें घराणें म्हणतात. क्लारेन्सचे वंशांतील कन्या एक्या योर्काचें ड्युकानी वरिली होती, म्हणून क्लारेन्सचे वंशास योर्काचें घराणें असें म्हणूंलागले. योर्काचें घराणें व ल्यान्क्यास्टचें घराणें या उभयतांचा कलह लागून न्यांच्या इंग्लांड देशीं बहुत दिवस लढाया चालल्या होत्या.

मग त्या रिचार्ड राजाचा पाम्फेंटच्या किल्यांत केवळ निर्दयेने वध केला. कोणी सांगतात कीं न्यास मारावयास आठ मनुष्यें पाठविलीं होतीं, न्यांतून एकाचे हातची न्यानें कुऱ्हाड हिसकून घेतली, आणि न्यांतल्या चौघांजणांस न्यानें ठार केलें, मग तीच कुऱ्हाड न्यानें आपल्या मस्तकीं मारून घेतली. कोणी सांगतात कीं न्यास पंधरा दिवसपर्यंत कांहीं एक खाऊं घातलें नाहीं, तेणेंकरून तो मेला. तो असा मरो किंवा तसा मरो, परंतु हीं दोन्ही घोर कर्में होत. या १३९९
रिचार्डास सन तेराशें नव्याण्णवांत मारिलें. याच्या आजानें फ्रान्स देशांत जी सत्ता मिळविली होती ती याचे राज्याचे अव्यवस्थेमुळें गेली. लो० हे आशीर्वाद.

---

## प्रश्न.

काळा राजपुत्र येडवर्ड हा कोणाचा मुलगा ?
तो काय आपल्या बापाच्या अगोदर मेला ?
मग सिंहासनाचा कोण अधिकारी झाला ?

दुसऱ्या रिचार्डाचा बाप मेला तेव्हां रिचार्ड किती वर्षांचा होता ?

तो कोणत्या वर्षी सिंहासनरूढ झाला ?

रिचार्ड लहान वयाचा होता तेव्हां राज्यकारभार कोणी चालविला ?

मागल्या राजाचे वेळीं लढाईच्या खर्च पुरा पडावयाकरितां लोकांवर मोठे कर बसविले काय ?

गरीब लोकांस द्यावयास कोणता कर भारी पडे ?

तो कर किती वर्षांच्या मनुष्यापासून घेत असत ?

तो कर देण्याविषयीं कोणी नाकार केला ?

लोक मिळऊन लंडन शहरास कोण गेला ?

वाट् टैलर व त्याच्या विचारानें चालणारे लोक यांस राजा कोठे भेटला ?

याजबरोबर तो लहान वयाचा राजा कसा वर्त्तला ?

बरें तो टैलर कसा वर्त्तला ?

मग त्या लार्डमेयरानें काय केलें ?

लार्डमेयराचें काय नाव ?

वाट् टैलरास मारिलें त्याजवरून त्याचे लोक फार कोपले काय ?

मग त्यांचा क्रोध कसा शमविला ?

दुसऱ्या रिचार्डानें राज्य करावयास जसा आरंभ केला होता तसेंच त्यानें पुढें चालविलें काय ?

ज्यां दोन मानकऱ्यांचें भांडण लागलें होतें तें कोणतें ?

मग त्यांस राजानें काय केलें ?

त्यांतून एकादा परत आला काय ?

न्याणें राज्य घेण्याचा उद्योग केला काय ?
त्याचें नाव काय ?
तो कोणाचा लेंक त्याचें व राजाचें काय नातें ?

राजा जीवंत असतां न्या ड्युकास सिंहासनाचा कांहीं अधिकार होता काय ?

बरें राजाच्या मागें तरी न्यास अधिकार होता काय ?

राजाचे पाठीमागें सिंहासनाचा अधिकारकोण-न्या वंशास होता ?

योर्काचें घराणें व ल्यान्क्यास्टचें घराणें यांउ-भयतांचें भांडण लागलें होतें त्याचें पुढें कसें झालें ?
रिचार्डाची शेवटीं काय गति झाली ?
न्यास कोठ मारिलें ?
हें कृत्य कोणत्या वर्षीं झालें ?

---

# पत्र १४.

चिरंजीव०- विशेष जान गान्टचा वडील बंधु लायनेल तो क्लारेंश्या ड्यूक याचा वंशीक योर्काचा ड्यू-क, हा ड्यूक वडील बंधूचा वंश म्हणून या वंशांतील ड्यूकास सिंहासनाचा अधिकार, ल्यान्क्यास्टर्चा ड्यूक हेन्री, जान् गान्टचा लेंक न्यास सिंहासनाचा कांहीं एक अधिकार नाहीं, असें असतां तो ल्यान्क्यास्टर्चा ड्यूक राजा होऊन चौथा हेन्री असें नाव पावला, तें वर्त्तमान मागल्या पत्रांत कळविलें. आतां पुढें झा-लेलें वर्त्तमान लिहितों.

असें आहे कीं अनीतीनें मिळवावें त्यापासून सुख

होत नाहीं, या वाक्याचा अनुभव चौथ्या हेन्रीस लौकरच येऊं लागला, तो असा. याच्या वेळीं याचें राज्य बुडविण्याच्या मसलती होऊं लागल्या, राज्यांत बंडें माजूं लागलीं, तेणेंकरून हा नित्य त्रास पावत चालला. याचे जे पूर्वीचे मित्र होते त्यांजबरोबर यानें गर्वामुळें पूर्ववत् वागणें सोडलें, असें पाहून जे यास राज्य घेण्यास अनुकूळ झाले होते तेच याजपासून राज्य दूर करण्याचा प्रथम उद्योग करूं लागले. नार्थंबर्लांडाचा जो मोठा मानकरी बलवान् ड्यूक यास पूर्वी अनुकूळ झाला होता, तोच याजवर उठला. त्या ड्यूकाचा लेंक तरुण असून शूर व प्रख्यात असे, परंतु तो आवेशी व कोपिष्ट असे म्हणून त्यास हाटस्पर म्हणजे तापलेला कांटा असें म्हणत. हे बापलेंक व दुसरे बहुत्येक गृहस्थ मिळून मोठी फौज जमाकरून राजावर उठले आणि त्यांनी शूसबरी शहराजवळ राजाबरोबर मोठी लढाई केली, परंतु त्या लढाईंत बंडखोरांचाच अगदीं मोड झाला, आणि हाटस्परही पडला. त्या लढाईंत राजानें स्वतां येऊन मोठ्या शूरत्वानें युद्ध केलें; तेथें राजाचा मुलगाही आला होता, तो पुढें शूर राजा होऊन पांचवा हेन्री असें नाव पावला. हा राजपुत्र लहान असतां असा लढला कीं युद्ध म्हणून काय तें यास कळतें आणि हा अमूक प्रकारचा पुरुष होईल असें यानें दाखवून दिलें. यानें तर त्या लढाईंत मोठे चमत्कार केले, आणि कोणी सांगतात यानेंच हाटस्परास मारिलें. असो यास चांगलें लढतां येऊं पण हा अगदीं वाईट मुलगा असे. याची वर्तणूक मनस्वी, यास वाईट संगतीचा छंद, याचें आचरण अमंगळ, असें पाहून याचे बापास म्हातारपणीं फार खे-

द होई. व्हावी तितकी संपत्ति व वैभव मिळालें आणि पोटचा पोर जर दुष्ट कृतघ्न निघाला, तर न्यायासून काहीं एक सुख होत नाहीं. हा राजपुत्र तर पुढें मोठेपणीं चांगला शाहाणा निघाला आणि थोर राजा झाला परंतु याचे लहानपणींचे वाईट वर्त्तणुकीं वरून. जो राजास धीका बसला तो दूर झाला नाहीं. अहहा राजातर बंडाच्या उपद्रवानें अगदीं त्रासलाच होता, तशांत त्यास आपल्या लेंकाच्या दुराचरणाचें दुःख आणि मागल्या राजास घोर उपद्रव देऊन त्याचे अनीतीनें राज्य घेतलें त्या कर्माची अंतरीं टोंचणी, अशा चहूंकडून दुःखांनीं राजाव्याकूळ होऊन तळमळूं लागला.

शेकस्पीयर ह्मणून एक महान् कवि झाला, त्यानें इंग्लांड देशींचे राजे, प्रतापवान् पुरुष, इत्यादिकांवर कित्येक नाटकें केलीं आहेत, त्यांतील एक नाटकांत चौथ्या हेन्रीचे निद्रेविषयीं चांगलें सुरसवर्णन केलें आहे. त्याचा भाव असा कीं, चिंता, उपद्रव अंतरीं टोंचणी इहींकरून राजा व्याकूळ होऊन राजास झोंप येईना, तेव्हां राज्य वैभव संपत्ति हीं दुःखरूप मानून आपल्या अति गरीब प्रजांस जें सुख त्याची इच्छा करूं लागला.

पहा ह्या राजाच्या मतें गरीब लोक आपल्यापेक्षांही फार सुखी, ते निश्चिंतपणें झोंप घेतात, परंतु थोर जे ते चहूंकडून चिंताग्रस्त होऊन त्रास पावत असतात. सारांश लहान असो अथवा थोर असो परंतु ज्याच्या अंतरीं समाधान ह्मणून झालें नाहीं, तो सुखानें कोठून निजेल.

चवथा हेन्री सन चौदाशें तेरांत मरण पावला. लोभ० हे आशीर्वाद. १४१३

# प्रश्न.

दुसऱ्या रिचार्डाचा वध केल्यानंतर इंग्लांडचा राजा कोण झाला ?

सिंहासनाचा अधिकार कोणाच्या वंशास ?

बरें चवथा हेन्री सुखानें राज्य अनुभवूं लागला किंवा मजा न्याजवर उठल्या ?

राजार्शी भांडावयास कोणी फौज जमा केली ?

ती मोठी लढाई कोठे झाली ?

बरें तेथें मोड कोणाचा झाला व कोण पडला ?

राजा स्वतां न्या लढाईत होता काय ?

न्याचा लेंक होता काय ?

तो कोणता लेंक ?

तो राजपुत्र चांगला किंवा वाईट असे ?

न्याचे वर्त्तणुकीवरून त्याचे बापास खेद झाला काय ?

मग तो राजपुत्र पुढ चांगला झाला काय ?

या राजानें मागल्या राजास घोर उपद्रव देऊन न्याचें राज्य अनीतीनें घेतलें न्या अकर्माची दुःखरूप टोंचणी राजाच्या अंतरीं होत असे काय ?

मागें जीं दुष्कर्में केलीं न्यांची अंतःकरणास टोंचणी होऊंलागली असतां निद्रा आणि सुख माग होतील काय ?

कोणी एक गरीब मजूर असून अंतःकरणीं समाधान झालें आहे आणि एक राजा असून चिंताग्रस्त आणि अंतरीं दुष्कर्माची टोंचणी आहे, यां दोघांतून सुखी कोण ?

हेन्री चौथा कोणत्या वर्षीं मरण पावला ?

# पत्र १५.

चिरंजीव०- विशेष मागल्या पत्रांत चौथ्या हेन्रीचें थोडेसें वर्त्तमान सांगितलें, त्यानंतर त्याचा वडील लेंक पांचवा हेन्री राजा झाला, त्याचें वर्त्तमान आतां सांगतों. हा राजा तर लहानपणीं मोठा व्रात्य दुर्गुणी असे, आणि यास वाईट संगतीचा फार छंद असे, हें आपल्यास मागेंच कळविलें. अल्पवयांत दुष्ट संगतीनें जसा दुर्गुण लागतो तसा दुसरा कशानें लागत नाहीं.

हा अल्पवयस्क राजा राज्य करूं लागला तेव्हां याचे सर्व दुर्गुणी सोबत्यांस वाटूं लागलें कीं, आतां आमचें चांगलें पिकेल आणि आमचीं व्यसनें व्हावीं तशीं चालतील, परंतु असें कांहीं झालें नाहीं. राजानें त्यांस बोलावून आणून सांगितलें कीं, मागें जें कांहीं म्या आज पर्यंत केलें त्याची मला मोठी लाज झाली आहे, तुम्हीही वाईट कामें करून पोट भरूंनये, भलेपणानें आपला निर्वाह करून घ्यावा, आणि तुमचीं दुराचरणें दुर्लक्षणें अगदीं पालटून जातील तेव्हां तुम्ही माझे भेटीस यावें, मध्यें येऊंनये, असें त्यांस सांगून कांहीं द्रव्य देऊन लावून दिलें.

आतां जे नीतीनें वागणारे भले लोक होते, त्यांस राजाच्या पूर्वीच्या आचरणावरून असें वाटूं लागलें कीं, या राजाजवळ आपलें कांहीं चालणार नाहीं, परंतु राजाचा पालटलेला स्वभाव पाहून त्यांस लौकरच आनंद झाला. एक अशी चमत्कारीक गोष्ट झाली कीं, सर्विलियम ग्यासकाइनी म्हणून एक न्यायाधीश होता हा मोठा सत्यानें चाले, कोठेही दोष दृष्टीस प-

डला असतां न्यास दंडल्यावांचून सोडूंनये, इंग्लांड देशींचे नीतिप्रमाणें पहतां गरीब मातबर सारिखे असें जाणून पक्षपात न धरितां वास्तविक रीतीनें न्याय करीत असे. सारांश सत्याविषयीं जशी याची दृष्टि तशी इतर लाभाविषयीं नसे. असे असतां याला राजाचा लहानपणीं दंगा दांडगाई अढळली, त्याजवरून त्याणे जसा एकाद्या केवळ गरीबास दंड करावा त्याप्रमाणें राजास बंदिखान्यांत पाठविलें होतें, परंतु या राजपुत्रास असा कसा दंड करावा असें कांहीं पाहिलें नव्हतें. याजकरितां जेव्हां हा राजा राज्य करूं लागला, तेव्हां सर्विलियम न्यास कोईनीस भय वाटूं लागलें कीं, मागें मी यास जी शिक्षा केली आहे त्याचें फळ आतां मला प्राप्त होईल. परंतु असें न होतां राजानें न्यास बोलावून सांगितलें कीं, तुम्ही यथार्थ व थोरपणा केला असेंच तुम्हीं सत्यपूर्वक कोणाची मुर्वत न धरितां चालवें. मग त्याचा बहुमान होऊन त्याजवर राजाची प्रसन्न मर्जी झाली, यामप्रमाणें राजा राज्य करूं लागला. जेणेंकरून आपलें राज्य चांगलें नांदे, लोक सुखी होत असेंच याणें करीत असावें, ज्यांचें आचरण चांगलें त्यांचा बहुमान करीत असावा, व जे खुशामती दारुबाज व्यसनी त्यांचा थारा करूंनये.

या राजाचे वेळीं इंग्लांडदेशीं ख्रिस्ती धर्म रोमन् क्याथलीक रूपानें चालला होता. ज्या रीतीनें फिरंगी ख्रिस्तीधर्म अचरतात त्या धर्मास रोमन् क्याथलिकधर्म, पोपाचें मत, पोपाचा धर्म असें म्हणतात. इंग्लांडदेशींचा व त्याचे जवळच्या दुसऱ्या बहुत्येक देशींचा धर्म रूम नगरीच्या पोपाच्या स्वाधीन असे. हे पोप ख्रिस्तीधर्माचा वास्तविक अभिप्राय सोडून

बहुत्येक असत्य दुराचरण करीत, यांचा असा हेतु असे कीं लोकांनीं अज्ञानांतच रहावें. तेसमयीं बैबल झणून जें ख्रिस्तीशास्त्र व भजनपद्धति हीं लाटीन झणून संस्कृतासारिखी एक कठिण भाषा आहे त्या भाषेंत असत, याजकरितां ख्रिस्तीशास्त्रांतील सुवर्त्तमानाचा वास्तविक अर्थ लोकांस क्वचित् कळे, आणि कळवायाजोगा कांहीं योगही नव्हता. आठव्या हेन्रीचें राज्य झालें तेव्हां हें सर्व पालटलें. पोपाचे धर्माचें मतांतर झालें, म्हणजे ख्रिस्ती धर्म वास्तविकपणें चालूं लागला, आणि जे लोक पोपाच्या मतास अटकाव करून त्याचे दोष बाहेर काढीत चालिले त्यांलोकांस प्राटेस्टान्ट असें म्हणूंलागले. याच प्रमाणें इंग्लीश लोकांस आलीकडेस म्हणतात. प्राटेस्टान्ट धर्म इंग्लांडदेशीं आठव्या हेन्रीचें राज्य होई तोंपर्यंत प्रवृत्त झाला नव्हता, परंतु त्या राजाच्या पूर्वी बहुत दिवस कित्येक चांगले मनुष्य लोकांस बोधकरून जागृत करीत होते. हा उद्योग पूर्वी पासूनच चालू झालाहोता, दुसऱ्या रिचार्डाचें राज्य होतांच विक्लिफानें बैबलाचें भाषांतर इंग्लीश भाषेंत केलें, परंतु त्याजवरून धर्माध्यक्ष फार संताप पावले. नंतर तें बैबल कोणी वाचूंनये झणून ताकीद झाली, आणि तें वाचण्याची ज्यांनीं इच्छा धरिली अशा बहुत जनांचा वध झाला. त्यावेळीं लार्ड कोबह्याम् म्हणून एक मानकरी होता, त्यास तें मतांतर प्रसिद्ध करण्याची फार इच्छा होती, तो लोकांस बैबल वाचायास प्रवृत्त करूं लागला, त्याजवरून त्यास कैद करून लंडनच्या किल्यांत टाकिलें. मग त्याचा कांहीं दिवसांनी वध केला. त्यास मारितांना अति घोर दुःख दिलें तें वाचेनें सांगत येत नाहीं. त्याचे शरीरास अ-

नेक प्रकारचे उपद्रव केले, शेवटीं त्याचें शरीर सांखळेनें बांधलें, आणि हळू हळू जळे असा अग्नि करून त्याला जीवंतच भाजला.

यामप्रमाणें धर्माचे जे द्वेष्टे ते उपद्रव देऊन लोक खरा धर्म जाणतना असें करूं लागले. पुढें पुढें तर हे उपद्रव फारच होऊंलागले, परंतु अशीं दुःखें दिलीं तरीं त्या धर्मास अटकाव झाला नाहीं, तेणें करून उलटी त्याची अधिकच प्रवृत्ति झाली. अशा पीडा देणाऱ्यां पुरुषांच्याठायीं वास्तविक ख्रिस्ती धर्म नाहीं असें सिद्ध होऊंलागलें, आणि जे खरा ख्रिस्ती धर्म चालविणारे ते त्या मतांतराची फार अपेक्षा करूं लागले. आणखीं प्राटेस्टान्टांचा वध केला, त्यांस दुःखें दिलीं तीं त्यानीं मोठ्या धैर्यानें सहन केलीं. त्याजवरून असा निश्चय होऊं लागला कीं, इतकीं हे आपल्या मताकरितां दुःखें सोसीत असतां तें मत सोडीत नाहींत, तस्मात् तें मत खरें असावें. यांस तर पोपाच्या मतांत चालणारां पासून मोठे मोठे उपद्रव व घोरदुःखें प्राप्त झालीं, परंतु सर्व शक्तिमान् जो ईश्वर त्यानें यांस धैर्य दिलें, तेणेंकरून यांच्यांनीं तीं सहन झालीं. पाहिलें असतां हे उपद्रव एक पक्षींच घडत होते असें नाहीं, प्राटेस्टान्ट ही असेच उपद्रव देत असत. सारांश कोणताही पुरुष असो, परंतु जर त्याच्याठायीं ख्रिस्ताचा वास्तविक धर्म नाहीं तर तो प्रसंगीं व्हावे तें पाप करील. असो आठव्या हेन्रीच्या वेळीं आणि वधकर्ती मेरी ह्मणून जी त्याची कन्या तिच्या वेळीं मतांतराचा प्रसंग येईल त्यासमयीं असलीं घोर दुःखें फार ऐकण्यांत येतील. पांचव्या हेन्रीच्या वेळापासून तरी त्या मतांतराचा कांहींसा आरंभ झाला होता ह्मणून विक्लिफ् यास मतांत-

राचा पिता असें कोठे कोठे बोलले आहे.

ग्रामकारें धर्माविषयीं जो राज्यांत अनर्थ मांडला होता त्याचें निवारण करावें असें राजाच्या मनांत वागूं लागलें, तेसमयीं परराजाशीं लढाई आरंभिली असतां त्या लढाईंत लोकांचीं चित्तें गुंतलीं म्हणजे धर्मप्रकरणीं जे परस्पर उपद्रव करितात ते करणार नाहींत, यास्तव त्यांचून ते उपद्रव बंद करावयास दुसरा उपाय नाहीं असें जाणून राजानें फ्रेन्चदेशींच्या लोकांशीं लढाई आरंभिली, आणि त्यांजबरोबर असें बोलणें लाविलें कीं, वास्तविक पाहतां तुमचा राजा मी म्हणून फ्रान्सचें राज्यपद मला असावें. मग जितकी फौज मिळाली तितकी मिळवून तें सारेंच राज्य घ्यावें या बेतानें राजा फ्रान्सदेशीं गेला.

या राजास पहिल्यानें तर सर्व गोष्टी प्रतिकूळ झाल्याशा दिसूं लागल्या. याचे फौजेंत एक मोठा भयंकर रोग उठला, तेणेंकरून याचे पुष्कळ शिपाईलोक मेले, यास बाहेर पडायास मार्गच मिळेना अशाठिकाणीं यास शत्रूनें घेरलें, मग तेथें यास युद्ध करावें लागलें, त्यावेळीं शत्रुकडेस याचे फौजेपेक्षां दाहा पट अधिक फौज होती, आणि याची फौज थोडकी आणि रोगानें जर्जर झाली होती, असें असतां ही यानें त्या फ्रेंचलोकांचा अगदीं पराजय केला. ही नामांकित लढाई आजिन्कोर्टास झाली. नंतर फ्रेंचलोकांनी सल्ला करून असा ठराव केला कीं हेन्रीराजानें फ्रान्सचे राजकन्येस वरावें आणि त्या राजाच्यामागें राज्यपद हेन्रीस द्यावें.

मग हेन्रीनें त्या कन्येस वरून पारीसनगर म्हणून

जी फ्रान्सदेशींची राजधानी तेथें वसायाचा निश्चय केला. तेथें एक मोठा महाल बांधून फ्रेंचराजापेक्षां फारच मोठ्या डौलानें हेन्री राहूं लागला. एक्या दिवशीं एक मोठें जेवण झालें, तेथें थोरथोर लोक मिळाले, तेव्हां हे दोघे राजे शिरीं मुगुट घालून आपआपल्या राण्या घेऊन जेवावयास बसले. न्याकाळीं फ्रान्सचे राजाचा फारसा सन्मान झाला नाहीं, कायतो हेन्रीचाच सन्मान झाला. मग त्या दिवसाचें वैभव पाहून हेन्री गर्वानें डोलूं लागला, परंतु गर्व करायाजोगा मनुष्याजवळ काय पदार्थ आहे. या मृत्युलोकींचे सर्व पदार्थ अशाश्वत आणि असेंच या संसारांत लहानमोठ्याच्या नित्य अनुभवास येत आहे. हेन्रीराजास एक अनिवार रोग झाला, न्याच्या दुःखानें न्याचें सर्व ऐहिक ऐश्वर्य नाहींसें झालें, आणि पुढें आपण अल्पवयांतच संपले. जे उत्कृष्ट योद्धे होऊन गेले ज्यांचे इतिहासांत वर्णन केलें आहे न्यांतला च हा एक राजा होय. परंतु याचा प्रताप बहुत काळ राहिला नाहीं, हा सन चौदाशें बाविसांत
१४२२. मेला. न्यावेळीं न्याचें वय चवतीस वर्षांचें होतें.

असल्या इतिहासावरून कळून येतें कीं या लोकींचे संपत्तीचा गर्व धरून व्यर्थ, म्हणून पर लोकींच्या सुखाकडेस लक्ष लावावें हेंच मनुष्यास उचित. जशी लहानास दुःखें आहेत तशीं थोरासही आहेत असें जाणून थोरपणाविषयीं आतुर न होतां ईश्वरानें ज्या स्थितींत ठेविलें असेल त्या स्थितीनें संतुष्ट असून आपला जो पोट भरायाचा धंदा तो आनंदानें करून ईश्वराचे उपकार आठवीत असावें. स्मोलेटानें पांचव्या हेन्रीचें वर्णन केलें आहे तें असें.

हेन्री शरीरानें उंच सडक असे, न्याची मान लांब व मुख सुंदर. व शरीराचे अवयव सुघटित असत. लढाईच्या कसरतींत व चपळतेंत तर याजबरोबर ठरायाजोगा त्यावेळीं दुसरा कोणी नसे. हा सहनशील व उद्योगी असे आणि शीत, क्षुधा, श्रम सोसून घेणारा यासारिखा याचे फौजेंत दुसरा कोणी शिपाई नसे. याचें शौर्य कांहीं असें असे कीं कोणत्याही भयानें हा हटूंनये, व कोणत्याही अडचणीनें हा अडूंनये. याचें आचरण शुद्ध धार्मिक आणि आहारादिक परिमित असत, सेनेची सुशिक्षता आणि राजाचें उत्तम आचरण यां उभयतांच्या स्वाधीन यश व जय असें जाणून हा हेन्री सेनेचे शिक्षेविषयीं व आपले वर्त्तणुकीविषयीं फार जपे. युन्धकौशल्यांत व राजकारभाराच्या चातुर्यांत तर यासारिखा दुसरा विरळा, यामुळें हेन्री एक नामांकित शिपाई होऊन गेला. असेहि याचे थोर थोर गुण असतां इतर थोर योन्ध्यांसारिखा हा अभिमानी व कोठें निर्दय असा असे. लोभक० हे आशीर्वाद.

---

## प्रश्न.

पांचवा हेन्री कोणत्यासालीं राज्य करूं लागला ?
यास कसले सोबतीचा छंद असे ?

हा राजा झाला तेव्हां आपल्या वाईट सोबत्यांचीं व्यसनें यानें चालतींच ठेविलीं काय ?

त्यानें त्यांस काय केलें ?

सरविलियम ग्यास कोयिनी ह्मणून जो मुख्य न्यायाधीश होता त्याची गोष्ट सांगावी ?

या सत्यानें चालणाऱ्या न्यायाधीशाशीं राजा कसा वर्त्तला ?

या हेन्रीचेवेळीं इंग्लांड देशांत कोणता धर्म चालला होता ?

रोमन् क्याथलिक् धर्माचा कित्येक लोकांस त्रास आला होता काय ?

कोणत्या मानकऱ्यानें मतांतर करण्याचा उद्योग केला ?

मग त्यास काय केलें ?

जे लोक रोमन क्याथलिक् मतास प्रतिबंध करीत त्यांस ते मतवादी कोणती पीडा करीत ?

धर्म प्रकरणीं लोकांस जे उपद्रव होत असत ते बंद करण्याविषयीं राजानें कोणता उद्योग आरंभिला ?

वास्तविक पाहतां तुमचा राजा मी असें हेन्रीनें कोणत्या देशींच्या लोकांशीं बोलणें लाविलें ?

मग त्यानें फ्रेन्च लोकांशीं त्यांच्याच मुलखांत लढाई केली काय ?

त्या लढाईचेवेळीं पहिल्यानें त्यास सर्व गोष्टी अनकूळ होत्या काय ?

त्यानें नामांकित लढाई केली ती कोठे केली ?

तेथें कोणास जय मिळाला ?

इंग्लीश लोकांचा फ्रेन्च लोकांबरोबर सल्ला होऊन काय ठराव झाला ?

मग त्या ठरावानंतर हेन्री राजमाहाल बांधून कोठे वसूं लागला ?

तो किती वर्षें जगला ?

तो कोणत्या वर्षीं मरण पावला ?

हा राजा स्वभावानें व गुणानें कसा असे ?

# पत्र १६.

चिरंजिव०—विशेष पांचवा हेन्री कसा होता, त्यानें फ्रान्स् देशींच्या लोकांशीं कसकशा लढाया केल्या, हें वर्त्तमान मागल्या पत्रांत कळविलें, त्यानंतर साहवा हेन्री झाला त्याणें कसें राज्य केलें तें वर्त्तमान आतां लिहितों. या साहाव्या हेन्रीच्या बापाचा काळ झाला तेव्हां हा एका वर्षाचा होता म्हणून बेडफोर्डच्या ड्युकाकडेस राज्य सोपून दिलें आणि राजाच्याठायीं स्वतां राज्यकरण्याची योग्यता येई तोंपर्यंत बेडफोर्डाच्या ड्युकानें राज्याचा संभाळ करावा असें ठरलें. मग बेडफोर्डाच्या ड्युकानें फ्रान्स देशाबरोबर लढाई चालू केली, परंतु त्यावेळीं इंग्लीशलोक जय पावले नाहींत. त्यांस फ्रान्सदेशीं जो अधिकार प्राप्त झाला होता तो थोडक्याच दिवसांत नाहींसा झाला, त्यावेळीं एक चमत्कारिक गोष्ट घडली ती कोणी ऐकिली असतां खरीही वाटणार नाहीं.

फ्रान्सदेशीं एक्या गावांत जोन् अफ् आर्क् म्हणून एक मुलगी होती, ही वाटसरू लोकांस उतरावयास जीं वाटोवाट घरें बांधलीं असतात, जेथें जसें द्रव्य द्यावें त्याप्रमाणें भोजनादिक मिळतात तसल्या एक्या घरीं चाकरीस होती. या मुलगीस असें वाटूं लागलें कीं माझा देश शत्रूचे स्वाधीन झाला आहे, त्याची मुक्तता माझे हातून व्हावी असें आहे. मग तिणें ती कल्पना मनांत आणून असें प्रगट केलें कीं, या देशाची मुक्तता करण्याविषयीं मला ईश्वराकडून आज्ञा झाली आहे. ही कल्पना लोकांस खरी वाटून त्यांस अति आवेश

चढून त्यानीं मोठीं शूरत्वाचीं कर्में आरंभिलीं. या मुलगीनें आंगांत कवच घालून हातीं तरवार घेतली व समागमें शिपाई घेऊन इंग्लीश लोकांचे फौजेवर गेली. त्यावेळीं त्या फौजेनें आर्लीयनस नगरास वेढा घातला होता, तेथून त्या फौजेस त्या कन्येनें अगदीं हाकून लाविलें. यामुळें त्या मुलगीच्या योगेंकरून फ्रेन्च लोक इंग्लीशांवर आपला चढाव करूं लागले, नंतर एक लढाई झाली, तेथें त्या मुलगीस इंग्लीश लोकांनीं धरलें, आणि ती भुताळी असें जाणून तिला जीवंतच जाळिली. जादूखरी मानून तरुण स्त्रीस जीवंतच जाळणें याजवरून त्या काळींच्या लोकांचें अज्ञान व निर्दयपणा किती सांगावा. असें झालें असतां ही फ्रेन्च लोकांचा जयच होत गेला, आणि फ्रान्सदेशीं इंग्लिशांस एक ठिकाणही राहिलें नाहीं.

असें होतअसतां इकडेस इंग्लांडांत राज्याची फार अव्यवस्था झाली होती. राजाच्याठायीं प्रजावर्त्तविण्यास सामर्थ्य नाहीं, अवघें राज्यभर लोक रुष्ट व बंड करण्याच्या बेतांत असें झालें होतें. तुह्मास पूर्वी कळविलें कीं, या साहावे हेन्रीचा आजा चौथा हेन्री न्यास राज्य घेण्याचा अधिकार नसतां त्याणें राज्य बळेंच घेतलें. तिसऱ्या येडवर्डाचा जान् गान्ट ह्मणून जो तिसरा पुत्र, जो ल्यान्क्यास्टराचा ड्यूक, त्याचा पुत्र हा चौथा हेन्री. हा कनिष्ठ बंधूचा वंश ह्मणून त्यास राज्याचा अधिकार नाहीं, वडील पुत्राची नकल झाली असतां दुसऱ्या पुत्राच्या वंशास राज्य मिळावें. यास्तव योर्कचा ड्यूक जो या दुसरे पुत्राचे वंशातला, तो राज्याचा अधिकारी. तशांत लोकांस आपला राजा साहवा हेन्री याचा त्रास आला होता, ह्मणून यो-

र्काचे वंशानें राज्य करावें असें सर्वांच्या मनांत वागूं लागलें.

असें होत असतां ज्यान् केड ह्मणून एक पुरुष होता, त्यानें अशी आवाई उठविली कीं मी योर्काचे वंशांतला, मला राज्य करण्याचा अधिकार आहे, हें त्याचें बोलणें बहुत्येक जण खरें मानून त्याचे नादीं लागलें. मग तो सुमारें वीस हजार लोक घेऊन लंडन शहरास आला, आणि ब्लाक्हीथ ह्मणून एक ठिकाण आहे तेथें उतरला. मग तेथून लंडनास गेला, परंतु तेथून त्याला लौकरच रोचेष्टरापर्यंत हटविलें, असें होतांच त्यास त्याचे बहुत्येक लोकानीं सोडून दिलें. मग असा ठराव केला कीं, जो कोणी जान् केडाला मारून त्याचें शीर घेऊन येईल त्यास इनाम मिळेल त्याजवरून केडास धरून त्याचा वध केला आणि त्याचें डोकें लंडनाच्या पुलावर ठेविलें.

असल्या बंडांवरून योर्काचा ड्यूक आनंद मानूं लागला, कांतर लोकानीं मला राज्याचा अधिकारी असें मानून राज्यासनीं बसवावयास अनुकूळ व्हावें, असें जें याच्या मनांत होतें त्यास तीं बंडें उपयोगीं पडलीं. मग याच्या जें मनांत वागत होतें तें हा बाहेर दाखवूं लागला. याच संधीस साहव्या हेन्री राजास दुखणें लागलें, तेव्हां राज्य चालवावयास योर्काच्या ड्युकास नेमिलें. नंतर राजा बरा झाला परंतु एकवेळ जो अधिकार हातीं आला त्यास सोडूंनये असें त्या ड्युकास वाटूं लागलें, तेसमयीं राजाच्या नम्रस्वाभावामुळें ड्युकाचे इच्छेप्रमाणें घडूं आलें असतें, परंतु त्या राजाची राणी मार्गरेटइची प्रकृति कांहीं वेगळीच होती, ह्मणून इणे ड्युकाच्या व त्याचे पक्षाचे जे होते त्यांच्या बरोबर उ-

घड लढाई आरंभिली. योर्क आणि ल्यान्क्यास्टर या घराण्याच्या ज्या परस्परें लढाया झाल्या त्याचें मूळ येथून. याबद्दुत वर्षें चालल्या, एणेंकरून दुसरीं बहुत तुंबळ युद्धें झालीं, रक्ताचे पूर वाहले, व मोठमोठ्यांचीं वैमनस्यें पडलीं. मुळीं लढायाच देशाच्या अनर्थास कारण होत, मग त्या देशांतलेच लोक सोयरे संबंधीं आंतलेआंत भांडूं लागले असतां त्यापासून मोठा अनर्थ होईल यांत काय सांगावें. यां लढाईंत कोणेसमयीं एके पक्षास यश मिळे, कोणे समयीं दुसऱ्यास मिळे. या लढाया ज्या ज्या ठिकाणीं झाल्या तीं अवघींच येथें लिहावीं असें नाहीं. एक लढाई ब्लोहीत येथें, एक लढाई वेकूफिल्ड येथें, व दुसऱ्या बहुत जागोजागीं झाल्या.

वेकूफिल्डास जी लढाई झाली तेथें योर्काच्या ड्युकाचे फौजेचा मोड होऊन तोही मारला गेला, परंतु त्याच्या पक्षाचे जे होते ते पुनः जसेचे तसेच सज्जन

१४६१. डयुकस्बरीस जी लढाई झाली तेथें जय पावले, आणि ड्युकाचे लँकास सन चौदशें एकसष्टांत राज्य स्थानीं बसविला त्याचें नाव येडवर्ड चौथा.

मग त्या साहाव्या हेन्री राजास त्याचेच खोलींत ग्लौसेस्टराच्या ड्युकानें मारिलें. हा ड्युक येडवर्ड राजाचा भाऊ पुढें राजा झाला, याचें नाव तिसरा रिचार्ड हा कुबडा व मोठा निर्दय असे. मग ती ड्युकस्बरीची लढाई झाल्या नंतर याच ग्लौसेस्टराच्या ड्युकानें व क्लारेन्सूच्या ड्युकानें त्या हेन्रीच्या मुलासही भोसकून मारिलें. या राजाच्या वेळीं पाहिलें असतां लढाई व वध हींच बहुधा झालीं. योर्क आणि ल्यान्क्यास्टर यां घराण्याच्या लढाया म्हणून काय तें या पत्रावरून तुह्मास कळूं येईल. यां लढायांस वार्सू अफू रोस असें ही म्हण

तात, याचा अर्थ गुलाबाच्या लढाया. कां तर ल्यान्क्यास्टराचे पक्षास जे होते ते आपले टोपीस तांबडा गुलाब लावीत, आणि योर्कचे पक्षाचे पांढरा लावीत. गुलाबाचा समय जाऊन गुलाब मिळेना अमें झालें म्हणजे मग तांबड्या आणि पांढऱ्या वस्त्रांचे गुलाब करून आपआपल्या टोप्यांस लाऊन दिवस काढीत असत.

ल्यान्क्यास्टराच्या वंशाचे तीन राजे झाले, नंतर योर्काच्या वंशींचा राजा राज्य करूं लागला. ल्यान्क्यास्टराच्या वंशास राज्य पद नव्हतें, त्या वंशांत हेन्री चौथा राजा झाला त्यायोगेंकरून त्या वंशास राज्यपद मिळालें, परंतु तें राज्यपद नीतीनें प्राप्त झालें नाहीं, बळात्कारेंकरून मेळविलें, म्हणून त्या वंशास बंडखोर असेंही म्हणतात. लोभ० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

कोणत्या वर्षीं साहवा हेन्री राज्य करूं लागला ?

याचा बाप पांचवा हेन्री मेला तेव्हां हा किती वर्षांचा होता ?

राजा आपल्या अल्प वयामुळें राज्य करायास असमर्थ होता, तेव्हां त्या राज्याचा संभाळ करावयास कोणास नेमिलें होतें ?

बेडफोर्डाचा ड्यूक फ्रान्स देशाबराबर लढत होता काय ?

आणि तेथें त्यास जय मिळाला काय ?

इंग्लीश लोकांस फ्रान्सदेशांत जो अधिकार प्राप्त झाला होता तो कोणती अपूर्व गोष्ट होऊन अगदीं नाहींसा झाला ?

जोन् अफ् आर्क् ह्मणून कोण होती ?

इने फ्रान्सदेशींच्या कोणत्या नगरापासून इंग्लिशांचे फौजेस हांकून लाविलें ?

मग इला इंग्लीश लोकांनी एकादे लढाईंत धरिलें काय ?

त्यानीं तिचें काय केलें ?

असें वर्त्तमान बाहेर होत असतां इंग्लांडांत कसें चाललें होतें ?

साहावा हेन्री हा चौथे हेन्रीचा कोण होय ?

बरें याच्या वंशास राज्य पदाचा अधिकार होता काय ?

हा काय ल्यान्क्यास्टराचा वंश नव्हे ?

योर्काचा ड्युक ज्या वंशांत झाला तो वंश ल्यान्क्यास्टरापेक्षां वडील बंधूचा नव्हता काय ?

तर मग योर्काच्या ड्युकास राज्य मिळूंनये काय ?

बरें लोकांस साहावे हेन्री राजाचा त्रास आला तेव्हां योर्काच्या वंशास राज्य द्यावें असें त्यांच्या मनांत वागूं लागलें काय ?

असें झाल्यावरून बंडें होऊं लागलीं काय ?

मी योर्काच्या वंशांतला अशी आवाई उठवून लोकांस आपल्या नादीं कोणीं लाविलें ?

केड किती लोक घेऊन लंडनास गेला ?

मग केडाचें काय झालें ?

राजास दुखणें लागलें तेव्हां तें राज्य चालवावयास कोणास नेमिलें होतें ?

योर्काच्या ड्युकाच्या हातीं जो अधिकार आला होता तो सोडूंनये असें न्यास वाटूं लागलें काय ?

बरें असें झाल्यावरून योर्क आणि ल्यान्क्यास्टर

यां घराण्याच्या परस्पर लढाया झाल्या काय ?

हेन्रीच्या स्त्रीचें नाव काय ?

या राणीनें काय केलें ?

योर्क आणि ल्यान्क्यास्टर घराण्याच्या परस्पर बहुत मोठ्या लढाया झाल्या काय ?

कोणत्या लढाईंत योर्काच्या ड्युकाचे फौजेचा मोड होऊन तो मारला गेला ?

त्या ड्युकाच्या पक्षाचे जे होते ते कोणत्या लढाईंत पुनः जसेचे तसेच सजून जय पावले ?

मग कोणास राज्य स्थानीं बसविलें ?

कोणत्या सालीं बसविलें ?

चौथ्या येडवर्डास राज्य प्राप्त झालें, मग त्या साहाव्या हेन्रीस काय केलें ?

ग्लौसेस्टराचा ड्यूक हा कोण व हा कसा असे ?

योर्काच्या आणि ल्यान्क्यास्टराच्या लढायांस गुलबांच्या लढाया असें कां म्हणतात ?

कोणत्या पक्षाचे लोक टोपीस तांबडा गुलाब लावीत आणि कोणते पांढरा लावीत ?

ल्यान्क्यास्टराचे वंशाचे किती राजे झाले ?

---

## पत्र १७.

चिरंजीव०-विशेष इंग्लांडदेशींच्या राजांचे जे-स्वल्प वृत्तांत तुह्मास पाठवावे, ते तुह्मी मोठ्या आवडीनें समजून घेत असतां, हें जाणून मोठ्या आनंदानें आणखी वृत्तांत लिहून पाठवितों. मी जें जें कांहीं तुह्मास कळवितों, त्याची चांगली आठवण धरिली असतां इंग्लांडदेशींच्या वृत्तांताचे जे मुख्य मुख्य भाग, ते समज-

प्यास तुह्मास सुलभ पडेल. हा लिहून पाठवितों असला लहान वृत्तांत शिकून मोठेपणीं इंग्लांडाचा मोठा वृत्तांत शिकूं लागलें असतां, तो जसा कळूं येतो, तसा पहिल्यानेच तो शिकूं लागलें असतां कळूं येत नाहीं. या लहान वृत्तांतानें तरी इंग्लांडदेशींचा सरासरी अवघा वृत्तांत समजूं लागेल.

१४६१ मागल्या पत्रांत तुह्मास कळविलें कीं, योर्काच्या ड्युकाचा लेंक चौथा येडवर्ड यास चौदाशें एकसष्टावे वर्षीं राजपदीं बसविलें. हा मोठा देखणा असे, याचे सारिखा सुंदरपुरुष दुसरा कोणी त्या राज्यांत नव्हता, परंतु येवढ्यानेच हा स्तुतीस योग्य होत नाहीं. याचे आचरणांत कांहीं एक चांगलेपणा नसे, वाईट दुष्टपणाच असे. हा फार क्रूर, खुनशी व दुराचरणी असे, याजविषयीं एक गोष्ट सांगतों, त्याजवरून याचा क्रूरस्वभाव व खुनशीपणा कळूं येईल. एकेदिवशीं हा थामस् बर्डेट ह्मणून एक साहेब होता त्याच्या शिकार खेळायाच्या जागेंत शिकारीस गेला. या थामस बर्डेटचा, आणि राजाचा भाऊ क्लेरेन्सूचा ड्यूक याचा फार स्नेह असे, आणि राजाचा आपल्या त्याभावा बरोबर कज्जा होऊन द्वेष पडला असे. तो द्वेष आपल्या भावाच्या स्नेह्यावर उगवावा असें राजानें मनांत आणून त्या थामस बर्डेटचा एक आवडता हरण होता, तो मारला. त्याजवरून बर्डेट रागेभरून असें बोलिला कीं, हें हटवादाचें काम करायास ज्याणें राजास बुद्धि दिली असेल त्याच्या पोटांत त्या हरणाचीं शिंगें खुपसोत. यां शब्दांवरून बर्डेटची चौकशी करून त्यास टिबर्न येथें फांशीं दिलें. अहा हा ! किती क्रूर हें कर्म ! मनास येईल तसें करावें, दुसऱ्यास निरर्थक उप-

झव करावा, असल्या राजाचा स्वाधीन आपण नाहीं, याजवरून आपण आपल्यास सुखी मानावें. असा हा हट्टवाद व आपल्या मित्राचा वध पाहून क्लेरेन्सा-च्या डच्युकास वाईट वाटून फार राग आला, आणि म्हणूं लागला कीं, बर्डेटचा कांहीं अपराध नसतां त्यास शासन केलें ही अनीति क्रूर कर्म होय, इतक्याच बोलण्यावरून राजानें त्या भावाचाही वध करावा अशी आज्ञा केली; मग न्यास मारिलें तो प्रकार असा. तूं कसा मरूं इच्छितोस असें न्यास विचारिलें, त्यानें उत्तर दिलें कीं मला मालसी मद्याच्या पिपांत बुडवून टाकावें. मालसी मद्य द्राक्षारसाची दारू, ही न्यास फार आवडत असे असें वाटतें. मग या दारूचें एक मोठें पीप आणून त्यांत त्या डच्युकाला उलटा बुडवून मारिला.

फ्रेन्च लोकांबरोबर लढाई करण्याविषयीं या राजाची तयारी होत होती इतक्यांत यास दुखणें लागून हा सन चौदाशें त्र्याय्शींत एकेचाळीसावे वर्षीं मरण पावला. १४८३

पूर्वीं इंग्लांडदेशींचे राजे जीं मोठीं मोठीं क्रूर कर्में करीत, आणि बहुतकरून इच्छेस येई त्याममाणें राज्य करीत, तो वृत्तांत पुरातन बखरींत वाचूं लागलें असतां आंगाचे कांटे उभे राहतात, त्यावेळीं राजानें जरी मोठा घोर बळात्कार आरंभिला तरी त्यास कोणी आड येऊं नये कांहीं अडचण पडूंनये असें होतें. आतां तसा उपद्रव नसतां इंग्लीश लोक असें बोलतात कीं "आतां आह्मास स्वतंत्रपणा म्हणजे मोकळीक नाहीं आणि राजा आणि राज्य जसें असायाचें तसें नाहीं, आणि आ-

पल्यापेक्षां मातबर थोर गृहस्थ अढळला असतां आतां काय ताळ राहिला, ज्याला पाहिजे त्याणें मोठे पदवीस चढावें, अशी रागें भरून निंदा करितात." परंतु हीं असलीं भाषणें बहुतकरून केवळ अविचाराचीं कळलें. या गोष्टींचा जर अभिमान सोडून वास्तविक विचार केला तर दुसऱ्याचा हेवा करून खंती होण्यास कांहीं कारण नाहीं. जे चांगले खिस्ती जन ते असें म्हणतात कीं " आपण ह्या सांप्रतकाळींच्या स्थितीनें आहों हाच मोठा लाभ." राजाचा जो मोठा घोर उपद्रव इंग्लांडचे बखरींत सांगितला आहे तसा उपद्रव आतां करीन असें कोणी म्हणेल तर तसें होणार नाहीं. आपल्यापेक्षां कमी योग्यतेचे जे लोक त्यांस उपद्रव करावा असें आतां राजा आणि मानकरी यांचे मनांत येत नाहीं, आणि जरी आलें तरी कायद्यांच्या आटकावामुळें तसें त्यांच्या हातून होत नाहीं. याजकरितां अशी जेथें न्यायनीति वागती अशा राज्यांत आपलें राहणें आहे हाच मोठा लाभ. गरीब अथवा मातबर यांच्या शरीरास किंवा जिनगीस कोणाचा उपद्रव होऊंनये असें त्यांचें रक्षण होतें, आणि जे कांहीं आपल्यास बरें योग्यतें करण्याची मोकळीक आहे असें असतां आम्हास मोकळीक नाहीं म्हणून पुष्कळलोक हांका मारितात, परंतु त्यांचा भाव काय तो कळत नाहीं. एक वृद्ध खिस्ती म्हणतो "माझें एवढें वय होऊन मला आतां म्हातारपण आलें. परंतु खिस्ती मतांत चालणाऱ्या मनुष्यास जें योग्य तें मी करूं लागलों आणि त्यांत मला कोणे एक्या कायद्यानें अटकाव केला असें तर कोठे माझ्या जन्मांत अढळलें नाहीं, आतां दुसऱ्याचा जाऊन माल घेणें, तर तसलें काम माझ्या

मनांतच येत नाहीं, आणि आलें तर मला कायद्याचा अकटाव.होईल असा अटकाव अवश्य पाहिजे. असला कायदा आहे म्हणूनच माझ्या मालाचें रक्षण होतें. जर कोणी गृहस्थ माझ्यापेक्षां द्रव्यवान् असला आणि त्याचें द्रव्य ज़ाऊन घेईन म्हणेन तर तें घ्यावयास मला मोकळीक नाहीं." असले अटकाव आपल्या सर्वांच्या हिताचे आहेत आणि ते अवश्य. असले पाहिजेत. येणेंकरुन आपल्या वास्तविक मोकळेपणांत कांहीं कमी पडत नाहीं, उलटें आपलें रक्षण होतें व आपल्यास सुख मिळतें. परंतु हा विचारकरितां इंग्लांडचा वृत्तांत तसाच राहिला, म्हणून हा विचार इतकाच येथें पुरे. लो० हे आशीर्वाद.

---

## प्रश्न.

चौथ्या येडवर्डास राजपदीं कोणत्या सालीं बसविलें ?

तो स्वरूपानें कसा असे ?

त्याचा स्वभाव कसा असे ?

राजाचा क्लारेन्सचे ड्युकाशीं द्वेष होता त्याजवरून राजानें त्याच्या मित्रास काय केलें त्याची सविस्तर गोष्ट सांगावी. पत्रांत ज्या भाषेनें ती गोष्ट लिहिली आहे त्याच भाषेनें ती गोष्ट सांगितली पाहिजे असें नाहीं, तुह्मास त्या गोष्टीचें स्मरण असलें पुरे. अशा गोष्टी वांचून त्या बोलून दाखविण्याचा अभ्यास केला असतां कोठे न अडतां व गोंधळतां सरळ रितीने बोलण्याची टेव लागेल ?

क्लारेन्साचा ड्यूक हा राजाचा कोण ?

राजा लढाई करण्याच्या बेतांत होता काय ?

कोणत्या देशींच्या लोकांबराबर लढाई करण्याच्या बेतांत होता ?

मग तो बेत कशामुळें सिद्धीस गेला नाहीं ?

राजा मरण पावला तेव्हां याचें वय किती वर्षांचें होतें ?

तो कोणत्या सालीं मेला ?

---

# पत्र १८.

चिरंजीव० - विशेष सन चौदाशें त्र्याय्शींत चौथा येडवर्ड मरण पावला, त्याचें वर्तमान तुह्मास मागील पत्रांत कळविलें. त्या राजास तीन मुलें होतीं, दोन मूल एक मुलगी. मोठ्या मुलाचें नाव येडवर्ड, दुसऱ्याचें रिचार्ड, आणि मुलगीचें इलिझाबेथ्. त्या राजाच्या मागें त्याचा वडील मुलगा पांचवा येडवर्ड राजा झाला, परंतु याचें वय १३ वर्षांचें, त्यामुळें याचे हातून राज्य कारभार चालेना ह्मणून याचा चुलता रिचार्ड ग्लौसेस्टराचा ड्यूक राज्यकारभार चालवावयास नेमिला. या ड्युकाचें नाव मागें एकवेळ आलें आहे, पुढें जो तिसरा रिचार्ड झाला तोच हा, यास कुबडा रिचार्ड असें कोठे ह्मणतात, अंग आखडलेलें व वांकडें अशाच रूपानें हा जन्मला. परंतु यांच्या शरीरापेक्षां याचें मन तर फारच वांकडें होतें. याचे जे लहान लहान पुतणे त्यांचा याणे सांभाळ करावा तो नकरितां आपल्यास राज्य मिळावें या बुद्धीनें त्यांस मारण्याचा बेत केला, परंतु त्यां मुलांचें रक्षण व सांभाळ करणारे असे बहुतजण त्यांच्या पक्षाचे होते, याजकरितां त्यां मुलांस मारण्याच्या अगोधर पहिल्यानें त्यांचें हित इछिणारांस नाहींसें करावें असा त्यां

मुलांच्या दुष्ट चुलत्याने निश्चय केला, तो मकार सांगतों· लार्डहेस्टिंगू ह्मणून एक मतापी पुरुष होता, त्याचा 'राजावर व त्याच्या भावावर फार लोभ असे, ह्मणून कुचड्यारिचार्डाने प्रथम त्या लार्डासच मारण्याचा बेत केला, आणि त्यास निरोप पाठविला कीं, तुह्मी लंडन शहराचे किल्यांत रांजसुभा मिळणार तेथें यावें. ती सभा मिळाल्यावर रिचार्ड आपलें मुख क्रोधयुक्त व भयंकर करून तेथें आला, त्यावरून त्या सभेस जे लार्ड होते त्यांस वाटलें कीं कांहीं आतां अनर्थ होतो. मग रिचार्डानें आपला निर्जीव वाळलेला हात बाहेर काढून दाखविला आणि ह्मणूं लागला कीं जेनूशोर व तिचे मिलाफी यांनी जादूकरून हा माझा हात शक्ति-हीन केला. हें पाहिलें असतां केवळ कुभांड, कांहर जादू ह्मणून कांहीं पदार्थ नव्हे, उगीच कल्पना होय. हा याचा हात जन्मापासूनच आखडलेला, हें सर्वांस ठाउकें होतें. त्याजवरून लार्ड हेस्टिगू बोलूं लागला कीं, आपण सांगतां तसेंच त्यां मनुष्यांनी जर केलें असलें तर त्यांस शिक्षा केली जाईल, असें ह्मणतांच रिचार्ड मोठ्याने बोलूं लागला " जर असें तूं मला उत्तर देतोस तर ऐक त्यांणीं माझा जीव घेण्याची मसलत केली आहे, आणि तूंही त्यांस सामील आहेस, असें बोलून मेजावर दोनदां हात मारला, इतक्यांत त्या सभेंत कित्येक हातेर बंद शिपाई आले त्यांस रिचार्डानें अशी आज्ञा केली कीं, अरे पाहतां काय, या लार्ड हेस्टिंगास धरा ओढा. उडवा डोचकें. याचा शिरच्छेद केल्यावांचून मी अन्नचे घेणार नाहीं, अशी आज्ञा होतांच तेथें एक लाकूड होतें त्याजवर त्याला घालून त्याच घटकेस त्याचें डोकें तोडलें.

यामप्रमाणें जसजसा मागील वृत्तांत पहात जावा तसतशीं अधिक क्रूर कर्में दृष्टीस पडतात, आणि तसतसा अधिक ईश्वराचा उपकार स्मरावा असें मनांत येतें. याजवरून इंग्लांड देशींच्या प्रजा असें ह्मणतात कीं "आह्मांला ईश्वरानें ज्या राज्यांत जन्म दिला आहे तेथें कांणी कोणत्या ही मोठ्या अधिकारावर असला तथापि त्याच्याने यामप्रमाणें कोणाचा प्राण घेववत नाहीं ही ईश्वराची आपणावर मोठी कृपाच होय."

यामकारचा माझा लेख मागील पत्रांत वारंवार आला आहे, याचें कारण असें आहे कीं, सांप्रत काळींचे राज्यव्यवस्थेचे गुण दोष व मागील राज्यव्यवस्थेचे गुण दोष दृष्टीस पडतात, ते प्रसंगानुरूप बोलानेच लागतात, त्यावांचून पुढील वृत्तांत सांगतां येत नाहीं.

मागें जेन्शोर जें नाव सांगितलें तें लंडन शहरांत लांचर्डच्या रस्त्यावर एक सोनार रहात असे त्याचे बायकोचें. ही आपल्या नवऱ्यास सोडून चौथ्या येडवर्ड राजाच्या आंगाखालीं राहिली होती. पूर्वी असा संप्रदाय असे, कोणी एकानें मोठा अपराध केला असतां त्यास प्रायश्चित्त देत. तें असें. एक अखंड पांढरें वस्त्र लेववून हातांत मेणबत्ती देवून पायांत जोडा घालून देतां देउळापर्यंत चालवीत. यामप्रमाणें न्या जेन्शोरला प्रायश्चित्त दिलें, तेव्हां ती लंडन शहरांतील मार्गातून सेन्ट पालच्या देवळापर्यंत चालत गेली. मग असा हुकूम केला कीं इला कोणी खायास प्यायास देऊंनये, कोणी आपल्या घरांत घेऊंनये, तेव्हां ती अत्यंत दुःखाने व गरीबीनें इकडे तिकडेस फिरूं लागली. ती पूर्वी अनेक प्रकारचीं सुखें भोगीत होती, व मोठ्या डौलानें वागत होती, ह्मणून हें दुःख तिला फारच जड गेलें अ-

सेल. तशांत तिणे जीं पातकें केलीं होतीं तींही तिच्या मनाला फारच जाचलीं असतील. ती मुळची अपराधी खरी परंतु तिला ऐश्वर्य मिळालें होतें तेव्हां तिणे लोकांवर उपकार केले होते, व त्यांस उदार होऊन जें दिलें होतें, तें ते आठवून व तिची दुःखाची अवस्था पाहून तिचा सर्वांस कळवळा येई. परंतु राजाचे आज्ञेमुळें कोणाच्याने कांहीं तिला देवतनसे. याप्रमाणे ती चिंध्या पांघरून दिना सारखी जिकडेतिकडे बहुत दिवस फिरतां फिरतां शेवटीं न्याच दुःखानें मेली. हा जो इला दंड झाला तो इच्या अपराधानुरूपच झाला परंतु रिचार्डानें इला दंड करितांना अशा बुद्धीने केला नाहीं, तर ही त्या चौथ्या येडवर्डाच्या मुलांवर ममता करीत असे आणि रिचाई यांमुलांस कांहीं करूं लागिला म्हणजे त्यांचा पक्ष धरी, म्हणून त्यां मुलांच्या शत्रुत्वाने इला दंड केला. यानंतर तो दुष्ट रिचार्ड सिंहासनावर आपण बसायाचा विचार करूं लागला, आणि उगेंच ढाग व खोटीं निमित्तें सांगून बहुत लोक आपल्या नादीं लाविले. मग लंडन शहरचे जे न्यायाधिशाचे योग्यतेचे अधिकारी, ते येऊन रिचार्डास विनंती करूं लागले कीं, आपण आतां मुकुट धारण करावा. न्याजवरून रिचार्ड बोलूं लागला मला तर राजपदाची इच्छा नाहीं, परंतु हें बोलणें उगीच बाह्यात्कारीं, आपला दुष्ट बेत कोणाच्या लक्षांत येऊंनये म्हणून हें असलें लबाड बोलणें. असें घडूं आलें असतां ही रिचार्डास वाटत असे कीं, जोंपर्यंत माझे पुतणे जीवंत आहेत तोंपर्यंत मला स्वस्थपणें राज्य करायास सांपडणार नाहीं, म्हणून त्याने त्या लहान राजास व त्याचा धाकटा भाऊ योर्काचा ड्यूक यास मारण्याचा बेत केला. हें काम

त्याने ब्राकेन्बरी ह्मणून जो किल्याचा सरदार होता त्यास सांगितलें, परंतु तो दयाळू असे ह्मणून त्याने तें दुष्ट कर्म पतकारिलें नाहीं, याजकरितां त्यास दूर करुन त्या अधिकारावर ·सर्जेम्सटिरेल ठेविला. मग त्या टिरेलाने तिघे मारेकऱ्यांस द्रव्य कबूल करून त्या बाळहत्या करण्याविषयीं बोलाविलें, ते रात्रीस आले आणि तो दुरात्मा टिरेल खोलीच्या दाराजवळ उभाराहून ते मारेकरी खोलींत शिरले, त्यांनी तीं बापुडीं बाळें केवळ निद्रेच्या भरांत असतां उश्यानी त्यांचे श्वास कोंडून त्यांस मारून टाकिलें, आणि त्यांचीं मेतें निसणीच्या खालीं पुरून तेथें दगडांचे चिरे जसे होते तसेच बसविले; तेणेंकरून बहुत दिवस त्यां मेतांचा थांग लागला नाहीं. मग बहुत वर्षांनी त्यांचीं हाडें त्या निसणी खालीं कामदार मनुष्यांस अढळलीं.

यामप्रमाणें पांचव्या येडवर्डाचें राज्य होऊन बहुत मास लोटले नव्हते इतक्यांत तो नाहींसा झाला, त्यास किल्यांत बंद केलें होतें तेथें बाळपणांतच त्याचा वध झाला ह्मणून त्यानें राज्य केलें असें ह्मणतां येत नाहीं. मग तो दुष्ट ग्लौसेस्टराचा ड्यूक तिसरा रिचार्ड अशा नावानें राज्य करूंलागला, परंतु याचा स्वभाव क्रूर यानें मनास येईल तसें करावें, ह्मणून सर्व मजा याच्या राज्यास त्रासल्या आणि त्यांस वाटूं लागलें कीं हा राजा नाहींसा होता तर बरें, त्याजवरून रिचमान्डच्या ड्युकास धैर्य प्राप्त होऊन त्याणें फौज जमा केली आणि सर्वांस नकोसा झालेला जो रिचार्ड त्याजपासून राज्य घेण्याचा उद्योग आरंभिला. हा रिचमान्डचा ड्यूक तांबड्या गुलाबाच्या पक्षाचा ह्मणजे ल्यान्क्यास्टरचे घराण्यांतला होता, याजकरितां योर्कांच्या घराण्यांतले

राजे राज्य करीत होते तोंपर्यंत या रिचमान्डास तें राज्य सोडून बाहेर राहणें प्राप्त झालें होतें. मग रिचार्डाचे स्वच्छंद वागणुकीमुळें लोक रुष्ट झालेसे पाहून ते लोक आतां मला अनकूळ होतील असें मानून रिचमान्ड थोडकीशी फौज घेऊन फ्रान्सदेशाहून निघाला आणि वेल्स येथें मिलफोर्ड ह्मणून बंदर आहे तेथें उतरला, तेथें याला कोणी आड आलें नाहीं. इकडे धैर्यवान् जो रिचार्ड याने ही तयारी केली, तेव्हां रिचमान्डाकडेस बहुत इंग्लीश लोक मिळाले. मग त्यां उभयतांचें लेस्टर शहर येथील बाज्वर्थ फिल्डास युद्ध झालें, त्या युद्धांत रिचमान्डास जय मिळाला आणि रिचार्ड मारला गेला.

मग रिचमान्डास सातवा हेन्री असें पद देऊन राज्यासनीं बसविला, तेणेंकरून सर्व लोकांस आनंद झाला. हा कांहीं मागील राजाचा वारस नव्हे ह्मणून त्यास राज्य मिळावें असें नव्हतें, परंतु तें याणे युद्ध करून मेळविलें, आणखी लोकांस ही रिचार्ड नकोसा झाला होता, ह्मणून या हेन्रीस राज्याचा अधिकार आहे किंवा नाहीं याचा लोकांनी फारसा विचार केला नाहीं.

या पत्रांत पांचवा येडवर्ड आणि तिसरा रिचार्ड अशा दोन राजांचें वर्त्तमान लिहिलें आहे. पांचवा येडवर्ड दोन महिनें होता, तिसरा रिचार्ड दोन वर्षे होता, तो सन चौदाशें पंच्यायशींत बाज्- १४८५
वर्थ फिल्ड येथें लढाईत पडला. लोभ० हे आशीर्वाद.

# प्रश्न.

चौथा येडवर्ड कोणत्या सालीं मेला ?
त्यास किती लेंकरें होतीं ?
त्यांचीं नावें काय ?
चौथा येडवर्ड मेला तेव्हां त्याच्या वडील मुलगा किती वर्षांचा होता ?
मग राज्य कारभार चालवावयास कोणास नेमलें ?
तो स्वभावानें कसा असे ?
त्यानें कोणत्या मानकऱ्यास मारिलें ?
त्याजवर काय कुभांड रचलें होतें ?
लार्ड हेस्टिंगास मारायाचें वास्तविक कारण काय ?
जेन् शोर कोण होती ?
तिला दंड कोणत्या प्रकारचा झाला ?
रिचार्डानें त्या लहान्या राजास व त्याच्या भावास काय केलें ?
त्यांच्या मेतांचा कोठे थांग लागला काय ?
तीं कोठे व कोणास सांपडलीं ?
यां मुलांस मारून राज्य कोणी घेतलें ?
रिचार्डाची वर्त्तणूक कशी असे ?
त्याजवर फौज घेऊन कोण आला ?
रिचमान्डच्या ड्युकाची रिचार्डाबरोबर लढाई झाली तेसमयीं कसें झालें ?
ही लढाई कोठे झाली ?
मग तें राज्य कोणी घेतलें ?
कोणत्या सालीं रिचार्डास मारिलें ?

# पत्र १९.

चिरंजीव०—विशेष जेजे इंग्लांडची बखर वाचितात न्यांस तिसऱ्या रिचार्डास मारल्याचें व सातव्या हेन्रीस राज्य मिळाल्याचें वर्त्तमान ऐकून जसा आनंद होतो, तसा तुह्मासंही त्या वर्त्तमानावरून आनंद झाला असेल. रिचार्डाच्या स्वभावानें लोक फार त्रासले होते, ह्मणून सातव्या हेन्रीस राज्याधिकार आहे किंवा नाहीं याची फार चौकशी न करितां न्यास जसें त्याकाळींच्या लोकांनी मान्यकरून घेतलें, तसें तुह्मी त्याकाळीं असतां तर त्यास मान्य करून घेतलें असतें असें आहे. अमक्याच्या वंशाचा अमूक असा विचार ठेवणे अवश्यक आहे, असा विचार न ठेविला तर राज्य घेण्याविषयीं हजारोजण दावे सांगू लागतील, व हजारो तंटे पडतील, परंतु खचित ठरलेला व सर्वांस ठाऊक झालेला अशा वारसास राज्य दिलें ह्मणजे सर्व कळी मिटतात. याप्रमाणें पहातां सातवा हेन्री या राज्याचा वारस नव्हता. रिचार्डाने जे राजपुत्र किल्यांत मारिले त्यांची बहीण इलिझाबेथ ती वारस होय परंतु हेन्रीने या राजकन्येबरोबर लग्न लाविलें तेणेंकरून कांहीं तंटा न होतां योर्कांच्या घराण्याचा ल्यान्क्यास्टराच्या घराण्याशीं जो वाद चालला होता तो नाहींसा झाला, हेन्री ल्यान्क्यास्टराच्या घराण्यांतला आणि इलिझाबेथ योर्काच्या घराण्यांतली यांच्या लग्नाने दोन्ही घराणी एक होऊन यांचें सुरळीत चालूं लागलें. मग हेन्री चांगल्याप्रकारें राज्य करूं लागला परंतु कित्येक लोकांचा स्वभाव असा असतो कीं त्यांनी संतोष पावून उगें राहूंच नये, नेहमी बंडें तुफानें उठवीत असावीं याप्रमाणें हेन्री-

च्या राज्यांत घडत होतें. सांप्रत काळींच्या लोकांस चांगलें ज्ञान व विचार आहे, नाहींतर राजाचा फार बळात्कार होतो, राजानी नीति सोडली अशा ज्या बंडवाले गोष्टी सांगतात त्याजवर लोक कान देऊन आतांही पहिल्याप्रमाणें बंडें करते.

ते समयीं देश समृद्ध होऊन सुखानें नांदूं लागे अशा रितीने हेन्री राज्य करूं लागला होता, व जे बहुत दिवस बंडें तुफाने करून दमले होते त्यांस ही आपल्या नम्र स्वभावाने शांत करण्याच्या उद्योगांत होता, परंतु कित्येकांची प्रकृति अशी असंती कीं तिणे नित्य क्षोभ पावावा, तीस शांती समाधान कदापि होऊंनये. सारांश बहुत दिवस मसलत करून फितूर करण्याची ज्यांस टेव लागली होती ते राजा बंदोबस्त करीत असतां ही हरतऱ्हेने बंडें तुफाने करीत. शेवटीं लोकांनी एक मनुष्य उभा केला. त्याचें नाव लांबर्ट सिम्नेल, हा एके रोटीवाल्याचा लेंक. हा म्हणूं लागला कीं, ज्या क्लारेन्सच्या ड्युकास किल्यांत मालमशी दारूच्या पिपांत बुडवून मारिलें त्याचा मी लेंक. असें बोलणे ही उघड लबाडी म्हणून या बंडास कोणी फारसे मिळाले नाहीं, शेवटीं थोडेसे लोक सामील झाले, त्यांत कित्येक सामर्थ्यवान् होते, त्याणी एक फौज जमा केली, ते समयीं बहुत्येक देश राजाकडेस झाला होता. मग नार्टिंगू म्हामशैर मांतांत स्टोक स्थानाजवळ राजाच्या लश्कराची व त्या बंडवाल्यांची लढाई होऊन त्यांचा मोड झाला. तेथें सिमनेलास धरिलें, परंतु हा गरीब जात्या बुद्धिवान् नव्हे, यास बुद्धि देणार ते दुसरेच असें जाणून राजाने यास मोठा दंड न करितां आपल्या

स्वयंपाक घरांत स्वयंपाक्यांच्या हाताखालीं ठेविलें पुढें कांहीं दिवसानें याची नेमणूक जेथें राजाचे शिकारीचे पक्षी होते त्या शिकारखान्यावर केली, मग त्याच कामात असतां हा मेला.

यामुळाणें होऊन फार दिवस झाले नाहींत इतक्यांत एक दुसरा दावा सांगणारा उठला, याचें नाव पर्किन वार्बेक्. हा म्हणूं लागला कीं किल्लुयांत दोन राजपुत्र मारिले असें सांगतात, परंतु त्यांतून धाकट्यास मारिलें नाहीं, योर्काचा ड्यूक रिचार्ड म्हणून जो धाकटा राजाचा लेंक तो मी आहें. त्याजवरून बहुत लोक यास अनकूळ झाले, आणि याची रीत भात चांगली असे, आणि हा मोठ्या शहाणपणानें वागे, म्हणून याचा पक्ष चांगला बळावला आणि बहुत्येक मोठे मोठे नामांकित लोकांस याची गोष्ट खरी वाटूं लागली. त्याजवरून राजानें मोठ्या यत्नानें वार्बेक् कोण कोठला असा शोध लाऊन ज्यांनीं तें बंड माजिवलें होतें त्यांतील बहुत्येकांस धरून ठार मारिलें, आणि कित्येकांस त्यांच्या अपराधाची क्षमा केली.

मग त्या वार्बेकाचें इंग्लंड देशांत कांहीं चालेना असें होतांच तो स्काटलांडास गेला, तेथें स्काट देशींचा राजा चौथा जेम्स् याणें त्याचें मोठें साह्य केलें. तेथून तो मोठी फौज घेऊन पुनः इंग्लांडास आला, परंतु फारसे इंग्लीश लोक येव्हां आपल्यास सामील होत नाहींत असें पाहून तो ऐर्लांड देशास गेला, तेथून पुनः इंग्लांड देशास येऊन कार्नवाल् येथें उतरला. तेथें त्या प्रांतांतील कित्येक लोक त्यास मिळून तो आपणास चौथा रिचार्ड असें म्हणवूं लागला. त्यावेळेस त्याच्या जवळ सातहजार

फौज जमा झाली, परंतु राजा फौज घेऊन आपल्या बरोबर भांडायास येतो असें ऐकतांच न्यास वाटूं लागलें कीं, आतां आपल्यास यश मिळत नाहीं, मग न्याचें लश्कर राजाच्या हातीं सांपडलें. ते समयीं राजानें न्यांतील जे मुख्यमुख्य बंडाच्या मसलतींत होते त्यांस ठार मारून बाकीच्यांचे अपराध क्षमा केले आणि असें ठरविलें कीं, जर वार्बेक् येऊन भेटेल आणि बंडाचा सर्व मजकूर कबूल होईल, तर त्याचा ही अपराध क्षमा होईल. मग त्याप्रमाणें वार्बेकानें केलें, त्याणें जो आपला वाका सांगितला त्याजवरून तो योर्काचा ड्यूक होय असें अझून कित्येकांस वाटतें. असें जें त्यांस वाटतें हें खरें किंवा खोटें याचा निर्धार होत नाहीं, पाहिलें असतां बखरी लिहितात ते आपआपल्या विचाराप्रमाणें किंवा ते ज्या ज्या पक्षाकडचे असतात त्या त्या पक्षाचा अभिमान धरून वर्त्तमान लिहितात.

तिसऱ्या रिच्यार्डाच्या पक्षाच्या लोकानीं त्याकाळींचें वर्त्तमान लिहिल्यास ते बहुत करून रिचार्डाच्या गुणाचें आणि सातव्या हेन्रीच्या दोषाचें वर्णन करतील, सातव्या हेन्रीच्या पक्षास जे लोक होते त्यानीं तो वृत्तांत लिहिला असल्यास ते रिचार्डाचा पक्ष अगदीं खोटा आणि हेन्रीचा पक्ष केवळ खरा असें करून दाखवितील. परंतु बहुधा असें आढळलें आहे कीं त्या दोघां राजपुत्रांस किल्यांत मारिलें आणि जर त्यांस मारिलें असलें तर मग वार्बेक् हा लबाड जाणावा. असो या गोष्टीचा निवाडा माझ्या हातून तर होत नाहीं. सारांश कोण्या एक्या पक्षाचा अभिमान धरून जे गोष्टी सांगतात त्यांच्या त्या गोष्टी खऱ्या असें मानण्याविषयीं विचार करावा. आतांही इंग्लांड देशांत अशा गोष्टी

सांगणारे पुष्कळ आहेत आणि ते जें जें सांगतात तें तें तेथील लोकांस जर खरें वाटतें, तर आह्मावर बलात्कार होतो, आमचा कांहीं न्याय होत नाहीं, आह्मी दुष्ट राज्यांत राहत आहों, आह्मास कांहीं एक मोकळीक राहिली नाहीं, असें तें मानून पूर्ववृत्त बंडें करिते. कित्येक जण असें मानणारे अझून आहेत, ते, ते लेख वाचून आपल्यास असें मानितात कीं आह्मी मोठ्या दुःखांत आहों, आह्मास सुख ह्मणून राहिलें नाहीं, आह्मी केवळ पराधीन झालों, परंतु असलें मानून घेणें मला अगदीं विपरीत वाटतें, आणि तुह्मासही असेंच वाटेल, ख्रिस्ती जनांस जें कांहीं करायास योग्य तें करण्याची कोणास मोकळीक नाहीं काय ? बहुत्येक लोक मोठ्या मोठ्या दुःखांत असतात आणि राज्यास दोष लावितात, परंतु त्यांस विपत्ति प्राप्त होतात त्या राज्यापासून कांहीं प्राप्त होत नाहींत, त्यांस तेच स्वतां कारण होत. जे कोणी व्यवस्थेनें विचारानें चालतात त्यांचा प्रपंच बहुधा चांगला नांदतो आणि ते सुखी होतात; जे दारूबाज, व्यसनी, अव्यवस्थेनें वागणारे, त्यांस बहुधा दरिद्र व दुःख प्राप्त होतें. व्यवस्थेनें चालत असतां ही कोणेसमयीं दुःखें व संकटें प्राप्त होतात, परंतु त्यांचें निवारण कोणत्याही राजाच्या हातून होऊं शकत नाहीं.

असो आतां आरंभिलेला विषय सांगतों. हेन्री स्वभावानें नम्र असे, परंतु त्याच्या वेळेस नेहमी बंडें व तुफानें होत असत, ह्मणून तो वारंवार त्यां बंडखोरांस मोठे मोठे दंड करी, त्याच्या राज्याचे अखेरीस मात्र बंडें व तुफानें मोडून देशांत चांगलेंसें अकोपीत चालूं लागलें. हा राजा पंधराशें नवांत मरण पावला. १५०९.

लोभ० हे आशीर्वाद.

# प्रश्न.

तिसऱ्या रिचार्डास कोणत्या सालीं मारिलें ? ह्यानंतर राज्य कोणी घेतलें ?

रिचमान्डचा ड्युक हेन्री, हा राज्याचा वारस होता काय, तर कोण होतें ?

सातव्या हेन्रीनें कोणा बरोबर लग्न केलें ?

योर्क आणि ल्यान्क्यास्टर यां घराण्याचा जो परस्परांशीं वाद चालला होता तो ह्या लग्नानें कसा मिटला ?

हेन्रीने चांगल्या प्रकारें राज्य केलें काय ?

असें ही असतां त्याजवर बंडें होत असत काय ?

बरें राज्य घेण्याविषयीं कोण कोणी दावे सांगितले ?

लाम्बर्ट सिम्नेल हा आपणास कोण म्हणवूं लागला ?

बरें बंडवाल्यांची व राजाची कांहीं लढाई झाली काय ?

कोठे झालीं ?

कोणास जय मिळाला ?

मग सिम्नेलाचें काय केलें ?

बरें मग दुसरा कोणी राज्याविषयीं दावा सांगूं लागला काय ?

त्याचें नाव काय ?

पर्किन वार्बेक् हा आपल्यास कोण म्हणवूं लागला?

त्याच्या पक्षास कोणी मोठे मोठे नामांकित लोक मिळाले होते काय ?

तिसऱ्या रिचार्डानें जा योर्काच्या ड्युकास कि-

ह्मुच्यांत मारिलें तोच पर्कीन वार्बेक्क असें कोणी अझून मानितात काय ?

हेन्री सातवा कोणत्या सालीं मरण पावला ?

---

## पत्र २०.

चिरंजीव०—विशेष इंग्लांडदेशींची बखर तुह्मास सातव्या हेन्रीपर्यंत सांगितली; येथून आठव्या हेन्रीचें वर्त्तमान लागलें, आतां येथून पुढें जीं वर्त्तमानें घडलीं आहेत तीं प्रस्तुत काळास जसजशीं जवळ तसतसें त्यांचें चांगलें सविस्तर स्मरण ठेवावें. आठव्या हेन्रीचें वर्त्तमान तर चांगलें चित्त लाऊन वाचायासारखें आहे. इंग्लांडदेशीं मतांतर ह्मणून जें एक मोठें काम झालें, याचा आरंभ आठव्या हेन्रीच्या वेळेस झाला. या मतांतराविषयीं मागें पंधराव्या पत्रांत कांहीं लिहिलें आहे. ख्रिस्ती धर्म रोमन क्याथलीक रूपानें जो चालला होता, त्यांतील दोष काढून तो प्रोटेस्टान्ट रूपानें ह्मणजे त्याच्या वास्तविक रूपानें चालू केला, अशा कृत्यास मतांतर ह्मणतात. जोंपर्यंत रोमन क्याथलिक् धर्म चालत होता तोंपर्यंत ख्रिस्ती शास्त्रास विरुद्ध अशीं बहुत कर्मे घडत होतीं. धर्म संबंधी जीं जीं कामें तीं सर्व रोमच्या पोपाच्या हातीं असत, आणि तो राज्य प्रकरणांतहीं वारंवार आपली सत्ता चालवी. ही पाहिली असतां अनीति; कांतर पोप ह्मणजे मुख्य धर्माध्यक्ष, हा रोमनगरास रहात असे, याचा राज्य प्रकरणांशीं किंवा तशाच दुसऱ्या कामाशीं काय संबंध ? रोमन क्याथलीक धर्मांत मोठाएक दोष असा असे कीं, बैबल ह्मणजे ख्रिस्ती शास्त्र, आणि भजन पद्धति, हीं दोन्ही पुस्तकें प्राकृत भाषेंत नव्हतीं; हीं लाटीन

भाषेंत होतीं ह्मणून तीं बहुधा लोकांच्या उपयोगास पडत नसत. तेसमयीं लोकांनीं देवळास मात्र जावें, व बहुत्येक बाह्य कर्में मोठ्या डौलानें होत असावीं, आणि धर्म मकरणीं मोठ्या दिमाकानें व समारंभानें मिरवावें; परंतु या लाटीन भाषेंमुळें बैबलाचा अर्थ लोकांस समजत नव्हता, ह्मणून वास्तविक धर्म काय आहे हें त्यांस कळत नसे, आणि देवळांत जें भजनें व धर्मोपदेश होत असे त्यापासून ही लोकांचें हित होत नसे. जे कोणी थोडेसे लाटीन भाषा जाणत त्यांस तें हितास पडे. धर्माध्यक्षांत तर बहुत आनाचार शिरले होते. मुर्ख्यां उत्तम कार्यार्थ कितीएक जीं साधनें योजिलीं होतीं, त्यां साधनांनीं ते धर्माध्यक्ष वाईट कामें करून घेत असत, आणि अशीं कामें करून घ्यायाचीं ह्मणून लोकांस अज्ञानांतच ठेवीत. त्यांस जर ज्ञान प्राप्त झालें असतें, तर हे धर्माध्यक्ष ख्रिस्ती धर्मास विरुद्ध किती अचरतात हें त्यां लोकांस कळलें असतें. यामकारें लोकांस ख्रिस्ती शास्त्र बहुत दिवस कळविलें नव्हतें, आणि त्या धर्माध्यक्षांनीं त्यां लोकांस अज्ञानांत ठेवण्याजोगा योगही होता तो असा. तेव्हां छापण्याची विद्या प्रसिद्ध झाली नव्हती, ग्रंथ पोथ्या ह्मटलें असतां फार महाग पडत, व मिळण्यास फार अडचण पडे, ग्रंथ लिहिलेला मात्र मिळे आणि लिहून घेणें हें थोडक्यांच्याच हातून घडे. मग आठव्या हेन्रीच्या राज्यापासून छापण्याची विद्या बहुतकरून कळूं लागली, ग्रंथ सर्वांस मिळूं लागले, लोकांस वाचतां येऊं लागलें, व ते चांगले विचारवंत झाले. छापण्याची विद्या केव्हां उत्पन्न झाली हें यथास्थित सांगतां येत नाहीं. असें ऐकण्यांत आहे कीं सन चौदाशें एकाहातरचे सालीं

इंग्लांडांत जो पहिला ग्रंथ छापिला तो काक्स्ट- १४७१
न यानें छापिला. हें चौथ्या येडवर्डाच्या रा-
ज्यांत घडलें, परंतु याच्या कांहीं अगोधर इंग्लांड शह-
रांत छापिल ग्रंथ झाले होते असें कांहीं गोष्टींवरून
सिद्ध होतें..

मतांतराची गोष्ट निघाली म्हणजे बहुत करून आठव्या हेन्रीचें स्मरण होऊन हें मतांतर त्यानेंच के-लें असें मनांत येतें; परंतु असलें उत्तम कर्म करायास त्याला इतकी बुद्धि कोठून होईल: त्यानें जें कांहीं के-लें तें आपला अर्थ साधायास केलें. लोकांचें कल्याण व्हावें या बुद्धीनें त्यानें कांहीं केलें नाहीं. तो एकादेवे-ळेस स्वछंदानुरूप आणि एकादेवेळेस कार्यानुरूप असा पोपाबराबर वागत असे. पहिल्याने तर तो पोपास अनकूल होता परंतु मागाहून त्याची मर्जी पालटून पोपास प्रतिकूल झाला. कधीं लोकांस पोपाच्या मतांत वागण्यावरून दंडावें, कधीं त्यांस प्राटेस्टान्ट झाल्याव-रून शिक्षा करावी यामाणें त्याच्यां कारणाचा काहीं-एक नेम किंवा भरवसा नसे. या मतांतराचें थोडेसें वर्त्तमान तुह्मास या पत्रांत कळविलें, तें येथें सविस्तर सांगतां येत नाहीं. या मतांतराविषयीं जे इतर ग्रंथ ते पाहवे. आठव्या हेन्रीच्यावेळीं या मतांतराचा आरंभ मात्र झाला परंतु हें शेवटास गेलें नव्हतें. मग त्याचा मुलगा येडवर्ड झाला त्याचे वेळेस बहुधा सिद्धीस गेलें. असो पण आठव्या हेन्रीच्या हातून ईश्वर स-त्तेने बहुत्येक लोकहिताचीं कामें घडूं आलीं, आणि यानें लाटिन भाषेंत बैबल होतें तें इंग्रेजींत करविलें, आणि तें वाचण्याची मोकळीक केली, व चांगले विद्वानूलोकांस आश्रय देऊन त्यांचे हातून काय जे

सत्यसिद्धांत, ते प्रसिद्ध केले, तेणेंकरून असें झालें कीं, मतांतराची जी वृद्धि याच्या पुत्राच्यावेळीं होणार तिजविषयीं मार्ग मोकळा झाला.

आतां या आठव्या हेन्रीच्या वेळेस दुसरें काय काय घडलें तें लिहितों. हेन्री सिंहासनावर बसला त्या काळीं याचें वय अठरा वर्षांचें होतें. हा अव्यवस्थित असे, आणि यास ख्याली खुशाली आवडे, म्हणून याच्या बापानें जें द्रव्य सावधपणाने मिळवून ठेविलें होतें, तें हा आपल्या छंदा फंदांत उधळूं लागला. योर्क प्रांतींचा जो धर्माध्यक्ष तो याचा मुख्य प्रधान आणि मंत्री झाला. त्याचें नाव वोल्सी, तो हट्टी अभिमानी, आणि याचाच सारिखा अव्यवस्थित, उधळ्या असे. तो जात्या कांहीं मोठ्या कुळांतला नसतां राजानें त्यास मोठ्या पदवीस आणि अधिकारास चढविलें, म्हणून सर्व प्रकारचे लोक त्या वोल्सीचा हेवा, आणि द्वेष करूं लागले. असें आहे कीं जो कोणी या मृत्यु लोकींच्या वैभवावर भरवसा ठेवितो, तो दुःखीच जाणावा. ते समयीं वोल्सीस जसे जसे मोठे अधिकार मिळाले, तसा तसा त्याचा नाश फार झाला. राजाच्या छंदाप्रमाणें हा चालेना असें होतांच हा पदच्युत झाला, तो प्रकार आतां सांगतों. आठव्या हेन्रीस साहा बायका झाल्या असें तुम्हीं कोठें ऐकिलेंच असेल. याची पहिली बायको आरेगान्ची क्याथेरेन्. ही हेन्रीला नकोशी झाली, ते समयीं इला अपराधावांचून टाकितां येत नाहीं म्हणून इला सोडण्याचें एक चमत्कारिक निमित्त सांगूं लागला. हें त्या धर्माध्यक्ष वोल्सीनें कबूल केलें नाहीं, त्याजवरून त्याचा नाश करावा असा राजानें निश्चय करून त्याचा योर्कप्रांतीं एक वाडा होता त्यां-

तून त्यास घालवून दिलें, व त्याचीं जीं भोजनादि करायाचीं मोठ्या मोठ्या मोलाचीं भांडीं, व घरांतील उंचउंच सामान हें सर्व हिसकून घेऊन हुकूम केला कीं, हा राजाचें वाईट करूं पहात होता म्हणून यास धरून याचा न्याय करायास लंडन शहरीं आणावें. त्याजवरून यास तेथें जाणें प्राप्त झालें; परंतु याचें म्हातारपण, तशांत हा दुखणेकरी, व शरीरीं अशक्त, यास लांबचा पल्ला होईना, म्हणून हा जेम तेम लेस्टरापर्यंत गेला. मग तेथें एक साधु पुरुषांचा मठ होता, ते साधु यास पाहून सामोरे आले. ते समयीं हा बोलूं लागला कीं "बापहो आतां मी तुम्हामध्यें मरायास आलों आहें, कृपा करून धर्मार्थ मला थोडीशी माती देऊन माझीं श्रम पावलेलीं हाडें झांकून घ्यावीं."

नंतर हा लौकरच मरण पावला. त्याकाळीं दुःखानें व्याकूळ होऊन पश्चात्तापानें बोलूं लागला, त्या बोलण्याचा अभिप्राय असा कीं, जेथें सुख आणि सेवेचें फळ निरुपम व अक्षय, अशा परलोकींच्या राजाची सेवा नकरितां मी व्यर्थकिरे या नाशिवंत ऐश्वर्याच्या नादीं लागलों. मग याच्या तोंडांतून मरतेवेळीं शब्द निघाले ते असे. "जशी एकनिष्ठेनें म्या राजाची सेवा केली, त्याच्या अर्धी जरी ईश्वराची सेवा केली असती, तर त्यानें मला म्हातारपणीं शत्रूच्या स्वाधीन केलें नसतें."

हेन्रीनें आपल्या स्त्रीस सोडून दिलें, तो प्रकार असा आहे कीं, हा म्हणूं लागला माझा वडीलबंधू आर्थर, याचे विधवा स्त्री बरोबर माझें लग्न झालें, हें शास्त्र विहित नव्हे, म्हणून मी इचा त्याग करितों; परंतु तिचा अठरावर्षें समागम करून याच्या पोटची तिला एक

कन्या * होऊन हें असलें बोलणें बोलूं लागला. याचें वास्तविक कारण असें कीं, आनाबलेन् म्हणून एक नवी तरणी अतिसुंदर याचे स्त्रीची सखी होती, ती यास आपल्या स्त्रीच्यापेक्षां अधिक आवडूं लागली, आणि तिजबराबर लग्न लावावें म्हणून आपले पहिले स्त्रीस सोडून देण्याचा यानें उद्योग मांडला. हें वोल्सी व दुसरे रोमन क्याथलिक् धर्माधिकारी यांस बरें दिसलें नाहीं, तशांत ती आनाबलेन प्राटेस्टान्ट धर्मांत शिरली होती, म्हणून राजानें तिच्या बरोबर लग्न करूं नये असें वोल्सीच्या मनांत वागूं लागलें. त्याजवरून राजा कोपातें पावला, तेंच वोल्सीच्या नाशास कारण झालें. मग राजा आनाबलेन इशीं गुप्तपणें लग्नकरून कांहीं दिवसांनीं ही माझी स्त्री असें उघडें बोलूं लागला. नंतर इच्या पोटीं राजास एक मुलगी झाली, इलीझाबेथ् राणी म्हणून जी पुढें नामांकित स्त्री झाली तीच ही कन्या.

ही आनाबलेन् राणी ही राजास लौकरच नकोशी झाली, ते समयीं इचा त्याग करून जेनसेमर म्हणून एक लावण्य स्त्री होती, तिच्या बरोबर विवाह करावा असा राजानें निश्चय केला. तेव्हां तें कृत्य घडून यावें याजकरितां आनाबलेन इचा वधकरण्यास राजा कांहीं निमित्त पाहूं लागला. शेवटीं इणे दुराचरण करून राजाचें वाईट करण्याचा बेत केला असा इजवर आरोप आणून इचा वध करावा असें ठरविलें. तेसमयीं ज्याच्यासारिखा चपळतेने डोकें मारणारा इंग्लांडांत कोणी नाहीं, अशी ज्याची वाखण झाली होती,

---

* याकन्येचें नाव ब्लडी म्हणजे हिंसक मेरी राणी असें पडलें.

न्या मारेकऱ्यास फ्रान्सदेशींच्या कालेस नगराहून बोलावून लंडनशहरचे किल्ल्याजवळ डोंगरी आहे, तेथें त्या आनाबलेन् राणीचा शिरच्छेद केला. मग तिच्या मेतास पेटींत घालून किल्ल्यांत पुरलें. ज्या कऱ्हाडीने तिचा शिरच्छेद केला ती कुऱ्हाड अजून लंडनशहरचे किल्ल्यांत आहे.

मग दुसऱ्या दिवशीं तो निर्दय स्वछंदी राजा जेनसेमर इजबराबर लग्नकरून असें बोलूं लागला कीं, पहिल्या बायकोची मेरी, आणि दुसरीची इलिझाबेथ, ह्या माझ्या औरस लेंकी नव्हत; आणि यांतून कोणे एकीसहि राज्य मिळणार नाहीं. यामकारें राजा निर्दयपणानें आणि स्वछंदानें वर्तूं लागला, त्याजवरून लोकांच्या मनांत त्याजविषयीं फार द्वेष उत्पन्न झाला आणि राज्यांत बंडें तुफानें होऊं लागलीं. राजानें तर पोपाची अवज्ञा केली होती, त्याचें मतमात्र सोडलें नव्हतें, ह्मणून जे धर्माधिकारी पोपाच्या पक्षास अनुकूळ होते त्यांस हा पीडा करी, व जे पोपाचें मत सोडून प्रोटेस्टान्ट झाले होते त्यांसहि पीडा करी. मुळींच यास अनर्थ करायाजोगा कोप होता, तशांत मजा रुष्ट होऊन यास आड येऊं लागल्या, त्याजवरून तर हा फारच कोपानें संतप्त झाला असे. मग त्यास एक लेंक झाला, तेणेंकरून याची मर्जी कांहीं बरी झाली; पण याची ती मसूत झालेली स्त्री दोन दिवसांनी मरतांच पुनः याची प्रकृति पूर्ववत् झाली. मग तो मुलगा उत्तम राजपुत्र होऊन पुढें साहवा येडवर्ड ह्मणून राजा झाला.

या प्रकारें होतांच राजानें एक दुसऱ्या देशींची स्त्री योजून तिशीं लग्न करण्याचा बेत केला. तिला

स्वतां पाहिलें नव्हतें, याजकरितां हालबेन् ह्मणून एक चितारी होता त्यास तिचें चित्र काढायास सांगितलें, तें त्याणें तिच्या. स्वरूपापेक्षां फार सुंदर काढिलें; परंतु ती राजाच्या देशीं येतांच राजानें रोचेस्टरास जाऊन तिला पाहिलें. तों ती त्या चित्रासारिखी नव्हतीं, ते समयीं असें बोलूं लागला कीं ही शरीरानें जाड, व कुरूप आहे, त्यास ही मला नलगे. मग विचार केला कीं ही कुरूप आहे पण इच्या संबंधानें आपल्यास फ्रान्स इत्यादिक देशांत सोयरे व कुमक करणारे मिळतील, ह्मणून इला सोडूं नये, असें मनांत आणून शेवटीं तिच्याच बरोबर लग्न केलें. मग ती त्याला आवडेनाशी होतांच तिला नाहींसें करण्याचा उद्योग आरंभून क्याथिरैन् हवार्ड ह्मणून एक स्त्री होती, तिशीं तो आसक्त झाला. शेवटीं त्या राणीस दूर करून त्यानें त्या क्याथिरैन्शीं लग्न लाविलें. या स्त्री बराबर राजा कांहीं दिवस आनंद पावल्यासारिखा दिसूं लागला, परंतु ही भली बायको नव्हे इणें लग्ना पूर्वी आणि लग्ना नंतर दुराचरण केलें, असें याच्या ऐकण्यांत येतांच, तिची चौकशी करून तिजवर अपराध ठरवून तिचा किल्ल्याचे डोंगरीवर शिरच्छेद केला.

राजा इकडेस हीं अशीं कामें करीत असतां लोकांत असें दाखवी कीं, माझें लक्ष्य धर्म संबंधी जे तंटे चालले आहेत त्यांजकडेस गुंतलें आहे. हा ख्रिस्ती मतांत चांगला पंडित होता परंतु आसल्या पांडित्यापासून त्या मतावर श्रद्धा ठेवणें, व त्याप्रमाणें चालणें ह्या गोष्टी फार दूर आहेत. क्याथलिक व प्राटेस्टान्ट यां लोकांत जे वाद चालले होते, त्यांजविषयीं राजानें कांहीं ग्रंथ केले. त्या पूर्वी यानेंच सात साक्रेमेन्टें ह्मणजे संस्कार यांचें प्रतिपा-

दनरूप एक ग्रंथ केला होता. क्याथलिक् लोक सांगतात कीं खिस्ती धर्मांत सात संस्कार आहेत, प्राटिस्टान्ट म्हणतात कीं दोन आहेत, एक बाप्तिस्मा म्हणजे खिस्ती धर्मांत घेतांना डोकीवर पाणी घालून जो संस्कार करितात तो, व एक प्रभूचा प्रसाद म्हणजे भाकर व द्राक्षारस यांस ईशुखिस्ताचे शरीर व रक्त मानून त्याच्या स्मरणार्थ, व भक्तींच्या दृढीकरणार्थ ती खायास प्यायास देऊन जो संस्कार करितात तो. प्राटेस्टान्ट सांगतात कीं या दोन संस्कारांवांचून खिस्तीशास्त्रांत दुसरे संस्कार अढळत नाहींत. असो पण हेन्रीनें सातां संस्कारांचें प्रतिपादन केलें, तेणेंकरून पोपाची मर्जी प्रसन्न करून आपल्यास धर्मरक्षक असें नाव मिळविलें. हें नाव आपल्या आपण मात्र चांगलें शोभतें, हें असें यास वागविणारांच्याठायीं शोभावें. मग त्याकाळापासून जेजे इंग्लांड देशींचे राजे झाले, ते आपआपल्याठायीं तें नाव वागवीत गेले, त्यांस तें कसें शोभलें असेल तें असो परंतु तें आठव्या हेन्रीच्याठायीं अगदींच शोभलें नाहीं. नंतर क्याथेरैन् ह्वार्ड राणीचा या हेन्रीनें शिरच्छेद करून एक्या वर्षानें दुसऱ्या एके विधवेशीं लग्न केलें. इचें नाव क्याथिरैन पार. ही विवेकी व भक्तिमान् असे, आणि राजाचे उग्रप्रकृतीस आपल्या मृदुस्वभावानें शमविण्याच्या उद्योगांत असे; परंतु हें कांहीं इच्या हातून घडलें नाहीं, आणि कोणे एके समयीं राजाचें व इचें धर्माविषयीं बोलणें होत असतां राजाच्या बोलण्याहून इचें बोलणें वेगळें पडलें, न्याजवरून इचा तर प्राण जायाचा योग आला होता परंतु इणे राजास मोठ्या युक्तीनें शांत केला. मग तो

राग याणें आपल्या प्रजांवर काढून त्यांतील बहुत्येक उत्तम थोरथोर गृहस्थ जीवीं मारून टाकिले." शेवटीं याचा मरणकाळ जवळ येऊं लागला तशीतशी याची प्रकृति फारच खवळली. याच्या पायांस एक दुःख कारक रोग झाला होता, तो दिवसोंदिवस अधिक वाढून तेणेंकरून हा सन पंधरशें सत्तेचाळीसांत मेला. या राजाचे वेळेस बहुत्येक गोष्टी तुम्हास समजून घ्यायाजोग्या घडल्या आहेत, परंतु म्या येथें इंग्लांडचे बखरेंतील थोडकीं वर्तमानें लिहिलीं आहेत, तुम्हास अवकाश सांपडल्यास थोरली बखर वाचावी, त्यांत ह्या गोष्टी विस्तारें करून लिहिल्या आहेत. लो० हे आशीर्वाद.

१५४७

---

# प्रश्न.

आठवा हेन्री कोणत्यासालीं राज्य करूं लागला ? याराजाचे वेळीं खिस्ती धर्मांत जो मोठा पालट झाला त्यास काय म्हणतात ?

मतांतर शब्दाचा काय अर्थ होतो ?

मतांतर झाल्याच्या पूर्वी खिस्तीधर्माचें मुख्यत्व कोणाकडेस होतें ?

बरें तो पोप कोठे राहत असे ?

मतांतर झाल्याच्या पूर्वी बैबल व भजन पद्धति कोणत्या भाषेंत होतीं ?

आठव्या हेन्रीचेवेळीं ग्रंथ छापण्याची विद्या प्रसिद्ध झाली होती काय ?

बरें त्याचे पूर्वी ती विद्या कळली होती काय ?

इंग्लांडदेशीं प्रथम ज्यानें ग्रंथ छापिला त्याचें नाव काय ?

बरें ग्रंथ छापण्याची विद्या कळूं लागली तेणेंकरून लोकांस ग्रंथ अल्पायासानें मिळून ते सुज्ञ आणि विचारवंत झाले किंवा नाहीं ?

छापण्याची विद्या कळली नव्हती तेव्हां ग्रंथ कसे होत असत ?

त्याकाळीं ग्रंथ फार थोडके व महाग व मिळायास अडचण पडे काय ?

बरें हेन्री मतांतरास मनापासून अंतर न पाडतां अनकूल असे किंवा धर सोड करी ?

हेन्रीच्यावेळीं मतांतराचा प्रारंभ मात्र झाला होता किंवा तें होऊन सिद्धीस गेलें होतें ?

हेन्रीचा मुख्य प्रधान व मंत्री कोण असे ?

तो स्वभावानें कसा असे ?

हेन्रीची पहिली स्त्री कोण, तिचें नाव काय ?

हेन्रीच्या मनांत आलें कीं आपल्या पहिल्या स्त्रीस टाकून द्यावें, तेव्हां हेन्रीला धर्माध्यक्ष वोल्सीनें तें कर्म करायास अनकूल होऊन अनुमत दिलें काय ?

मग हेन्रीनें वोल्सीस काय केलें ?

वोल्सी कोठे मेला आणि तो मरतेवेळीं काय काय बोलिला ?

राजानें आपल्या बायकोस टाकण्याकरितां काय निमित्त सांगितलें ?

राजाचें त्या स्त्रीबरोबर लग्न होऊन किती वर्षें झालीं होतीं ?

राजास इच्या पोटीं मुलगी झाली होती तिचें नाव काय, व ती पुढें कोण झाली ?

मग राजानें कोणाबरोबर लग्न केलें ?

अनाबलेन पोपाच्या मतांत वागत होती किंवा

प्राटेस्टान्ट मतांत वागत होती ?

अनाबलेनास काय संतान झालें होतें ?

तिचें नाव काय व ती पुढें कोण झाली ?

राजास शेवटीं अनाबलेन नावडती झाली काय ?

मग तिला काय केलें ?

मग राजानें कोणाबरोबर लग्न केलें ?

राजा प्राटेस्टान्टास काय करी आणि पोपाच्या मतांत वागणारांस काय करी ?

जेनसेमर ह्मणून राजाची जी तिसरी राणी तिला संतान काय झालें होतें ?

त्याचें काय नाव व तो पुढें कोण झाला ?

मग या राणींचें काय झालें ?

ही मेल्यानंतर राजानें दुसरी राणी केली काय ?

ती कोण कोठली ?

ती रूपानें कशी असे ?

राजानें तिच्याबरोबर लग्न केल्याच्या पूर्वी तिचें चित्र पाहावयाकरितां कोणत्या चित्राच्या कडून काढविलें होतें ?

तें चित्र तिच्याचसारिखें होतें काय ?

ही राजास राणी असतां तो कोणी दुसरे स्त्रीशीं आसक्त झाला होता काय ?

मग या राणीस राजानें काय केलें ?

पोपाच्या मतांत वागणारे किती संस्कार आहेत असें मानितात ?

प्राटेस्टान्ट लोक किती संस्कार आहेत ह्मणून सांगतात ?

हेन्री राजा आपणास ख्रिस्ती मतांत पंडित ह्मणवी काय ?

त्याणें संस्कारांवर ग्रंथ केला काय ?

त्यास संस्कारांविषयीं पोपाचें मत मान्य होतें कि-वा माटिस्टान्टाचें मत मान्य होतें ?

राजानें तो ग्रंथ केला तेणेंकरून पोपाची मर्जी प्रसन्न झाली काय ?

मग पोपानें राजास काय नाव दिलें ?

तें नाव त्या दिवसापासून इंग्लांडचे राजे वागवी-त आले काय ?

ती परदेशीची स्त्री राजानें दूर करून दुसरी स्त्री केली काय ?

तिचें नाव काय ?

या क्याथिरैन हौवार्ड राणीस राजानें काय केलें ?

इचा शिरच्छेद करून राजानें दुसरी राणी केली काय ?

तिचें नाव काय ?

ती राणी चांगली असे काय ?

वरें क्याथिरैन पार राजाच्या मागें जीवंत हो-ती काय ?

राजा कोणत्या वर्षीं मरण पावला ?

---

# पत्र २१.

चिरंजीव०- विशेष आठव्या हेन्रीस दोन कन्या व एक पुत्र झाला असें मागल्या पत्रांत लिहिलें, आतां पुढें काय झालें तें कळवितों. त्यां कन्यांचीं नावें मेरी आणि इलिझाबेथ व त्या पुत्राचें नाव साहवा येडवर्ड. प्रथम या येडवर्डानें राज्य केलें मग याच्या त्या बहि-

णींनीं राज्य केलें. या साहव्या येडवर्डाच्या बापास देवाज्ञा झाली तेव्हां हा नऊ वर्षांचा होता, पण याचें सोळा वर्षांतच आयुष्य सरलें. हा राजपुत्र गुणानें चांगला होता, जें कांहीं उत्तम तेंच यास आवडत असे, याचें या अल्पवयांत अध्ययन ही चांगलें झालें होतें, आणि दुसरा एक असा चमत्कार कीं हा स्वयें भक्ति-मार्गास लागून इतरांस ही त्या मार्गास लावण्याविषयीं झटत असे. मतांतर म्हणून जें मोठें काम तें सिद्धीस जावें आणि ख्रिस्ती मतांत रोमन क्याथलिक् लोकांनीं जे अनाचार व अज्ञान शिरविलें होतें तें काढून टाकावें याजविषयीं हा फार अतुर झाला असे. तेसमयीं रोमन क्याथलिक् लोकांत जे अनाचार शिरले होते ते अगदीं नाहींसे झाले. असा धर्मांत पालट होतांच सर्व देशास आनंद झाला, आणि राजानें खरा पक्ष घेऊन त्याजविषयीं यत्न मांडिला आहे असें पाहून लोकांस फार हर्ष वाटूं लागला, बैबल इंग्लीश भाषेंत झालें म्हणून लोक तें स्वतां वाचून विचार करूं लागले आणि ख्रिस्ती मताचा खरा सिद्धांत कोणता व खोटा कोणता याचा निर्धार करूं लागले. त्याजवरून त्यांस असे कळूं आलें कीं पोपाचे मतवादी जीं बाह्य कर्मे आवश्यक म्हणून सांगतात त्यांस ख्रिस्ती शास्त्रांत कोठे आधार नाहीं, याजकरितां त्यां कर्मांचा त्याग असावा. नंतर बहुत्येक पंडित व मोठे मोठे विद्वान् धर्माध्यक्ष ते प्रोटेस्टान्ट मतास अनकूल होऊन त्याची प्रवृत्ति करूं लागले. क्रामर म्हणून जो मुख्य धर्माध्यक्ष व रिडली व ल्याटिमर म्हणून जे इतर धर्माध्यक्ष, हे ख्रिस्ताचें शुभ-वर्तमान लोकांस कळविते झाले आणि सत्य सिद्धांताचें ज्ञान होऊन त्यांजवर त्यांची प्रीति बसायाजोगे उद्यो-

ग करूं लागले. हे उत्तम पुरुष जे धर्मोपदेश करीत व यांणीं जे ग्रंथ केले होते ते तो राजा अल्पवयी असतां ही मोठ्या संतोषानें ऐके. शुभवर्तमानाच्या अभिमायाचें ज्ञान होऊन जें कर्तव्य तें मला कळावें, व तें शुभवर्तमान मजांस कळून त्यांनी तसें चालावें असें या राजाच्या मनांत फार वागत असे. ईश्वरानें कृपा करून या राजाची प्रीति आपणाकडेस लाऊन घेतली तेणेकरून लोकांवर जे उपकार घडले ते आतांचेही रिस्ती लोक आठवितात, ते असें म्हणतात कीं "ईश्वरानें काय जी त्या काळीं कृपा केली ती आह्मावर केली, ती आतां आह्मी अनुभवीत आहों. पोपाच्या मतांत जीं उगीच बाह्य कर्में सांगितलीं होतीं त्याचा आमच्या हातून त्याग घडला, आह्मी ज्या मतांत आहों तें मत आह्मी अंतःकरण पूर्वक धरिलें आहे किंवा कसें व आमचें कल्याण व्हावें म्हणून ईश्वरकृपेनें आह्मास जो धर्मोपदेश ऐकायास मिळतो, त्या उपदेशाप्रमाणें चालायास आह्मी मनापासून इच्छितों किंवा कसें हें आह्मीं आपआपल्याठायीं विचार करून पाहवें. रिस्ती धर्मांत जे अनाचार शिरले होते ते काढून टाकावे म्हणून मतांतर करण्याचें प्रयोजन पोपाच्या मतांत वागणारे जे त्यांत तरी चांगले उत्तम मनुष्य आहेत आणि त्यांस जन्मापासून त्याच मताचा संस्कार म्हणून त्यांचा त्या मतावर भर असतो याजकरितां जीं पोपाच्या मताचीं कर्में करूंनये असें प्राटेस्टान्ट सांगतात तीं कर्में करावीं असें ते प्रतिपादून देतात. ते सांगतात कीं तीं कर्में शास्त्रांत सांगितलीं आहेत व कांहीं उत्तम कार्यार्थ त्यांची प्रवृत्ति झालीं आहे. पोपाच्या मतांतील कर्में काय हेतूने प्रवृत्त झालीं असतील तीं असोत परंतु त·

द्वारा लोकांत फार अनाचार शिरले त्यांस शास्त्रांत को-ठे आधार सांपडत नाहीं आणि त्या बहुत्येक आचारा-वरून ख्रिस्ताच्या धर्माचा अपसिद्धांत होऊं पाहतो. साधु पुरुष व इशुख्रिस्ताची आई मार्या कुमारी यांच्या मूर्तींनी व चित्रांनी रोमन् क्याथलिक् लोकांचीं देउळें भ-रलीं असत आणि देवाचा देव जो ईश्वर त्याचे जें भज-न करायाचें तें न करितां लोक त्या मूर्तींपुढें गुडघे टेंकून त्यांचें भजन करीत आणि त्यांस असें वाटे कीं जीं आपल्याकडून पातकें घडलीं असतील तीं आप-ल्या शरीरास मार उपोषण इत्यादि घोर दंड केले असतां दूर होतात, परंतु असल्या आचरणावरून लो-कांच्या मनांत असें येईल कीं आम्ही शरीर दंडादिक प्रायश्चित्तें करितों तेणेंकरून आमचीं पातकांपासून मु-क्तता होती. असें लोक मानूं लागले असतां मग इशू ख्रिस्त जो आपला प्राण देऊन सर्वांच्या पातकाकरितां वास्तविक प्रायश्चित्त आचरला आहे त्या प्रायश्चित्तावर लोकांची श्रद्धा ठरणार नाहीं. आपल्या अपराधांची क्षमा व्हावी असें जर मनांत आहे तर तारक जो इशू त्यानें जे कष्ट सोसिले आहेत तेणेच करून अपराधांची क्षमा होईल असा भाव मनांत धरावा, याप्रमाणें मागें जीं पातकें झालीं असतील तीं दूर होण्याविषयीं इशू-ख्रिस्तानें प्रायश्चित्त केलें आहे, त्याजवर भाव ठेवून पुढें आपल्याकडून पाप न होई अशी बुद्धि धरावी, व पाप न होई अशाच रीतीनें राहवें. अशा बुद्धीनें जर वर्तलें नाहीं तर इशूख्रिस्तानें स्वकष्टें करून जें देव लोकींचें राज्य आपल्या भक्तांकरितां मेळविलें आहे तेथें जाण्याची योग्यता येणार नाहीं. ख्रिस्ताचें शुभव-र्तमान असें सांगतें कीं, आपण पवित्रता धरावी, आणि

ईश्वराची आज्ञा पाळावी, आणि त्या ईश्वराची सेवा आपल्यास करितां यावी म्हणून त्याजवळ बुद्धि मागावी. या आपल्या देशांत प्राटेस्टान्ट धर्माची प्रवृत्ति झाली तेणेंकरून ख्रिस्तीशास्त्र पाहण्याचा योग आला आणि अक्षय सुख पावावयास ज्या कारणभूत गोष्टी त्याही आपल्यास कळूं लागल्या, हा ईश्वराचा मोठा उपकार झाला असें मानावें, आणि त्या शास्त्रापासून आपल्यास जें ज्ञान प्राप्त होतें त्याप्रमाणें चालण्याविषयीं अतुर असावें."

आठवा हेन्री मरण पावला त्या काळीं त्याचा मूल येडवर्ड लहान होता, त्यास राज्य चालविण्याची योग्यता आली नव्हती, म्हणून त्याचें पाळण करायास जे नेमिले होते त्यांजकडेस राज्यकारभार सोपला. या पाळण करणारांत सामर्सेटचा ड्यूक मुख्य होता. हा येडवर्डाचा चुलता,यास प्रोटेक्टर म्हणजे पाळण करणारा असें बोलत. हा मानकरी मतांतरास अंतःकरणपूर्वक अनकूल असे, आणि यानें जें उद्योग केले ते त्या मतांतरास फार उपयोगी पडले. मग मतांतराची मोठी आश्चर्य वाटायाजोगी प्रवृत्ति होऊन त्याला राज्यांतील बहुधा अवघे लोक अनकूल झाले, परंतु किन्येक लोक आपलें पूर्वींचें मत न सोडितां मतांतराची प्रवृत्ति होऊंनये म्हणून उद्योग करीत होते, त्यां लोकांनीं कांहीं दंगे केले, तेणेंकरून किन्येक जण मारले गेले. गार्डिनर व बानर म्हणून दोन मुख्य धर्माध्यक्ष होते, यांचें वर्त्तमान पुढें तुम्हास कळूं येईल. हे रोमन क्याथलिक् मत न सोडितां मतांतरास अडथळे करीत होते, म्हणून यांस किल्ल्यावर टाकिलें. रोमन क्याथलिक् लोक मात्र आपल्या मताची प्रवृत्ति करायास उपद्रव करीत होते असें नाहीं

तर प्राटेस्टान्टही आपल्या मताचे प्रवृत्ती करितां उपद्रव करीत. यास्तमाणें प्राटेस्टान्टांनी करावें हें त्यांस उचित नव्हे, रोमन क्याथलिकांच्या मतास जो कोणी प्रतिकूळ असे त्यास तर त्यांज़पासून महान् उपद्रव होई, परंतु असेंच प्राटेस्टान्टानीं करूंनये. यांनीं चांगल्या स्वभावानें चालावें, पीडा बलात्कार इहीं करून धर्माची प्रवृत्ति करूंनये. येडवर्डानें जें अल्प काळं राज्य केलें तेणेंकरून लोकांचें तर कल्याण झालें परंतु यास फार दुःख व श्रम झाले. मेरी आणि इलिझाबेथ् ह्मणून येडवर्डाच्या ज्या दोघी बहिणी होत्या त्यांतून येडवर्डाच्या मागें वडील बहिणीस राज्य मिळावें असें असतां यांच्या बापानें आपल्या इच्छा पत्रांत लिहून ठेविलें होतें कीं, ह्या माझ्या औरस लेंकी नव्हत, ज्यांच्या बराबर माझें शास्त्र विहित लग्न झालें नाहीं त्यां स्त्रियांच्या पोटीं या झाल्या ह्मणून यांतून कोणे एकीस राज्य देऊंनये. असें आठव्या हेन्रीनें लिहून ठेविलें होतें. हें त्याच्या छांदिष्ट स्वभावास उचितच होय पण ह्या कन्या औरस नसल्यास त्या आठव्या हेन्रीची भाची स्काटलांड देशींची राणी तिला राज्य मिळावें. असें असतां जेन्ग्रे ह्मणून एक उत्तम स्त्री होती, तिची राज्याविषयीं योजना झाली. ही राजाची कांहीं नातलग असे, परंतु इला राज्य मिळावें असें इचें नातें नव्हतें व राज्याविषयीं दावा सांगावा असें ही इच्या मनांत नव्हतें, असें असतां नार्थंबर्लांडचा डयूक ह्मणून एक मानकरी होता तो मोठा गर्विष्ट व अभिमानी असे. तो कांहीं युक्तीनें आपला लेंक गिलडफोर्डडडूली याचें त्या जेन् स्त्रीचे बरोबर लग्न करून ती राज्याची अधिकारी असें सिद्ध करूं लागला. मग माझ्या मागें राज्याची अधिकारी लेडीजेन् असें

शेवटीं त्या मानकऱ्यानें येडवर्डाकडून बोलविलें.

यामाणें तंटे बखेडे चालत असतां येडवर्ड राजाची जी मुळची नाजूक प्रकृति ती या संधीस फार बिघडून गेली, आणि याचें दुखणें दुःसाध्य अशीं चिन्हें दिसूं लागलीं. अशीं राजाच्या दुखण्याचीं चिन्हें पाहून त्या मानकऱ्यानें लेडीजेन् राज्याची अधिकारी असें राजाकडून बोलविण्याची घाई केली असें दिसूं येतें. शेवटीं या राजाचें दुखणें बळावलें, तेव्हां याजविषयीं चांगला बंदोबस्त ठेविला नाहीं, म्हणून यास लौकर मरण आलें. नार्थंबर्लंडचा ड्यूक नेहमी याच्याजवळ असे, त्यानें जो चांगला वैद्य होता त्यास घालवून एक मूर्ख म्हातारडी होती तिच्या स्वाधीन राजास केलें, त्याचें कारण असें कीं, मी राजास खचित बरें करीन अशी तिणे प्रतिज्ञा केली होती. कोणी वृत्तांतकर्त्ते असें सांगतात कीं, राजा लौकरच शांत व्हावा या बेतानें त्या ड्युकानें हें कृत्य केलें परंतु हें कृत्य त्याणें याच बेतानें केलें किंवा कसें केलें याचा निर्धार होत नाहीं. परंतु ती म्हातारी औषध देऊं लागली तशी राजाची प्रकृति फारच बिघडली. असें आहे याजकरितां त्या ड्युकानें राजास मारविलें असें मानण्यापेक्षां त्या म्हातारीच्याच औषधानें राजा मेला असेल असें कां मानूं नये. मग तो राजा ग्रिनवीच शहरांत एक राजवाडा होता तेथें सन पंधराशें त्रेपन्नांत सोळाव्यावर्षीं मृत्यु पावला. त्यानें सुमारें सातवर्षें राज्य केलें. याच्या मरणावरून जेजे राज्यांत चांगले लोक होते त्यां सर्वांस फारच शोक झाला, कांतर १५५३.
सर्व जें कांहीं चांगलें तें अल्पवयांत या राजास आवडूं लागलें होतें. त्याजवरून याच्या राज्यांत प्रजा समृद्ध

होऊन सुखानें नांदूं लागतील असें वाटत होतें. लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

आठवा हेन्री कोणत्या सालीं मरण पावला ?
त्यास किती मुलें होतीं ?
त्यांचीं नावें काय ?
त्यांतून पहिल्यानें कोणी राज्य केलें ?
साहवा येडवर्ड राज्य करूं लागला तेव्हां तो किती वर्षांचा होता ?
तो गुणानें कसा होता ?
तो मतांतरास अनकूळ झाला होता काय ?
मतांतराचा येथें काय अर्थ जाणावा ?
मतांतरास जे तिघे मोठे मोठे विद्वान् धर्माध्यक्ष अनकूळ होते त्यांचीं नावें काय ?
यां उत्तम पुरुषांचा धर्मोपदेश राजा आवडीने ऐके काय ?
रोमन् क्याथलिक् लोकांच्या समयीं बैचल शाक्त भानेंत जाहलें होतें काय ?
लोकांस ख्रिस्ती शास्त्र कळत नव्हतें त्यामुळें बहुत्येक बाह्य कर्में अनाचार असे घडत होते किंवा नाहीं ?
मारिया कुमारिका व साधु पुरुष यांच्या मूर्त्तीं पुढें गुडघे टेंकून बहुतकाळ प्रार्थना केल्या किंवा शरीरास पीडा दंड केले तर तेणेंकरून पातकें दूर होतील काय ?
जगाचीं पातकें दूर व्हावीं म्हणून प्रायश्चित्त कोण आचरला ?

ख्रिस्त जगाच्या पातकाकरितां प्रायश्चित्त आचरला आहे, म्हणून त्याच्याठायीं जे भाव धरणार त्याणीं पातकें करीत असावीं काय ?

तेव्हां जे ख्रिस्ताच्याठायीं भाव धरितात त्याणीं पापकरणें सोडून ईश्वराची सेवा व चांगलीं कर्में करायास अतुर असावें असें आहे काय ?

बरें जे प्राटेस्टान्ट लोक ख्रिस्ती शास्त्र वाचितात त्यानीं शास्त्रांत जें सांगितलें आहे त्याजवर विश्वास ठेवून त्याप्रमाणें चालावें कीं नाहीं ?

राजाचें वय लहान होतें म्हणून त्याचें जे पाळण करणारे होते, त्यांजकडेस राजकारभार सोंपला होता काय ?

त्या पालण करणाऱ्यांमध्यें मुख्य कोण होता ?

त्याला काय म्हणत ?

सामर्सेट म्हणून जो पाळण करणारा होता तो मतांतरास अनकूळ होता काय ?

मतांतराची प्रवृत्ति येडवर्डाच्या वेळीं होऊं लागली काय ?

असें मतांतर प्रसिद्ध होत असतां जे दोघे धर्माध्यक्ष रोमन क्याथलिक मत धरून बसले होते त्यांचें नाव काय ?

मग त्यांस किल्यावर टाकिलें काय ?

राजाच्या मागें राज्यास वारस कोणी ठरला होता काय ?

लेडीजेन् ग्रे इला राज्याविषयीं दावा सांगायास कोणी पुढें केलें ?

त्यावेळीं राजाची शरीर प्रकृति कशी होती ?

राजा कोणत्या वर्षीं मेला ?
त्याचें वय किती वर्षांचें होतें ?
त्यानें किती वर्षें राज्य केलें ?

---

# पत्र २२.

चिरंजीव०- विशेष जे कोणी साहव्या येडवर्डाचें वर्तमान वाचितात, त्यांस हा केवळ अल्पवयांत मरण पावला याजवरून खिन्नता वाटती, आणि त्यानंतर जी राज्य करूंलागली, तिणे केवळ दुस्सह परम तीव्र अशा पीडा प्राटेस्टान्ट लोकांस केल्या, त्याजवरून फारच खिन्नता वाटती. ही पीडा करणारी त्या येडवर्डाची वडील बहीण, इचें नाव मेरी राणी. इला ब्लडी झणजे हिंसक मेरी असें बहुधा झणतात. राणी राजाचे स्त्रीलाच झणतात असें नाहीं, जी स्त्री राज्यावर बसली आणि तिचें राजाबरोबर लग्नही नझालें, तथापि तिला राणीच झणतात. येडवर्ड राजाच्या वेळीं जीं जीं चांगलीं कर्में घडलीं होतीं तीं तीं सर्व या मेरीने नाहींशीं करून टाकिलीं. इला पोपाच्या मताचा फार अभिमान असे, झणून जे चांगले भक्तिमान् मनुष्य मतांतरास अनकूळ झाले होते त्यां सर्वांवर ही उठली. जे प्राटेस्टान्ट लोकांचे शत्रु, आणि ज्यांच्या मनांतून लोकां मध्यें पूर्ववत् अज्ञान व अनाचार चालू करावा असे जे पीडक, व निर्दय लोक, त्यांस इणें उभें केलें. बानर झणून लंडनशहरचा धर्माध्यक्ष, व गार्डिनर झणून विनूचेस्टरचा धर्माध्यक्ष, हे दोघे पोपाच्या मतांत असून मतांतराचा द्वेष करीत, झणून त्यांस किल्यावर टाकिलें होतें, त्यांचीं मेरीनें मुक्तता केली. मग प्राटेस्टान्ट लोकांस पीडाकरण्याचें जें काम मेरीनें आरंभिलें

होतें, त्याविषयीं ते दोघे धर्माध्यक्ष तिला अनकूळ होऊन त्यां लोकांस फार पीडा करूं लागले. इंग्लांड देशांत अति उत्तम व अति भक्तिमान् असे जे पुरुष होते, त्यांतून कित्येक जाळून टाकिले, ते सांगतों. मुख्य धर्माध्यक्ष पांच, धर्माधिकारी वीस, व शेंकडों लोक. यांच्या बुद्धीस जें मत सदोष असें वाटलें, त्या मतास हे अनकूळ झाले नाहीं, ह्मणून यांस जाळून टाकिलें. रिडली व ल्याटिमर असे दोन मुख्य धर्माध्यक्ष होते, हे केवळ भक्तिमान् व थोर योग्यतेचे वृद्ध असत, यांजविषयीं मागल्यापत्रावरून तुह्मास कांहीं समजलेंच असेल. यां दोघां ईश्वर भक्तांस एक्याच समयीं, व एक्याच स्थानीं अग्नीने जाळून टाकिलें. तो प्रकार असा कीं, पहिल्याने ल्याटिमरास जाळायास नेऊन ठेवला, नंतर रिडलीस नेला. या रिडलीचा बहुत दिवसांचा ल्याटिमर स्नेही असे. मग यां उभयतांची भेट झाल्यावर त्या संकटसमयीं यानी एकमेकांचें शांतवन केलें, आणि ईश्वराने जें चमत्कारीक धैर्य दिलें, तेणेंकरून त्यानी शत्रूचे सर्व उपद्रव मागें न हटतां सहन करून शेवटीं त्या सत्य कर्मास्तव हे आपल्या प्राणास मुकले, आणि प्राण जाईपर्यंत एकमेकांस धैर्य देत असतां यानी ईश्वराची प्रार्थना व स्तुति केली. हे मोठे विद्वान् व थोर असत, याणी जे ग्रंथ केले तेणेंकरून बहुधा शुभवर्तमान चहूंकडेस प्रसिद्ध होऊन मतांतराची ही प्रवृत्ति झाली. या नंतर क्रामर ह्मणून जो चांगला विद्वान् मुख्य धर्माध्यक्ष होता त्यास जाळून टाकिलें. तो प्रकार असा कीं, त्यास महान् संकट प्राप्त झालें, तेव्हां त्याणे आपला प्राण वांचायाकरितां मी प्रोटेस्टान्ट मतास अनकूळ नाहीं असें लिहून दिलें, तें त्यास जा-

चूं लागलें. असें आहे कीं चांगल्या मनुष्याकडून सम्यास मोहानें पाप घडतें, परंतु नंतर त्यास पश्चात्ताप होतो. याचममाणें क्रामरास पश्चात्ताप होऊन चईन पडेना असें झालें. ते समयीं त्याणें आपल्या मनांतील अभिमाय स्पष्ट बोलून मी प्रोटेस्टान्ट मताकडचा आहें असें सांगितलें. त्याजवरून त्यास जाळायाच्या ठिकाणीं आणिलें, तेव्हां अशा सत्कार्यार्थ आपणास दुःख माप्त झालें, असें पाहून क्रामरास मोठा आनंद झाला. मग यासभोंवता अग्नि पेटविला, तेव्हां याणें आपला उजवा हात ज्वालेंत जळून जाईतोंपर्यंत तसाच धरला. त्याचें कारण असें कीं, जें लिहून दिलेलें याच्या अंतरीं जाचीत होतें तें याच हाताने लिहिलें, म्हणून पहिल्यानें त्या हातास दंड केला. मग ज्यावेळीं शरीरास वेदना होऊं लागल्या, त्यावेळीं " तो अयोग्य हात, तो अयोग्य हात," असें हाकमारून बोलूं लागला.

यामकारें त्या राणीने आपल्या क्याथलिक् मताचा अभिमान धरून लोकांस मोठे मोठे उपद्रव दिले. ती राजासनी बसतांच पहिल्याने तिणे लेडीजेन् ग्रे इजवर असा आरोप आणिला कीं इच्या पक्षाचे लोक इची राज्याविषयीं योजना करूं लागले, त्यावेळीं इणे सर्वस्वें नाकार केला नाहीं, असें निमित्त ठेऊन जेन्ग्रे स्त्रीला व तिच्या नवऱ्याला मारायाचा हुकूम केला. त्याजवरून सर्व प्रकारचे लोकांस त्यां उभयतांची दया येऊन हळहळाट लागला. कांतर मेरी राणीपासून राज्य घ्यावें असें कांहीं लेडीजेन्च्या अथवा तिच्या नवऱ्याच्या मनांत नव्हतें, यांचे जे सोयरे संबंधी होते ते अभिमानास पडून त्यानी यां उभयतांस उभें केलें होतें. हीं उभयतां नवीं तरणीं सुंदर आणि प्रिय स्वभावांचीं

असतां मेरीराणीस त्यांची दया आली नाहीं. मग यांचा एक्याच दिवशीं किल्ल्याजवळ शिरच्छेद केला. पहिल्याने तिच्या नवऱ्यास मारलें, नंतर तिला मारायास नेऊं लागले, तेव्हां तिला तिच्या नवऱ्याचें प्रेत भेटलें, तें पाहिलें तो त्यास शिर नाहीं त्याजपासून रक्त वाहत आहे आणि त्यास किल्ल्यावरले अमलदार लोक नेताहेत. तेव्हां त्या प्रेताकडेस तिणें कांहीं वेळ पाहून उसासा देऊन आपल्यास जे मारायास घेऊन जात होते त्यांस सांगितले कीं, हां आतां चला पुढे. मग तिला मारायास नेलें, तेसमयीं तिणे मोठें धैर्य दाखवून तो अंतीचा घाव घ्यायास शांत मुखाने आपली मान दिली.

मेरी राणीचें लग्न स्पेन देशींचा राजा दुसरा फिलिप् याजबराबर झालें होतें. हा स्वभावाने कठोर असे, व यास रोमन् क्याथलिक् धर्माचा अभिमान असे आणि मतांतरास अटकाव करावा असें हा ही मेरी राणीस सांगे. याप्रमाणें मोठीं घोर कर्में होत असतां मेरी राणी सुखाने नांदत होती असें मानूंनये कळलें, तिचा जो हिंसक दुष्ट स्वभाव तो तिला जाचूं लागला, आणि तिणे जे जे लोकांस उपद्रव दिले त्याचें तीस स्मरण पडून अहःहः मी केवळ पापिणी असें वाटूं लागलें.

या प्रसंगीं राज्यास ही अपाय होऊं लागला. कालस शहर तिसऱ्या येडवर्ड राज्याच्या वेळापासून इंग्लीश लोकांच्या स्वाधीन झालें होतें, तें फ्रेंच लोकानी घेतलें. त्याजवरुन मेरी राणीस इतका शोक झाला कीं "आहाहा मी मेलें तरी कालेस मांताचें नाव माझ्या हृदयांतून जाणार नाहीं," असें ती बोलली. या-

जवरून असें वाटतें कीं, असल्या दुसऱ्या ही गोष्टींचें तिला स्मरण राहून त्यांची तिच्या अंतःकरणास टोचणी लागली असावी.

कालेसमांत जाण्याच्या संधीस मेरी राणीला दुःखशोक व्हायाजोग्या साऱ्या गोष्टी एकत्र झाल्या. त्या अशा, तिच्यावरून तिच्या नवऱ्याची प्रीति उडून गेली, व प्रजांस तिचा त्रास आला, व प्राटेस्टान्ट धर्माची प्रवृत्ति होऊंनये झणून ती लोकांस नानाप्रकारचे उपद्रव करीत असतांही त्या धर्माची प्रवृत्ति झाली, आणि तिणे जे जे लढाई करण्याचे बेत केले ते सिद्धीस गेले नाहींत. अशा प्रसंगावरून तिच्या मनास व्यथा होऊन शरीरीं विकृति झाली, आणि तिला क्षयरोग लागला. तेसमयीं तिची प्रकृति मुळची रुष्ट व क्रूर झणून तो रोग बळाऊन तिला ज्वर लागून ती दिवसोंदिवस क्षीण होत गेली. शेवटीं ती त्रेचाळीसावे वर्षीं, सन १५५८ पंधराशें अठावनांत मेली. तिणे सुमारें पांच वर्षें राज्य केलें परंतु त्यापासून बहुतांस दुःखें झालीं.

बखरींत वर्त्तमानें पाहिलीं असतां तीं बहुतकरून राजांचीं व राणींचीं असतात; परंतु व्यवहारांत कोणी कसें वर्त्तावें, हा उपदेश त्या वर्त्तमानांपासून होतो. याजवरून खिस्ती लोक असें झणतात कीं " त्या वर्तमानावरून आह्मास ज्ञान होवो, खिस्ती धर्मप्रमाणें चालिलें नसतां दुःखें व विपत्ति प्राप्त होतात, आणि सत्य धर्माच्या संस्कारेंकरून मन शांत झालें नसलें, तर तें आपला दुष्ट निर्दय स्वभाव सोडीत नाहीं, असें त्या वर्तमानावरून आह्मास कळतें. याजकरितां सत्यमताचा स्वीकार करून त्याच्याठायीं विश्वास ठेऊन ईश्वराची प्रार्थना करीत असावी, झणजे तो कृपाकरून त्या म-

तामणे चालायाचें, आणि तें मत दुसऱ्यास कळवाव-
याचें आपल्यास सामर्थ्य देईल, आणि त्या मताचें ज्ञा-
न प्राप्त झालें असतां सर्व सत्य सिद्धांत कळूं लागतील,
व आपल्यास जें कर्तव्य त्या सर्वांचें ज्ञान होईल व स-
र्व सुखें इहलोकीं प्राप्त होतील, आणि परलोकींच्या
निरंतर जीवनाचा मार्ग दिसूं लागेल. त्या वर्तमानाव-
रून आणखी असें कळूं येतें कीं खिस्ताच्या भक्तांस
महान संकटें व महान दुःखें प्राप्त झालीं असतां ते धैर्य
सोडीत नाहींत, ह्मणून ज्या मताच्यायोगाने संकटसम-
यीं असलें धैर्य येतें त्या मताचा स्वीकार करावा. आ-
णि असल्या मताचें ज्ञान प्राप्त झालें त्याजवरून ईश्व-
राचा उपकार स्मरावा. आणि त्या मतांतील उत्तम
नियमांप्रमाणें चालण्याविषयीं इच्छा धरावी व झट-
वें." लोभ० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

साहवा येडवर्ड कोणत्या सालीं मरण पावला ?
त्याच्या मागें कोण राज्य करूं लागलें ?
मेरी राणी ही येडवर्डाची कोण ?
तिचे गुण स्वभाव कसे असत ?
मेरी प्राटिस्टान्ट धर्मास अनकूल होती काय ?
प्राटिस्टान्ट लोकांस उपद्रव करण्याच्या कामांत
मेरीस कोणते दोन धर्माध्यक्ष सामील झाले होते ?
लोक प्राटेस्टान्ट धर्म चालवूं लागल्यामुळें त्यां-
तील बहुत जणाचा मेरीच्यावेळीं वध झाला काय ?
प्राटेस्टान्ट धर्मास अनकूळ झाल्यावरून कोणत्या
दोन नामांकित धर्माध्यक्षांस जीवंत जाळून टाकिलें ?
रिडली व लाटिमर यानी ग्रंथ लिहून धर्मोपदेशक-

रून प्राटेस्टान्ट धर्माची बहुतकरून प्रवृत्ति केली काय ?

यानंतर दुसऱ्या कोणत्या धर्माध्यक्षांस प्राटेस्टान्ट धर्मावरून मारिलें ?

बरें क्रामर ह्मणून जो मुख्य धर्माध्यक्ष होता, तो एकसारखाच प्राटेस्टान्ट धर्मास अनकूळ होता किंवा कोठे त्याच्या निश्चयांत अंतर पडलें होतें ?

मी प्राटेस्टान्ट धर्मास अनकूळ नाहीं असें क्रामरानें लिहून दिलें होतें काय ?

असें लिहून दिल्यावरून त्यास कसें वाटूं लागलें ?

मग त्याने काय केलें ?

त्याने आपला उजवा हात अग्नींत काय ह्मणून टाकिला आणि त्याच्या शरीरास वेदना होऊं लागल्या त्यावेळीं तो काय ह्मणूं लागला ?

बरें मेरीराणीस राज्य प्राप्त होण्याच्या संधीस त्या राज्याविषयीं दुसरी कोणाची योजना केली होती ?

जिची योजना केली होती तिचें नाव काय, ती कोणाची कोण होती ?

मग त्या लेडीजेन् ग्रेस् काय केलें ?

तिचा नवरा कोण होता त्यास काय केलें ?

मेरी राणीचें लग्न झालें होतें काय ?

तिचा नवरा कोण होता ?

मेरीच्या वेळीं राज्य चांगलें नांदूं लागलें किंवा त्यास कांहीं अपाय घडले ?

मेरीच्यावेळीं फ्रेन्च लोकांनी कोणता इंग्लीश लोकांचा प्रांत घेतला ?

हा प्रांत गेल्यावरून राणीस कांहीं शोक झाला काय, मग ती मरतेवेळीं काय बोलली ?

इच्या नवऱ्याचा स्वभाव कसा असे ?

न्यास कोणत्या मताचा अभिमान असे ?
तो या राणीशीं कसा होता ?
ती चांगली सुखाने मेली काय ?
ती कोणत्या सालीं मरण पावली ?
तिणे किती वर्षें राज्य केलें ?

## पत्र २३.

चिरंजीव— विशेष मेरी राणी मेल्यानंतर तिची बहीण इलिझाबेथ राणी झाली. तेसमयीं मेरीच्यावेळीं ज्या लोकास फार दुःख झाल हात न्यास परम आनंद झाला. इलिझाबेथ मोठी विवेकी असे. इला प्राटेस्टान्ट मताचें चांगलें ज्ञान होऊन तें खरें वाटत असे. इणे आपली बहीण मेरी इचे धर्माविषयीं अभिप्राय केवळ खोटे असें पाहून आपल्या प्राटेस्टान्ट मताची प्रवृत्ति करावी असा निर्धार केला. नंतर इच्या हातून रोमन क्याथलिक मत नाहींसें होऊन प्राटेस्टान्ट मत हल्लीं चालत आहे त्याप्रमाणें चालू झालें.

या लोकां कसाही मोठा अधिकार मिळाला तथापि त्याच्या पाठीमागें दुःखें आहेत असें या इलिझाबेथ राणीच्या लौकरच अनुभवास आलें, तो प्रकार असा कीं, प्राटेस्टान्ट मत चालू झालें होतें तरी रोमन क्याथलिक मताचा अभिमान वागविणारे बहुत्येक इंग्लंडांत होते. त्यांच्या मनांत असें आलें कीं, इलिझाबेथ राणीस राज्यावरून दूरकरून स्काटदेशींचे मेरी राणीला राज्यासनीं बसवावी. ही मेरी इलिझाबेथची जवळची नातलग आणि इलिझाबेथ संतानावांचून मरण पावली असतां इंग्लांडचें राज्य मेरीने करावें असें होतें. इची उत्पत्ति अशी आहे कीं या इलिझाबेथचा

बाप आठवा हेन्री याची बहीण मार्गारेट, ही स्काटलांड देशींचा चौथा जेम्स यास दिली होती, तिला पांचवा जेम्स झाला त्या जेम्साला ही मेरी कन्या झाली, ह्या मेरीने रोमन क्याथलिक् मत धरिलें होतें, याजकरितां जे कोणी इलिझाबेथ इजवर मसलत योजीत होते, त्यांच्या गोष्टी ऐकून ही त्या मसलतीस सामील झाली, मग या दोघीजणींची लढाई होऊन मेरीचा मोड झाला. तेसमयीं मेरी स्वतां जाऊन इलिझाबेथ् इच्या स्वाधीन झाली. तेव्हां ही राज्यांत बखेडे करील म्हणून इला बंदीस ठेविलें. तेसमयीं जे कोणी इलिझाबेथ् इजला राज्यावरून दूर करण्याच्या मसलतींत होते त्यांस मेरी बंदींत असतां ही गुप्तपणें सामील असे. मग मेरीची चौकशी करून तिचा वध करावा असें ठरलें, त्याकाळीं तिला मारण्याविषयीं जो हुकूम लिहिला होता त्याजवर सई घालावी असें इलिझाबेथ इच्या मनांत नव्हतें, परंतु इच्याजवळ जे लोक असत त्यानी मेरी राज्य करूं लागल्यावर आमचें कांहीं चालणार नाहीं असें जाणून मोठ्या यत्नानें इलिझाबेथ कडून त्या हुकूमावर सई करविली. त्या लोकानी बंडें तुफाने यांच्या आवाई उठवून इलिझाबेथ् राणीच्या मनांत भय घातलें. तेव्हां तो हुकूम तयार करून ठेवावा आणि काथिरिंगे किल्यांत मेरीस अटकेस टाकिलें होतें तेथून ती पळून जाण्याचा उद्योग करूं लागली म्हणजे तो हुकूम बजवावा असें मनांत आणून इलिझाबेथ इणें एके दिवसीं त्या हुकुमावर सई करून त्याजवर शिक्का करण्याविषयीं राज्यांतील मुख्य अधिकाऱ्यांकडेस तो हुकूम पाठविला, त्याजवरून राणीचा चिटणीस त्या मुख्य अधिकाऱ्यांकडेस जाऊन त्या हुकुमावर

शिक्षा करवून तो हुकूम राणीकडेस ननेतां परभारें प्रधानादिकांकडेस नेला. न्यांहीं असें ठरविलें कीं हा हुकूम बजवावयास कांहीं विलंब लावूंनये. हा हुकूम चौघां मानकऱ्यांवर होता, मग ते मानकरी दोघां मारेकऱ्यांस समागमे घेऊन काथिरिंगे किल्यास लौकर निघून गेले, तेथें पोंहचतांच त्यानी मेरीस आज्ञा केली कीं तुह्मी उद्यां सकाळीं आठ वाजतां तयार असावें, तुमचा शिरच्छेद होणार. मग ती त्या नेमलेले वेळेस तयार झाली. तिणे उंचउंच रेशमी व मखमाली वस्त्रें नेसून तोंडावरून बारीक पडदा घेऊन पोर्टुगीस लोक जी तिकटींसुद्धां इशूख्रिस्ताची लहान मूर्ति करून संग्रहीं ठेवितात तसली मूर्ति हातीं धरली, आणि तिच्या वधार्थ ठिकाण करून तें काळ्या वस्त्रानी आच्छादिलें होतें, तेथें ती आली, तेसमयीं वधकरायास जे दोघेजण आणिले होते त्याणी गुडघे टेंकून तिची विनंती केली कीं आह्मी हुकूमबंदे आहों, आह्मास क्षमा असावी. त्याजवरून तिणे उत्तर केलें कीं म्यातर कोणाचा अपराध केला नाहीं, असें असतां माझ्या वधाविषयीं तुह्मास हुकूम झाला. असो तुह्मास तर काय, माझ्या वधाविषयीं जितके सामील झाले आहेत त्यां सर्वांसही क्षमा केली आहे. मग तिणे एक बैबलांतील गीत व कांहीं भक्तिपर वाक्यें बोलली, तीं पुरीं झाल्यानंतर त्या वधकरणाऱ्यानें दोन घावांनी तिचें शिर उडविलें. आहाहा ! मेरी जात्या स्त्री, जी वधकरणार तीही स्त्री, तशांत ती सोयरी, आणि राणी, असें असतां मेरीचा यामकारें वध व्हावा काय ? मेरीचे काय अपराध असतील ते असोत, पण असा तिला दंड होऊंनये.

यानंतर इलिझाबेथ राणीस दुसरें एक संकट येऊन पडलें, तें असें कीं स्पेन देशींचा राजा फिलीप यास क्याथलिक्‌धर्माचा फार अभिमान पडून प्राटेस्टान्ट धर्म इंग्लांडांत निर्वैधपणे चालूं लागला हें सहन होईना. तेसमयीं त्याणे लढाऊ गलबतांचा मोठा समुदाय जमा करून गलबतांवर फौजही तशीच पुष्कळ चढवून आतां माझ्याबरोबर कोणी कंबर बांधणार नाहीं असें मानून इंग्लांडावर चाल केली, परंतु इंग्लीशलोकांचा असा स्वभाव आहे कीं आपला देश परक्या राजानें येऊन काबीज करावा ही गोष्ट न्यांस सहन होत नाहीं याजकारितां स्पेन देशींचा राजा इतक्या बळाने आला त्याचें कांहीं भय नमानितां जितकी फौज मिळाली तितकी जमाकरून ते न्याशीं भांडायास सिद्ध झाले. त्यावेळीं इलिझाबेथ राणी ही स्वतां घोड्यावर स्वार होऊन टिल्बरी किल्यास आली आणि आपले शिपाई व गलबतावरले लोक यांजमध्यें जाऊन त्यांस धीर देऊन बोलूं लागली कीं तुम्ही शत्रूबराबर शौर्याने भांडून त्यांस पुढें येऊं देऊं नका. मी तर जात्या स्त्री आहें परंतु आपला देश स्पेनच्या राजाच्या स्वाधीन एक अंगूळभरही होऊंनये म्हणून आपल्या देशाकरितां पुरुषासारिखी भांडेन, तेसमयीं स्पेनदेशींचे लोक आपल्या गलबतांच्या मोठ्या थोर समुदाया पुढें इतरबळें तुच्छमानून त्या आपल्या समुदायास अजिंक्य अमीर असें बोलत होते, परंतु आपला अमीर अजिंक्य नव्हे अशी इंग्लीश लोकांनी त्यांची थोडक्यांतच खातरजमा केली. त्यावेळीं असें घडलें कीं इंग्लीश खाडींत जो गलबतांचा समुदाय आला होता यांतलीं गलबतें कोणी पाहिलीं असतां भयभीतच हो-

ऊन जावें अशीं तीं गलबतें मोठीं अकटोविकट होतीं, असें असतां इंग्लीश लोकांच्या खलाशी कांहीं भय न धरितां आपला गलबतांचा लहानसा समुदाय घेऊन प्लेमोथ बंदरांतून बाहेर पडले आणि त्यांनी त्या स्पेनदेशींच्या गलबतांस असें जर्जर केलें कीं त्यां गलबतांची चहूंकडेस पळापळ होऊन तें वर्तमान सांगायास माघारीं थोडकींच गलबतें गेलीं.

जर इंग्लीश लोकांस स्पेनदेशींच्या लोकांनी जिंकिलें असतें तर रोमन क्याथलिक्धर्म इंग्लांडांत पुनः चालू झाला असता, परंतु ईश्वरानें तशी गोष्ट घडूं दिली नाहीं. त्या स्पेनदेशींच्या लोकांस ईश्वरानेंच पळविलें असें जाणावें, कांतर त्यांच्या गलबतांचा इंग्लीश लोकांच्याच गलबतांनी मोड केला असें नाहीं, तर वायु तुफान यांनीही फार मोड केला. ही अशी मोठी ईश्वरानें कृपा केली, त्याजवरून इलिझाबेथ राणीने मजांस घेऊन सेन्टपाल म्हणून देवूळ होतें तेथें जाऊन ईश्वराचें उपकारस्तवन केलें. ही जी लढाई झाली इचा नकाशा काढिला असतो, तो कोठे असेच जे जुने नकाशे थोर थोर गृहस्थांच्या घरीं असतात त्यांत दृष्टीस पडतो. हौसअफ्कामन म्हणून एक इंग्लांडदेशीं मतिनिधीची सभा मिळायाचें घर आहे, त्या घरांत भिंतीवर कापडाचे पडदे लाविले असतात, त्याजवर स्पेन देशींच्या गलबतांचा जो मोड झाला त्याचा नकाशा काढिला आहे. तेथें गलबतांच्या ज्यां ज्यां मोठ्या सर्दारांनी व कपतानांनी आपल्या देशाच्या रक्षणार्थ शौर्य करून युद्ध केलें त्यांचीं चित्रें दृष्टीस पडतात.

इलिझाबेथ राणी आपल्या सेवेंत जे मंत्री मधान

ठेवणें ते चांगले भले गृहस्थ ठेवी न्याजवरून ती मोठी शाहाणी असें कळूं येतें. न्यां मंड्यांच्या विचाराने आपल्या चांगल्या बुद्धीने ही राज्यकारभार यथास्थित चालवित असे, इचे सर्व गुण चांगले असत पण इच्याठायीं एक दोष दिसूं येतो तो असा कीं, जे कोणी रूपवान् व डौलदिमाखाने वागणारे असेच लोक बहुधा इच्याजवळ असत. अशांच गृहस्थांतला लार्डलेस्टर होता. न्याचें सौंदर्य व रमणीय घरें व मोठमोठ्या किमतीचें सामान हेंच काय तें न्याचें भांडवल असे. राज्यांत फिरायास निघावें कित्येक मानकरी व मोठे मोठे गृहस्थ न्यांच्या घरीं जावें हें या राणीस फार आवडे आणि कोठे लेवांत असें अढळतें कीं वार्विक् शैर प्रांतांत किनिलवर्थ ठिकाणीं लार्डलेस्टराचा एक रमणीय वाडा होता तो आतां केवळ फुटून गेला आहे, न्याची खूण मात्र मिळती, न्या वाड्यांत लार्डलेस्टरानें इलिझाबेथ राणीस बहुत दिवस परमआदरानें राहून घेतलें. तेथें नानाप्रकारचे नाच, तमाशे, खेळ, मल्लयुद्ध, कवाइती, कसरती, व ज्या ज्या मौजा न्याकाळींच्या लोकांस आवडत असत न्या सर्व राणीस दाखविल्या. व नानाप्रकारचीं सोंगें काढिलीं. न्यांत पुरुष आणि स्त्रिया यांनी अन्यधर्मी लोकांचे जे देव न्यांचीं रूपें धारिलीं. याप्रमाणें सर्वप्रकारचे खेळ कवाइती करून दाखविल्या तेणेंकरून राणीला व तिच्या जवळच्या लोकांस मोठा आनंद झाला. अशा ज्या मेजवान्या राणीस केल्या तेणेंकरून लार्डलेस्टारावर राणीची फार मसन्नता झाली परंतु या राणीचा स्वभाव असा असे कीं एकादेसमयीं तिची मर्जी अगदीं पालटून जावी आणि तिच्या मर्जीतल्या गृहस्थांचा केवळ दुलौकिक

व्हावा. यामाणे तिच्या मर्जीत अंतर पडून दरबारांत वागणाऱ्यां गृहस्थांस वारंवार प्रसंग प्राप्त होत असत. त्याजवरून कोणेसमयीं इतर जनासारिखी केवळ अल्पबुद्धि अशी ती दिसे. असो पण तिच्या कर्तृत्वावरून पाहतां ती एक थोर आणि शाहाणी राणी होऊन गेली.

या राणीची येसेक्चा अर्ल ह्मणजे थोरला मानकरी याजवर फार कृपा होती. हा आर्ल मोठा गर्विष्ट अभिमानी असे, आणि राणीची जशी जशी मर्जी होई त्या त्या प्रमाणे वागत नसे, आणि याणे कांहीं मागितलें असतां तें यास राणीने नदिलें ह्मणजे यास फार क्रोध येई. एकवेळ असें झालें कीं हा बंड करून फौज मिळवून राणीवर उठला, तेसमयीं याचा मोड होऊन यास धरिलें आणि याचा न्याय करायास याला किल्यांत पाठविलें, तेथें याचा अन्याय याच्या पदरीं घालून याचा शिरच्छेद करावा असें ठरलें. परंतु पूर्वी याजवर राणीची मर्जी प्रसन्न असे, त्याकाळीं राणीने यास एक मुद्रिका देऊन असें सांगितलें होतें कीं तुला कांहीं संकट प्राप्त झालें असतां तूं ही मुद्रिका माझ्याकडेस पाठऊन दे, ह्मणजे त्या संकटापासून तुझें रक्षण होईल, त्याजवरून हा असें मानूं लागला कीं माझी क्षमा होऊन मी सुटेन, माझा शिरच्छेद करण्याविषयीं हुकूम लिहून त्याजवर राणी सई करणार नाहीं. नंतर याचें डोकें मारावें असें ठरलें तेव्हां त्यानें ती मुद्रिका नार्टिंगहेमची कौंटेस ह्मणून एक मुख्य मानकऱ्याची स्त्री होती तिच्याजवळ देऊन तिची विनंती केली कीं इतकी ही मुद्रिका संभाळून नेऊन राणीच्या हातीं द्यावी. मग आतां मला उत्तर येऊन जिवदान मिळेल

अशा आशेने केवळ उत्कंठित होऊन त्या उत्तराची वाट पाहत बसला, परंतु त्यास कांहीं उत्तर आलें नाहीं कांतर ती कपटी कौन्टेस् तिणे ती मुद्रिका राणीस दिलीच नाहीं. तिच्या नवऱ्याचें आणि याचें वैर असे म्हणून तिणे आपल्या नवऱ्याच्या संतोषार्थ असा विश्वासघात केला. इकडेस राणीस आश्चर्य वाटूं लागलें कीं येसेक्सा ने अझून काय म्हणून मुद्रिका पाठविली नाहीं, हा काय फार चढून गेला, याला माझ्याजवळ क्षमा मागावयास हीनपणा वाटला काय? यामाणे राणी नानाप्रकारच्या कल्पना घेऊन ती मुद्रिका आपल्याकडेस पाठविली नाहीं म्हणून ती फार खिन्न झाली. मग यास मारण्याविषयीं जो हुकूम लिहिला होता त्याजवर राणीने मोठ्या अनमानाने सई केली. मग असें सांगतात कीं तिणे त्या हुकूमावर सई केल्या दिवसापासून खिन्नवृत्ति धरली आणि नार्टिंगूह्यामची कौन्टेस मरूंलागली तेसमयीं तिणे जें येसेक्सा बराबर कपट केलें होतें, तें तिच्या अंतःकरणीं जाचूं लागलें, तेव्हां तिणे राणीस बोलावून त्या मुद्रिका मकरणीं जें वास्तविक वर्तमान झालें होतें तें सर्व निवेदन केलें, त्याजवरून राणीस परम कोप येऊन त्या आवेशेंकरून राणीने कौन्टेसचा हात धरून ती मरणप्राय असतांहीं तिला हिसकिलें. मग राणी परमखेदकरून सन सोळाशें तिहींत मरण पावली. तिचें वय त्याकाळीं सत्तर वर्षांचें होतें, तिणे चवेचाळीस वर्षें राज्य केलें. १६०३

या इलिझाबेथ राणीचे गुण फारसे वाखाणाया. सारिखे नसले तथापि इची राज्यकारभार चालविण्याची रीति पाहतां असें दिसूं येतें कीं प्रजांचें कल्याण

व्हावें हेंच इच्या मनांत वागत होतें, इच्यावेळीं हरत-हेचें कसब, व्यापार, उद्दीम वाढले, विद्वान् लोकांचा चांगला सांभाळ होऊन विद्या वाढायाजोगे उद्योग घडूं आले म्हणून अवघ्या राज्यांत विद्येचा व ज्ञानाचा फार प्रसर झाला, शास्त्र शिकायाची लोकांस आवडीही फार, तशांत तें शास्त्र लोकांस त्यांचे भाषेंत समजून द्यावयाजोगे विद्वान् पुरुषही फार, असा योग ज्या देशीं आला तर त्या देशावर ईश्वराची कृपाच झाली असें जाणावें. आतां हा विषय संपवितों, तुम्ही इंग्लांडाची बखर वाचून जें जें ज्याकाळीं घडलें असेल त्या काळाच्या तारखांचें चांगलें स्मरण ठेवावें, याजविषयीं आळस करूंनये, लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

इंग्लांडदेशीची मेरी राणी हीं कोणत्या साली मरण पावली ?

मग तिच्या मागें कोण राणी झाली ?

इलिझाबेथ व मेरी यां दोघींजणींचें काय नातें ?

इलिझाबेथने इंग्लांडांत कोणता धर्म चालू केला ?

इंग्लांडाच्या राज्याविषयीं कोण दुसरी स्त्री दावा सागत होता ?

स्काट मांतींची मेरी राणी इणे कांहीं इलिझाबेथवर मसलत योजिली होती काय ?

स्काट मांतांचा मेरी राणी कोणत्या धर्मांत वागत असे ?

बरें इलिझाबेथच्या फौजेची मेरीच्या फौजेबराबर

कांहीं लढाई झाली काय ?

मग कोणास जय मिळाला ?

मेरी स्वतां इलिझाबेथ राणीच्या स्वाधीन झाली काय ?

मग मेरीस कैद केलें होतें काय ?

कोठे कैद केलें ?

मग त्या स्काटलांड प्रांतींचे राणीचें काय झालें ?

इंग्लांड घ्यावयाचा बेत कोणत्या देशच्या लोकांनी केला होता ?

त्याकाळीं स्पेनदेशीं कोणता धर्म चालत असे ?

जो गलबतांचा समुदाय स्पेनीश लोकांनी इंग्लांडावर आणिला होता त्या समुदायास ते स्पेनीश लोक काय बोलत ?

मग त्या गलबतांच्या समुदायाचें काय झालें ?

त्या गलबतांच्या समुदायाचा मोड झाला त्याकाळीं इलिझाबेथ राणीने ईश्वराचें उपकार स्तवन कसें केलें ?

कोणत्या प्रकारच्या लोकांस इलिझाबेथ आपले प्रधानादिक करून ठेवी.

कोणत्या प्रकारचे लोक इच्याजवळ बहुतकरून असत ?

लार्डलेस्टर तो कोण ?

लार्डलेस्टराने जी मोठी मेजवानी इलिझाबेथ राणीस केली तें वर्तमान सांगावें ?

ही मेजवानी कोणत्या ठिकाणीं केली ?

येसेक्सचा अर्ल तो कोण ?

त्याचें काय झालें ?

नार्टिंगह्यामचे कौन्टेसचें व मुद्रिकेचें जें वर्तमान

झालें तूं सांगावें ?

न्या कौन्टेसने मुद्दिकेचें वास्तविक झालेलें वर्तमान राणीस कधीं सांगितलें काय ?

तें राणीने ऐकून तिला कायं केलें ?

इलिझाबेथ राणीचे गुण बहुतकरून कसे असत ?

मतांतर झालें तेणेकरून लोक चांगले होऊन सुखी झाले काय ?

कोणत्या सालीं इलिझाबेथ राणी मरण पावली ?

---

# पत्र २४.

चिरंजीव०- विशेष इलिझाबेथ राणीने आपलें लग्न केलें नव्हतें म्हणून तिच्या पोटचा कोणी वारस नव्हता, तिच्या मागें जो राजा झाला त्याची कथा आतां सांगतों. इलिझाबेथ राणीचा आजा सातवा हेन्री न्याची कन्या मार्गारेट, ती स्काटलांड देशींचा चौथा जेम्स यास दिली होती, तिचा लेंक स्काटलांडदेशींचा पांचवा जेम्स न्याची कन्या मेरी स्काटलांडची राणी, तिचा पुत्र साहवा जेम्स स्काटलांडचा राजा, हा साहवा जेम्स इंग्लांडच्या राजाचे कन्येचा वंश म्हणून हा इंग्लांडच्या राज्याचा वारस असें समजून याला पहिला जेम्स असें पद देऊन इंग्लांडच्या राज्यासनीं बसविला, तेणेंकरून इंग्लांडचें आणि स्काटलांडचें राज्य एक झालें. हा जेम्स इंग्लांडच्या राज्याचा वास्तविक अधिकारी असतांही किन्येक लोक न्यास राज्यापासून दूर करण्याची मसलत योजूं लागले. न्यासमर्यी न्या मसलतींत मुख्यत्वेंकरून लार्ड ग्रे व लार्ड काबह्याम व सर्वा-

लटरराली असे होते, त्याजकरितां त्यांला ठार मारावें असें पहिल्याने ठरलें, परंतु मागाहून असें झालें कीं लार्डकाचह्याम व ग्रे यांस त्यांच्या अपराधाची कांहीं शिक्षा लावून माफ करावें, त्याजवरून असें केलें कीं त्यांचीं डोकीं शिरच्छेद करावयाच्या लांकडांस लावून देविलीं, आणि त्यांस मरणाचें भय माप्त होऊन आतां आमचीं डोकीं मारलीं जातात असें वाटूं लागलें, तेव्हां यांचा अपराध क्षमा केला असे, यांस सोडून द्यावें अशी आज्ञा झाली. त्यांपैकीं एक सर्वालटरराली राहिला त्यास मागाहून दंड करावा असें ठरवून कैदेंत ठेविलें. मग पुढें बहुत वर्षांनी त्याची अपकीर्ति करून त्यास अघटित क्रूर दंड केला.

" हा पहिला जेम्स स्काटलांडचे मेरी राणीचा पुत्र ह्मणून हा आतां आमच्या मतास अनकूळ होईल असें बहुत्येक पोपमतांत वागणारांस वाटूं लागलें, परंतु हा पोपाच्या मतांत वागणारांस पीडा दुःख न देतां माटे-स्टान्ट मतास अतःकरण पूर्वक अनकूळ झाला, त्याजवरून पोपाच्या मतांत जे वागणारे होते ते निराश होऊन फार खिन्न झाले. मग त्यांणी राजा व राजाचें कुटुंब व लोकांचे मतिनिधि व मानकरी यांचे सभेच्या खालीं दारू भरून त्यांस उडवून टाकावें अशी मसलत योजिली. त्या मसलतीस जे होते त्यांनी ती राजसभा बसायाच्या घराजवळ एक घर भाड्यानें घेऊन त्या घरांतून राजसभेच्या तळघरांत जाण्याचा मार्ग करून त्या तळघरांत बंदुकीच्या दारूचीं छत्तीस पिपें नेऊन भरलीं, आणि त्यांजवर कोळसे व फांटी रचून तीं झांकून काढलीं. तशांत त्या तळघरांत पूर्वीपासून कोळसेच ठेवीत असत, ह्मणून तें तळघर कोणी पाहिलें असतां

कशाचा वहमा येऊं नये असें झालें, तेसमयीं राजसभा मिळूं लागली असतां राजा व राणी व वडील राजपुत्र हेन्री यांणी न्या राजसभेस यावें असें होतें, त्याजवरून त्यां मसलतदारांस असें वाटूं लागलें कीं, आतां राजासहित सर्वांचा नाश होऊन आमची मसलत सिद्धीस जाईल, परंतु ईश्वरानें कृपाकरून ती दुष्ट मसलत सिद्धीस जाऊं दिली नाहीं. तेसमयीं असें झालें कीं न्या मसलतीस हेन्री पेर्सी सामील होता, त्यास असें वाटलें कीं राजसभेबरोबर आपला जिवलग मित्र लार्ड मान्टिगल याचा नाश न होई असा उद्योग करावा. मग त्याणे राजसभा मिळायास दाहादिवस आहेत तंबच न्या लार्डमान्टिगलास एक बिनू नावाचें पत्र लिहिलें. तें पत्र घेऊन जो मनुष्य आला तो तें पत्र देऊन तत्क्षणीच नाहींसा झाला. त्यापत्राचा मजकूर असा कीं "महाराज आपण राजसभेस जाऊं नये, कांतर यावेळीं जें पाप घडत आहे त्याजविषयीं दंड करावा असें ईश्वराच्या व मनुष्याच्या मनांत आलें आहे, ही आपल्यास सूचना केली आहे ही तुच्छ मानूं नये, आपण निघोन गावांस जावें, तेथें आपण स्वस्थ राहून काय होईल तें पाहावें. आतां तर कांहीं गडबड दिसत नाहीं, पण त्या राजसभेस एक भयंकर धडाका माप्त होईल, आणि तो धडाका करणारा मनुष्य कोणास दिसणार नाहीं या विचारास कांहीं दोष ठेवूं नये, येणेंकरून आपलें बरेंच होईल कांहीं वाईट होणार नाहीं, आणि हें पत्र जाळून टाकिलें म्हणजे विघ्न नाहींसें होईल."

या सांकेतिक पत्रावरून तर लार्ड मान्टिगलाची मति गुंग होऊन गेली. पहिल्याने त्यास असें वाटले कीं हें कोणी उगीच मला भय घालायास व माझा विनोद क-

रायास लिहिलें आहे, शेवटीं त्यानें असा विचार केला कीं लार्ड सालिसबरी म्हणून जो राज्यांत चिटणीस आहे, त्याजकडेस हें पत्र घेऊन जावें, मग तें पत्र त्या चिटणीसाच्या हातीं जातांच त्यालाही प्रथम वाटलें कीं, या पत्राचा कांहीं विचार करावा असें हें नाहीं, पण मागाहून त्याच्या मनांत आलें कीं राजा आपल्या मंत्र्यांसहित सभेंत असतां त्याजपुढें हें पत्र ठेवावें. तें पत्र तेथें ठेविलें त्या काळीं त्या सभेंतून कोणाच्याने त्या पत्राचा अर्थ होईना, मग असें सांगतात कीं राजानेच त्या विपरीत पत्राचा भाव काढिला. त्याच्या असें लक्षांत आलें कीं बंदुकीच्या दारूने मोठा नाश करायाची कोणी मसलत योजिली आहे, असें कांहीं या पत्रावरून दिसूं येतें. त्याजवरून ते सभासत् गृहस्थ दोन्ही राज सभांची तळघरें व भुयेरें शोधूं लागले, तेव्हां त्यांनी लार्डांची सभा बसायाचें जें घर त्याच्या खालीं फांट्यांच्या जुड्यांच्या मोठमोठ्या राशी पडल्या आहेत व गैफाकेस नावें करून एक विक्राळ पुरुष आंगांत एक मोठें लांब डगलें व पायांत * बूट घालून हातीं चोर फाणस घेऊन दुसऱ्या दिवशीं ती सभा उडवावयाकरितां सर्व तयारी करीत आहे असें पाहिलें. मग त्या पुरुषास धरिला, तेव्हां तो जें दुष्ट काम करीत होता त्याचा कांहीं खेद न मानितां म्हणूं लागला कीं म्या सर्वांस उडवून टाकिलें असतें व त्यांजबराबर मी ही उडून गेलों असतों तर फारच चांगलें झालें असतें, त्यास जेव्हां धमकावून सांगितलें कीं या मसलती मकरणीं तुला जें

---

* ज्या जोडयाच्या तोंडावरती सुमारें गुडघ्या पर्यंत पिशवी असती त्यास बूट म्हणतात.

ठावूक असेल तें तूं जर बोललास नाहीं तर तुझ्या शरीरास पीड़ा करुन बोलवूं, तेव्हां तो कांहींसा भिवून त्या मसलतीस जे सामील होते त्यांजविषयीं त्यानें सर्व मजकूर सांगितला. याममाणें त्या दुष्ट मसलतीचा शोध लावून त्या मसलतींत जे मुख्य मुख्य होते त्यांस धरावयास अंमलदार लोक पाठविले, तेव्हां त्यांशीं त्या मसलतदारांनी भांडायास कंबरा बांधिल्या, आणि वार्विक् शहरांत एक घर होतें तेथें त्या मसलतदारांनी आपल्यास कोंडून घेऊन असा निश्चय केला कीं, आपला माण जाईल तर जावो परंतु आपण त्या अमलदारांच्या हातीं सांपडूंनये, अशा बेताने ते राहिले होते, परंतु त्यांनी जो दुसऱ्यास अनर्थ योजिला होता तोच अनर्थ त्यांस माप्त झाला. त्यांनी जेथें आपल्यास कोंडून ठेविलें होतें तेथें कांहीं दारूवाळायास घातली होती, त्यांत एक अग्नीचा थिंगळ पडून त्या दारूचा मोठा धडका झाला. तेणेंकरून त्यां मसलतदारांचा बहुत नाश झाला. त्यांतून किती एक त्या घराच्या दरवाजांतून बाहेर पडूं लागले, त्यांस त्या घराभोंवते जे शिपाई होते त्यांनी कापून त्यांचे तुकडे केले. जे त्या वेळीं मेले नाहीं त्यांतून कित्येकांस धरून मारिलें व कित्येकांस राजाने जीवदान दिलें.

मागें असें लिहिलें आहे कीं राजावर मसलत योजिल्या बद्दल सर्वाल्टर रालीस कैदेंत ठेविलें तेसमयीं तो त्या कैदेंत बहुत वर्षें राहिला. शेवटीं अमेरिका खंडांत मला एके सोन्याचे खाणीचा शोध लागला आहे असें त्याने सांगून तेथें जावयास राजाची आज्ञा घेऊन तयारी केली. यामकारें सुटून राली अमेरिका खंडास गेला, परंतु त्यास तेथें सोनें मिळालें नाहीं. मग तेथें

जे स्पेन् देशींचेलोक वसले होते त्यांजवर रालीने हल्ला केला, तेणेंकरून स्पेनदेशींच्या राजास वाईट वाटलें. तेव्हां जेम्स राजा असें बोलूं लागला कीं स्पेनदेशींच्या लोकांशीं कांहीं तंटा करूं नये अशी रालीस आज्ञा असतां त्यांजबराबर रालीने काय म्हणून तंटा केला. तसमयीं रालीने मसलत केली होती त्या अपराधाचा आतां रालीस दंड करावा असें राजानें मनांत आणून रालीस मी तुमच्याकरितां मारितों असें स्पेन देशींच्या राजास बाह्यात्कारीं दाखवून रालीचा शिरच्छेद केला. अशाप्रकारें रालीस दंड केला ही पाहिली असतां अनीति, रालीस तो दंड झाला त्याकाळीं त्याने शांत वृत्ति धरून तेथील सर्व मायाममता सोडून चित्त ईश्वरार्पण केलें होतें. त्याने शिरच्छेद करायाची कुऱ्हाड हातीं धरून तिची धार चांचपून पाहिली, आणि बोलूं लागला कीं ही फार तीक्ष्ण आहे परंतु ही यालोकींच्या सर्व दुःखांस औषध होय. असें सांगून त्याने लोकांबरोबर शांत वृत्तीने बोलून कांहीं एक भय न मानितां आपलें डोकें शिरकांपायाच्या लांकडावर ठेविलें.

जेम्स राजाच्यावेळीं कितीएक गोष्टी घडूं आल्या त्यामुळें त्यास निश्चितपणें व सुखानें राज्य करायास सांपडलें नाहीं. त्या गोष्टी येथें सांगूं लागल्यास ग्रंथ फार वाढेल म्हणून सांगत नाहीं. मानकरी लोकांस -अथवा लोकांच्या प्रतिनिधींस नविचारितां आपली सत्ता जितकी चालेल तितकी चालवावी असा जेम्सराजाचा स्वभाव असे त्याजवरून याचें बहुतांबराबर वांकडें पडलें. आणखी असें झालें कीं याचे स्नेही व याच्या कुपेंतले गृहस्थ बहुत होते त्यांच्या नादीं लागल्यामुळें यास फार खर्च पडूं लागला. तेसमयीं तो निर-

र्थक खर्च पुरा पडायास हा लोकांपासून द्रव्य काढण्याविषयीं नेहेमी उद्योग करूं लागला, न्यामुळें लोक फारच त्रासून राजास श्रम देऊं लागले. नंतर या राजाच्या मागें याचा मुलगा चार्लस् पहिला राज्य करूं लागला, त्यावेळेस तर लोकांनी त्रासपावून त्या राजास फारच श्रम दिले, तें वर्तमान पुढल्या पत्रांत लिहिलें जाईल.

यामुळें जेम्स राजाच्यावेळीं लोक त्रासले, तशांत जर्मनीच्या राजाबराबर लढाई आरंभिली होती तेथें अपेश आलें. अशा दुःखांवरून जेम्सराजाच्या शरीरास कांहीं विकार झाला असावा. असो पण शेवटीं यास ज्वर लागला तो तिसऱ्या दिवशीं येई, त्याजवरून दरबारी लोक मर्जी संपादावयास याचें असें समाधान करूं लागले कीं, हा ज्वर राजाच्या सुखास येतो, परंतु यानें त्यांचा अभिप्राय जाणून त्यांस असें उत्तर दिलें कीं, असलें जें निजून रहाण्याचें सुख तें बालराजास चांगलें. मग त्या ज्वरानें कांहीं दिवसांनी याची सर्व शक्ति जाऊन हा सन सोळाशें पंचविसांत मरण पावला. याणे इंग्लांडाचें राज्य बेवीस वर्षें केलें, याचें वय साठ वर्षांचें होतें. लो० हे आशीर्वाद. १६२५.

---

## प्रश्न.

इलिझाबेथ राणी कोणत्या सालीं मेली ?

तिणें आपलें लग्न केलें होतें काय ?

तिच्या पोटचा तर कोणी वारस नव्हता, तेव्हां तिच्या मागें या राज्याचा वारस कोण झाला ?

स्काटलांडचा सहावा जेम्स हा इंग्लांडच्या राज्याचा वारस कोणत्या संबंधानें झाला ?

जेम्स राजास राज्यावरून दूर करायाची मसलत योजिली होती काय ?

त्या मसलतींत मुख्य कोण कोण होते ?

लार्ड ग्रे, व लार्ड काबह्याम, व सर्वाल्टरराली, यांचें काय केलें ?

पहिला जेम्स पोपाच्या मतांत वागत असे किंवा प्राटेस्टान्ट मतांत वागत असे ?

दारूभरून उडवावयाची जी मसलत केली होती ती कशी केली होती, यासंकरणीं मजकूर सांगावा ?

त्या मसलतीचा कसा शोध लागला ?

त्यां मसलतदारांतून एकाने लार्ड मान्टींगल यास गुप्त पत्र पाठविलें तेव्हां मान्टिगलाने काय केलें ?

दारू घालून मोठा अनर्थ करण्याचा बेत केला आहे असें त्या पत्रावरून पहिल्याने कोणास कळूं आलें ?

असें राजास कळूं आल्यावरून काय करायास आरंभिलें ?

बरें जेव्हां तळघरें पाहूं लागले तेव्हां काय काय दृष्टीस पडलें ?

गैफाक्स यास धरिलें तेव्हां तो काय बोलूं लागला?

मग त्या दुसऱ्या मसलतदारांस काय केलें ?

सर्वाल्टर रालीस काय केलें ?

जेम्सराजानें सुखानें राज्य केलें काय ?

तो स्वभावानें कसा असे ?

मग तो कोणतें दुखणें लागून मेला ?

त्याचे दरबारीलोक त्यास दुखणे लागलें होतें ते-

व्हां त्याची कसें बोलून समजूत करूं लागले ?
मग त्यानें त्यांस काय उत्तर दिलें ?
त्याचें वय किती होतें ?
त्यानें इंग्लांडचें राज्य किती वर्षें केलें ?

---

# पत्र २५.

चिरंजीव०- विशेष मागल्या पत्रांत तुह्मास पहिल्या जेम्सराजाचें वर्तमान कळविलें. त्याच्यावेळीं लोक फार त्रासले होते, त्याचें कारण असें कीं जेम्स राजानें प्रजेचा रोख काय कसा आहे याचा कांहीं विचार नठेवितां आपलीच सत्ता फार चालविली, व कायद्याप्रमाणें जी त्यांस सत्ता असायाची ती बंद केली. हें लोक मनांत धरून जेम्सराजाचा पुत्र पहिला चार्लस राज्यावर बसला तेव्हां त्यास फार श्रम देऊं लागले. हा चार्लसराजा आपल्या स्वभावानें तर नम्र व शांत असे परंतु त्याचावेळीं कांहीं विलक्षण प्रसंग प्राप्त झाला ह्मणून निर्वेधपणे राज्य चालणे तें एकीकडेस राहून यास संकटें व दुःखेंच प्राप्त होऊं लागलीं. याचा बाप मृत्यु पावला त्याकाळीं इंग्लांडकरांची जर्मनीकरांशीं लढाई चालली होती, त्या लढाईच्या खर्चास द्रव्य लागलें त्याजविषयीं चार्लस राजानें पार्लियामेन्ट सभेशीं बोलणें लाविलें, तेव्हां पार्लियामेन्ट, यानें जितकें द्रव्य मागितलें तितकें द्यायास कबूल करीना, तेसमयीं तें द्रव्य उत्पन्न करायास पार्लियामेन्टाचें अनुमत नघेतां राजानें कांहीं दुसरा उद्योग आरंभिला, त्याजवरून अवघे राज्यांत वितुष्ट पडलें; तशांत फ्रेन्च राजाशीं लढाई आरंभिली होती, तेथें अपेश आलें, असें होतांच चार्लस

राजाचा व पार्लियामेन्टाचा कलह उत्पन्न झाला. तेसमयीं प्रतिनिधीचे सभेंतील कित्येक गृहस्थांस फितुराच्या अरोपावरून बंदीस घातलें, आणि बहुत्येकांस कैद करून त्यांपासून दंडावद्दल पुष्कळ रुपये घेतले, हीं अशीं त्यांचीं दुःखें पाहून त्यांचा कळवळा येऊन राजाशीं बहुतांचें वांकडें पडलें. अशा संधीस बकिंगह्यामचा ड्यूक मारला गेला. या ड्युकाला पोर्टस मौथास फ्रेंच लोकांशीं लढायास पाठविलें होतें, तेथें एके दिवशीं याचे ह्ताखालचे अधिकारीलोक याच्याजवळ असतां त्यांतून एकाशीं हा बोलत आहे, इतक्यांत फेल्टन् ह्मणून एक पुरुष होता, त्यानें कोणास नकळतां याच्या उरांत सुरी खुपसली, तेसमयीं अरे या दुष्टानें मला मारलें अशीं अक्षरें बोलून यानें तत्क्षणींच प्राण सोडिला. तेथें पाहातात तों ड्युकास कोणी मारलें याचा शोध लागेना, तेव्हां तेथें एक टोपी अढळली, त्याजवरूनही त्या मारणाराची टोपी असावी, तो कोण कोठला अशा विचारांत आहेत, इतक्यांत एक बोडका माणूस दाराजवळ पाहिला. तो तेथून मुकाट्याने जात आहे, तंव तो ह्मणूं लागला कीं मारणारा तो मी. त्यास धरितांच तो त्या ड्युकास मारल्याचा हर्ष मानूं लागला, आणि त्याम मारायास काढिलें तरी म्या अपराध केला असें बोलिला नाहीं. याप्रमाणें तो ड्युक मरण पावला. तो चार्लसराजाच्या परम कृपेंतला होता ह्मणून त्याच्या मरणामुळें राजास मोठें दुःख झालें, आणि बहुत्येक लोकांशीं राजाचें वैमनस्य पडलें.

या चार्लस राजाचेवेळीं जे जे दुःखाचे प्रसंग घडूं आले त्यां सर्वांचें निरूपण केलें असतां ग्रंथ फार वाढेल, यास्तव संक्षेपेंकरून कांहींसें सांगतों. राजाचें

पार्लियामेन्टाच्या लोकांशीं वितुष्ट पडल्यावरून त्यांनी राजावर शस्त्र धरिलें, मग त्यांच्या याच्या बहुत लढाया झाल्या, त्या लढाईंत जे जीव गेले व जो नाश झाला तेणेंकरून अवघें राज्य दुःखानें व्यापिलें. पाहिलें असतां गावांतल्यागावांत भाऊबंदांनी एकमेकांशीं स्नेहभावानें वागावें, तें नकरितां तंटे करून आपण आपल्या हातीं जिवास मुकले. पार्लियामेन्टकडल्या फौजेंत आलिवरक्राम्वेल सरदारकी पत्करून लढाईंत पुढाईंत झाला असे. याणे मार्स्टनमुरास लढाई झाली तेथें राजाचे फौजेचा मोड केला, परंतु त्याची गणना नकरितां राजा पुनः युद्धास उभा राहिला. तेसमयीं नार्थामटनशेर मांतीं नेस्वी म्हणून एक ठिकाण आहे तेथें युद्ध होऊन राजाचा अगदींच मोड झाला. या युद्धास राजा स्वतां गेला होता, तेथून त्यास पळून जाणे प्राप्त झालें, तेणेंकरून क्राम्वेल व तत्पक्षी जे गृहस्थ होते त्यांस सर्वप्रकारें जय मिळाला. चार्ल्सराजा युद्ध सोडून पळाला तो आक्सफर्डास गेला, तेथें जे याच्या पक्षाचे लोक होते ते याचे खातरजमेचे आणि विश्वासाचे होते आणि यास पूर्वी बहुत प्रसंगीं उपयोगीं पडले होते, परंतु तेथें याचें रक्षण व्हावयाजोगें चांगलें मजबूत बंदोबस्ताचें ठिकाण नव्हतें, आणि पाहातो तंव फेरफाक्साच्या ताब्यांतली पार्लियामेन्टाची फौज आपल्यास धरण्याच्या बेतांत आहे, म्हणून राजा तें ठिकाण सोडून स्काट फौजेच्या आश्रयास गेला आणि तेथें मला कोणी तरी अनकूळ होतील असें मानूं लागला, परंतु यास कोणी अनकूळ झालें नाहीं. त्या स्काटलोकांस पार्लियामेन्टानें बहुत द्रव्य कबूल करितांच त्यांनी त्या चार्ल्सराजास पार्लियामेन्टाकडल्या लोकां-

च्या स्वाधीन केलें. मग ती स्काटफौज विश्वासघात व अपकीर्ति करून जें द्रव्य मेळविलें तें घेऊन आपले मांतीं गेली.

यामाणें जें हें मोठें बंड झालें यांत कायती आलिवर क्राम्वेलाची वाहवा झाली, त्यायोगेंकरून तो मोठ्या योग्यतेस चढला. हा क्राम्वेल हन्टीन्डन्शैरींच्या एक्या गृहस्थाचा लेंक, याच्याजवळ पाहिलें असतां सांगायासारिखें कांहीं द्रव्य नव्हतें, किंवा इतक्या शोरपणास चढायाजोगा कांहीं गुणही नव्हता, याचें रूप म्हणावें तर हा आबडधोबडसा असे, मळकीं मळकीं वस्त्रें पांघरे आणि मुळचा एक तोंत्रा तशांत यथापद्धति यास बोलतां येत नसे, म्हणून याचें बोलणे एक तऱ्हेबाज पडे असें असतां यानें हातीं धरलेल्या कामाच्या पाठीस एकसारखें लागावें असा याचा स्वभाव असे, त्यामुळें शेवटीं हा त्या बंडांत पुढाईत झाला आणि जें करणें तें आपल्या सत्तेने करूं लागला. इकडे चार्लस राजास श्रमवून व कैद करून व जागोजाग फिरवून ह्याम्टन्कोर्टांत बंदीवानादाखल ठेविलें होतें. मग तेथून काढून ऐलअफवैट् म्हणून एक टापू आहे तेथें कारीसब्रूक किल्ल्यांत कैद केलें. तेथून ह्यामशैरांत हर्ट म्हणून किल्ला आहे तेथें नेलें, मग तेथून कांहीं दिवसांनी विन्डसरास नेलें, शेवटीं विन्डसराहून लंडनशहरास नेलें. तेसमयीं त्यास पाहिलें असतां गहिंवरच यावा अशी त्याची अवस्था झाली होती. ती अशी कीं त्याची मुखश्री केवळ लोपून शरीराचें तेज जाऊन शरीर फिकट रोग्यासारिखें झालें असे, दुःखाने केश पांढरे होऊन दाढी मोठी वाढली असे, आणि आंगांत दरिद्रविपत्तिसूचक वस्त्रें असत, अशी दशा राजास प्राप्त झाली

न्याजवरून बहुधा सर्व मजा आपल्या अंतरीं हळहळूं लागल्या.

मग थोडक्याच दिवसांनी राजाची चौकशी सुरू केली. यास जेव्हां न्यायाधीशापुढें आणिलें तेव्हां हा आपला थोरपणा नसोडितां राजाच्या डौलानें येऊन बसला, आणि बसतेवेळीं आपल्या मस्तकींची टोपी काढिली नाहीं, येणेकरून असें सुचविलें कीं जे बसले आहेत त्यांस माझा न्याय करायास कांहींएक अधिकार नाहीं, मग त्याजवर जो आरोप शाबूत करायाचा तो कागद वाचून याला ऐकविला. त्यांत मजकूर कीं बंड उत्पन्न झाल्या दिवसापासून जे जे लोक मारले गेले त्यां सर्वांच्या मरणाचें कारण हा राजा. त्याजवरून राजा तोंडांतल्यातोंडांत हांसला, तेणेकरून असें दाखविलें कीं माझा कांहीं एक अपराध नसतां मजवर केवळ खोटें थोतांड रचिलें आहे, याप्रमाणे प्रतिनिधींची सभा न्याय करायास बसली होती तिच्यापुढें चारवेळा राजास आणिलें परंतु त्याणें चाऱ्ही वेळां सांगितलें कीं हें ठिकाण कांहीं न्याय करायाचें नव्हे, आणि माझा न्याय करायास तुह्मास कोणता एक अधिकार ही नाहीं. शेवटीं न्या न्यायाधिशांनी असा निश्चय केला कीं याचा शिरच्छेद करावा. त्याजवरून चौथ्या दिवशीं त्याचें डोकें मारण्याचा हुकूम केला. मग जेव्हां राजास व्हैटहाल ठिकाणीं आणिलें तेव्हां राजानें तेथल्या अधिकाऱ्यांस सांगितलें कीं मला माझ्या लेंकरांशीं भेटावयास तीन दिवसांची रजा असावी, आणि डाक्टर्जक्सन् लंडनाचा मुख्य धर्माध्यक्ष हा ईश्वराची भक्ति करावयास माझ्या बराबर असावा. त्याजवरून राजास कळविलें कीं आजपासून तीन दिवसांनी तुह्मास शासन केलें जा-

ईल. याजकरितां त्या मुदतींत परलोक साधनाचा काय जो विचार तो तुम्ही करून घ्यावा. त्यावेळीं राजाच्या मुलांपैकीं इलिझाबेथ राजकन्या आणि ग्लौसेस्टाराचा ड्यूक ह्मणून एक तीन वर्षांचा मुलगा, हीं दोघेंजणें इंग्लांडांत होतीं, मग राजानें त्या आपल्या कन्येस कांहीं भक्तिमार्गाच्या व चांगल्या विचाराच्या गोष्टी सांगून त्या मुलास उचलून धरिलें, आणि त्यास असें बोलिला कीं "बाबा आतां तुझ्या बापाचें डोकें कापतील आणि कदाचित् तुला राज्यावर बसवितील कळलें, पण बाबा याद धर तुझे भाऊ चार्लस व जेम्स जीवंत आहेत तोंपर्यंत तूं राज्यावर बसूंनको बरें, तुझे भाऊ यांच्या हातीं सांपडले ह्मणजे ते त्यांचीं डोकीं मारतील, आणि शेवटीं तुझें ही डोकें मारतील, ह्मणून मी तुला सांगतों तुला राज्यावर बसवूं लागल्यास तूं बसूंनको, असें ऐकून त्या तान्हुल्या बाळाने डोळ्यांतून टपटप आंसवें टाकून गर्हिवरून उत्तर दिलें कीं, माझे तुकडे झाले तरी पुरवले, पण तसलें राज्य मला नको."

या राजाचें धारिष्ट कांहीं असें असे कीं, याचा शिरच्छेद करावयास जें ठिकाण तयार करीत होते तेथील कामदार लोकांचा शब्द याचे कानीं नित्य पडत असे, परंतु त्याचा कांहीं मनांत खेद नकरितां माराया़चा हुकूम झाल्या दिवसापासून तर याचा वध होई त्या दिवसापर्यंत हा चांगला नित्यासारिखा रात्रीस झोंप घेई.

याचा शिरच्छेद जानेवारी महिन्याचे तिसावे तारखेस केला, तेसमयीं व्हैट हाल घरांतून नजर लागावी ह्मणून यास मारायाचें ठिकाण व्हैटहाल घराच्या एक्या खिडकी इतकें उंच केलें होतें. तें ठिकाण काळ्या वस्त्रांनीं आच्छादून त्याजवर शिर तोडायास लांकडाचा

तुकडा व एक कुऱ्हाड अशीं ठेविलीं होतीं, वतेथें दोन मारेकरी आपली रूपें पालटून होते. मग तेथें राजा आला त्यावेळीं जेक्सन् याच्या बरोबर होता, हा जेक्सन् मुख्य धर्माध्यक्ष राजाचा परम विश्वासू स्नेही व सेवक असे.

राजाच्या शिरछेदाची तयारी होऊं लागली तेव्हां तो मुख्य धर्माध्यक्ष बोलिला कीं "महाराज आतां एक मजल राहिली, या मजलेस मोठें दुःख व श्रम आहेत, पण ही अगदीं जवळ आहे, येणेकरून आपल्या हातीं मोठा लांबचा पल्ला येईल. ही आपल्यास या लोकांहून परलोकांस नेईल, तेथें आपल्यास मोठा लाभ होऊन तेजाचा मुकुट मिळेल, तेणेंकरून आपल्यास परम आनंद होईल." त्याजवरून राजानें उत्तर दिलें "मी नाशवंत मुकुट सोडून अविनाश मुकुट घ्यावयास जातों, त्या मुकुटास कांहींएक हल्ला हरकत नाहीं" तें ऐकून तो धर्माध्यक्ष ह्मणूं लागला आपण क्षय मुकुट देऊन अक्षय मुकुट घेतां, अहाहा ही तर चांगलीच बदली" मग राजानें आपलें शीर त्या लांकडाच्या तुकड्यावर ठेविलें आणि जे दोन मारेकरी होते त्यांतून एकाने एक्या फटक्यानेच राजाचें शीर उडविलें. मग दुसऱ्या मारेकऱ्यानें तें शीर उचलून हांक मारून बोलूं लागला हें फितूरखोराचें शीर, याप्रमाणें राजाचा वध केला त्याजवरून लोकांनी फार खेद करून हें असलें घोरकर्म आह्मी उगेंच राहून पाहिलें तरी कसें असें बोलून आपआपल्यास शब्द लावूं लागले.

पहिल्या चार्लस राजाला सन सोळाशें एकूणपन्नासांत मारिलें, त्याकाळीं, त्यास एकूणपन्नासावें वर्ष लागलें होतें, आणि त्याचें राज्य होऊन चोविसावें वर्ष चाललें होतें. हा राजा कांहीं फारसा उंच नसे,

याचें शरीर चांगलें बळकट व सुघटित असून मुख रमणीय असे, परंतु मुखाच्याठायीं खिन्नवृत्ति दिसे. राजानें बहुत दिवस श्रम व दुःखें काढलीं म्हणून ती तशी खिन्नवृत्ति त्याच्या मुखाच्याठायीं राहिली असें वाटतें. लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

इंग्लांडचा राजा पहिला जेम्स हा कोणत्या सालीं मरण पावला ?

त्याच्या मागें कोण राजा झाला ?

पहिला चार्लस स्वभावानें कसा असे ?

पहिला जेम्स मेला त्याकाळीं इंग्लीश लोकांची कोणाबरोबर लढाई चालली होती किंवा नाहीं ?

लढाईच्या खर्चास जें द्रव्य पाहिजे होतें तें पार्लियामेन्ट सभेने द्यावयास कबूल केलें काय ?

राजा आणि पार्लियामेन्ट यांचा कज्या लागला होता काय ?

त्यावेळीं राजाच्या परम कुपेंतला मानकरी कोणता असे ?

त्या बकिंगूह्यामच्या ड्यूकास काय झालें ?

त्यानंतर राजाच्या व प्रजांच्या मोठ्या लढाया झाल्या काय ?

कोणत्या लढाईपासून क्रामवेलची वाहवा झाली ?

राजाचे फौजेचा अगदीं मोड कोणत्या लढाईत झाला ?

नेसबेची लढाई झाल्यानंतर राजा कोणत्या ठिकाणीं गेला ?

मग राजानें कोणत्या लोकांचा आश्रय केला ?

त्या स्काट सैन्यानें राजास काय केलें ?

आलिवर क्राम्वेल कोण होता ?

तो स्वरूपाने कसा असे ?

मग राजास काय केलें ?

राजाची चौकशी केली काय ?

राजाची आपल्या मुलाशीं किल्यांत भेट झाली काय ?

कोणत्या मुलाशीं भेट झाली ?

त्याने आपला मुलगा ग्लौसेस्टराचा डयूक यास काय सांगितलें ?

राजास मारून टाकिलें काय ?

त्याकाळीं याच्या समागमीं कोणता मुख्य धर्माध्यक्ष होता ?

त्याचा शिरच्छेद कोठे केला ?

त्याकाळीं हा कोणत्या स्थितीने होता ?

यास जेक्सन् धर्माध्यक्ष काय बोलिला ?

राजास मारलें तेव्हां त्याचें वय कितीवर्षांचें होतें ?

त्यानें कितीवर्षें राज्य केलें ?

हें कृत्य कोणत्या सालीं झालें ?

कोणत्या महिन्यांत झालें ?

कोणत्या दिवशीं झालें ?

# पत्र २६.

चिरंजीव० - विशेष मागल्या पत्रांत पहिल्या चार्लस राजाचा शिरच्छेद केल्याचें वर्त्तमान कळविलें, तें वाचून तुह्मास फार वाईट वाटलें असेल, आतां पुढें जें वर्त्तमान झालें तें कळवितों. चार्लस राजास मारण्याच्या दुष्ट कामांत मुख्यत्वें करून ओलिवर क्राम्वेल होता, त्याकाळीं लोकांची सत्ता लोकांस मिळावी, व लोकांवर राजानी व्हावी तशीच सत्ता करूं नये, यामकारें तो क्राम्वेल लोकांस दर्शवूं लागला; परंतु हें असलें कृत्य याच्या मनांत नव्हतें, असें लौकरच अनुभवास आलें. हा कपटें करून आपल्यास राजा असें मात्र बोलवीत नसे, पण कोणे इंग्लीश राजानें कधीं अंमल केला नव्हता असा जबरेने, अंमल करी. हा आपल्यास राजा ह्मणवीत नसे ह्मणून यास मोटिक्टर ह्मणजे राज्य कारभार चालविणारा असें बोलत. याचें धारिष्ट मोठें असून यास कशाची भीति नसे, व लढाईत यास जय मिळे. याचा द्रेक ह्मणून एक सेनापति होता, तो मोठा शूर असे, त्याजकडेस सर्व लढाऊ गलबतें सोंपलीं होतीं. त्याच्या योगेंकरून यानें डच् लोकांच्या, व स्पेनीश लोकांच्या लढाऊ गलबतांचा मोड केला. याच क्राम्वेलाच्यासमयीं पेन् व विनेबलस ह्मणून जे सेनापति होते, त्यांनी वेष्ट इन्दीया देशांत जमेका बेट घेतलें तें त्या दिवसापासून तर आजपर्यंत इंग्लीश लोकांकडे झाच आहे. हें बेट इंग्लीशांस मोठें कामी पडूं लागलें परंतु हें असलें बेट ज्यां सेनापतींनी घेतलें, त्यांस सरकारांतून शाबास्की मिळावी ती मिळाली नाहीं, कांतर

योजल्यामाणें त्या सेनापतींनी कार्य केलें नाहीं, ह्मणून न्यांस किल्ल्यांत कैदेस ठेविलें. असो ऐर्लांडांत, स्काटलांडांत, अथवा इंग्लांडांत जे कोणी क्राम्वेलाचे सत्तेस अडथळा करीत त्यांजबराबर क्रामूवेल कांहीं मुरवत न धरितां लढे.

यार्प्रमाणें घडत असतां, पहिल्या चार्लस राजाचा वडील लेंक दुसरा चार्लस हा इंग्लांडच्या राज्याचा वास्तविक अधिकारी, तो राज्यासनीं असावा, तो नाहीं, आणि ज्यास कांहीं अधिकार नसतां तो बळेंच जबरीने राज्य करूं लागला आहे, त्यास आह्मी काय ह्मणून मानावें, असें ह्मणणारे त्याकाळीं बहुत लोक होते; सारांश दुसऱ्या चार्लस राजाकडली पुष्कळ मजा होती; परंतु हे सर्व क्राम्वेलाचे सत्तेमुळें व त्याच्या स्वाधीन बहुत फौज होती त्यामुळें भिऊन गेले होते; आणि त्या राजाची मदतगारी करण्याविषयीं कोणाचें कांहीं चालत नसे, असें असतां स्काटलोकांनी त्या राजाचा पक्ष उचलिला, आणि तो राजा भयामुळें हालांडदेशीं राहत होता तेथें त्यास बोलावूं पाठविलें, परंतु क्राम्वेलाचे फौजेबराबर लढाई करायाजोगी स्काटलांड लोकांची तयारी नव्हती, ह्मणून त्या दोहों फौजांच्या लढाईंत स्काट फौजेचा मोड होऊन त्या फौजेंतले बहुत्येक लोक पडले, क्रामूवेलाचे फौजेपैकीं फार थोडके पडले.

तेसमयीं आपल्यास इंग्लांड देशीं बहुत्येक जण अनुकूळ होतील असें मनांत आणून बाकीची जी स्काट लोकांची फौज राहिली होती ती त्या राजानें घेऊन थेट इंग्लांडास जाण्याचा बेत केला; परंतु राजानें मानिलें होतें त्याप्रमाणें त्यास लोक अनुकूळ झाले नाहीं-

त; ते सर्वजण क्राम्वेलाचा पराक्रम व जय पाहून हत-
वीर्य झाले होते. असेंही असतां राजा वोसेस्टरपर्यंत
आला, इतक्यांत क्राम्वेल चाळीस हजार फौज घेऊन
न्याजवर गेला. तेथें याचें त्याचें मोठें तुंबळ युद्ध झालें. ते-
समयीं राजाची फौज थोडकी म्हणून तिचा अगदीं मोड
होऊन गेला, आणि राजा स्वतां मोठ्या निकेरानें लढत
असतांही त्यास आपल्या जीवाच्या बचावाकरितां पळून
जावें लागलें. मग राजास धरण्याविषयीं क्राम्वेलानें
पराकाष्ठेचा प्रयत्न मांडिला. जागोजागीं बंदोबस्त क-
रून ठेविले, जिकडे तिकडे बातमी काढायास हेर ठेवि-
वले, राजाला धरून आणणारांस इनामें कबूल केलीं,
असेंही असतां राजा क्राम्वेलाच्या हातीं सांपडला ना-
हीं, याजवरून मोठा चमत्कार वाटतो. याचे जे पक्षा-
चे लोक होते ते याचे केवळ खातरेचे व विश्वासाचे
होते. हा राजा आपल्या शत्रूंच्या हातीं न जावा म्ह-
णून यास ते लपवून ठेवीत, आणि कोणी वळखूं नये
म्हणून खराब वस्त्रें पांघरायास देत. एके दिवशीं असें
झालें, हा एक्या सागांच्या झाडावर चढून लपला होता,
त्याच झाडाखालून, यास जे शिपायी शोधित फिरत हो-
ते, ते गेले; परंतु त्यांचे दृष्टीस हा पडला नाहीं. एके-
दिवशीं हा एकाचे झोंपडींत लपून राहिला होता. तो
मनुष्य भला विश्वासू असे, म्हणून ती बातमी बाहिर
फुटली नाहीं. यानें कोठे गवताचे गंजींत निजावें,
कोठे अन्नावांचून असावें, कोठे आंगाला चांगलेंसें व
स्वच असूं नये, यामाणें दिवस लोटींत असतां, शेवटीं
यानें एक्या चाकराचा वेश घेऊन घोड्यावर बसून प-
ळून जाण्याकरितां एक मोठी मजल केली. त्यावेळीं
हा कोणी चाकर आहे व आपल्या धन्नीच्या रखवा
लीकरितां घोड्यावर बसला आहे असें दाखवायास ह

ज्या घोड्यावर चाकराच्या रूपानें बसला होता त्याच घोड्यावर याच्या पाठीमागें लेन म्हणून याच्या एक्या जिवलग विश्वासू मित्राची स्त्री ती बसली होती. यास कोठे संकट प्राप्त होऊं नये म्हणून त्या स्त्रीचा नवरा ही याच्या समागमें असे, परंतु तो याजवर नजर लागे इतका दूर राहून याच्या मागें मागें चाले, यामाणें त्यां उभयतांनी राजास मोठ्या युक्तीने समुद्राच्या काठीं ब्रैटेन स्थळास नेला. तेथें एक होडी तयार करून ठेविली होती, तींत बसवून त्यास अचानक राज्यांतून पार करून फ्रेन्च राज्यांत पोहोंचविला.

इकडे राजा बराबर वोर्सेस्टरास आवेश पूर्वक युद्ध करून क्राम्वेल जय पावला, त्याजवरून जे त्याच्या पक्षास होते त्यांत त्याची फार ख्याति झाली. मग तो त्या वोर्सेस्टरच्या लढाईतून मोठ्या डौलाने मिरवत मिरवत लंडन शहरास आला, तेसमयीं पार्लियामेन्टाची सत्ता सर्व राज्यांत चालूं लागली, परंतु क्रामूवेल हा अभिमानी असे म्हणून सर्व सत्ता आपल्या हातीं येऊन पार्लियामेन्टाच्या हातीं कांहीं राहूं नये असा बंदोबस्त करूं लागला. तेव्हां पार्लियामेन्टाच्याठायीं ही याजविषयीं मत्सर वाटूं लागला. असें होतांच आपला जो पार्लियामेन्टाशीं संबंध तो लौकरच नाहींसा केला, तो असा. क्राम्वेल तीनशें शिपायी घेऊन पार्लियामेन्ट सभेस गेला, आणि त्यानें त्या शिपायांस बाहेर ठेवून सांगितलें कीं, मी पाय भूमीवर मारला म्हणजे तुम्ही सभेंत शिरा. मग त्या सभेंत जीं वादविवादाचीं बोलणीं चाललीं होतीं तीं कांहींवेळ ऐकून त्या सभेस जे लोक मिळाले होते त्यांस सांगितलें कीं तुमचें करणें मला पसंत नाहीं, तुम्ही उठून चालते व्हां असें बोलून

पाय भुईवर आपटला, इतक्यांत ते हातेरबंद शिपायी त्या सभेंत येऊन उभे राहिले. तेसमयीं त्या सभेच्या लोकांस क्राम्वेल गाळी शिव्या देऊं लागला, त्या अशा, अरे तुह्मी इकडून निघून जा आणि भल्या गृहस्थाकरितां जागा रिकामी करा, तुह्मी पार्लियामेन्ट सभेस योग्य नाहीं, मग कोणास मस्त्या, कोणास खंदाड, याप्रमाणें व्हावें तसें अच्छा वच्छा बोलूं लागला, आणि त्या सभेंत मेजावर राजदंड ठेविला होता, तो येथें उगाच कशास ठेविला आहे असें ह्मणून त्याणे तो तेथून काढून टाकायास सांगितला. मग त्यां सर्व सभासदांस बाहेर हांकून लाविलें, आणि त्या सभेच्या दारास कुलूप लावून किल्ली आपल्या खिशांत घालून तो व्हैट हालांत आपल्या घरीं गेला.

याप्रमाणें पार्लियमेन्टास निरोप दिला तेव्हां त्याच्या बदल दुसरें पार्लियमेन्ट मेळवावें लागलें. त्यावेळीं क्राम्वेलानें असा बेत केला कीं सर्व सत्ता आपल्याच हातीं असावी, ह्मणून ज्यास राजकारभार काय तो मुळींच ठाऊका नाहीं अशीं गोरगरीबें पार्लियमेन्ट सभेस आणून बसविलीं. मग क्राम्वेल आपल्या मनांत येई तसें वर्तू लागला, असे जे पार्लियमेन्टास लोक बोलाविले त्यांत एक बेबौन् ह्मणून कातडीं विकणारा होता, हा वेडसरसा असे. त्याजवरून त्या सभेस बेबौनचें पार्लियमेन्ट असें नाव पडलें. असे जे लोक मिळाले त्यांच्या हातून राज्यकारभार काय चालणार होता, याजकरितां ती पार्लियमेन्ट सभा थोडक्याच दिवसांनी नाहींशी झाली, मग क्रामूवेलाच्या बेताप्रमाणें अवघें एक छत्री राज्य झालें. याणें लढाईत चांलें यश मिळविलें होतें परंतु जेव्हां हा स्वछंदाने वागूं

लागला, सर्व जें कांहीं करणें तें आपल्याच मर्जीप्रमाणें करूं लागला, आणि काय जी सत्ता होती ती आपण एकटाच घेऊन बसला, त्याकाळीं याचापक्ष ज्या गृहस्थानीं बहुत दिवस धरिला होता त्यांतील बहुत्येकांनीं यास सोडून दिलें. आणि याच्या जिवाभोंवत्या बहुत मसलती होऊं लागल्या. तेव्हां माझा कोणी जीव घेतील अशी त्यास नित्य चिंता प्राप्त झाली. मग आंगांत चिलखत घालून त्याजवर दुसरें वस्त्र घ्यावें, खिशांत पिस्तोलें वागवावीं, नेहेमी मनांत खिन्न, नेहेमी वहमा, कोठे जाणें झाल्यास त्वरेने जावें, हमेशाबरोबर माणसें राखावीं अशी अवस्था झाली. ज्या मार्गाने जावें त्याच मार्गाने परत येऊं नये, कोणास निजण्याचा थांग लागूं नये म्हणून नेहेमी निजायाचीं ठिकाणें पालटीत असावीं, सर्वांस आपले शत्रू असें मानावें, कोणी सोबतीस असला म्हणजे हा आपल्यास अनर्थ करील अशी चिंता वागवावी, एकांतीं असलें म्हणजे कोणी येऊन आपल्यास मारील, असे काळजींत असावें, यामाणें यास सर्वत्र भय वाटूं लागलें.

असें होतां होतां क्रान्वेलास विषमज्वर लागून तो लौकरच शांत झाला, यास सन सोळाशें अठ्ठावनांत देवआज्ञा झाली. त्यावेळीं यास एकू- १६५८
णसाठावें वर्ष लागलें होतें व याच्या स्वाधीन
राज्य होऊन दाहा वर्षें झालीं होतीं. याच्या पाठीमागें याचा मुलगा रिचार्ड क्रान्वेल याणें राजकारभार चालवावा असा बंदोबस्त करून ठेविला होता त्याप्रमाणें त्या रिचार्डास कारभारावर नेमिलें, परंतु असला शोर अधिकार चालवावयाची रिचार्डाच्याठायीं योग्य-

ता नव्हती म्हणून तो अधिकार सोडून द्यावा असें त्याच्या मनांत वागूं लागलें. असें पाहून राज्याचा जो वास्तविक अधिकारी चार्लस राजा त्यास राज्यावर बसविण्याचा लोक विचार करूं लागले. त्याकाळीं चार्लस हालांडदेशांत होता, तेथून त्यास बोलावून आणिलें. मग त्याणे मे महिन्याचे एकूणतिसावे ता-
१६६०. रखेस आपल्या जन्मदिवशीं लंडनशहरांत प्रवेश केला, नंतर इंग्लांडदेशींचें राज्य पूर्वपद्धतीप्रमाणें चालूं लागलें. या कृत्यास कारण मुख्यत्वेंकरून एक सेनापति होता, त्याचें नाव मान्क. तो जाण्या भला शूर शिपाई असे, आणि याचे हाता खालची फौज या-स जी जी करून असे. तेसमयीं दुसरा चार्लस राजा राज्याचा वास्तविक अधिकारी असें या सेनापतीनें जाणून आपण त्यास अनुकूळ झाला, आणि त्यास राज्यासनावर बसवावयाचें जें उत्तम काम या कामांत त्या फौजेचा मोठा उपयोग केला. दुसऱ्या चार्लसास मे महिन्याचे एकुणतिसावे दिवशीं राज्यपद मिळालें तो दिवस इंग्लांडदेशीं अजून पाळितात, आणि राजा पळत असतां सागाच्या झाडावर लपून बसला होता म्हणून त्या दिवशीं सागाच्या डाहाळ्या घेऊन जिकडे तिकडेस फिरवितात, या राजाचें निरूपण पुढल्या पत्रांत विस्तारें करून करीन. लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

पहिल्या चार्लस राजाचा शिरच्छेद केल्यानंतर राज्यकारभार कोण चालवूं लागला ?

आलिवर क्राम्वेल आपल्यास राजा म्हणवी काय ?

तर काय म्हणवी ?
तो कोण कसा होता ?
बरें तो लढाई करी तेथें न्यास जय मिळे काय ?
या क्राम्वेलाच्या समयीं जे जे लढाऊ गलबतांचे नामांकित सेनापति होऊन गेले त्यांचीं नावें काय ?
ब्रेक सेंनापतीस समुद्रांत कोणतें यश मिळालें ?
जमेका बेट कोणी घेतलें ?
जमेका कोठें आहे ?
न्यावेळीं इंग्लांडचा वास्तविक राजा कोण होता ?
मग त्या राजास राज्यपदावर बसविण्याचा कोणी कांहीं उद्योग केला होता काय ?
मग स्काट लोकांचा काय परिणाम झाला ?
क्राम्वेलाची व राजाची जी मोठी लढाई झाली ती कोणत्या ठिकाणीं झाली ?
वोर्सेस्टर येथें लढाई झाल्यानंतर न्या दुसऱ्या चार्लस राजाचें काय वर्त्तमान झालें ?
हा राजा फ्रान्सदेशीं पळून ज़ात असतां यास काय काय घडलें तें वर्त्तमान सांगावें ?
क्राम्वेलानें पार्लियामेन्ट घालवून दिल्यानंतर दुसरें जें मेळविलें त्यांत लोक कसकसे होते ?
क्राम्वेलाच्या हातीं राज्यांतील सर्व सत्ता आली होती काय ?
मग तो सुखानें नांदूं लागला काय ?
त्याकाळीं त्यास काय भय प्राप्त झालें होतें ?
तो आपल्या रक्षणास काय करी ?
तो कोणत्या दुखण्यानें मेला ?
कोणत्या वर्षीं मेला ?
त्याचा मुलगा रिचार्ड क्राम्वेल कसा होता ?

त्याणें राज्यकारभार आपल्या हातीं बहुत दिवस ठेविला होता काय ?

मग राजास हालांड देशाहून आणिलें काय ?

राजास राज्यपदीं बसविण्याच्या कामांत मुख्यत्वेंकरून कोण अनुकूळ होता ?

राजा कोणत्यासालीं इंग्लांडास आला ?

कोणत्या महिन्याच्या तारखेस आला ?

तो राज्यासनीं ज्यादिवशीं बसला तो दिवस पाळितात काय ?

आणि तो सागाच्या झाडावर लपून बसला होता त्याजवरून त्यादिवशीं काय करितात ?

---

# पत्र २७.

चिरंजीव०—विशेष मान्कू सेनापतीने उत्तम प्रकारचा उद्योग करून दुसऱ्या चार्लसाला इंग्लांडदेशीं बोलाविलें आणि त्यास राज्यासनीं बसविलें. तो प्रकार असा झाला कीं राजावांचून राज्य चालविलें असतां त्यापासून जीं फळें प्राप्त होतात त्यांचा इंग्लीश लोकांनी अनुभव घेऊन पूर्वीचे राज्यपद्धतीप्रमाणें राज्य चालवावें आणि ज्या राजाचा निर्दयेने वध केला, त्याचा पुत्र राज्याचा वास्तविक अधिकारी, त्यास आणून राज्यावर बसवावा असा शेवटीं निर्धार केला. मग त्या ठरावावरून दुसरा चार्लस राजा डोवर ठिकाणीं येऊन उतरला आणि मे महिन्याचे एकुणतिसावे दिवशीं त्यानें लंडन शहरांत प्रवेश केला तेसमयीं राजानें राज्यासनीं बसून पूर्ववत् राज्य करावें असें सर्व प्रकारच्या लोकांच्या मनांत वागत होतें झणून राजा सिंहासनीं

बसतांच सर्वांस मोठा आनंद झाला, ज्या राजास लहान वयांत फार कष्ट प्राप्त झाले होते, त्याजवरून याणें शाहाणें होऊन पुढें चांगले व्यवस्थेने वागावें तर तसें न वागतां हा ख्याली खुशालीच्याच नादांत गर्क होऊन गेला, आणि याच्याचसारिखे जेजे अनाचारी अव्यवस्थेने वागणारे त्यांस आपल्या हातीं धरिलें. असो पूर्वी क्राम्वेलाच्या वेळेस इंग्लांडदेशीं धर्माचा फैलाव फार झाला होता. कोणे एके देशीं धर्माचा फैलाव होणें ही चांगलीच गोष्ट होय, परंतु जेथें असा फैलावा झाला तेथें सर्वच लोक त्या धर्माचप्रमाणें वर्त्ततात असें नाहीं. तेथें ढोंगही फार वाढतें. असें असतां क्राम्वेलाच्यासमयीं सर्वच लोक दांभिक नव्हते, कित्येक जण वास्तविक खिस्ती असून अंतःकरण पूर्वक धर्मांत चालत होते, परंतु बहुधा असें झालें होतें कीं धर्माच्या गोष्टी मात्र तोंडानें सांगाव्या, अंतःकरणास धर्माचा स्पर्शही असूं नये. जे चांगले खिस्ती लोक होते ते बुद्धीस भंशकरणारे आनंद व विषय सोडून वास्तविक धर्मप्रमाणें चालत होते, परंतु यांचें आचरण पाहून यांसारिखें बाह्यात्कारें आचरण करणारेही त्याकाळीं पुष्कळ होते. त्यांच्याठायीं पाहिलें असतां खऱ्या खिस्ती जनाच्या स्वभावाचा लेशही नसे, यास्तव धर्माचें बंड माजलें होतें. असलें बंड मोडून काढायाकरितां सत्य धर्माची प्रवृत्ति करावी, लोकांचें अज्ञान दूर करून त्यांस वास्तविक सिद्धांत कळवावे, आणि धर्माचा स्वीकारकरून आपण आपल्या अंगें चांगलें आचरण करून दाखवावें, लोकांवर कृपा करावी, त्यांजबराबर नम्र स्वभावानें वर्त्तावें आणि अंतःकरण शुद्ध निर्मळ ठेवावें. यास्तव्याणें दुसऱ्या चार्लसानें करावें, तें न करितां आपण व

लोकांनी नानाप्रकारच्या मौजा माराव्या, विषय भोग करावे अशी अव्यवस्था आरंभिली. आणि असा निर्धार केला कीं लोकांस धर्माविषयीं कांहीं एक गोष्ट सांगूंनये, त्यांस व्हावें तर त्यांनी धर्माचा विचार करावा अथवा करूंनयें, असें मत राजाच्या मनांत वागूं लागतांच लोकांच्या मनचेंच झालें. असल्या स्वेच्छ मताचा स्वीकार क़रा असें लोकांस सांगणें नलगे. हें मत मनांत बिंबवावयास ईश्वराची कृपा नलगे. यामाणें वर्तावें असा मनुष्यांचा स्वभावच आहे ह्मणून या मतास बहुत जन मिळाले आणि सर्व जे स्वेच्छाचारी व विषयी होते त्यांस राजा फार आवडूं लागला. मग धर्म ह्मणून काय हें ज्यांच्या गावीं ही नव्हतें अशां पुरुषांस राजा अनुकूळ झाला आणि जे धर्मवान् होते त्यांस श्रम, उपद्रव देऊं लागला, तेणेंकरून ते अधिक हट्टास पेटले. ज्याच्याठायीं सरासरी धर्म होता, ते मात्र राजाचा उपद्रव पाहून राजाच्या मतास मिळाले. असें राजा करीत होता त्याजवरून त्यानें सर्व धर्मकर्म सोडून दिलें होतें असें नाहीं, तो बाह्यात्कारें मात्र धर्म चालवीत असे, त्याजवळ धर्मोपदेष्टे असत, त्यांतून किंत्येक जण ईश्वरास मानावें, उत्तम कर्में करावीं असें ही लोकांस सांगत, पण सर्व उत्तम कर्मांस आश्रयभूत जी धर्म बुद्धि व जो ख्रिस्तीभाव, त्याची जर अवगणना झाली असली, तर मग उपदेशेंकरून काय होणार होतें. अशी अवस्था इंग्लांड देशीं झाली होती ह्मणून बहुंत्येक चांगले लोक कुमार्ग सोडून टाकण्याचा उद्योग करीत होते, असें असतांही दुसऱ्या चार्लसाचे वेळीं इंग्लांड देशीं जसें दुष्कर्म, दुराचरण, होत होतें, तसें कोणत्याही वेळीं झालें नव्हतें.

या प्रकारें धर्म प्रकरणीं चाललें होतें. असो नंतर दुसरा चार्लस राज्य करूं लागला त्या कार्ळीं आपले जे शत्रू त्यांचें पारिपत्य करावें, आपले जे मित्र त्यांजवर कृपा करावी हें धोरण त्याणें राखिलें नाहीं. त्याचा एक मुळचा स्वभाव शांत, तैशांत तो विषय भोगांत मग्न होऊन गेला असे, ह्मणून तें त्यास धोरण राहिलें नाहीं, वरकड त्यास सात्विक बुद्धि होऊन शत्रु मित्रांच्याठायीं समबुद्धि झाली होती असें नाहीं, त्यास मौजा मारायास द्रव्य मिळालें पुरे, मग उगवो किंवा मावळो त्याची काळजी त्यास फारशी नसे, तेसमयीं लार्डक्लेरेन्डन ह्मणून या राजाचा एक चांगला प्रधान असे, त्याजवर कांहीं राजाची कृपा नव्हती, कांतर राजा अव्यवस्थित अनिवार आचरण धरून राज्यास अपाय करूं लागला होता, तसें नकरितां तो प्रधान राज्याची समृद्धि इच्छित असे. नंतर आपण पोर्टुगाल देशींच्या राजकन्येस वरिलें असतां आपल्यास द्रव्य मिळेल, तेणेंकरून ख्यालीखुशाली करायास खर्च पुरा पडेल, असें मनांत आणून या राजानें त्या राजकन्येशीं लग्न केलें. त्या वेळीं मुंबई व साष्टी वगैरे कोंकणांतील सांत पोर्टुगीज लोकांकडेस होते, त्यांनी ते सांत मोंगलापासून सन पंधराशें तिसांत घेतले होते, त्यापैकीं मुंबई त्या कन्येस तिच्या बापाकडून आंदण मिळाली. ती सन सोळाशें एकसष्टांत जून महिन्यांत या चार्लस राजाकडेस आली, मग त्याणें ह्नरावेल कंपनीच्या स्वाधीन केली, ती आजपर्यंत त्या कंपनीदारांकडेस आहे. १५३०. १६६१.

राजाचें लग्न झाल्यानंतर राजानें त्या लार्डक्लेरेन्डन प्रधानास निरोप दिला, आणि आपल्या मर्जीत

वागणाऱ्यां लोकांस आपले मंत्री करून ठेविले, त्यांस केबाल असें ह्मणत, केबाल / या शब्दाचा अर्थ मसलत करणें. हे सर्व जण मिळून लोकांच्या नाशास्तव मसलत करीत, ह्मणून केबाल असें त्यांस बोलूं लागले. त्यांचीं नावें सरथामस् क्लिफर्ड, व लार्ड आशूली, व बकिंगह्यामचा ड्यूक व लार्ड आर्लिंगटन व लाडर्डेलचा ड्यूक.

यामप्रमाणे राजाची अवस्था पाहून लोकांस मोठा त्रास आला, आणि असें झालें कीं राजास मारून आपली सत्तापूर्ववत् चालू करावी. अशा गुप्त मसलती पोपाच्या मतांत वागणारे लोक करूं लागले, तेसमयीं एक या लोकांनी मसलत केली होती ती ऐकून रोमांच उभे राहातात, पण या मसलतीचें वर्तमान मोठें विपरीत आंहे, ह्मणून ही झालीच असेल असें खचित वाटत नाहीं, तशांत तें सर्व वर्तमान येथें लिहूं लागलें असतां ग्रंथ फार वाढेल.

या दुसऱ्या चार्लसाच्यावेळीं लंडन शहरांत एक मोठा रोग उत्पन्न झाला, हा रोग सन सोळाशें
१६६५. पासष्टांत आकटोबर महिन्यास उद्भवला, एणेंकरून सत्तर हजारावर लोक मेले.

मग दुसऱ्या वर्षीं सप्तेंबर महिन्याचे तिसरे तारखेस लंडन शहरास अग्नि लागला, तेणेकरून फार अनर्थ झाला. लंडन पुलाजवळ एक्या रोटीवाल्याच्या दुकानापासून हा अग्नि उत्पन्न झाला, तो अहोरात्र तीन दिवस होता. त्याणें बहुत्येक शहर जाळून भस्म केलें. असें सांगतात कीं तेराहजार मोठीं मोठीं घरें, व नव्यायशीं देवळें जळून गेलीं. इतका हा नाश सुमारें साहशें चौपन्न बिघे जमिनींत झाला. याजवरून कोणास

काय वाटेल तें वाटो परंतु या रोगापासून व अग्नी पासून मोठे अकटोविकट ,अनर्थ झाले. या अग्नीने विध्वंस झाला त्याजपासून इतकें बरीक झालें कीं पूर्वी जे शहरांत रस्ते होते त्यांजपेक्षां नवीन रस्ते मोठे रुंद बांधले, तेणेंकरून वायु संचारास चांगली मोकळीक होऊन शहर मोठें आरोग्यकारक झालें, आणि मरगीचें भय फार करून नाहींसें झालें, असें आहे या पृथ्वीच्याठायीं जे जे प्रसंग घडतात ते ईश्वराचे आज्ञे वरून घडतात, त्याजविषयीं लोक हवे तसे तर्क करितात, परंतु त्यां प्रसंगापासून शेवटीं लोकांचें कल्याणच होतें. ईश्वर असले दुःखावह प्रसंग कोणत्या हेतूने घडूं देतो हें यथास्थितपणें सांगतां येत नाहीं, पण इतकें मात्र कळूं येतें कीं पाप झालें म्हणजे असले प्रसंग घडतात. याजवरून असें सिद्ध होतें कीं इंग्लांडदेशीं पाप होऊं लागलें म्हणून त्याच्या दंडार्थ ईश्वरानें तेथें रोग व अग्नि उत्पन्न केले. मग पुनः ईश्वरास दया येऊन तोच दंड त्या देशीं सुखावह केला. लंडन शहराची पुनः बंदिस्ती झाली, त्या दिवसापासून तर आजपर्यंत तेथें कांहीं एक मरगी उठली नाहीं.

पुढें सन सोळाशें पंच्यायशींत राजास अ- १६८५.
कस्मात् अपस्मार झाला. मग त्याचें रक्त काढिलें तेव्हां त्यास गुण पडलासा वाटला, पण तो राजा थोड्याच दिवसांत आटपला. तो एकुणसाठव्या वर्षीं मरण पावला. त्या काळीं त्यास राज्य पद प्राप्त होऊन पंचविसावें वर्ष लागलें होतें. हा राजा रोमन्कॅथलिक मतांत शिरला होता असे सांगतात, कांतर हा जेव्हां अन्यवस्थ झाला तेव्हां प्राटेस्टान्ट मताचे धर्मोपदेष्टे या-

च्याजवळ आले, त्यांच्या धर्माच्या गोष्टी याने आदरें करून ऐकिल्या नाहींत, पण रोमन क्याथलिक धर्मोपदेष्टे याच्याजवळ येतांच त्यांचा धर्मोपदेश श्रवण करून त्या मताचीं जीं कर्मे होतीं तीं ही त्यांच्या हातून करून घेतलीं. या राजाचा कोणत्या मतावर विश्वास असेल तो असो, पण त्या मताच्या संस्कारें करून याच्या दुराचरणांत कांहीं अंतर पडलें नव्हतें, याजकरितां तें मत चांगलें असेल असें संभवत नाहीं. लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

दुसऱ्या चार्लस राजास इंग्लांड देशींच्या राज्यावर कोणत्यासालीं आणून बसविला ?

त्याला आणून राज्यपदीं स्थापण्याच्या कामांत मुख्यत्वें करून कोण होता ?

राजा येऊन कोठे उतरला ?

राजा सिंहासनावर बसून राज्य करूं लागला त्याजवरून लोकांस हर्ष झाला काय ?

राजास जे कष्ट प्राप्त झाले होते त्याजवरून तो शाहणा होऊन पुढें चांगल्या प्रकारें चालूं लागला काय ?

तर याणे कोणतें आचरण धरिलें ?

जे दुराचारी लोक होते त्यांस राजा आवडूं लागला काय ?

तो धार्मिक लोकांस अनुकूळ असे काय ?

या राजाच्या वेळीं फार पातक दुराचरण होऊं लागलें होतें काय ?

राजास संकटसमयीं जे उपयोगी पडले होते त्यांजवर तो कृपा करूं लागला काय ?

या राजाचा एक चांगला प्रधान होता त्याचें नाव काय ?

लार्ड क्लारेन्डन्वर राजाची चांगली कृपा असे काय ?

राजाने कोणाबरोबर लग्न केलें होतें ?

कोणत्यां हेतूने त्या राजकन्येशीं लग्न केलें ?

मग त्या राजकन्येस तिच्या बापाकडून काय आंदण मिळालें ?

मुंबई, साष्टी, हे भांत कोणाकडेस होते ?

पूर्वी त्यानीं कोणापासून घेतले होते ?

मग त्या विश्वासू प्रधानास राजाने काढून टाकिलें काय ?

मग त्याणें ज्यांस आपले प्रधान करून ठेविले ते गृहस्थ कसे होते ?

त्यांचीं नावें काय व त्यांस लोक काय बोलत ?

पोंप मताच्या लोकांनी राजावर मसलत योजिली होती काय ?

या मसलतीविषयीं जें वर्तमान सांगतात तें चांगलें खात्री व्हायाजोगें आहे काय ?

बरें मोठी मरगी लंडन शहरीं कोणत्या सालीं उठली होती ?

त्या मरगीने किती लोक मेले ?

मग दुसऱ्या वर्षी काय झालें ?

तो अग्नि कोठून उत्पन्न झाला ?

तो किती दिवस होता ?

त्या अग्नीनें किती घरें जाळलीं ?

देवळें किती जाळलीं ?

ज्या जमीनीवर जळून नाश झाला ती लांब रुंद

किती होती ?

मग लंडन शहरांत रस्त्यांची बंदिस्ती बरी झाली काय ?

मग पुढें कोठे लंडन शहरांत मरगी आली होती काय ?

राजा कोणत्या सालीं मेला ?

तो कोणत्या रोगाने मेला ?

त्याचें वय किती होतें ?

तो कोणत्या मतांत शिरला होता ?

बरें राजाचा ज्या मतावर विश्वास होता तें मत चांगलें होतें काय ?

कशावरून तें चांगलें नव्हतें ?

---

# पत्र २८.

चिरंजीव०- विशेष दुसऱ्या चार्लस राजानंतर त्याचा बंधु योर्कांचाडयूक तो राजा झाला, त्याचें नाव दुसरा जेम्सू. पूर्वी याच नावाचा एक राजा झाला होता. म्या जें वर्तमान लिहून पाठविलें त्याजवरून तुह्मास असें समजलें असेल कीं रोमन क्याथलिक मताचा उच्छेद कराया्स मोठमोठे भक्तिमान् धर्माध्यक्ष व चांगले चांगले ख्रिस्तीलोक यांस फार श्रम पडले, आणि त्या मताचा उच्छेद करणारांस मेरी राणीच्या वेळीं फार दुःखें प्राप्त झालीं. मग त्या वेळापासून प्राटेस्टान्ट मत इंग्लांड-देशीं चालू झालें. आतां पुढें झालेलें वर्त्तमान लिहितों. दुसरा जेम्सू राजा प्राटेस्टान्ट मतांत वागत नसे, तो क्याथलिक् मताचा होता, ह्मणून धर्म प्रकर्णी मजवर व माझ्या राज्यावर आपली सत्ता चालावी असा त्या रा-जाने रोमनगरीच्या पोपास निरोप पाठविला. त्याजव-

रून लोक फार रुष्ट झाले, आणि एक बंड माजलें. तेव्हां मान मौथचा ड्यूक मी दुसऱ्या चार्लस राजाचा औरस लेंक असें बोलत असतां त्या बंडास मुख्यत्वेंकरून सामील झाला. तेसमयीं लोकांस केवळ राजाचा त्रास आला होता, तशांत तो ड्यूक चांगला नवा तरणा रूपवान् डौलदार रमणीय असा असे, म्हणून लोकांनी त्यास अनुकूळ होऊन राज्यावर बसविलें असतें, परंतु त्यास यश मिळालें नाहीं म्हणून ती मसलत तशीच राहिली. तो प्रकार असा कीं, हा ड्यूक हालांड देशाहून येऊन डार्सेट शैरास उतरला. त्या काळीं याच्या जवळ थोडकीच फौज होती, परंतु जे इंग्लिश लोक रुष्ट झाले होते ते आपल्यास येऊन मिळतील असा यास भरवसा होता, त्याजवरून बहुत्येक जण त्यास सामील झाले. नंतर राजाने त्यां लोकांवर पुष्कळ लश्कर पाठविलें, मग त्यांची त्या लश्कराबराबर सेड्जमोर येथें मोठी लढाई होऊं लागली. तेसमयीं त्या ड्युकास जय मिळेल असा रंग दिसूं लागला, पण शेवटीं राजासच जय मिळाला, आणि ते बंडवाले लोक पळून गेले. त्या बंडवाल्यांपैकीं सुमारें तीनशें त्या लढाईत पडले आणि एक हजार पळतां पळतां मारले गेले. या प्रकारें अविचारानें आरंभलेल्या कार्याचा परिणाम झाला, पाहिलें असतां त्या ड्यूकाचा राज्याशीं कांहीं एक संबंध नव्हता, असें असतां त्याने बंड माजऊन राजास आणि त्या देशास उपद्रव दिला. हा त्याचा मोठा अपराध होय. असो पण त्यास जी दशा माप झाली तिजवरून तर त्याचा कळवळा येतो. ती लढाई संपतांच तो ड्यूक आपला जीव घेऊन पळूं लागला, तेव्हां त्याला धरायास त्याच्या पाठीस जे लागले

होते त्यांस पाठीवर घेऊन त्याने एकसारखी दाहा कोस मजल केली. शेवटीं त्याचा घोडा थकून पुढें चालेना असा झाला, मग त्याजवरून उतरून तो पायीं पळूं लागला. त्याकाळीं त्यास कोणी ओळखील ह्मणून त्याणें आपलीं वस्त्रें एक्या मेंढक्यास देऊन त्यांचीं आपण घेतलीं. मग भुकेने व श्रमाने त्या ड्युकाची केवळ ग्लानि होऊन त्यास पुढें चालवेना असें झालें, तेव्हां एक ओसाडसें शेत होतें तेथें तो रान झाडें गवत यांत लपून राहिला. इतक्यांत त्याच्या जे पाठीस लागले होते त्यांनी तो मेंढक्या ड्युकाच्या वस्त्रानीं पाहिला, त्याजवरून त्या ड्युकाचा शिकारी कुत्र्यांनी शोध करून थांग लाविला. त्याकाळीं त्याच्या आंगावरलीं वस्त्रें मळाने माखलीं आहेत, भूक शमवायाकरितां शेतांतल्या कांहीं हिरव्या शेंगा तोडून आपल्या खिशांत घातल्या आहेत, अशा दीन अवस्थेंत तो सांपडला. मग तसाच त्यास धरून राजाजवळ नेला. त्या काळीं त्याणे राजाची फार फार प्रार्थना करून क्षमा मागितली, परंतु त्याची क्षमा नकरितां चौकशी करून त्याचा अन्याय त्याच्या पदरीं घालून शिरच्छेद केला, त्यास मारायाच्या ठिकाणीं नेलें तेव्हां त्याणे त्या मारेकऱ्यास सांगितलें कीं "बाबारे माझ्यामानेवर जो घाय घालशील तो चांगला आवेशाने घाल बरें, ह्मणजे एक्याच घायाने काम होईल, लार्ड रसेलच्या वेळीं जसें दोन घाय घालावे लागले तसें होणार नाहीं" या बोलण्यावरून त्या मारेकऱ्यास चांगला आवेश यावा तर तो उलटा घाबरून त्याच्याने फटका मारवेना असें झालें. मग एक उगाच पोंचट घाय घातला तेव्हां त्या ड्युकाने त्या लांकडावरून हळूच वर डोकें उचलिलें, जसें

काय जाणू त्या मारेकऱ्यास शब्द लावावयाकरितांच वर उचलिलें, पुनः तें डोकें त्या लाकडावर जसेंचें तसेंच ठेविलें. तेव्हां त्या मारेकऱ्याने कित्येक फटके मारले पण तें शिर तुटलें नाहीं. शेवटीं हातांतली कुऱ्हाड टाकून तो उगाच राहिला त्याकाळीं तें शिरच्छेदाचें काम पाहावयास जो अधिकारी नेमला होता, त्याने. धमकावून त्या मारेकऱ्याकडून पुनः कुऱ्हाड धरावियली. मग दोन फटके मारतांच तें डोकें तुटून पडलें.

याच बंडाच्यावेळीं स्काटलांडदेशीं एक दुसरें ही बंड माजलें होतें. त्यांत मुख्यत्वें करून आर्ग्यैलचा ड्युक होता. मान मौथच्या ड्युकाचा बेत सिद्धीस जावयाकरितां हें बंड योजिलें होतें, परंतु राजाच्या लश्कराने हेंही बंड मोडून काढिलें. त्या काळीं त्या-ड्युकास जखमा होऊन तो पळून एक्या तळ्यांत जाऊन गळ्या इतक्या पाण्यांत उभा राहिला, तेथें त्यास धरिलें, आणि कैद करून इडिनबर्ग म्हणून जी स्काटलांड प्रांतीची राजधानी तेथें आणिलें. त्यास जीं जीं दुःखें झालीं तीं त्याणे मोठ्या धैर्याने सोसलीं, शेवटीं त्याचा लोकांच्या देखत वध केला. त्या लढाईंतून जे लोक धरून आणिले होते त्यांस राजाच्या लश्करांतीलं सर्दारांनी फार फार पीडा केल्या, आणि त्या बंडवाल्यांचा न्याय करायास जेफ्रीस म्हणून एक न्यायाधीश नेमिला होता, तो केवळ निर्दय असे त्याणे ही बोलतां येतना अशीं दुःखें त्यां लोकांस दिलीं.

या राजाचे वेळीं धर्म प्रकरणी ही लोक फार त्रासले होते. हा पोपाच्या मतास अनुकूळ होऊन कोणे धर्मोपदेष्ट्याने पोपाच्या मताची निंदा केली असतां त्याने धर्मोपदेश करूनये, अथवा ज्याठिकाणीं त्याची

नेमणूक झाली असेल तेथें धर्मप्रकरणी कांहीं एक कर्म करूंनये असें राजा करीत असे.

नंतर राजानें एक विपरीत कर्म आरंभिलें तें असें. जो ज्या मताचा व धर्माचा असेल त्याने त्या मतांत व धर्मांत वागावें आणि धर्मप्रकरणीं ज्याचे जसें मनांत असेल, त्याने तसें करावें, ह्मणून एक ठराव करून सर्वांस कळविला. त्याजवरून असा भास होऊं लागला कीं हा थोर राजा याच्याठायीं कांहीं पक्षपात नाहीं, पण कोणी असें मानूं लागले कीं रोमन् क्याथलिक लोकांची पूर्ववत् सत्ता चालावी अशी बुद्धि धरून राजाने तो ठराव केला. त्याकाळीं पाहिलें असतां राजा त्या क्याथलिक लोकांवर फार कृपा करीत असे. पण शेवटीं त्यानें अशी आज्ञा दिली कीं धर्मप्रकरणी ज्याचे जसें मनांत असेल तसें त्याणे करावें ह्मणून जो ठराव केला आहे तो अवघ्या राज्यांतील देवळांत वाचावा. त्याजवरून धर्माधिकारी लोकांस असें वाटूं लागलें कीं या ठरावावरून आपल्या प्राटेस्टान्ट मतास अपाय होईल ह्मणून त्यांतील बहुत्येकांनी तो ठराव वाचण्याचा नाकार केला, आणि जे मुख्य मुख्य धर्माध्यक्ष होते त्यांतील सातांजणांनी एक विनंतीपत्र लिहून राजास पाठविलें. त्यांत मजकुर कीं तो ठराव देवळांत वाचिला असतां आह्मी जाणूनबुजून अधर्म केला असें होईलं, आणि त्या वाचण्याने प्राटेस्टान्टमतास अनर्थ प्राप्त होतील, ह्मणून आह्मी तो ठराव कसा वाचावा. असें त्यांचें पत्र येतांच राजानें मोठा क्रोध करून त्यां सातांजणास किल्यांत पाठवून दिलें, त्याजवरून राज्यांत मोठा कल्लोळ झाला, आणि प्राटेस्टान्टमतांत जे चांगले चांगले होते त्यां सर्वांत त्यां मुख्य ध-

र्माध्यक्षांची ख्याती होऊन मोठी प्रशंसा झाली. मग त्यांनी दंगा केला असा त्यांजवर आरोप ठेवून वेस्टमिनिस्टर्च्या दरबारांत त्यांची चौकशी सुरू झाली. त्याकाळीं तेथें जे पंच होते त्यांनी सारीरात्र त्यां सातांजणांच्या आरोपाचा विचार करून शेवटीं दरबारीं येऊन सांगीतलें कीं विचार करून पाहतांना त्यांजवर अन्याय कांहीं शाबूत होत नाहीं. त्याजवरून त्या दरबारांत अवघे लोक आनंदाने टाळ्या पिटूं लागले. तो उल्हासाचा शब्द बाहेर त्या लोकांनीं ऐकून अवघ्या लंडनशहरांत तें आनंदाचें वर्तमान प्रगट केलें. त्याकाळीं राजा ह्नूस्लव्हीथ् ठिकाणीं तळ देऊन राहिला होता, तेथें राजानें तो आनंदध्वनि ऐकून कोणेएकास पुसलें कीं हें काय आहे ? त्याणे उत्तर केलें कीं कांहीं नाहीं, मुख्य धर्माध्यक्ष सुटले म्हणून शिपाईलोक आनंदशब्द करीत आहेत. तें ऐकून राजा बोलूं लागला हें काय तुमच्यामतें कांहींच नाहीं, हें तर त्यांस फारच झालें.

यामकारें राज्यांत अव्यवस्था झाली तेव्हां त्यावेळीं प्रीन्सअफआरेन्ज म्हणून एक वलंदेज राजा होता, त्या राजास उठवून तो हें राज्य घ्यावयास येई असें करावें, असें केलें तरच प्राटेस्टान्ट धर्म राहतो आणि राज्यास जे अनर्थ होणार त्यांचें निवारण होतें, असें जाणून लोक त्याला आणायाची मसलत करूं लागले. तो राजा या राजाचा जांवई होय, पण हेंच नातें लक्षांत ठेवून त्यास बोलाविलें असें नाहीं; तर तो राजा प्राटेस्टान्ट मताचा असें समजून बोलाविलें.

नंतर तो राजा मोठी फौज घेऊन हालंड देशाहून येऊन डिवन् शैर येथें नवेंबराचे पांचवे तारखेस उतरला, तेथें बहुत दिवस लोकांची वाट पाहत राहिला,

तेव्हां कितीएक लोक न्यास येऊन मिळाले. मग न्याची मसलत पार पडायाजोगा रंग दिसूं लागला, न्यायजवरून गावांतलेही मुख्य मुख्य लोक येऊन न्यास सामिल झाले. न्याकाळीं न्याणें व्हावें तें करावें अशी न्याजकडेस सिद्धता झाली. इकडे जेम्स राजाच्या पक्षास जे होते त्यांतील बहुत्येकांनीं यास सोडून दिलें, याची कन्या आन् आणि तिचा नवरा डेन्मार्कदेशींचा राजपुत्र तींहीं यास टाकून न्या विलियम राजाच्या पक्षास मिळालीं. त्याकाळीं, तें वर्तमान ऐकून जेम्स राजास परम खेद प्राप्त झाला, आणि असें बोलूं लागला कीं अहः हः माझ्या पोटच्या पोरानी कीं हो मला टाकून दिलें.

असा प्रसंग प्राप्त होतांच न्यास किती एकांनी सांगितलें कीं आतां आपण राज्य सोडून जावें याजवरून न्याणे आपली राणी व आपला मुलगा हीं फ्रान्सदेशीं पाठऊन दिलीं. तीं तेथें सुखरूप पोहोंचलीं, पण राजाचें जाणें घडलें नाहीं. राजा जात होता इतक्यांत न्यास धरून कैद करून माघारें आणिलें, आणि रोचेस्टर ह्मणून एक शहर आहे तेथें ठेविलें. परंतु तेथून तो पळून फ्रान्स देशीं गेला, यामकारें जेम्स राजा राज्य सोडून गेला तेव्हां असें ठरलें कीं आरेंजचा राजा व न्याची स्त्री या उभयतांनीं विलियम राजा आणि मेरी राणी या नावाने राज्य करावें, हा प्रसंग सोळाशें आ-
१६८८ ठ्यायशींत घडला लोभ० हे आशीर्वाद.

---

## प्रश्न.

दुसरा चार्लस कोणत्या वर्षीं मरण पावला ?

त्यानंतर कोण राजा झाला ?

दुसरा चार्लस व दुसरा जेम्स यांचें परस्पर काय नातें ?

दुसरा जेम्स प्रोटेस्टान्टमतास अनुकूळ होता कि-वा रोमन क्याथलिक् मतास अनुकूळ होता ?

बरें या राजाच्यावेळीं कांहीं बंड झालें होतें काय ?

त्या बंडांत मुख्यत्वेंकरून कोण होता ?

बरें तो मान्मौथचा ड्यूक कांहीं फौज घेऊन आला होता काय ?

मग त्याची राजाबराबर कांहीं लढाई झाली काय ?

कोठे झाली ?

तेव्हां जय कोणास मिळाला ?

बरें मान्मौथच्या ड्युकाचा राज्याशीं कांहीं संबंध होता काय ?

सेड्जमोर्ची लढाई संपल्यानंतर त्या मान्मौथच्या ड्युकाचें काय झालें ?

त्या ड्युकाचा शिरच्छेद केला काय ?

बरें त्याकाळीं स्काटलांड मांतीं कांहीं बंड माजलें होतें काय ?

त्या बंडांत मुख्य कोण होता ?

आर्जिलच्या ड्युकाचें काय झालें ?

सेड्जमोर येथील व दुसऱ्या ठिकाणांतील जे बंडाचे लोक धरून आणिले होते त्यांस राजाच्या लश्करांतील सरदारांनी काय केलें ?

त्यां बंडवाल्या लोकांचा इन्साफ करायास कोण न्यायाधीश नेमिला होता, तो स्वभावानें कसा होता ?

न्याणे न्या लोकांस काय केलें ?

राजा पोपाचें मत चालू करायास अनुकूळ झाला होता काय ?

जे धर्मोपदेष्टे रोमन् क्याथलिक् मताची निंदा करीत न्यांस तो राजा कांय करी ?

मग राजाने सर्व लोकांस कोणता ठराव जाहीर करविला ?

रोमन् क्याथलिक् मत पूर्ववत् चालू व्हावें झणून ही अशी युक्ति राजाने काढली होती असें कोणी मानीत काय ?

बरें राज्यांतील सर्व देवुळांत तो ठराव वाचावा झणून राजाने आज्ञा दिली होती काय ?

मग तो ठराव वाचण्याचा नाकार कोणी केला ?

कितीजणांनी केला ?

न्यांस काय केलें ?

मग ते सुटले कीं नाहीं ?

न्यांचें सुटल्याचें वर्तमान ऐकून लोकांस मोठा आनंद झाला काय ?

राजा न्याकाळीं कोठे होता न्याणे न्या आनंदाचा कल्लोळ ऐकिला काय, न्याजवरुन तो काय बोलिला ?

प्राटेस्टान्ट धर्माचें रक्षण व्हावें झणून लोकांनी दुसरे कोणास आणून राज्यावर बसवावें असा बेत केला काय ?

न्यांनी कोणास बोलाविलें ?

इंग्लांडच्या राजाचें व आरेन्जच्या राजाचें काय नातें ?

मग तो राजा इंग्लांडदेशीं आला काय ?

तो कोठें उतरला होता ?
कोणत्या महिन्याच्या कोणत्या तारखेस तो येऊन उतरला ?
मग न्यास लोक सामील झाले काय ?
राजास आरेंजचा राजा आल्याचें व आपल्या मुलांनी आपल्यास सोडल्याचें वर्तमान ऐकून काय झालें ?
मग त्या जेम्स राजाचें काय झालें ?
त्याच्या स्थानीं आरेंजच्या राजानें राज्य करावें असें ठरलें काय ?
कोण्या नावानें राज्य करावें असें ठरलें ?
त्याचे राणीचें नाव काय ?
हा प्रसंग कोणत्या सालीं झाला ?

---

# पत्र २९.

चिरंजीव०- विशेष दुसरा जेम्स राजा राज्य टाकून गेला त्याकाळीं विलियम राजा व मेरी राणी यांस त्या राज्यावर बसविलें. पोपमताचा राजा नसावा, आपल्या प्राटेस्टान्ट धर्माचा राजा असावा असें इंग्लीश लोकांच्या मनांत फार वागत होतें, त्याप्रमाणें जेम्स राजा नाहींसा होऊन विलियम राजा आणि मेरी राणी यांस राज्य प्राप्त झालें, त्याजवरून इंग्लीश लोकांस मोठा आनंद झाला. परंतु ऐर्लांडकरांस असा आनंद झाला नाहीं, कारण त्यांत बहुत्येक पोप मताचे होते, ते त्या जेम्स राजास अनुकूळ असत. मग तो राजा ऐर्लांडास जाऊन त्या लोकांस मिळाला, त्याकाळीं तेथें जी पूर्वीची फौज होती ती त्या राजास सामील झा-

लीं, आणि त्याणेंही एक दुसरी नवी फौज जमा केली. मग त्या दोन्ही फौजा एक होऊन ऐर्लांडांत जे विलियमाच्या पक्षाचे लोक राहत होते त्यांस उपद्रव करूं लागला. तेव्हां त्यां लोकांतून बहुत्येकजण त्या उपद्रवाच्या भयानें ऐर्लांड सोडून स्काटलांडास व इंग्लांडास गेले, आणि दाहा हजार लोक ऐर्लांडचें उत्तरेस लंडन डेरी ह्मणून एक शहर आहे त्यांत शिरून शत्रूस शरण नजातां भांडून मरावें असा निश्चय करून तेथेंच राहिले. त्याजवरून जेम्स राजानें त्या शहरावर हल्ला केला, पण त्या शहरांत जे लोक शिरले होते ते जेम्स राजाबरोबर मोठ्या निकरानें लढले. त्या शहराची बंदिस्ती पाहिली असतां कांहीं मजबूत नव्हती, परंतु त्यां लोकांचा विलियम राजाविषयीं फार निर्भर व त्याचें शूरत्व व धैर्यही तसेंच, त्या पुढें जेम्स राजाचा कांहीं उपाय चालेनासा झाला. मग तो त्या शहरास वेढा घालून बहुत दिवस बसला, त्यामुळें त्या लोकांत जिकडे तिकडे रोग उठला. तेसमयीं आपला जीव वांचवायाकरितां घोडीं, कुतरीं, व जेणेंकरून माण राहील असले पदार्थ खाऊन ते राहिले होते. अशा दुःखांत असतां त्यांचा निर्वाह व्हावयाजोगे पदार्थ भरून एक तारूं विलियमाकडून रवाना झालें, तें तारूं त्यां लोकांस पोंहचून त्यांचा बचाव झाला. तेसमयीं जेम्स राजानें त्या नगराभोंवता वेढा घातला होता तो तेथून उठविला.

नंतर जेम्स राजा व त्याचे पक्षाचे लोक त्या प्रोटेस्टान्ट धर्माचा अभिमान बागविणाऱ्या लोकांस उपद्रवच देत होते, त्याजवरून विलियमानें ऐर्लांडावर स्वतां स्वारी केली. तेसमयीं बोईना नदीच्या एक्या कांठीं

विलियमाचें लश्कर व एक्या काठीं जेम्स राजाचें लश्कर अशीं दोन्हीं लश्करें समोरासमोर तळ देऊन एकमेकांवर हल्ला करण्याच्या बेतांत होतीं, इतक्यांत विलियम कांहीं लश्कर घेऊन घोड्यावर बसून त्या नदीच्या तिरानें बाहेर जात होता, त्याजवर शत्रूचे लश्करांतून एक तोफ सोडली, तेणेकरून त्याचे सोबतींतलें कित्येक जण मेले गेले, व त्याच्याही खांद्यास जखम झाली. त्यावेळीं असा गलका झाला कीं खुद विलियम पडला, त्याजवरून त्याच्या लश्करांत मोठा आकांत झाला. तें वर्त्तमान ऐकून विलियम घोडा पिटून आपल्या सैन्याचा तळ पडला होता तेथें आला. तेव्हां त्याला पाहून सर्वांस धैर्य येऊन युद्धाविषयीं मोठा उत्साह झाला. मग दुसरे दिवशीं प्रातःकाळीं विलियम त्या नदीचे पलीकडे जाण्याविषयीं मार्ग करूं लागला. त्याला शत्रूकडून अटकाव होतांच युद्धास आरंभ झाला, त्या युद्धांत जेम्स राजाचा मोड होऊन विलियमास जय मिळाला. याप्रमाणें जेम्स केवळ निराश झाला असतां ही त्याच्या पक्षाचे जे लोक होंते ते त्याच्याकरितां मोठ्या शौर्यानें भांडत होते. त्या क्याथलिक मताच्या लोकांनीं बहुत्येक लढाया केल्या. शेवटीं लिमिरिक शहर विलियमाच्या हातीं जाऊं नये म्हणून ते लोक फार भांडले, परंतु उपाय चालेना, तेव्हां तें शहर विलियमाचे स्वाधीन केलें. मग विलियमानें त्या लोकांच्या सोयीचा त्यांशीं ठराव केला.

जेम्सच्या पक्ष्याच्या लोकांशीं व विलियमाशीं भांडण लागलें होतें तेसमयीं जेम्स फ्रान्सदेशीं होता, तेथला राजा चौदावा लुईस व जेम्स हे परस्परें स्नेही असत, म्हणून फ्रान्सदेशीच्या राजानें जेम्स राजाला

पुनः इंग्लांडच्या गादीवर बसविण्याविषयीं फार उद्योग केला, परंतु सिद्धीस गेला नाहीं. मग जेम्स राजा मा-पंचिक खटलीं सोडून ईश्वराची भक्तिकरून होता. नं-तर सन सतराशें एकांत न्यास दुखणें लागलें, तें बहुत दिवस होतें, शेवटीं न्यानेच तो मरण पावला.

आतां विलियमाचा काय परिणाम झाला तो लि-हितों. विलियम राजा मोठा शिपाई असे, हा राज्या-सनीं बसल्यानंतर बहुधा याचे दिवस फ्रेन्च लोकांशीं लढूनच गेले. हा शरीरानें चांगला सुदृढ नव्हता, तशांत यास राजप्रकरणाची नित्य चिंता व याचा उद्योगही तसाच, तेणेकरून त्याचें शरीर क्षिणून गेलें होतें. व्या-याम होऊन प्रकृति चांगली राहवी म्हणून हा घोड्या-वर फार बसे. एकयादिवशीं ह्यामटन कोर्टाहून केन् सिंग्टनास जात असतां हा घोड्यासुद्धां पुढें तोंड घशीं पडला, तेव्हां याचें गळ्या खालचें आडवें हाड मोडलें. मग न्यास ह्यामटन कोर्टास परत आणून याचें जें हाड मो-डलें होतें तें जसेंचें तसेंच बसविलें, नंतर संध्याकाळीं हा रथांत बसून केनसिंग्टनास गेला तेव्हां त्या रथाच्या धक्क्यांनी तें हाड सुटलें, मग पुनः तें जसेंचें तसेंच बस-विलें, परंतु तेणेंकरून यास दुखापत होऊन याचें दु-खणें फार बळावलें, आणि जे जे उपाय केले त्यांचा कांहीं गुण आला नाहीं. मग हा सन सतराशें १७०२. दोहोंत मरण पावला. त्याकाळीं यास बावन्नावें वर्ष लागलें होतें, आणि यानें तेरावर्षें राज्य करून या-स चवदावें वर्ष लागलें होतें.

याची स्त्री मेरीराणी तिला देवी येऊन ती तेहे-तिसावे वर्षीं मरण पावली. देवी मोठा दुष्टरोग होय म्हणून आपेंआप शरीरावर निघू दिल्या तर त्यांपासून च-

क्षुधा अनर्थ होतात, परंतु काढविल्या तर त्यांचें बळ मोडून फार थोडक्या फुटकुळ्या उठतात. पूर्वी देवी काढण्याचा उपाय इंग्लांडदेशीं ठाऊक नव्हता, अलीकडेस वासिनेशन ह्मणून एक उपाय डाक्तर जेनराने शोधून काढिला आहे, देवींच्या फोड्यांतला रस घेऊन तो शरीर टोंचून रक्तांत मिळवून दिला ह्मणजे देवी सर्व शरीरावर येतात. असें नकारितां तो रस शरीराचे त्वचेंतच शिराविला ह्मणजे त्याठिकाणीं एकच फोड उठतो. या कृतीस वासिनेशन ह्मणतात, येणेकरून या रोगाचें फारच बळ मोडतें आणि असें होतें कीं जाणो तो रोगच नाहीं आणि देवी चांगलेपणीं काढविल्या असतां जशा त्या पुनः येत नाहींत तशा वाशिनेशनापासूनही येत नाहींत. लो० हे आशीर्वाद.

तिसऱ्या विलियम राजाचें स्वरूप वर्णन.

तिसरा विलियम फार उंच नसे मध्यमच असे, आंगाने सडपातळ, प्रकृति नाजूक, नाक शुकनासिकासारिखें पुढें वांकलेलें, नेत्र तेजस्वी, कपाळ रुंद, असा हा असे. यास बाळपणापासून दम व खोकला असे. हा मोठा योद्धा होता, पण असे याचे गुण असतां चांगलें बोलून चालून जवळच्या मनुष्यास रिझवावें असा याचा स्वभाव नसे. हा धार्मिक, मिताहारी, निष्कपटी असे, पण याचेठायीं अभिमान वागे, त्यामुळें नित्य लढाया करी.

---

## प्रश्न.

जेम्स राजा इंग्लांडचें राज्य सोडून गेला तेसमयीं त्या राज्यावर कोणास बसविलें ?

जो राजा त्या राज्यावर बसविला त्याचे राणीचें व जेम्सराजाचें काय नातें ?

विलियम राजा व त्याची राणी मेरी हीं कोणत्या धर्मानें वागत होतीं ?

जेम्स राजा जाऊन तें राज्य विलियम राजा व मेरीराणी यांच्या स्वाधीन झालें, त्याजवरून इंग्लीश लोकांस आनंद झाला काय ?

त्यांस असा आनंद कां झाला ?

बरें असाच आनंद फ्रेन्च लोकांस झाला काय ?

त्यांस कां झाला नाहीं ?

जेम्स राजा ऐर्लंड मांतीं गेला होता काय ?

जेम्स राजानें व ऐर्लांड मांतांतल्या त्याच्या पक्षाच्या लोकांनीं कोणत्या शहरास वेढा घातला ?

लंडन डेरी शहरास वेढा घातला होता त्यावेळीं काय काय वर्तमान घडलें तें सांगावें ?

जेम्स राजा व ऐर्लांड मांतीचे क्याथलिक् मताचे लोक हे विलियमाकडल्या प्राटेस्टान्ट मताच्या लोकांस उपद्रव देत असत काय ?

जेम्स राजाची व विलियमाची कोठे लढाई झाली ?

कोणास जय मिळाला ?

शेवटीं जेम्स राजाकडले क्याथलिक् लोक कोणत्या शहरांत राहून विलियमाशीं भांडत होते ?

मग जेम्स राजानें आपल्या आयुष्याचे दिवस कोठे राहून घालविले ?

फ्रान्स देशींचा राजा जेम्स राजास अनुकूळ झाला होता काय ?

त्यावेळीं फ्रान्सदेशीं राजा होता त्याचें नाव काय ?

जेम्स राजास इंग्लांडच्या गादीवर बसविण्यावि-

षयीं त्या फ्रान्सदेशींच्या राजानें कांहीं उद्योग केला काय ?.

मग तो उद्योग सिद्धीस गेला काय ?

जेम्स राजानें आपल्या आयुष्याचे दिवस कोणत्या उद्योगानें घालविले, तो कोठे मेला, कोणत्या सालीं मेला ?

बरें विलियम राजा मोठा शिपाई होता काय ? आणि त्यानें राज्यासनीं बसल्यानंतर आपले दिवस लढायाच करून घालविले काय ?

त्यानें बहुतकरून कोणाशीं लढाया केल्या ?

ता कशाने मेला ?

तो कोठे मेला ?

कोणत्या सालीं मेला ?

मेरी राणी कशानें मेली ?

---

## पत्र ३०.

चिरंजीव०—विशेष दुसरा जेम्स राजा इंग्लंडचें राज्य सोडून गेला, त्या काळीं विलियम राजा व त्याची राणी मेरी, जी त्या दुसऱ्या जेम्स राजाची कन्या यांस त्या राज्यावर बसविलें, त्यांचें वर्तमान तुह्मास मागल्या पत्रांत कळविलें; आतां पुढें झालें तें वर्त्तमान लिहितों. मेरी राणीने आपल्या बापाचा क्याथलिक धर्म सोडून प्राटेस्टान्ट धर्म स्वीकारिला होता, ती जर मरण पावली नसती तर तिच्या नवऱ्याच्या मागें तिणेच तें राज्य चालविलें असतें. विलियम राजाच्या पोटीं कांहीं संतान नव्हतें, तो मेल्यानंतर आनला त्या राज्या-

वर बसविलें. ही ग्या जेम्स राजाची कन्या, हीमाटेस्टा-
न्ट धर्म चालवीत असे. जेम्स राजाचे जे दुसरे दायाद
होते ते क्याथलिक् धर्मांत वागत म्हणून न्यांतून कोणे
एकास ही राज्य करूं दिलें नाहीं. त्यानी राज्य घेण्या-
विषयीं फार उद्योग केला, परंतु तो सिद्धीस गेला नाहीं;
कां तर इंग्लीश लोकांस माटेस्टान्ट धर्माची गोडी ला-
गून त्यांनी असा ठराव केला होता कीं क्याथलिक्
धर्माच्या मनुष्याने इंग्लांड देशीचें राज्य करूंनये, म्हणू-
न जेम्स राजाच्या दायादांस राज्य मिळालें नाहीं. परं-
तु ते आपल्या ठिकाणी आपणास राजे, राजपुत्र, असें
म्हणवीत, म्हणून त्यांस इंग्लीश लोक मिटेन्डर म्हणजे
तोतया असें बोलत. याचें कांहींसें वर्तमान पुढल्या
पत्रांत कळवीन.

आन् राणी आसनारूढ झाली त्याकाळीं तिचें
वय अडतीस वर्षांचें होतें. इच्या पूर्वीचा विलियम राजा
मोठा शिपाई असे, त्याच्यावेळीं जशा फार लढाया झा-
ल्या तशा या आन् राणीच्याही वेळीं लढाया झा-
ल्या या राणीस पाहिलें असतां चांगलें लढतां येत
होतें असें नाहीं, पण मार्लबराचा ड्यूक म्हणून एक म-
तापवान् सेनापति या राणीकडे होता, त्याणें फ्रेंच
लोकांशीं फार लढाया केल्या. त्या लढायांत त्या से-
नापतीच्या हातून फ्रेन्च लोकांचा बहुधा मोडच झा-
ला. इंग्लांडचा राजा विलियम मरून गेला, तें राज्य
बायकोच्या स्वाधीन झालें, आतां आपल्यास कसूचें
भय असें फ्रान्सदेशींचा राजा चवदावा लुईस आपल्या
मनांत मानीत होता, पण हें माझें मानणें खोटें असें
त्याच्या लौकरच अनुभवास आलें. तें असें, इंग्लीश
लोकांचें जें शूरत्वाविषयीं नाव झालें तें तसेंच चालवावें

असा आन् राणीनें निश्चय केला, आणि त्या निश्चयाप्रमाणें करण्याविषयीं राणीला त्या मालबराच्या ड्युकाचे स्त्रीने सवृत्त केलें. त्याजवरून तो ड्यूक राणीचा सेनापति मोठ्या आवेशाने लढूं लागला, सारांश आन् राणीच्या वेळीं इंग्लांडदेशीं लढाईचा फारच उद्योग चालला होता. ते समयीं फ्रेन्च लोकांशीं व इंग्लिशांशीं ज्या लढाया झाल्या त्या लढायांत बहुत वेळां इंग्लिशांस जय मिळाला, आणि फ्रान्च देशींचीं बहुत शहरें इंग्लिशांच्या हस्तगत झालीं, तेणेंकरून इंग्लिशांकडल्या सेनापतीची व सेनेची व इंग्लीश लोकांची फार ख्याति झाली, परंतु असल्या लढाया करून इंग्लीश लोकांस कोणता लाभ झाला असेल व काय सुख मिळालें असेल तें असो, मला तर तें सांगतां येत नाहीं.

माल्बराच्या ड्युकाने ज्या लढाया केल्या, त्यांत ब्लेन्हिमची लढाई मोठी नामांकित झाली. जर्मनी देशीं डान्यूब नदीच्या जवळ ब्लेनहिम म्हणून एक गांव आहे, त्याच्या जवळ ही लढाई झाली म्हणून इला ब्लेनहिमची लढाई असें म्हणतात. त्या लढाईंत शत्रूचा केवळ पराभव होऊन माल्बराच्या ड्युकास जय प्राप्त झाला, त्याजवरून राणीस आणि इंग्लीश लोकांस मोठा आनंद होऊन आक्स्फर्डाजवळ उडस्टाक् म्हणून एक स्थळ आहे तें, व शिकार खेळावयास एक चांगली रमणीय जागा, असें त्या ड्युकास दिलें, व त्या जागेंत मोठा खर्च करून एक चांगला वाडा त्या ड्युकास बांधून दिला. तो वाडा अद्यून त्या ड्युकाच्या वंशाकडेस आहे. ब्लेनहिमच्या लढाईवरून तो वाडा ड्युकास मिळाला म्हणून त्या वाड्यास ब्लेन्हीमचा वाडा असें म्हणतात.

या प्रकारें इंग्लिशांच्या प्रतापवान् सेनापतिचें व शूर शिपायांचें वर्णन केलें, आतां इंग्लिशांकडेस लढाऊ गलबतांच्या सेनेवर जे नामांकित सेनापति व खलाशी लोक होते, त्यांचें वर्णन करितों. आन् राणीच्या राज्याचा आरंभ झाला त्याकाळीं इंग्लीश लोकांची समुद्रांत फारशी चढती नव्हती, नंतर ते समुद्रांत यशस्वी झाले. असो पण त्याकाळीं बेन्बौ म्हणून एक शूर आडमिराल होऊन गेला, त्याची गोष्ट सांगतों. सांप्रतकाळींचे जसे आडमिराल लढतात त्याप्रमाणे तो लढला, परंतु त्याच्या हाताखालीं जे सरदार होते त्यांनी फार वाइट काम केल. हल्ली जे गलबतावर कप्तान् असतात, त्यांतून तसलें कर्म कोणी ही करणार नाहीं, तो प्रकार सांगतों.

बेन्बोच्या स्वाधीन दाहा गलबतें करून त्यांस शत्रूकडल्या व्यापारी गलबतांस उपद्रव द्यायाकरितां वेष्ट इन्डीस देशाजवळ ठेविलें होतें. तेसमयीं आपण जा समुद्रांत आहों त्या समुद्रांत फ्रेंचाकडला आडमिराल आपल्याच इतकी फौज घेऊन आहे, असें बेन्बोस समजलें. तेव्हां शत्रूकडलीं गलबतें बेन्बोचे दृष्टीस पडतांच याणे आपल्या गलबतांचीं हार उभीकरून त्या शत्रूच्या गलबतांशीं भांडूंलागला, पण थोडक्याच अवसरांत याच्याकडलीं गलबतें मागें हटलीं, आणि शत्रूकडला अवघा ताफाचा मार या एकट्यावर पडूं लागला. असेंही असतां हा शत्रूस तोंड देऊन अर्धरात्रपर्यंत लढला. नंतर असा निश्चय केला कीं उद्दईक पाहांटेस शत्रूवर हल्ला करावा, पण पाहांटेस पाहतो तों आपल्या मद्दतीस एक गलबत मात्र राहिलें आहे, आपलीं सारीं गलबतें आपल्यास टाकून गेलीं. असें झालें तथा-

पि तो शूर आडमिराल न्या एक्या गलबतांनिशीं शत्रूच्या पाठीस लागून चार दिवसपर्यंत भांडत होता, शेवटीं मोठी निकराची लढाई झाली. तेसमयीं तोफेचा गोळा येऊन याचा एक पाय उडून गेला, तेव्हां याणे आपणास न्या गलबंताच्या मजलयावर झोळी होती तेथें नेऊन ठेवविलें. शेवटीं आपलें जहाज जर्जर होऊन पुढें चालेनासें झालें तोंपर्यंत लढण्याविषयीं हा न्या झोळींतून हुकूम करीत होता.

ही लढाई होत असतां बेन्बौचा एक सरदार येऊन म्हणूं लागला कीं, आपला पाय मोडून गेला, त्याजवरून आम्हास मोठें दुःख झालें. तेसमयीं बेन्बौने उत्तर केलें कीं मलाही तसेंच दुःख झालें आहे, परंतु एकतर काय दोन्ही पाय मोडून जावोत, पण आज अपेश दृष्टीस न पडो. दुसरा गोळा येऊन मला घेऊन गेला तरीं तुम्ही आपली मर्दायी सोडून देऊं नका, लढून फत्ते करा कळलें. नंतर तो बेन्बौ आडमिराल न्या जखमेने लौकरच मरण पावला. मग जे सरदार न्यास सोडून गेले होते, न्यांस मोठी शिक्षा मिळाली. न्यांतून दोघांजणास तर प्लैमोथ येथें चौकशी होऊन जो दंड ठरविला न्या मनाणे तोफेच्या तोंडीं देऊन उडविलें.

या आन् राणीच्या वेळीं जिब्राल्टर शहर इंग्लिशांनी घेतलें. तुम्ही युरोपखंडाचा नकाशा पाहिला असतां हें शहर तुम्हास कळूं येईल. हें स्पेन् देशाच्या अगदीं खालच्या अंगीं दक्षिणेस आहे. हें सर्जार्ज रुकाने स्पेन्करांपासून घेतलें, या शहराची जशी बंदोबस्ती आहे तशा बंदोबस्ताचें दुसरें शहर या पृथ्वींत असेल किंवा नसेल. याजकरितां हें शहर हस्तगत व्हावयाकरितां मोठें तुंबळ युद्ध झालें, हें इंग्लिशांच्या स्वा-

धीन झालें त्या दिवसापासून आजपर्यंत यांजकडेसच आहे. भूमध्यसमुद्रांत प्रवेशकरितां जो समुद्राचा अरुंद फांटा लागतो त्या फांट्यावरच तें शहर आहे, ह्मणून न त्या शहराच्या योगाने इंग्लीश लोक त्या भूमध्य समुद्रांत बलवान् होंऊन मोठा अंमल करूं लागले.

या आन् राणीच्यावेळीं ज्या गोष्टी घडल्या आहेत, त्या सर्व लिहूं लागलों असतां ग्रंथ फार वाढेल, आणि तुह्मास जीं लहान पत्रें लिहून पाठवितों तो बेत राहणार नाहीं. त्याकाळीं लढाया व राजप्रकरणीं विचार, मसलती, व प्रधानांची उलटापालट, व व्हिग्स आणि टोरीस्, ह्मणून जे दोन पक्ष झाले ते, व तसेच दुसरे प्रसंग, हीं सर्व वर्तमाने सविस्तर लिहून पाठविलीं, तर तीं तुह्मास जशीं पुढें चांगलीं गोड लागतील, तशींच तीं आतां गोड लागणार नाहींत. असो या आन् राणीच्या वेळेस इंग्लांड व स्काटलांड हे दोन्ही प्रांत एक केले. इंग्लांडचा राजा पहिला जेम्स हा स्काटलांडचाही राजा असे, यां दोहों राज्यांचा तो वास्तविक वारस. त्या राजाच्या वेळापासून हीं दोन्हीं राज्यें एक्याच राजाच्या स्वाधीन असत, पण यांची वहिवाट वेगळाली होत असे, व यांच्या पार्लियामेन्टाच्या सभाही वेगळाल्या होत असत. ही निरानिराळी वहिवाट मोडून दोन्हीं राज्यें एकच केलीं असतां चांगलें सुखावह होईल, असें जाणून त्यां दोहों राज्यांचें एक राज्य केलें, परंतु हें कृत्य करिताना फार वादप्रतिवाद झाले, व बहुत दिवस लागले, मग हें कृत्य बहुत्येकलोकांस मान्य झालें, आणि त्यांचे स्वार्थ सिद्ध होऊन उभय प्रांतांतील लोकांचें मोठें हित होऊं लागलें.

नंतर लंडन शहरांत व त्या शहराच्या सभोंवतीं

पन्नास देवुळें बांधावीं असें या आन् राणीच्या वेळेस ठरलें. हा ठराव झाला हा लोकांस मोठा हितावह होय. लंडन शहरांत लोक पुष्कळ होऊन त्यां लोकांस ईश्वराचें भजन करावयास देवळांत जागा पुरेना असें झालें होतें, तेसमयीं नवीन देवुळें बांधावीं लागलीं; कांतर लोकांनी ईश्वरास भजणें सोडून दिलें म्हणजे न्यांस शास्त्रांत जें कर्तव्य सांगितलें आहे न्याचें स्मरण राहत नाहीं. अशी अवस्था प्राप्त झाली म्हणजे लोक व्हावे ते अपराध करूंलागतात, याजकरितां राज्यांतील सर्व लहान थोरांस ईश्वराच्या भजनाकरितां देवळांत जागा असावी. मग त्यांची मर्जी असल्यास ते त्या देवळांत जातील अथवा न जातील. देवूळ इत्यादि भजन करायाचीं साधनें असतां लोकांनीं ईश्वरास भजणें सोडून दिलें तर त्याचें फळ ते भोगितील, त्याचा दोष राजाकडेस नाहीं.

मग त्या ठरावापैकीं कित्येक देवुळें बांधलीं बाकीचीं बांधणें तशींच राहिलीं, याजकरितां लंडनशहराच्या जवळ देवुळांची सोई नव्हती, त्यामुळें लोकांस फार अडचण होत असे, आणि अलीकडेस तर शहराची वस्ती मोठी झाल्यामुळें देवळांची फारच गैर सोई झाली होती. पण या थोडक्यादिवसांत ईश्वरकृपेनें बहुत नवीं देवळें झालीं, त्यामुळें चांगलें झालें. आतां कोणी देवळाच्या अडचणीमुळें देवळांस जाण्यांत अंतर करीत नसेल. " अहाहा ईश्वराचें भजन करावयास व ईश्वराची आज्ञा समजून घ्यावयास सर्वजण जर देवळास गेले, तर फारच चांगलें होईल. "

आन्राणीस बहुत प्रसंगीं जय मिळाला व राज्य

चांगलें समृद्धीने नांदूं लागलें, पण तिच्या दरबारीलो-कांत कलह उत्पन्न होऊन वैमनस्यें पडलीं आणि मधा-नाची उलटा पालट झाली तेणेकरून तिला बहुत श्रम होऊन दुःख झालें. कोठे या पक्षाचे लोक आवडते व्हावे, कोठे त्यापक्षाचे लोक आवडते व्हावे, आपल्या-स अनुकूळ होऊन जे आपले केवळ हित इच्छिणारे तेच मसलती कुबुद्धिकरून आपल्या इच्छेस आड येऊं लागावे. असल्या अडचणी पडूं लागल्या ते-णेकरून तिचें शरीर क्षिणूं लागलें, आणि राज्य-कारभाराची मेहेनत व चिंता तिला सहन होईनाशी झा-ली. मग असतां असतां तिला कांहीं सुचूं नये असें झालें, तेव्हां वैद्यांनी तिला उपचार करून आपली परा-काष्ठा केली, पण कांहीं गुण आला नाहीं.

नंतर सन सतराशें चौदांत जुलई महिन्याचे तेरावे तारखेस तिला औषधाने कांहीं समाधानसें वाट-
१७१४. लें, तेव्हां ती सुमारें आठवरांवर बिछान्यांतून उठू-न जरा हिंडूं लागली. मग तिच्याच खोलींत एक मोठें घ-ड्याळ होतें त्याकडेस कांहीं वेळ न्याहाळून पाहूं ला-गली तेसमयीं तिच्या एके सखीने पुसलें कीं आपण इतकें न्याहाळून तें घड्याळ पाहातां तर त्यांत आपल्यास काय नवल दिसलें, त्याजवरून राणीनें कांहीं उत्तर दिलें नाहीं. आणि मरतेवेळेस जसें कोणी पाहूं लागतें त्याप्र-माणें ती त्या सखीकडेस पाहूं लागली. मग अशी ती राणी पहात आहे इतक्यांत तिला अपस्मार होऊन पडली, तेव्हां डाकटर मिड म्हणून वैद्य होता त्याणे उप-चार करितांच ती कांहींशी सावध झाली. नंतर अव-घी रात्र बेशुद्ध पडली, दुसऱ्या दिवशीं बारावरांपासून तर एक वरापर्यंत कांहीं धुग धुगीशी दिसूं लागली, पण

दुसऱ्यादिवशीं पहांटेस तिणे प्राण सोडला. त्याकाळीं तिचें वय अडेचाळीस वर्षांचें होतें, तिणें बारावर्षें राज्य केलें.

आन्‌राणीचें डेन्मार्क देशींच्या राजाशीं लग्न झालें होत, परतु या राणीस जसा इंग्लांडच्या राज्याचा अधिकार तसा तिच्या नवऱ्यास त्यां राज्याचा अधिकार नव्हता. तें राज्य आन् राणीस आपल्या बापाच्या संबंधानें मिळालें म्हणून तिणे एकटीनेच राज्य केलें. तिच्या नवऱ्याचा इंग्लांडच्या राज्याशीं कांहीं एक संबंध नसे.

आन् राणीस जीं मुलें झालीं होतीं तीं तिच्या अगोधरच मेलीं, तेव्हां तिच्या मागें राज्यावर कोणास बसवावें असा विचार पडला. राणी राज्य करीत असतांच या गोष्टीविषयीं वाद प्रतिवाद चालले होते. नंतर कित्येकांचें म्हणणे असें पडलें कीं, दुसऱ्या जेम्स राजाच्या वंशांतील पुरुषानीं राज्य करावें, जे पोपाच्या धर्मास अनुकूळ नव्हते ते बोलूं लागले कीं, जो राजाचा वंश प्राटेस्टान्ट धर्मांत वागत असेल त्या वंशास राज्यावर बसवावें, असा हानोवर प्रांतींचा मांडलीक राजा आहे, याजकरितां तो या राज्यासनीं बसवावयास योग्य होय.

जे लोक त्या *जेम्स राजाच्या वंशाकडले होते त्यां लोकांस जाकोबैट्स म्हणत. जे हानोवर्च्या राजाकडले होते त्यांस हानोवेरियान्स म्हणत. यां लोकांचे उभयपक्षीं फार कलह झाले. ते आतां येथें सांगितलेच पाहिजेत असें नाहीं. राज्यांतील बहुधा सर्व प्रजांच्या मतें हानोवर्चा राजा आपल्यास राजा

---

* जाकोब हें पहिलें जेम्साचें नाव.

व्हावा असें होतें. त्यांचा प्राटेस्टान्ट मताच्या राजाकडेस फार भर असे. याजकरितां त्या हानोवरच्या राजालाच सिंहासनीं बसविला. त्याचें नाव पहिला जार्ज, त्याचें वर्त्तमान दुसऱ्या पत्रांत लिहून पाठवूं. लो० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

आन् राणी कोणत्या वर्षीं राज्य करूं लागली ?

ती कोणाची लेंक ?

दुसऱ्या जेम्स राजाच्या लेंकास राज्यावर कां बसविलें नाहीं ?

दुसऱ्या जेम्स राजाच्या लेंकास राज्यावर बसविण्याचा कांहीं कोणी उद्योग केला काय ?

बरें त्या जेम्साचा लेंक राज्यास योग्य असें पोप मताच्या लोकांचें बोलणें पडलें काय ?

बरें इंग्लिश लोक त्या राजाच्या लेंकास काय बोलत ?

आन् राणी राज्य करूं लागली तेव्हां ती किती वर्षांची होती ?

आन् राणी काय फार लढाया करीत असे ?

तिच्याकडला सेनापति कोण होता ?

त्यावेळीं फ्रान्सदेशीं जो राजा राज्य करीत होता त्याचें नाव काय ?

माल्बोराच्या ड्युकानी ज्या लढाया केल्या त्यांत मोठी जी नामांकित लढाई केली ती कोणती ?

मग त्या लढाईवरून माल्बोराच्या ड्युकास राणीने काय इनाम दिलें ?

ज्या वाड्यांत तो माल्बोराचा ड्यूक रहात असे त्या वाड्यास काय म्हणतात ?

तो वाडा कोठे आहे ?

आन् राणीच्या वेळीं गलबतांवरील फौजेचा जो नामांकित सेनापति होता त्याचें नाव काय ?

यास वेष्टइन्डीस देशाकडेस पाठविलें होतें त्याकाळींच्या लढाईचें वर्त्तमान सांगावें ?

जिब्राल्टर शहर कोठे आहे ?

तें कोणत्यासालीं घेतलें ?

कोणी घेतलें ?

या राणीच्या वेळीं व्हिग्स आणि टोरीस् असे दोनपक्ष झाले होते काय ?

इंग्लांड व स्काटलांड हीं दोन्हीं एक झालीं असें जें म्हणतांत याचा अर्थ काय, तीं कोणाच्यावेळीं एक झालीं ?

मजांस देवळांत जागेची अडचण होऊं लागली त्याकाळीं काय ठराव झाला ?

त्या ठरावामाणें घडूं आलें काय ?

राणीच्या दरबारी लोकांत तंटे होऊं लागले तेणेंकरून राणीस दुःख झालें काय ?

राणी कशी मेली तें वर्त्तमान सांगावें ?

ती कोणत्यासालीं मेली ?

या राणीचा नवरा कोण होता ?

त्याला इंग्लांडचा राजा असें म्हणत काय ?

कां नाहीं ?

ती मेली त्याकाळीं तिच्या पोटीं कांहीं संतान होतें काय ?

तिच्या मागें कोण राज्य करूं लागला ?
जाकोबैटस् ह्मणून कोण होते ?

---

# पत्र ३१.

विनंती विशेष०- आन् राणीच्या मागें पहिला जार्ज इंग्लांडचें राज्य करूं लागला. हा जार्ज पाहिला असतां जर्मानीकर, यास इंग्लांडचें राज्य मिळूंनये, परंतु याची आई ती पहिल्या जेम्स राजाची नात, यामकारें याचा इंग्लांडच्या राज कुलाशीं संबंध असे, तशांत हा प्रोटेस्टान्ट धर्मांत वागत होता, ह्मणून पार्लियामेन्ट सभेने असा ठराव केला कीं पहिल्या जार्जाने राज्यासनीं बसावें. दुसऱ्या जेम्सचा वंश पोपाच्या धर्मांत वागतो, याजकरितां त्या वंशास राज्याधिकार नाहीं. पहिला जार्जराजा सिंहासनावर बसला तेव्हां त्याचें वय चौपन्न वर्षांचें होतें. असें याचें मोठ वय पाहून लोकांस असें वाटूं लागलें कीं हा चांगल्या प्रकारें राज्य करील. हा राज्यासनीं बसला तेसमयीं बहुत्येक लोकांस मोठा आनंद झाला, पण असें आहे कीं जशीं मजांस संकटें प्राप्त होतात तशीं राजासही होतात. राजा राज्य करूं लागल्यानंतर मधानांत परस्परें तंटे होऊं लागले, व्हिग्भ् व टोरीस व जाकोबैटस व हानोवेरीयान्स ह्मणून जे पक्ष झाले होते त्यांमध्यें कलह उत्पन्न झाले, तेणेकरून राजास व प्रजांस फार दुःख होऊं लागलें. दुसऱ्या जेम्स राजाच्या लेंकांचा ज्यांनी पूर्वी पक्ष धरिला होता त्यांनी तो सोडला नव्हता, त्यांतून कित्येक जणांनीं पहिल्या जार्जा जवळून राज्य काढून जेम्स-

चया लेंकास द्यावें ह्मणून उद्योग आरंभिला. या लें-
कास मिटेन्डर असें बोलत. नंतर मिटेन्डरास आणून
इंग्लांडचे गादीवर बसवावा या मसलतीस बहुत्येक मु-
ख्य मुख्य मानकरी व मोठमोठे गृहस्थ सामील झाले.
त्या मसलतींत मुख्यत्वेंकरून स्काट मांतीचे मानकरी
होते, त्यांचा मोपाच्या धर्मावर फार निर्भर असे. त
जार्ज राजाच्या अमलास अटकाव करण्याविषयीं फार
यत्न करूं लागले, नंतर मारच्या अर्लानी मिटेन्डराकरि-
तां स्काटलांडांत फौज जमा केली. तेसमयीं त्या मिटे-
न्डरास लार्डलोवाट व दुसरे मोठे नामांकित गृहस्थ
अनुकूळ झाले. पण मागाहून त्यांनी त्यास सोडून दि-
लें. तशांत त्याचा मोड करायास आर्गिलच्या ड्युकास
पाठविलें; असें होतांच तो मिटेन्डर निरुपाय होऊन ब-
सला. नंतर मिटेन्डराकडल्या लोकांनी दुसरें बंड उठ-
विलें, त्या बंडांत डर्वेन्ट वाटर्चाअर्ल मुख्य असे. त्या
बंडवाल्यांनीं इंग्लांडच्या उत्तरकडेस धुमाळी मांडली,
तेवेळीं त्यांस स्काट लोक सामील होऊन त्यांनी वेष्ट मो-
र्लंडप्रांतीं शिरून केन्डल शहरापर्यंत चाल करून तें शह-
र घेतलें; परंतु त्या शहरांतून त्यांस लौकरच हाकून ला-
विलें, आणि त्या मिटेन्डराचे सर्व उद्योग निर्फळ झाले,
आणि त्याचा पक्ष ज्यांनी धरिला होता त्यांचें कांहीं
चालेना असें झालें. त्या बंडास पंधरा जणांचें बंड
असें बोलतात. दुसऱ्या जार्ज राजाचे वेळीं मिटेन्डरा-
करितां जें बंड झालें त्यास पंचेचाळिसांचें बंड असें बो-
लतात. या बंडांत मिटेन्डराचा मुलगा चार्लस मुख्य
होता, त्या बंडाचा मजकूर दुसऱ्या पत्रांत लिहून पाठ-
वूं. या प्रकारें जीं हीं दोन बंडें झालीं त्यांपैकीं पंधरा-
जणांच्या बंडासमयीं मिटेन्डराचा कांहीं उपाय चालेना

असें होऊन त्या बंडांत जे मुख्य होते त्यांतून बहुत्येक जण धरले गेले. मग त्यांचा न्याय करून त्यांपैकीं लार्डडर्वेन्ट् वाटर व कित्येक दुसरे गृहस्थ यांस मारावें असें ठरवून त्यांचा किल्ल्याच्या डोंगरीवर शिरच्छेद केला, बाकीचे जे राहिले त्यांतून बहुत्येकांस टैबर्न् येथें फांशीं देऊन भूमीवरून ओढीत नेऊन त्यांचे तुकडे केले, कित्येकांचा प्रेस्टन् व मान्चेष्टर येथें वध केला, व कित्येकांस देशांतून काढून उत्तर अमेरिका खंडांत पाठवून दिलें.

सन सतराशें विसांत द्रव्य मिळवावयाची १७२० एक मोठी चमत्कारीक युक्ति काढिली. या युक्तीस इंग्लीश भाषेंत सौथस्किम म्हणतात. तो प्रकार असा आहे कीं, इंग्लांडदेशीं कित्येक गृहस्थांनी लोकांस असें सुचविलें कीं आह्मास कांहीं कामाकरितां ऐवज पाहिजे. त्यास जो कोणी ऐवज देईल त्याला न्या ऐवजापेक्षां अधिक मिळेल, परंतु या युक्तीच्या नादीं लागून सर्व लोक सधन झाले असें नाहीं, या कामांत मोठमोठे तोटे येतांच ते उलटे नागवले. हें वर्त्तमान तुह्मास पुढें सविस्तर सांगेन, यायुक्तीवरून असें समजावें कीं द्रव्य मिळविण्याविषयीं लोक फार युक्ति काढितात, आणि त्याजवरून असें वाटतें कीं आपण याकामांत सामील झाल्यास आपलें जन्माचें दरिद्र फिटेल. पण तसें कांहीं होत नाहीं, विचारेंकरून पाहतां असें दिसूं येतें कीं कोणाचीं चोरी लबाडी नकरितां मेहेनत करून व्यवस्थेनें वागावें यासारिखी द्रव्य मिळवायाची दुसरी युक्ति मायः नाहीं. मनुष्याच्या निर्वाहार्थ जें कांहीं आवश्य आहे तें यायुक्तीने मिळतें, यायुक्तीस कांहीं एक भय व धोका नाहीं. जा कामांत कष्ट नकरितां

जुगार सोडत्या इत्यादिकांसारखें द्रव्य मिळतें, त्या-कामांत बहुतकरून दगे, धोके, असतात आणि अस-ल्या कामांत जर द्रव्य मिळालें तर तेणेंकरून प्रायः बरें होत नाहीं. सारांश पहिल्या जार्जाचे वेळेस द्रव्य मिळवावयाची जी युक्ति काढिली होती, तेणेंकरून इंग्लांडदेशांतील कित्येक गृहस्थ चांगले संपन्न झाले. पण त्या संपत्तीच्या योगेंकरून अव्यवस्था, लोभ, येथेष्टाचार, पातकें, हीं फार वाढलीं.

पहिल्या जार्जास इंग्लांडचें राज्य मिळालें, पण हा मुळचा हानोवर प्रांतींचा मांडलीक, म्हणून आपला तिकडला मुलूख पाहायास जात असे. एक्यादिवशीं तेथें जात असतां, याला मार्गांत वायु झाला तो प्रकार असा कीं त्या प्रांतास जातांना जो समुद्र लागतो तो उतरून रथांत बसून पुढें जात होता, तेव्हां मार्गांत रात्रीस चांगलें पोटभर जेवून निजला, तेसमयीं याची प्रकृति चांगली होती. मग पाहांटेस उठून पुढें जाऊं लागला, इतक्यांत आठ नव वरांच्या सुमारांत याने एकाएकीं रथ थांबवावयास सांगितला तेव्हां पाहातो तों आपला एक हात राहिला. तेसमयीं याच्या सोबतीस एक गृहस्थ होता, त्याणे रक्त मोकळें व्हावें म्हणून तो हात आपल्या दोहों हातांनीं चोळला, पण तो हात पूर्व स्थितीवर येईना, म्हणून मागाहून जो वैद्य घोड्यावर बसून येत होता त्यास बोलाविलें. मग त्याणें कांहीं अर्क घेऊन त्या अर्काने तो हात चोपडला, हें असें होऊन कांहीं वेळ गेला नाहीं इतक्यांत राजाची जीभ सुजूं लागली, तेव्हां पुढला गांव लौकरच आटोपा हीं अक्षरें तो मोठ्या त्राणानें बोलला. मग कांहीं त्याच्याने बोलवलें नाहीं, नंतर तो दुसऱ्यादिवशीं अकरावाज-

लां मृत्यु पावला, त्याकाळीं त्यास अडसष्टावें वर्ष लागलें होतें. या राजाने बारावर्षे राज्य केलें. याचा
१७२७ काळ सन सतराशें सत्ताविसांत झाला. लोभ
क० हे आशीर्वाद.

---

# प्रश्न.

आन् राणीच्या मागें कोण राज्य करूं लागला ?
पहिल्या जार्जाचा देश कोण ?
याचें व इंग्लांडच्या राजकुळाचें काय नातें ?
यास इंग्लांडचें राज्य कोणत्या कारणावरून दिलें व दुसऱ्या जेम्साच्या पुत्रास कां दिलें नाहीं ?

पहिला जार्ज राज्य करूं लागला त्याकाळीं त्याचें वय किती होतें ?

वरें याणें चांगलें निर्वैधपणें राज्य केलें काय ?

हा राज्य करीत असतां मिटेन्डरास राज्यावर स्थापण्याविषयीं कांहीं उद्योग चालला होता काय ?

त्या उद्योगांत मुख्यत्वेंकरून कोण कोण होते ?

त्या मिटेन्डराकरितां स्काटलांडांत फौज कोणी जमा केली ?

या मिटेन्डराचा मोड करावयास कोण पाठविला होता ?

नंतर फौज घेऊन इंग्लांडांत कोण आला व त्याने कोठपर्यंत चाल केली ?

तें बंड कोणत्या साली झालें ?

मग त्या बंडवाल्यांपैकीं वध कितीकांचा केला ?

सौथ्रस्कीम ह्मणून जी युक्ति काढली होती त्या युक्तीच्या नादीं लोक लागून कोणत्या साली नागवले?

बरें या जार्ज राजाचा कांहीं मुलूख जर्मनी देशीं होता काय ?

त्या हानोवर प्रांतींचें राज्य पाहायास हा जात असे काय ?

हा एक्या दिवशीं हानोवरास जात असतां याला मार्गात काय झालें ?

हा कोणत्या सालीं मृत्यु पावला ?

यानें किती वर्षें राज्य केलें ?

हा मेला त्याकाळीं याचें वय किती होतें ?

---

# पत्र ३२.

चिरंजीव०-विशेष तुह्मास आजपर्यंत जो इंग्लंडचा संकलित वृत्तांत लिहून पाठविला, तो तुह्मी चांगला विचारपूर्वक समजून घेतलाच असेल. त्याच्या पुढें भाग राहिला तो आतां लिहितों. हा भाग वर्तमानकाळास केवळ लगत आहे, ह्मणून यांत ज्या गोष्टी घडल्या त्यांचें चांगलें सविस्तर वर्तमान सांगितलें आहे, तें पत्रांत कोठवर लिहावें. याजकरितां त्यांतील एक थोडक्यांत सांगायाजोगें अति सुरस वर्तमान तुमच्या मनोरंजनार्थ कळवितों.

पहिल्या जार्जाचा पुत्र दुसरा जार्ज सन १७२७ सतराशें सत्ताविसांत राज्यासनीं बसला, तेसमयीं याने सर्राबर्ट वालपोलास आपला मधान केला. हा वालपोल मागल्या दोहों राज्यांत मोठा कर्त्ता पुरुष असे, यासारिखे न्यावेळीं राज्यसंबंधी मसलत विचार करणारे मधान व मोठमोठे पुरुष होऊन गेले, त्यांचें

वर्तमान न सांगतां दुसऱ्या जार्जाचेंच वर्तमान सांगतों.

दुसरा जार्ज राजा राज्य करूं लागतांच याणें स्पेनकरांशीं लढायी आरंभिली. मग स्पेनकरांनीं अमेरिकाखंडांत जाऊन तेथें वसाहत करून जीं ठाणीं घातलीं होतीं त्या ठाण्यांवर दुसऱ्या जार्जाकडून हल्ला होऊं लागला, नंतर फ्रान्स देशींच्या लोकांशीं या जार्जाने लढाई आरंभिली, त्याच वर्षीं पंचेचाळिसांचें बंड झालें. तो प्रकार असा आहे कीं, पूर्वी ंमटेन्डर झणून सांगितला त्याचा लेक चार्लस होता, त्याला फ्रान्स देशींचा राजा अनुकूळ होऊन तो चार्लस स्काटलांडास येऊन उतरला. मग आपल्या वंशास इंग्लांडचें राज्य प्राप्त व्हावें या बुद्धीनें त्या दुसऱ्या जार्जाच्या राज्यांत बंडें करूं लागला. तीं बंडें होत असतां एकेवेळीं असा रंग दिसूं आला कीं, यासमयीं चार्लसास जय मिळतो, व्याजवरून सर्वांस मोठी चिंता प्राप्त झाली. तेव्हां चार्लस आल्याचें वर्तमान कळतांच जार्ज राजानें आपलें लश्कर त्याजवर पाठविलें. त्या लश्कराची व चार्लसाकडल्या स्काट फौजेची इडिन्बर नगराजवळ प्रेस्टनवानस् झणून एक गांव आहे तेथें गांठ पडली. तेसमयीं चार्लसानें व त्याचे लढाऊ फौजेने राजाच्या लश्करावर मोठ्या निकराने हल्ला करून त्यांचा मोड केला. मग यासकारचा चार्लसाचा प्रताप पाहून हा राज्याचा वास्तविक वारस असें मानून त्याचा इडिन्बरास सत्कार करूं लागले. नंतर चार्लस आपला डौल दाखविण्याच्या नादीं लागून त्या इडिन्बर शहरांत उगेच दिवस काढीत बसला. तेणेंकरून असें झालें कीं, त्या प्रेस्टन् पान्च्या लढाईंत यास जय मिळाल्यावरून पुढें याचें कार्य सिद्ध होण्याचा जो योग आला होता तो नाहीं-

सा झाला. नंतर इंग्लांडावर चाल करावी असें आपल्या सरदारलोकांच्या विचारानें ठरवून हा आपल्या स्काट फौजेस घेऊन डर्बीपर्यंत आला. हें शहर लंडन शहरास जवळच आहे, या शहरास चार्लस आला होता त्या गोष्टीस सुमारें नवद वर्षे होतील. कित्येक जे ह्मातारे गृहस्थ होते त्यांस या गोष्टीचें चांगल्याप्रकारें स्मरण असे. ते असें सांगत कीं चार्लस डर्बीस आला होता तेव्हां बहुत्येकांस भय प्राप्त होऊन अहो पाहतां काय बंडवाले चाळीस कोसांवर येऊन पोहोंचले, आतां लंडन राजधानीस येतील, यामकारें लोक घाबरून गेले होते.

असें झालें असतांही चार्लसाचा उद्योग सिद्धीस गेला नाहीं. तो प्रकार असा कीं, चार्लसाचे सरदार लोकांत कलह उत्पन्न होऊन ते चार्लसाचें ऐकतना असें झालें. तेसमयीं दुसरे जे यास येऊन सामील होणार होते तेही आले नाहींत. तेव्हां केवळ निराश होऊन कसें तरी करून स्काटलंडास जाऊन पोहचावें असें प्राप्त झालें. मग त्या दुश्चित झालेल्या फौजेस घेऊन तो स्काटलंडास परत जाऊं लागला. तेसमयीं कंबरलांडचा ड्यूक ह्मणून राजाचा पुत्र होता, त्यास हुकूम होतांच तो त्या चार्लसाच्या पाठीस लागला, परंतु तो याच्या हातीं न सांपडतां स्काटलांड मांतीं कलोडेनास गेला. मग तेथें चार्लसाचें व कम्वर्लांडच्या ड्युकाचें युद्ध होऊन चार्लसाचा अगदीं मोड झाला. त्या कलोडेनूचे लढायींत चार्लसाकडचे पुष्कळ लोक पडले. नंतर चार्लस आशाभंग होऊन मुलकांत पळत फिरूं लागला, तेव्हां पोटास अन्न व आंगावर वस्त्र चांगलें नाहीं, अ-

शी त्याची अवस्था झाली. तेसमयीं त्याच्या पक्षास जे लोक होते त्यांनी जर त्याला त्याच्या शत्रूच्या स्वाधीन केलें असतें तर त्यांस पुष्कळ द्रव्य मिळालें असतें परंतु असला विश्वासघात नकारितां त्यांनी त्याची बातमी बाहेर फुटूं दिली नाहीं, मग शेवटीं तो एक्या गलबतांत बसून फ्रान्सदेशीं पळून गेला. तेसमयीं आंगांत जाडें जुनें काळ्या वस्त्राचें डगलें घालून त्याजवर डोंगरी लोकांचा पैरावा घातला होता, आणि कंबरबंदास पिस्तूल व कटार लोंबती बांधली होती. आंगांत बहुत दिवसांचीं मळकीं खमीस, भुकेनें व श्रमानें डोळे खोल गेलेले, तोंड फिकट, शरीर रोग्यावाणी झालेलें, अशी त्याची दशा झाली होती. मग त्या कलोडेनच्या लढाईंतून जे बंडवाले धरून आणिले होते त्यांपैकीं कित्येकजण लार्ड म्हणजे मानकरी व कित्येकजण सरदारलोक होते. त्यांतून कित्येकांस जिवें मारलें, कित्येकांचे लंडनशहरचे डोंगरीवर शिरच्छेद केले, कित्येकांस फांशी देऊन त्यांचीं मेतें वोढीत नेऊन त्यांचे तुकडे केले, याप्रकारें त्या बंडाचा शेवट झाला. लार्ड किलमार्नाक, लार्ड बालमारिनो, व लार्ड लोवाट; व लार्ड क्रोमार्टी असे थोर थोर नामांकित मानकरी त्या बंडामुळें आपल्या जिवास मुकले.

या दुसऱ्या जार्जाचे शेवटच्या कारकिर्दीत लढायाच फार झाल्या. त्या लढाया फ्रेंच लोकांनी अमेरिका खंडांत व युरोप खंडांत मुलूक घेऊन ठाणीं घातलीं होतीं तेथें होत असत. असें होत असतां भूमध्य समुद्रांत मेनोर्काम्हणून एक बेट आहे त्याजवर फ्रेन्च लोकांनीं हल्ला केला. तेसमयीं बिंग् म्हणून जो सेनापति होता त्याच्या स्वाधीन लढाऊ गलबतांचा समुदाय

करून त्या बेटाच्या कुमकेस त्याला पाठविला. तेव्हां इंग्लीशांचा बचाव कोणत्या प्रकारें करावा अशा विचारांत तो सेनापति आहे, इतक्यांत फ्रेन्चाकडून लढाऊ गलबतांचा समुदाय तेथें येऊन पोंहचला. ते समयीं आतां कसें करावें यामाणे त्या सेनापतीची मोठी गलबल होऊन त्याणे फ्रेन्च गलबतांशीं नलढतां त्यांस तसेंच जाऊं दिलें. इंग्लिश लोक शत्रूकडल्या लढाऊ गलबतांशी गांठ पडली असतां ते त्या गलबतांस सुखाने सोडून देत नाहींत, त्यांचा कांहीं तरी मोड करितात, यामाणें त्या सेनापतीनें केलें नाहीं, म्हणून त्याची चौकशी करून पोर्ट स्मौथ येथें त्याला एक्या लढाऊ गलबतांवर तोफेच्या तोंडीं दिला.

कलकत्त्यास ब्लाकूहोल म्हणून एक ठिकाण होतें त्याचें कांहीं वर्त्तमान सांगतों. कलकत्ता शहर इंग्लिश लोकांच्या स्वाधीन झालेलें असें पाहून एक्या राजाने इंग्लिश लोकांचें लोकांशीं लढाई आरंभिली, ते समयीं तें शहर काबीज करितांना इंग्लिशांकडले एकशें शेचाळीस शिपाई राजाच्या हातीं सांपडले, त्यांस धरून त्यांची कांहीं एक ममता न धरितां त्यांला एक्या तुरंगांत कोंडून ठेविलें. त्या तुरंगाचें नाव ब्लाकूहोल, यांतसुमारें अठरा फूट मात्र जागा होती. या प्रमाणें एकतर जागेचा संकोच, तशांत गरमीचे दिवस, व त्या तुरंगांत वायु संचारास मार्ग नव्हता, तेणेकरून फार उबारा होऊन त्यांचे दम कोंडले. तेव्हां रात्रीस जे एकशें शेचाळीस कोंडले होते, त्यांतून दुसरे दिवशीं तेवीसशिपाई मात्र जीवंत सांपडले, बाकीचे अवघे मरून गेले. मग जे जीवंत राहिले होते त्यांस ज्वर लागून तेही मेले, या प्रमाणें घडलें असतांही इंग्लिशांनीं कलकत्ता शहर

न्या राजाकडेस न राहूं देतां आपल्याकडेस पूर्ववत् करून घेतलें, न्यानंतर मागाहून इंग्लिश लोकांनी हिंदुस्थानांतील पुष्कळ मुलूक घेतला.

आतां तुह्मास बुल्फ, ह्मणून जो सेनापति झाला त्याचें वर्त्तमान सांगतों. हा सेनापति अमेरिका खंडांत क्विबेक् शहराशीं अतिनिकराने लढत असतां यास मोठमोठ्या अडचणी येऊन पडल्या, त्यासमयीं हा पस्तीस वर्षांच्या वयांत असतां ही याणे त्या सर्व अडचणी दूर केल्या. नंतर याचे मणगटास एक गोळी लागून जखम पडली, असें असतां ही याणें आपलें ठाणें न सोडितां त्या हातास रुमाल गुंडाळून जसाचा तसाच आपल्या लोकांस लढण्याविषयीं हुकूम करूं लागला. मग संगीन बसविलेल्या बंदुकांचे शिपायांस पुढें घालून त्यांच्या मागून आपण जात असतां एक गोळी येऊन याच्या उरांत लागली, तेणेंकरून हा पडून माण सोडण्याच्या लगबगेंत आहे इतक्यांत" ते पळतात, ते पळतात " असा याच्या कानीं शब्द पडला, ते समयीं त्या मरणकाळींच्या वेदनांनी व्याकूळ असतां ही याने क्षणमात्र सावध होऊन विचारिलें कीं " कोण पळाले," तेसमयीं फ्रेन्च पळाले" असें यास सांगितलें. तें ऐकतांच ज्या शिपायाने याला सांवरून धरिलें होतें याच्या उरावर मस्तक टेकून निचेष्टित पडला, शेवटीं मी सुखाने मरतों असें बोलून माण सोडिला. या उद्गारांवरून असें जाणावें कीं आपला ज्या देशीं जन्म झाला त्या देशाच्या हितार्थ आपली तरवार गाजवून यश मिळालें ह्मणजे परम आनंद होतो.

नंतर राजा केन्सिंगस्टन नगरीं आपल्या वाड्यां-

त असतां, सन सतराशें साठांत अकटोबर महि- १७६०.
न्याचे पंचविसांवे तारखेस असें झालें कीं, राजा आपले नित्याचे वेळेस उठून कांहीं समागमें लोक घेऊन केन्सिंग्स्टन्च्या बागांत पायींच फिरायास गेला. मग तेथून परत येऊन त्या वाड्यांत याची उठा बसायाची जी खोली होती त्या खोलींत हा एकटाच गेला, मग कांहींवेळ न होतां अकस्मात् भूमीवर पडला, तो शब्द याच्या एक्या सेवकानें ऐकून येऊन पाहिलें, तो, राजा मरायाच्या संधींत अन्यावस्थ आहे असा दिसला. मग त्याने लौकरच माण सोडला. राजा मरण पावला त्याकाळीं यास सत्याहात्तरावें वर्ष लागलें होतें, याने सुमारें तेहेतीस वर्षें राज्यकेलें.

---

# प्रश्न.

दुसरा जार्ज राजा कोणत्या सालीं राज्य करूं लागला ?

त्याणे आपला मुख्य मधान कोण केला ?

सरबर्डवाल्पोल् या राजाच्या पूर्वी मोठमोठ्या कामांत आपली सत्ता चालवीत असे काय ?

बरें दुसऱ्या जार्जचे वेळीं कांहीं लढाया होत असत काय ?

कोणाशीं होत असत ?

पंचेचाळीसांचें बंड असें कां म्हणतात ?

चार्लसास कोणत्या लढाईत यश मिळालें होतें ?

मग तो चार्लस इडिन्बर्ग नगरास गेला तेव्हां त्यास तेथील लोक कसें मानूं लागले ?

मग त्या चार्लसाने आपल्या प्रधानाशीं विचार करून काय ठराव केला ?

मग तो चार्लस स्काटप्रांतीचे बंडवाले लोक घेऊन इंग्लांडास आला होता काय ?

तो कोठपर्यंत आला होता ?

मग चार्लसाबराबर जे सर्दार लोक होते त्यांचीं आपआपल्यांत कलह उत्पन्न होऊन वैमनस्यें पडलीं काय ?

त्या चार्लसास बहुत्येक लोक सामील झाले होते काय ?

मग तो स्काटलांडास परत गेला काय ?

त्याकाळीं त्याच्या पाठीस कोण लाविला होता ?

त्या कंबर्लंडच्या ड्युकाने मोठी लढाई कोठे केली, त्याकाळीं कोणास जय मिळाला ?

त्या कलोडेनच्या लढाई नंतर चार्लसाचें काय झालें ?

तो कसा पळून गेला त्याकाळीं त्यास काय अवस्था झाली होती तें सांगावें ?

त्या बंडांत सामील झाल्यावरून स्काटप्रांतींचे लार्ड मेले गेले काय ?

त्यांचीं नावें काय तीं सांगावीं ?

त्या दुसऱ्या जार्ज राजाचे वेळेस इंग्लिश लोकांकडून परमुलकांत लढाया चालल्या होत्या काय ?

फ्रेन्च लोकांनी भूमध्य समुद्रांतील कोणत्या बेटावर हल्ला केला ?

मग त्या बेटाच्या कुमकेस इंग्लिशांकडून कोणत्या सेनापतीस रवाना केलें ?

या बिंगू सेनापतिने फ्रेनच लोकांच्या गलबतांशीं

लढाई नकरितां त्यांस तसेंच जाऊं दिलें त्याजवरून त्या विंगास शिक्षा झाली तो प्रकार सविस्तर सांगावा ?

कलकत्त्यास इंग्लिश लोकांस ब्लाकू होलींत कोंडून घातलें होतें तो प्रकार सांगावा ?

उल्फ सेनापति कोठे मरण पावला ?

तो कसा मेला व मरतेवेळीं काय काय बोलिला तें सांगावें ?

दुसरा जार्ज राजा कोणत्या सालीं मरण पावला ?
तो कोठे मेला त्याच्या मरणाचा प्रकार सांगावा?
त्याने किती वर्षे राज्य केलें ?
त्याचें वय किती होतें ?

---

# पत्र ३२.

चिरंजीव०—विशेष मागल्यापत्रांत तुह्मास दुसऱ्या जार्जाचें वर्त्तमान कळविलें. त्यानंतर तिसरा जार्ज राजा झाला, त्याचें वर्तमान आतां लिहितों. या राजाने जितकीं वर्षे राज्य केलें तितकें कोणी केलें नाहीं. हा सन सतराशें साठांत गादीवर बसला आणि यानें सन अठराशें विसांपर्यंत राज्य केलें. माझ्या वयामुळें मला या राजाचे पहिल्या कारकिर्दीच्या बहुत्येक गोष्टीचें स्मरण आहे, याचे अंमलीकडल्या कारकिर्दीत ज्या ज्या गोष्टी घडल्या आहेत, त्यातर अलीकडल्या बहुत्येक लोकांस ठाउक्या आहेत. या राजाने बहुत दिवस राज्य केलें आणि याच्या वेळीं जीं जीं वर्त्तमानें घडूं आलीं तीं बहुत्येक लोकांस सविस्तर ठाउकीं आहेत, तीं सर्व एक्याच पत्रांत लिहिलीं असतां

तें पत्र फार वाढेल ह्मणून तुह्मास कळवावयाजोगीं जीं वर्त्तमानें आहेत तींच या पत्रीं लिहून पाठवितों.

हा तिसरा जार्ज राजा दुसऱ्या जार्ज राजाचा पुत्र नव्हे, त्याचा हा नातू होय. याचा बाप फेड्रिक वेल्स प्रांतींचा राजा, तो दुसऱ्या जार्जाच्या अगोदर मरण पावला. तिसऱ्या जार्जाने सन सतराशें एक-
१७६१ कसष्टांत सप्तेंबराचे आठवे तारखेस जर्मान देशींच्या राजकन्येशीं लग्न केलें, तिचें नाव शार्लट. ही राणी चांगली गुणी असे, ही बहुत वर्षें वाचून राजाच्या अगोधरच मेली. नंतर कांहीं दिवसांनीं राजा वारला, आतां ज्या ज्या मुख्य गोष्टी घडल्या आहेत त्या संक्षेपाने सांगतों.

१७६६ सन सतराशें सहासष्टच्या सुमारांत हिंदुस्थानांत इंग्लिश लोकांचा अधिकार फार वाढला. त्याकाळीं हिंदुस्थानांत इंग्लिशांकडून लार्ड क्लैव ह्मणून एक मोठा अंमलदार होता.

१७६८ सन सतराशें अडुसष्टाच्या सुमारांत जान् विल्कीस्ची मिडलसेकस्संबंधीं प्रतिभूच्या अधिकारावर नेमणूक झाल्यामुळें इंग्लांडदेशीं फार गडबड झाली. हा विल्किस स्वभावाने अस्थिर, गडबड्या असे, तंटे बखेडे उभे करावे हें यास फार आवडे.

१७६८ सन सतराशें अडुसष्टच्या सुमारें लंडन नगरांत कारागीर कसबदार लोकांत केला चातुर्य वाढवावें या हेतूने तिसऱ्या जार्जाने एक विद्या शाला स्थापिली. त्या शालेंत जे जे लोक शिकून चित्र पुतळे इत्यादि करितात तीं सामर्सेट नगरांत एक मोठा वाडा आहे, तेथें प्रतिवर्षी लोकांस दाखवितात.

क्यापटेन कूक ह्मणून एक विख्यात पु-
रुष होऊन गेला तो या वर लिहिल्याच सालीं १७६८
गलबतांत बसून पृथ्वी भोंवती प्रदक्षिणा करायास नि-
घाला. पृथ्वी नारिंग फळासारखी गोलाकार आहे,
याजकरितां कोण्या एक्या ठिकाण्याहून गलबतांत बसू-
न एक्याच दिशेकडेस नीट पुढें चाललें असतां ज्या ठि-
काणाहून गलबत हकारलें असतें, त्याच ठिकाणीं का-
ळेंकरून येऊन पोहचतें. यामकारें क्यापटेन कूक नि-
घाला, तो सुमारें तीन वर्षांनीं पृथ्वी भोंवता जाऊन
आला.

नंतर तो पुनः सन सतराशें बहात्तरांत पृथ्वी पर्य-
टन करायास निघाला, तेसमयीं तो सतराशें पंच्याह्त्त-
रांत आला. याच संधीस अमेरिका खंडांत इंग्लिश
लोकांची व अमेरिका करांची प्रथम लढाई झाली; तेणें-
करून इंग्लिश लोकांची सत्ता अमेरिका खंडांत बहुत
उणी झाली, परंतु असली सत्ता उणी झाली तेणेंकरून
इंग्लांडच्या राज्यास कांहीं अपाय झाले असें नाहीं
तें जसेंचें तसेंच चाललें. पूर्वी अमेरिकाकर इंग्लांडच्या
राज्यास मुख्य गादी असें मानून वागत होते, नंतर सन
सतराशें शाह्त्तरांत आपण स्वतंत्रपणे राज्य
करूं लागले. अमेरिकाकरांचे फौजेचा जो १७७६
प्रतापी सेनापति असे त्याचें नाव वाशिंगटन सन सत-
राशें अठ्याह्त्तरांत अमेरिकाकर इंग्लिश लो-
कांवर उठले, त्याकाळीं अमेरिकाकरांस फ्रेन्च १७७८
लोक सामील झाले होते. त्याच संधीस चाथ्यामच्या
अर्लास देवाज्ञा झाली, हा इंग्लांडच्या राज्यांत मोठा प्रता-
पवान् कर्त्ता पुरुष असे. याच्या लेंकाचें नाव पिट,
हा ही सर्व प्रसिद्ध होऊन गेला.

पूर्वी अमेरिकाकरांचा व स्पेनूकरांचा जो राज्य
प्रकरणीं परस्पर संबंध होता तो स्पेनकरांनी नाहींसा
१७७९. करून ते सन सतराशें एकूणऐंशींत स्वतंत्रपणें
वागूं लागले. नंतर अमेरिकाकर इंग्लिशांवर
उठले आहेत असें पाहून ते स्पेनकरही त्यांस सामील
झाले, त्याकाळीं इंग्लिश लोकांस एक्याचसमयीं फ्रान्स-
करांशीं, व स्पेनकरांशीं व अमेरिकाकरांशीं भांडावें लागलें.
त्याच वर्षीं कपतान कूक पृथ्वीची तिसरी प्रदक्षिणा क-
रायास निघाला होता, त्यास पासिफिक् सागरांतलि
ओविही बेटांत एक्या रानवटी मनुष्यानें मारिलें. हें
बेट व पूर्वी ज्याज्या स्थळांचीं नावें येऊन गेलीं तीं स-
र्व पृथ्वीचे नकाशांत पाहून त्यांची ओळख करून घ्यावी.

सन सतराशें ऐंशींत इंग्लांडांत प्रजेनीं मोठी धुमा-
ळी केली, तो प्रकार असा झाला कीं, रोमन
१७८०. क्याथलिक् लोकांस पार्लियामेन्ट सभेनी कित्ये-
क गोष्टींचीं सूट दिली. त्याजवरून जार्ज गार्डन् म्हणू-
न एक लाड होता त्यानें लोकांस जमवून राज्यात धुद-
ळ करावयास सांगितलें, ते समयीं त्यां लोकांनी लंडन
शहरांत व त्या शहरच्या आसपास जीं क्याथलिक् लो-
कांचीं देवुळें होतीं त्यां सर्वांचा विध्वंस केला. न्यूवगेट
वलफीट व किंग्सबेन्च म्हणून जे तुरंग होते ते, व बहु-
त्येक गृहस्थांचीं घरें जाळून टाकिलीं. नंतर ज्यांस
थोडका पगार देऊन शहराचे रखवालीस जे शिपाई
ठेविले होते, त्यांस व कांहीं लश्करास त्यां लोकांवर
पाठविलें, तेव्हां ते मागें हटले, जर ते न हटते तर त्यां-
नी खजिना ठेवावयाच्या वाड्याचाही नाश केला अ-
सता. तेसमयीं त्या धुमाळखोर लोकांपैकीं दोनशें
माणसें दगावलीं, त्यांत कित्येक मारलीं गेलीं व कित्ये-

क घायाळ झालीं. मग त्या जार्ज गार्डनास धरून त्याची चौकशी केली. तेसमयीं त्याने त्यां लोकांकडून असला अनर्थ करविला असें शाबूत झालें नाहीं, ह्मणून त्यास सोडून दिलें.

सन सतराशें ब्यायूंशींत आड्मिराल राड- १७८२.
नी आपल्या पराक्रमेंकरून थोर योग्यतेस चढला, तो असा. तो समुद्रांत फ्रेन्च लोकांचा पराभव करून जय पावला, तेसमयीं त्याचें शौर्य, यश, पाहून त्यास सरकारानें मोठी पदवी दिली. या प्रकारें घडत असतां अमेरिका खंडांत इंग्लिश लोकांस काळ प्रतिकूळ झाला असे.

जिब्राल्टर शहर कोठे आहे व हें इंग्लीश लोकांनी कोणत्या सालीं घेतलें हें एक्या मागील पत्रांत तुह्मास कळविलें आहे. हें शहर स्पेन् देशास जवळ असतां इंग्लिशांच्या स्वाधीन झालें असें पाहून स्पेनकरांस ती गोष्ट सहन होईनाशी झाली. तेसमयीं तें शहर इंग्लीश लोकांपासून घेण्याचा त्यांनी उद्योग आरंभिला, परंतु तें शहर त्यांच्या हस्तगत झालें नाहीं. त्याशहरचा अधिकारी जन्राल येलियेट त्याच्या शौर्या पुढें व तोफांच्या भडमारा पुढें ते स्पेन्कर निरुपाय होऊन त्यांनी तें शहर घेण्याचा नाद सोडून दिला.

नंतर सन सतराशें ब्यायूंशींत इंग्लिश १७८३.
लोकांचा व अमेरिका करांचा सल्ला झाला. तो असा कीं इंग्लिश व अमेरिकावाले उभयपक्षीं लढाया करकरून त्रासले होते. तशांत इंग्लिशांनी पाहिलें कीं त्या लढाईपासून आपल्यास मोठा लाभ होतो असें ही नाहीं, याजकरितां सल्ला करावा हेंच युक्त असें जाणून तह ठरविण्यास कबूल झाले. सल्ला हो-

ऊन राजास कोठे लढाईचा प्रसंग प्राप्त होऊं नये असा योग आला असतां राज्य मोठे सुखाने नांदूं लागतें, परंतु अशा शांतकालाचें फारसें कोणी वर्णन करीत नाहीं. कोणे एका देशाचा वृत्तांत झटलें असतां त्यांत लढाया भांडणें यांच्यापेक्षा काय त्या कथा, आणि लोकांस त्याच फार करून गोड लागतात. पण त्या खेरीज इंग्लांडदेशाचा वृत्तांत ऐकून घ्यायाजोग्या बहुत गोष्टी आहेत त्यांतील कित्येक तुह्मास लिहून पाठवितों.

१७८४ सन सतराशें चौऱ्यायूशींत वेष्टमिनिष्टरसंबंधी प्रतिभूचा उद्योग चालविण्याविषयीं नेमणुकी होऊं लागल्या, त्याजवरून सर्सिसिल, ब्रेवफाक्स यां दोघांचा मोठा वाद झाला.

याच सालीं सन्डेस्कूल झणून शाला घातल्या, त्यांत मुख्यत्वेंकरून धर्म शिकवितात. रेक्स झणून एक चांगला गृहस्थ होता, त्याणें असली पहिली शाला ग्लौसेस्टरास घातली,

१७८६ सन सतराशें शहायूशींत मार्गरेट निकलसन झणून एक वेडी स्त्री असे, तिणें राजा रथांतून उतरत आहे इतक्यांत राजावर सुरीचा घाय टाकिला, पण तो चुकला, राजास लागला नाहीं. असलें राजावरचें विघ्न टळलें झणून राजाचें कल्याण इच्छिणारांस मोठा आनंद झाला. मग तिला धरून बेडलाम ठिकाणीं कोंडून ठेविलें, ती तेथेंच मेली.

याच संधीस हेस्टिंगची चौकशी आरंभिली. हा साहेब हिंदुस्थानांत गवर्नर असतां याणें गैर्वर्तणूक केली असा याजवर आरोप आला होता, त्याची चौकशी नऊवर्षें चालली, शेवटीं त्याजवर कांहीं शाबूत नहोतां तो त्या आरोपापासून मुक्त झाला.

सन सतराशें अठ्याय्शींत राजास मोठें दुखणें लागून त्याच्यानें राजकारभार होईना असें झालें, तेव्हां वेल्स मांतीच्या राजास तो राजकारभार चालववायास आणावा असा बेत झाला, इतक्यांत राजा बरा झाला. तेसमयीं सर्व राजांत मोठा आनंद झाला, लोक ईश्वराचा स्तव करूं लागले यामकारें राजा बरा होऊन आपल्या कुटुंबांत व प्रजांत सुखानें नांदूं लागला, त्याजवरून राजासही मोठा हर्ष होऊन १७८९
सन सतराशें नव्याय्शींत अमील महिन्याचे तेविसांवे तारखेस राजानें मोठ्या भक्तीनें व समारंभानें सेन्टपालच्या देवुळास जाऊन तेथें ईश्वराचें उपकार स्तवन केलें.

त्याच संधीस फ्रान्स राज्यांत एक मोठी उलटापालट झाली, तेसमयीं त्या राज्यांत घोर अकर्मे घडलीं, व महान् दुःखें प्राप्त झालीं. तो प्रकार असा कीं, सर्वत्र मोकळीक व सर्वत्र समानता असावी, एक लहान एक थोर असा कांहीं भाव नसावा असें तेथले लोक बोलूं लागले, व धर्मप्रकरणीं कांहीं विपरीत व अनर्थकारी मतें सांगूं लागले. तेसमयीं तेथें प्रजांस जशी इंग्लांडांत मोकळीक असे तशी फ्रान्सदेशीं नव्हती, राजाचा कांहीं जुलूम असे, परंतु त्या प्रजांनी राजसत्तेंतून मोकळें होऊन सुखी व्हावें या बुद्धीने आपल्यावरील दाब उडविण्याविषयीं जो उद्योग आरंभिला, तेणेंकरून ते उलटे अधिक दुःखी झाले. त्याकाळीं लोकांस उपद्रव व बलात्कारच होऊं लागला, कोठें प्रजांनीच राज्य करूं लागावें, तेसमयीं त्यांनी क्रोधाविष्ट होऊन अनर्थ करावे; कोठें राज्यांतील निवडक मंडळीनेच अमल करूं लागावें, तेवे-

लेस व्हाव्या तशा घातपातादिक अकटोविकट पीडा करावया; आपल्यांत जो मुख्य राज्यकर्त्ता व्हावा, त्याला कांहीं दिवस ठेऊन हांकून लावावा; नंतर त्याच्या स्थानीं दुसरा नेमावा, यामकारें फ्रान्सदेशीं कित्येक वर्षें आकांत चालिला होता. तेसमयीं जे जे मुख्य राज्यकर्ते झाले ते बहुधा सर्व दुष्टदुरात्मे असत, नंतर त्यां लोकांनी बोनापार्ट म्हणून एक पुरुष होता त्याकडेस राज्यकारभार सोंपिला, आणि राजा असें नावही तोंडानें घेऊंनये असा राजाचा त्रास आला होता म्हणून त्या बोनापार्टाला राजा असें नबोलतां, मुख्य प्रधान असें नाव ठेविलें. नंतर कांहीं दिवसांनीं त्यालाच राजपदीं स्थापिलें, मग पूर्वी जीं दुःखें होत होतीं त्यांजपक्षां अधिक दुःखें होऊं लागलीं. सारांश पूर्वीचा राजा आम्हावर जुलूम करितो असें लोकांनी मानून त्याजवर सर्व उठले, तेणेंकरून हाणमार होऊन बहुत खून होऊं लागले आणि व्हावे तसे अनर्थ होऊं लागले. तेसमयीं फ्रान्सदेशांत जो महान् अनर्थकारी प्रसंग प्राप्त झाला होता, त्याचें येथें सविस्तर वर्णन करावें असें नाहीं, कांतर तें दुसरें प्रकरण, त्याचा इंग्लांडदेशाच्या वृत्तांताशीं फारसा संबंध नाहीं, परंतु फ्रान्सदेशीं त्यावेळीं जें जें घडे, त्याचा आसमंतात् देशींचेही लोक शोध ठेवीत; तशांत फ्रान्सदेश इंग्लांडास केवळ जवळ, तेथें ज्या ज्या गोष्टी घडल्या त्या जाणो इंग्लांडांतच घडल्या असें इंग्लीश लोक मानीत म्हणून तो वृत्तांत येथें कांहींसा सांगितला. मग सन सतराशें त्याण्णवांत फ्रेंच लोकांनी आपला राजा सोळावा लुइस, त्याचा शिरच्छेद केला. नंतर कांहीं दिवसांनीं राणीचा व राजाच्या कुटुंबाचीं जीं दुसरीं माणसें होतीं त्यांचा-

१७९३

ही शिरच्छेद केला. सारांश ते लोक क्रूरकर्मे व वध या-
चविषयीं केवळ तत्पर झालेले असें त्यांच्या आचरणा-
वरून दिसे. फ्रान्सदेशींचे लोक जेव्हां राजाची अमर्या-
दा करून धुमाळी करूं लागले, तेसमयीं आपल्याकडेस
राजानें मोकळीक ठेविली नाहीं असें मानून इंग्लांडदे-
शींचे लोक तसलीच अमर्यादा करण्याच्या चेतांत होते,
परंतु फ्रेंचे लोकांस त्या अमर्यादेमुळें जीं दुःखें व संक-
टें प्राप्त झालीं तीं पाहून इंग्लिश लोक उगेच राहिले.
तसली दुष्ट बुद्धि इंग्लिश लोकांस प्राप्त झाली नाहीं, ही
ईश्वराचीच कृपा जाणावी. लोक म्हणत असतात कीं
राजानें आम्हाकडेस कांहीं सत्ता ष मोकळीक ठेविली
नाहीं, पण नीतीने वागण्याविषयीं सर्वांस मोकळीक
आहे, अनीतीने वागण्याविषयीं मात्र मोकळीक नाहीं,
आणि तसल्या मोकळिकीची इच्छा करूंनये. फ्रेंच
राजाची उलटपालट झाली तेसमयीं राज्यांत सर्वत्र स-
मानता असावी असें लोक बोलत परंतु असली समान-
ता होणे असाध्य असें आतां लोक विचार करून सम-
जूं लागले. असें आहे जर राज्यांतील सर्व द्रव्य सर्व
लोकांनी एकसारखें वाटून घेऊन सर्व समान झाले, तर
तेच लोक कांहीं दिवसांनी लहान मोठे होतील, त्यांचे-
ठायीं समानता राहणार नाहीं जो आळशी अव्यवस्थ
तो एक वर्षाने तुरंगांत पडेल, जो व्यवस्थेने वागणारा
तो एकवर्षाने आपली मिळकत असेल त्यापेक्षां दुप्पट
करील; जो आज मातबर तो उद्यां भिकारी असा होई-
ल, म्हणून लोकांच्याठायीं सर्वत्र समानता असणें अ-
साध्य.

फ्रान्सदेशांत जीं क्रूरकर्मे घडूं लागलीं तीं युरोप,
खंडांतील कित्येक देशींचे लोक ऐकून उगेच राहिले

नाहींत, तीं बंद होण्याविषयीं त्या त्या देशींच्या लोकां-
नी उद्योग केला. त्यांस असें वाटूं लागलें कीं फ्रान्स
देशांत जो अनर्थ मांडला आहे व जो अमंगळ मतें प्र-
वृत्त झालीं आहेत तेणेंकरून आसमंतांतील राज्यांत अ-
पाय प्राप्त होईल म्हणून आस्त्रिया, व प्रशिया देशींचे
लोक फ्रेन्च लोकांशीं लढावयास गेले. नंतर
१७९३. सन सतराशें त्र्याण्णवांत इंग्लिश लोक त्या दो-
न्ही देशींच्या लोकांस सामील झाले. मग त्या दिव-
सापासून एकसारिख्या लढायाच होत असत. त्या बंद
१८०१. होऊन थोडकींच वर्षें झालीं. त्या लढाया सुमा-
रें वीस वर्षें चाललेल्या होत्या, सन अठराशें ए-
कांत मात्र कांहीं दिवस बंद पडल्या होत्या. तेसमयीं
बोनापार्टाला आवेशामुळें लढाया केल्यावांचून बहुत
दिवस राहवेना म्हणून पुनः लौकरच त्या लढाया चालू
झाल्या. त्यावेळीं युरोपखंडांत जिकडे तिकडे फ्रेन्च
झाला होता, शेवटीं सन अठराशें पंधरांत वा-
१८१५. टर्लू येथें जी लढायी झाली त्या लढायींत वें-
लिंग्टनच्या ड्युकानें बोनापार्टचा अगदीं मोड करून
टाकिला. इंग्लिश लोकांकडील लढाऊ गलबतांनी स-
मुद्रांत ज्या नामांकित लढाया केल्या त्यांचें वर्त्तमान
तुह्मास सांगितलें असतां हें पत्र फार वाढेल, म्हणून तें
वर्तमान सविस्तर सांगत नाहीं. इंग्लिशां कडील समुद्रांत
लढणारे लोक युद्धास उभे राहिले असतां ते जय पाव-
ल्यावांचून मागें येतच नाहींत, असें त्यांच्या त्या लढा-
यांवरून कळूं येतें. यामकारें समुद्रांत मोठी लढाई क-
१७९८. रून सन सतराशें चौऱ्याण्णवांत लार्ड हा वि-
जय पावला. सन सतराशें सत्त्याण्णवांत सर्जान्
१७९७. जेर्वीस जय पावला. तेसमयीं त्याचें शौर्य व

युद्धकौशल्य पाहून न्यास लार्ड सेन्टविन्सेन्ट असें पदे दिलें. त्याच सालीं लार्ड डंकन् हा डच लोकांच्या लढाऊ गलबतांचा मोड करून जय पावला. सन १७९८. सतराशें अठ्याण्णवांत लार्ड नेलसन् हा नैलयेथें जी मोठी लढाई झाली त्या लढायींत जय पावला. नंतर हा थोर प्रतापवान् लार्ड फ्रेन्च लोकांच्या लढाऊ-गलबतांचा अगदीं मोड करून सन अठराशें पांचात त्राफलूगार्चे लढाईत पडला. १८०५. त्या मोठे लढाईत केवळ शूर, समुद्रांत लढण्याविषयीं अति कुशल, असे इंग्लिश शिपाई बहुत होते, त्यांचें वर्णन करूं लागलें असतां ग्रंथ फार वाढेल. त्याकार्ळां भूमीवर लढणारेही तसेच नामांकित शिपाई होते, त्यांनी स्पेनवाल्याशीं व दुसऱ्या देशींच्या लोकांशीं मोठ्यामोठ्या लढाया केल्या. त्यांनी वाटर्लूचे लढाईत जो पराक्रम केला तो तर सर्वत्र प्रसिद्ध आहे. हीं सर्व वर्तमानें बाळशास्त्री यांहीं जो इंग्लांडचा वृत्तांत ग्रंथ केला आहे त्यांत विस्तरेंकरून सांगितलीं आहेत, तो ग्रंथ तुह्मी पुढें मोठेपणी वाचून समजून घ्यावा.

नंतर तिसऱ्या जार्ज राजास बहुत दिवस दुखणें लागून तो सन अठराशें विसांत मरण पावला. १८२०. हा एक मोठा उत्तम राजा होऊन गेला. या राजास जेव्हां बहुत दिवस दुखणें लागलें होतें, तेव्हां राज्यकारभार वेल्स प्रांतींच्या राजाकडेस सोंपिला होता. मग पुढें तोच इंग्लांडचा राजा झाला लोभ० हे आशीर्वाद.

# प्रश्न.

तिसरा जार्ज राजा कोणत्या साली राज्य करूं लागला ?

तिसरा जार्ज राजा कोणाचा लेंक ?

याच्या बापानें इंग्लांडचें राज्य केलें काय ?

तिसऱ्या जार्जानें कोणत्या राजकन्येस वरिलें होतें तिचें नाव काय ?

कोणत्या साली राजाचें लग्न झालें ?

कोणत्या साली लार्ड क्लैव यानें इंग्लिश लोकांची हिंदुस्थानांत सत्ता वाढविली ?

जानविल्कीस कोण होता आणि त्याजविषयीं इंग्लांडांत कोणत्या साली गलबल झाली होती ?

कोणत्या साली लंडननगरांत सरकारानें विद्याशाला स्थापिली ?

कोणत्या साली क्यापटेन कूक यानें पृथ्वीभोंवती प्रदक्षिणा केली ?

त्यास ही प्रदक्षिणा करायास किती वर्षें लागलीं?

त्याने दुसरी प्रदक्षिणा केली काय ?

कोणत्या साली केली ?

त्यास ही प्रदक्षिणा करायास किती वर्षें लागलीं ?

कोणत्या साली अमेरिकावाल्यांशीं लढाई लागली ?

कोणत्या साली अमेरिकावाले इंग्लांडच्या गादीस मुख्यगादी असें नमानितां स्वतंत्रपणे राज्य करूं लागले ?

अमेरिकावाल्यांस दुसऱ्या कोणत्या देशींचे लोक सामील होऊन इंग्लीश लोकांशीं भांडत होते ?

मग कॅप्टेन कूक याणे तिसरी पृथ्वी प्रदक्षिणा आरंभिली काय ?

नंतर तो मागें आला काय ?

न्यास कोणी कोठे मारिलें न्याचें तुलास स्मरण आहे काय ?

लंडन शहरांत कोणत्यासालीं मजांनी धुंधळ केली ती शांत कशाकरितां केली ?

ती धुंधळ मजांच्या हातून करविल्याचा कोणावर आरोप आला होता ?

मग त्याचें काय केलें ?

लार्डराडनी कोणत्यासालीं फ्रेंच लोकांचा समुद्रांत मोडकरून जय पावला ?

जिब्राल्टर शहर इंग्लिश लोकांपासून घेण्याचा कोणी उद्योग केला होता काय ?

त्याकाळीं जिब्रालूटराचा गवर्नर कोण होता ?

मग त्याणें तें शहर शत्रूच्या हातीं जाऊं दिलें काय ?

अमेरिकाकरांशीं कोणत्यासालीं सल्ला झाला ?

सिसिलब्रे आणि फाक्स यांचा वेस्ट मिनिष्टरच्या नेमणुकीविषयीं कोणत्यासालीं वाद झाला ?

सन्डेस्कूल म्हणून जी शाला स्थापिली ती कोणत्या सालीं स्थापिली व कोणी कोठे स्थापिली ?

कोणत्या सालीं वेडे स्त्रीनें राजाला माराण्याचा उद्योग केला, त्या स्त्रीचें नाव काय ?

हेस्टिंगची चौकशी कोणत्या सालीं सुरू झाली, ती चौकशी किती वर्षें चालली होती, कशावरून त्याची चौकशी केली, व त्या चौकशीच्या अंतीं काय सिद्ध झालें ?

राजाला कोणत्या सालीं दुखणें लागलें ?

कोणत्या सालीं फ्रेन्च देशांत राज्याची उलटापालट झाली ?

फ्रान्च देशींचा राजा सोळावा लुईस याचा कोणत्या झालीं शिरच्छेद केला ?

फ्रेन्च लोकांशीं लढाई करावयास कोण कोणत्या देशींचे लोक गेले होते ?

जां जां पुरुषांस समुद्रांत जय मिळाला त्यांचीं नावें काय व त्यांस कोणकोणत्या सालीं जय मिळाला ?

वाटर्लूची लढाई कोणत्या सालीं झाली ?

तिसरा जार्ज राजा कोणत्या सालीं मरण पावला?

समाप्त.